# विप्रदास

## (मैथिली अनुवाद)



मूल लेखक : शरत्‌चन्द्र चट्टोपाध्याय

अनुवादक : श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

प्रकाशक

श्री ब्रजेन्द्रकुमार झा
श्री भवन
बोरिङ रोड,
पटना-८००००१



प्रथम संस्करण

मुद्रक : मुरलीधर प्रेस,
पटना-८००००६

मूल्य

श्रीः

# दू शब्द

सेवा-जीवनक आदि—१९४३ ई०मे दामोदर नदीक कातमे एक तरहेँ 'वनवास'क भोग करए पड़ल छल। अन्य कतेक पुस्तकक सग 'विप्रदास' पढ़बाक प्रथम अवसर ओतहि भेल। स्वनामधन्य शरत्चन्द्र चट्टोपाध्यायक उत्कृष्ट कृति सभमे त एकरा स्थान छैक, ई पढ़ैत काल एक-दू स्थान पर वेश अश्रुपात भेल छल। लेखक जाहि भावकेँ ल' क' वस्तुस्थिति उपस्थित करैत छथि, पाठक यदि तादात्म्यरूपेँ ओकर अनुभव करथि त एना होइत छैक।

समय भेटला पर 'विप्रदास'क मैथिली अनुवाद कएल सिन्द्रीक लग 'गोआइ' नामक स्थानमे। पाण्डुलिपिमे समाप्त होएबाक तिथि अछि ३१-१-१९५२ ई०, वसंत पंचमी १३५९ साल। ओही वर्ष 'बा' मुनेर मेये'क (बाभनक बेटी) सेहो अनुवाद कएल जे छोट रहलासँ पहिने १९५४ ई० मे मिथिलामिहिरमे धारा-वाहिक' रूपेँ, पाछाँ १९६७ ई० मे पुस्तक रूपेँ प्रकाशित भेल।

बहुत काल वितलो उत्तर शरत् बाबूक एहि जन्म-शतवार्षिकी-वर्षमे 'विप्रदास' (मैथिली अनुवाद) प्रकाशित भए रहल अछि, हमरा लेल ई हर्षक विषय। शरत् बाबूक एहि दूनू उपन्यासक कथा-वस्तुकेँ मैथिल-सामाजिक-परिवेशमे बढ़िञा जेकाँ उतारल जा सकैछ—तेँ एकर अनुवाद-कार्य मे हम प्रवृत्त भेल छलहुँ। 'बाभनक बेटी' मे त उच्च कुलीन-भलमानुषक सभहिक बहु विवाह प्रथाक कुरीति पर आक्षेप छल, विप्रदासमे अछि एक सम्भ्रान्त परिवारक कतिपय नीक लोकक—पुरुष एवं स्त्रीगणक चरित्र-चित्रण, हुनक आदर्श, आचार विचारक अद्भुत विश्लेषण। भारतीय साहित्य सर्जनमे उदात्त चरित्र चित्रणकेँ महत्त्वपूर्ण मानल गेलैक अछि। जकरा विषयमे पढ़ि कए उदात्त भावना होइक—मनमे होइक—'Here was a man'—ई एक व्यक्ति छलाह।

ज्ञातव्य जे शरत् बाबूक ई कृति पूर्ण प्रौढ़ावस्थाक थिकन्हि —-विप्रदास' प्रथम प्रकाशित भेल १९३५ ई० फरबरीमे, जखन कि हिनक मृत्यु भेल छलन्हि ६१ वर्षक अवस्थामे, जनवरी १९३८ ई० में।

मूल उपन्यासक यथासाध्य अविकल अनुवादक चेष्टा करैत एहिमे हम आवश्यकतानुसार 'ओझाजी' और 'मिशरजी' तथा मैथिल समाजमे जे पारस्परिक सम्बोधनक रूप व्यवहृत अछि, से राखल अछि। आशा करैत छी, मैथिल पाठक लोकनिकें अपन सामाजिक परिवेश बूझि पड़तन्हि।

एहि सभ बातक ध्यान रखैत, ई अनुवाद कतेक सफल भए सकल, तकर विवेचन विज्ञ पाठक करताह। अन्तमे हमर नम्र निवेदन—जेना पहिने 'बाभनक बेटी' मे उल्लिखित अछि—ई जे एहिमे जे अधलाह बूझि पड़ए, जे त्रुटि बुझना जाए ओ सभ हमर अक्षमता, मूल लेखकक नहि। निकहा त सभ हुनक थिकन्हिहें।

पटना

आषाढ़ (प्रथम) शुक्ल दशमी रबि, श्री उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

१३८४ साल,

२६-६-१९७७ ई०।

# विप्रदास

## १

बलरामपुर गामक रथ-यात्राक स्थानपर गृहस्थ आ' बोनिहार सभहिक एकटा 'मीटिंग' भेल। लगक रेलवे लाइनक कुली मजदूरक 'गैङ' से हो रविक छुट्टीक अवसर पाबि ओहिमे योगदान कए 'सभा'क मर्य्यादा-बृद्धि कएलक तथा कलकत्ताक कए गोट नामी वक्ता लोकनि आबि साम्प्रतिक असाम्य ओ अमैत्रीक विरूद्ध तीव्र प्रतिवादक संग बेश उत्तेजक वक्तृता देलन्हि। असंख्य प्रस्ताव पास भेल, आ' ओहि दिनक सम्मेलन 'वन्दे-मातरम्' सँ मुखरित ग्रामक परिक्रमा करैत शोभा-यात्रासँ समाप्त भेल।

बलरामपुर एक समृद्ध गाम। छोट पैघ कतेको सम्पन्न गृहस्थक आ' जमिन्दारक एतए वास। एक दिशि मुसलमान गृहस्थ सबहिक टोल; आ' ओहि सँ थोड़बे दूर पर दुसाध ओ डोमक बस्ती। 'भागीरथीक' एक गोट शाखा बहुत वर्ष पूर्व अर्ध-वृत्ताकार रूपमे गोटेक कोशक विस्तृत चर बना देने छलैक। एकरे कातमे एकरा सभहिक घर। एहि गाममे सभसँ पैघ धनी-मानी व्यक्ति छलाह—यज्ञेश्वर मुखोपाध्याय। चास-बास, जर-जमिन्दारी, तिजारतिसँ हुनक सम्पत्ति ओ लक्ष्मीकेँ प्रचुर कहबामे अत्युक्ति नहि। हुनक विशाल अट्टालिकाक सम्मुख पथ पर जखन ई शोभा यात्रा लाल पताकामे लिखल नाना प्रकारक 'वाणी' ('स्लोगन') ओ विपुल चीत्कारसँ कृषक-मजदूरक जय जयकार करैत जाइत छल, तखन दोमहलाक ओसारा पर एक दीर्घाकृति, बलिष्ठ गठनक प्रौढ़ व्यक्ति निशब्दे ओकरा सभकेँ देखैत छलाह। अकस्मात् हुनका पर दृष्टि पड़ैत देरी

विक्षुब्ध जनताक उद्वेलित कोलाहल जेना एके क्षणमे बन्द भए गेल। आगाँमे जे कए गोट नेता लोकनि छलाह ओ सभ चकित भए इतस्ततः देखैत, कतेकोक दृष्टि-पथक अनुसरण करैत—ऊपर दिशि मुँह उठओलन्हि, ताबत ओ व्यक्ति क्रमहि भीतर चल गेलाह। नेता लोकनि पुछलथीन्ह—के ?

अनेको दाबल कण्ठेँ उत्तर देलकन्हि—विप्रदास बाबू !

के विप्रदास ? गामक जमिन्दार कि ?

के एक गोटे बाजल—हँ।

नेता लोकनि शहरक लोक, ककरो पैघ नहि बुझैत छथिन्ह। उपेक्षा भावेँ कहलथीन्ह—ओह्, इएह बात। आ तुरन्ते माथक ऊपर हाथ उठा उठा एक बेर फेर चीत्कार कएलन्हि—बाजू भारत माताक जय, बाजू—किसान मजदूरक जय, बाजू—बन्दे मातरम्। विशेष फल नहि भेलन्हि। बहुतो गोटे चुप्पे रहल, अथवा मोने मोन बाजल; जे कए गोट किछु सङ्ग देबो कएलकन्हि, ओकर क्षीण कण्ठ-स्वर वेशी ऊपर नहि उठलैक—विप्रदासक वरामदा पर हुनक कान मे पहुँचबो कएलन्हि कि नहि, ताहि मे सन्देह। नेत्ता सभ अपनाकेँ अपमानित बोध कएलन्हि। विरक्त भए बजलाह—ई एकटा गामक साधारण जमिन्दार; तकरे एतेक डर। ओएह सभ त हमरा सभक परम शत्रु थीक, सतत हमरा लोकनिक देहक रक्त-शोषण करैछ, हमरा लोकनिक असल अभियान त एकरे सभक विरुद्ध। ओ सभ त.......

उत्तेजित वाक्-प्रवाहमे सहसा बाधा पड़लन्हि। बहुतो पिजाओल शर तखनो हुनका लोकनिक तरकसमे राखल छलन्हि; प्रयोग करबामे विघ्न भेलन्हि।

के एक गोटे भीड़मे सँ आस्ते बाजल—हुनके भाए छथीन्ह।

ककर ?

एक पच्चीस-छब्बीस वर्षक युवक पताका ल' क' सभसँ आगाँ चलैत छल—ओ पाछाँ घूरि कए कहलकन्हि—ओ हमरे जेठ भाए थिकाह।

आ' एही व्यक्तिक आग्रह, उद्यम ओ अर्थ-व्ययसँ आजुक अनुष्ठान सफल भए सकल छल ।

ओ अपनेक ? अपनहुँ तखन एहिठामक जमिन्दार छी ?

ओ युवक सलज्ज नत मुहे चुप रहल ।

## २

विप्रदास अपन बैसबाक कोठलीमे छोट भाएकेँ बजबाए कहलथीन्ह—कल्हुका आयोजन अधलाह नहि भेल, चकमकी वेश । युद्ध-वाणी—नारा—सभ वेश बीछल ! ढोल झालि सभ अछि से मान' पड़त ।

द्विजदास चुप भेल ठाढ़ रहलाह ।

विप्रदास प्रश्न कएलथीन्ह—शोभा-यात्रा विशेष कए हमरहि उद्देश्यें हमरा नाकक साझा द' क' लए जाए गेल कि ? हमरा डर होएत तें कि ?

द्विजदास शान्त भावें उत्तर देलथीन्ह—मात्र अहीँ टा ले नहि, शोभायात्रा जाहि रास्ता बाटे ने जाउक, जकरा डर होएबाक छैक, ओकरा होएबे करतैक ।

विप्रदास कने हँसलाह । ई एकदम अवज्ञा भरल हँसी । कहलथीन्ह अहाँक भाइ ठीक ओहि जातिक मनुष्य नहि, ई बात अहाँक जुलूसक बहुतो लोक बुझितहिँ छल । नहि त जयकार सुनबाले हमरा ओसारा पर जाए कान पाथि क' ठाढ़ नहि होब' पड़ैत । घरे बैसल सुनि लितहुँ । अहाँ सभक रंग-विरंगक झँडा आ' लम्बा चौड़ा वक्तृतासँ हम डेराए बाला नहिं । वेश बुझै छी, झक-झक करैत बनौआ दातसँ लोककेँ किचकिचाएब पार लागत—काटल नहि जा सकैत छैक ।

जाहि कारणे काल्हि बहुतो गोटाक कण्ठ-रोध भेलैक से कोनो झाँपल नहि; आओर ओहि व्यंग पर द्विजदास मने मन वेश लज्जा बोध कएलन्हि ।

ई स्वभावतः शान्त प्रकृतिक लोक एवं भाएके अत्यन्त आदर करैत छथि। यदि कोनो आन प्रसङ्ग रहितैक त ई चुप्पे रहितथि—किन्तु जाहि बात ल' क' ओ खोँचाड़लथीन्ह अछि, से सह्य करब कठिन। मृदु कण्ठें कहलथीन्ह—भाइ बनाओल दाँत ल' क' जतेक होएबाक ततबे होएतैक, ई हम सभ जनैत छी, खाली अहीँ सभ ई नहि बुझैत छिऐक जे संसारमे असली दाँत बाला लोक सेहो अछि; जहिआ काटबाक समय अओतैक ताहि दिन ओकर अभाव नहि रहतैक।

ई उत्तर अप्रत्याशित। विप्रदास आश्चर्य-चकित भए हुनका मुँह दिशि देखि कहलथीन्ह—अछि ?

द्विजदास प्रत्युत्तरमे की एक गोट बात बाजए लागल छलाह—किन्तु ओ थम्हि गेलाह। डर विप्रदासक नहि, अकस्मात् दोआरिक बाहर माएक कण्ठ-स्वर सुनना गेलन्हि—तोँ सभ केवाड़मे पर्दा टाङि कए किए रखै छह ? कहू त, बिना छूने-तूने घर मे आएब से नइ होएत। घर-आङन बिलैँती फैशनसँ भरि गेल।

द्विजदास हड़बड़ाकए पर्दाकें उठा देलथीन्ह—आ' विप्रदास चौकी पर सँ उठि ठाढ़ भेलाह। एक प्रौढ़ा विधवा महिला भीतर प्रवेश कएलन्हि। वयस चालीस पार भेल छन्हि—किन्तु सौन्दर्य्यक सीमा नहि। कने दुबरि, मुह पर वधव्यक कठोरताक छाया पड़लन्हि अछि—ई लक्ष्य कएनहि बुझबामे आओत। छोट बेटा दिशि एक दम पीठ घुरा क' जेठ बेटाकें उद्देश्य करैत बजलीह—अँए हए विपिन, सुनै छी पतड़ा मे ऐहि बेरि एकादशी ल'क' गड़बड़ छै ? एना त कहिओ ने होइ छलै' ?

विप्रदास कहलथीन्ह—होएबाक त नहि चाही माए।

तोँ नैयायिक पंडितजीकें एक बेरि बजा पठबहुन त—हुनक की विचार छन्हि, कने बुझी। विप्रदास कने हँसि कए कहलथीन्ह—से कहा पठबैत छिअन्हि, किन्तु हुनक मतामतसँ की होअ वला ? तोरा कहुना ई बात बुझ' मे

जखन आबि गेलौए, तखन आब दूनू दिनमे एकोदिन तों जल-स्पर्श नहि करबें से जनै छी।

माए हँसैत कहलथीन्ह—झूठे उपास क' क' मरबा ले' कि ककरो सेहन्ता छै ? मुदा उपाय की ? ई कएलासँ पुण्य नहि, आ' नहि करब त अनन्त नरक। हँ हए—बहुआसिनि बजै' छलीह जे कागजमे छपलैए जे के एक पैघ पंडित कलकत्तामे बड़ सुन्दर भागवत बँचै छथि, आ व्याख्यान करै छथि। एक बेरि हुनका द' बुझह ने—की कएला सँ ओ ऐहि घरकें अपन पाएरक धूरासँ पवित्र करताह।

तोहर हुकुम भेनहि चेष्टा करब, माएकें।

किए, हुकुमक काज ? तोरा सभकें कि सुनबाक इच्छा नहि होइ छह ?—ओ कहिआ कत' कथा भेल छल ?

विप्रदास सहास्ये बाधा दैत कहलथीन्ह—तकरा त एखन, तिनिओ मास नहि पुरलै'ए' माए।

माए आश्चर्यियत भए कहलथीन्ह—खाली तीनि मास ? किन्तु तीनि मास की कम समय —अच्छा जे किछु होउक, बाउ, एहि बेरि आ'र नहि कलला सँ नहि मानबह। हमर दुनू मामी चिट्ठी लिखलन्हि अछि,—कैलाश, मान-सरोवरक दर्शन ले हम जएबे टा' करब।

विप्रदास हाथ जोड़ि कए कहलथीन्ह—दोहाइ माए, ई आदेश टा नहि कर। तोहर दूनू बेटामे एको गोटा क बिना संग गेने मामीक जिम्मा कए तोरा तिब्बत पठाएब नहि पार लागत। आर सभ क्षति सहि सकैत छी, किन्तु मातृ-वञ्चित होएब हमरा नहि सहल जाएत।

माएक दूनू आँखि छल-छल कर' लगलन्हि, कहलथीन्ह—डरक बात नइ हए। कैलासक रास्ता मे मरण होएत—एहन पुण्य तोहर माएक नहि। हम फेरि फीरि आएब ! किन्तु बेटामे—तों त हमरा सङे जाइए ने सकै छह विपिन, तोरे उपर त एते पैघ घरवारक सभ भार। आ' पाछाँ मे जे बेटा

ठाढ़ अछि तकरा ल' क' हम वैकुण्ठो जाइ ले' तैयार नहि छी। ब्राह्मणक बेटा भ' क' सन्ध्या, गायत्री त कहिआ ने छोड़लक, सुनलउहें कलकत्तामे खाएब, पीबक पर्य्यन्त नहि विचार करैए। आ' ताहि परसँ कालिह की कएलकए सुनल' हे ? विप्रदास नीक लोक जेकाँ भाव देखबैत कहलथीन्ह की—आर की कएलन्हि अछि, किछु त ने सुनलउहें।

माए कहलथीन्ह—जरूर सुनल' हे। तोहर आँखिकें धोखा देतह—एहन बुद्धि ओहि छौंड़ाक एखन नहि भेलैए। किन्तु एकर कोनो उपाय करह। ओ हमरे सभक खाएत, पहिरत आर हमरे रुपैया ल' क' कलकत्तासँ लोकआनि हमर प्रजा सभकें विगाड़त—भड़काओत ? ओकर कलकत्ताक खर्चा तों बन्द क' दएह। विप्रदास आश्चर्य्य भए बजलाह—से कि, ओ पढ़ताह नहि ?

माए कहलथीन्ह—काज कोन ? हमर ससुरक स्कूलक विद्यार्थी सभ जखन आबि क' बाजल जे विदेशी शिक्षासँ देशक सर्व्वनाश भेल—तखन ओकरा सभके तो डाँटि देलहक। आ जखन तोहर अपन छोट भाए ठीक इहए बात कहैत घूरै छह त तों नइ रोकै छहक। ई कोन नीक विचार कहओतैक, कह' त।

विप्रदास हँसैत कहलथीन्ह—तकर कारण छै माए ! स्कूयमे पास नहि कएलासँ ई नालिस करब हमरा नहि नीक लगैए, मुदा द्विजू जेकाँ एम० ए० पासक' विलैंती शिक्षा के जते ने केओ गारि पढ़ौक, हमरा अधलाह नहि लागत। माए कहलथीन्ह—मुदा ई बात ! हमरे रुपैया ल'क' हमरे रैयतिकें विगाड़नाइ ?

द्विजदास एते काल चुपचाप ठाढ़ छलाह, एको बातक उत्तर नहि देथीन्ह। एहि बेरि उत्तर देलथीन्ह—कलहुका सभा समितिक हेतु तोहर 'स्टेट'क एकोटा पाइ हम नहि दूरि कएलिऔए।

माए घरमे ढुकलाक बादसँ एको बेरि ने पाछू घूमल छलीह, एखनो ने पाछू देखलन्हि। विप्रदासेकें पुछलथीन्ह—त पुछहक त अलच्छाकें जे रुपैया लाएल कत' सँ ? कोनो कमाइ करै'ए ?

ठीक एही समय पर्दाक बाहर कने टुङ् टिङ् चूड़ीक शब्द भेलैक। विप्रदास कान पाथि क' ई सूनि, बजलाह—इहए त तोहर जबाव,माए। तोहर अपने घरक पतोहु जखन टाकाक जोगाड़ कए दैत छथीन्ह—तखन एकरा रोकल कोना जाए, कह त ?

माएके मन पड़लन्हि। कहलथीन्ह—हँ, ओ—से त ठीक। वहुआसिनिएक ई काज। पैघ लोकक बेटी, बापक जमिन्दारीसँ वर्षमे जे छ हजार रुपैया अबैत छन्हि, से हमरा मन नहि छल। ओएह अपन गुणगर देअओरकेँ रुपैयाक इन्त-जाम कए दैत छथीन्हि। कने चुप रहि कहलथीन्ह—तोहर विवाहक बात ल'क समधि जखन अपने आएल छलाह तखने हम 'मालिक' केँ कहने छलिअन्हि—राय-घरक बेटीकेँ अपना ओहिठाम अनबाक काज नहि। हुनके सभक वंशमे ने अनाथ राय विलाँएत जा' क' मेम विआहने छलाह। ओ सभ कि ने कए सकैए ? ओकरा सभक लेखेँ कोनो वस्तु कि असम्भव ?.......

विप्रदास तहिना हँसी-मुहे चुप रहलाह। ओ जनैत रहथि सतीक अदृष्ट मे ई बदनाम आब मेटाए बाला नहि। हुनक बापक कुल-सम्पर्कमे के एक अनाथ राय बङ्गाली मेम विआहने छलथीन्ह, ई बात हुनक माए किन्नहु ने विसरि सकैत छथीन्ह।

सब चुप अछि ई देखि ओ फेरि बजलीह—'अच्छा रहओ.......। बाबा कैलाश-नाथ एहि बेरि डोरी लगओलन्हि अछि, हुनक दर्शन क' फिरै छी, तखन एकर कोनो उपाय करब—ई कहैत ओ घरसँ बाहर चल गेलीह।

विप्रदास कहलथीन्ह—कि अओ द्विजू, माएकेँ ल' गेल पार लागत ? हुनका जखन झोँक अएलन्हिहेँ तखन रोकल होएत, बूझि नहि पड़ैए से।

द्विजदास तुरन्त अस्वीकार करैत कहलथीन्ह—अहाँ त बुझैत छी, हमरा देवता तेबतामे विश्वास नहि ; आ' से छोड़ि, हमरा सङ्ग जो बैकुण्ठो जाइले तैयार नहि, से त अहाँ अपने काने सुनलउ हेँ।

विप्रदास विरक्त भ' क' कहलथीन्त—हँ अओ पण्डित, सुनलउहें, अहाँ जा सकै छी कि नहि, से कहू ।

'हमरा एखन मरबोक फुरसति नहि अछि ।'— ई कहि द्विजदास आन कोनो प्रश्नक पहिनहि घरसँ बाहर भए गेलाह ।

विप्रदास निश्वास फेंकलन्हि, वजलाह—सएह त, एहने देशक काज जे माए कें सेहो नहि मानैए ।

एहिठाम माएक किछु परिचय देब आवश्यक । विप्रदासक ई सतमाए । हुनक अपन माएक मृत्युक गोटेक वर्षक वादे यज्ञेश्वर बाबू दयामयीकें विआहि घर अनने छलथीन्ह आ तहिआसँ हिनके (दयामयीक) हाथें ई मनुक्ख बनलाह । ई जे हिनक अपन माए नहि, सतमाए, से बात विप्रदास कतेक अवस्था भेलो उत्तर नहि बुझने छलाह ।

## ३

एहि घरमे द्विजदास सभसँ बेशी मानैत छलथीन्ह भौजीकें । हुनक सभ तरहक बाइली खरचाक टाका पैसा अबैत छलन्हि हुनके बक्सासँ । सती खाली सम्बन्धे हिसाबें हुसकासँ पैघ नहि छलथीन्ह, अवस्थो हिसाबें जेठि छलथीन्ह । तें अधिक काल ओ हुनका नाम ध' क' सोर करथीन्ह । ई ल' क' नेना मे द्विजू माए लग कतेक जे नालिस कएल करथि तकर ठेकान नहि ।

मात्र एगारह वर्षक अवस्थामे सती वधू रुपें एहि घर मे प्रवेश कएने छलीह—ई बूझि हुनक प्रति स्नेह, यत्नक सीमा नहि । सासु हँसि कए कहथीन्ह —सत्ये कि ? ई त बड़ अधलाह बात बहुआसिन, देओरकें नाम ल' क' कहब ।" सती कहथीन्ह—अधलाह की ? हम हुनकासँ कतेक जेठि छी ।

जेठि ? कतेक जेठि, कनिञा ?

हमर जन्म बैशाख मास आ' हुनकर भादवमे । माए सहास्ये

कहितथीन्ह—भादवे मास त थिकैक, ठीक हमरे मन नइ छल। एकरा बादो जँ ओ आब नालिश कर' आओत त ओकर कान मलि देबैक।

कचहरीमे हारि क द्विजूक खिसिआ कए चल गेला पर पुतोहुकें कोरा लग धीचि कए बैसा कए सासु सिखबैत कहथीन्ह—ओ नेना अछि किने, तें नइ बुझैए। लालबाबू कहलासँ बड़ खुसी होइए। बीच-वीचमे सएह कहबैक, की ?

सती राजी भए घाड़ टेढ़ कए जबाब देथीन्ह—अच्छा माए, बीच-बीच मे सएह कहबन्हि।

ओहि समय ओ छलीह बालिका; आब ओ छथि एतेक पैघ परिवारक गृहिणी। विधवा भेलाक बादसँ सासु अपन जप-तप ओ धर्न-कर्म ल' क' रहैत छथीन्ह—तथापि हुनक ओहि दिनक उपदेशकें पछाति काल सती बहुतो बेरि काजमे लगओलन्हि अछि, जेना आइ।

पहिलुक परिच्छेदमे ओहि घटनाक बाद प्रायः पन्द्रह सोलह दिन बीतल अछि। प्रातः काल सती अपन देअओरक पढ़बाक कोठरी मे पाएर रखैत सोर कएलथीन्ह—लालबाबू !

द्विजदास हाथ उठा' क' रोकैत कहलथीन्ह—रह' दिअ' भौजी, आओर खुसामद करबाक काज नहि ; हम करब।

—की करब, सुनी त।

—अहाँ जे हुकुम देब सएह। मुदा भाइक ई बड़ भारी अन्याय होइ छन्हि।

—अन्याय की भेलै कहू ने।

द्विजदास ओहिना खिसिआ क' कहलथीन्ह—हम जनै छी। एखने भाइक कोठरीक आगू बाटे अएलउहें। भीतरमे हुनकर, माएक, आ' अहाँक—तीनू गोटाक जे षडयंत्र होइ छल से हमरा कानमे गेलए। हुनका सभकें तँ

साहस नइ छन्हि जे कहताह तेँ आहाँकेँ पकड़लन्हि अछि फाज करएबाले। कहू त ई जुलुम थीक कि नहि ?

सती हँसैंत कहलथीन्ह–अन्याय त नहि लालबाबू, ओ सभ बुझैत छथि जे हुनका लोकनिक कहैत देरी उत्तर आओत—हमरा मरबाक फुरसति नहि –किन्तु भौजीक कहला सँ द्वीजूक साध्य नइ जे नइ कहताह। द्विजदास घाड़ हिला क' कहलथीन्ह–इएह, एही ठाम त' हमरा झँझट होइए, आ एतहि ओ सभ पकड़लन्हि। मुदा की करबाक होएत ?

सती कहलथीन्ह-माए जइतीह कैलाश दर्शन कर' आ अहाँकेँ जाए पड़त हुनका सङ्।

द्विजदास कने काल चुप भए कहलथीन्ह—दू-तीनि माससँ कम नइ लागत। काजक कतेक क्षति होएत–से सोचलिऐए भौजी ?

सती स्वीकार कए कहलथीन्ह—क्षति त किछु होएबे करत। किन्तु नवीन स्थानो सभ त देखब। अपना दिशिसँ एकरा एकदम नोकसान त नहि कहि सकैत छिऐ। दोहाइ लाल बाबू ने, फेरि आपत्ति नहि करबै। द्विजदास कहलथीन्ह—अहाँ जखन आदेश दैछी तखन आर आपत्ति नहि करब, संगे जएबन्हि। मुदा माए ओइ दिन जे भाइकेँ कहलकन्हि जे हमर कलकत्ताक पढ़बाक खर्चा बन्द क' दैले।

सती सहास्ये कहलथीन्ह—ई एकटा क्रोधक बात। किन्तु हुकुम जे देलथीन्ह से माए केँ छोड़िक' आओर केओ नहि। इहो बात अहाँके बिसरक नहि चाही।

द्विजदास उत्तर देलथीन्ह—बिसरलउँहेँ नहि भौजी। किन्तु ओइ दिनसँ हमहूँ की स्थिर कएलउँहेँ से, बुझलउँ ? हम एकसर लोक, बिआह करबाक ने हमरा कखनो काज होएत, ने सुयोग भेटत। तेँ खर्च साधारण। आवश्यक भेला सँ 'ट्यूशन' क' क' खाएब, किन्तु हिनका सभहिक 'इस्टेट'सँ एको पाइ

कोनो दिन नइ मङबन्हि ।

सती फेरि हँसि कए कहलथीन्ह — मङबाक काज नहि पड़त लालबाबू, अपने हाथमे चल आओत । आ' सेहो यदि नहि आओत, त अहाँकें कहिओ विद्यार्थी पढ़एबाक काज नहि पड़त । कम स कम हमरा जिबैत नहि । ओ भार हमरा उपर रहल ।

ई विश्वास द्विजूक मोन मे स्वतःसिद्ध जेकाँ छलन्हि, क्षणक हेतु हुनक पपनी नोरसँ भारी भए गेलन्हि । किन्तु ओहि भावकें जल्दीसँ हटा क' पुछलथीन्ह—ई सभ कहिआ यात्रा करबाक स्थिर कएलन्हिहें ? जहिआ करथु, अन्तमे हमरे संगे जाए पड़ल । आ, माए ओहि दिन स्पष्ट बाजल छलि जे हमरा सन म्लेच्छाचारी कें संग ल' क' ओ बैकुण्ठो जएबा ले तैयार नइ । एकरे कहै छै अदृष्टक परिहास, नइ भौजी ?

सती एहि अनुयोगक जवाब नहि दए चुप्पे रहलीह ।

द्विजू कहलथीन्ह, से जे होअओ, अहाँक आज्ञाकें अमान्य नहि करब, हुनका सभकें निश्चिन्त भ' जाए कहिऔन्ह ।

सती हँसलीह, कहलथीन्ह—हमरा पठा क' ओ सभ निश्चिन्ते छथि । घरसँ बहार होइत देरी अहाँक भाइक बात कानमे गेल—ओ जोरसँ माएकें कहै' छलथीन्ह—अइ बेर आब निश्चित भ' क' यात्राक ओरिआओन कर ग' माए—जिनका दूतकाजमे पठाओल गेलए हुनका आगू बच्चूक तर्क नहि चलतन्हि, मूड़ी गाड़ि कए सभटा स्वीकार करथुन्ह से देखिहें ।

सुनि कए द्विजदास किछु क्षण क्रोधें क्षुब्ध रहि बजलाह—अस्वीकार नहि कए सकैत छी, ई बुझि कए जे ओ सभ ई फन्ना रचलन्हिहें, जे स्त्री-गणक मोनक ई झोंककें कोनो रूपें चरितार्थ करबाक भार हमरे उपर पड़त —तखन अहाँ हमरा दिशिसँ भाइकें ई बात कहि देबन्हि जे एहि ले' हुनका सभ कें लज्जा होएबाक चाहिअन्हि ।

सती कहलथीन्ह—कहि क' कोनो लाभ नहि लालबाबू। जमिन्दार भ' क' जे प्रजाक रक्त शोषण कए खाइत अछि, इएह ओकर नीति; अपन काज करएबाले हिनका लोकनिकें लज्जा बोध नहि होइत छन्हि। सम्पत्तिक आधा मालिक भइओ क' जखन अहांकें हिनका 'इस्टेट' सँ एको पाइ लेबा मे संकोच बोध होइए' तखन एक दिशि जहिना हमरा दुःख होइए, तहिना दोसर दिशि खुशीसँ मोन भरि जाइए। अहाँक नाम ल' क' हम माएकें आश्वासन देलिअन्हि जे हिनका जएबामे कोनो गड़बड़ नहि होएतन्हि, अहाँ संङे जएबन्हिहें। तीर्थसँ नीकें नीकें फिरि आउ, जतेक अहाँक नोकसान होएत हम सभ पूरा क' देब।

द्विजदास निश्शब्दें चौकी परसँ ऊठि भौजीक पाएर छूबि फेरि बैसलाह।

सती बजलीह—एते काल अनके ओकालति करैत समय गेल, एखन एक अपन अनुरोध अछि।

द्विजदास हँसिकए कहलथीन्ह—अहाँक अपन ? ई टा नहि होएत, भौजी।

सती अपनहुँ हँसलीह—बजलीह—आश्चर्य नहि, लाल बाबू। डर होइए सुनि क' 'नहि' ने कहि बैसी।

—बेश त' बाजि क' देखू ने।

सती कहलथीन्ह—हमरा एक म्लेच्छ पित्ती छथि। अपन नहि, बाबूक पितिऔत भाए, ओ विलाँएत गेल छलाह। तखन ई खबरि हिनका सभहिक कानमे पहुँचलासँ हमर अइ अङनामे ढूकब संभव नहि होइत। माएक मुहें ई बात सुनलउँहें ?

—बहुत बेरि; एतेक जे दिनमे एक बेरि क' यदि हिसाब राखी त' पन्द्रह-सोलह बर्ष मे अन्ततः पाँच छओ हजार बेरि भेल होएत।

सती हँसि कए कहलथीन्ह—हमरो अन्दाज सएह अछि। काका रहैत छथि बम्बइमे, हुनक एक गोट बेटी ओतहि पढ़ै छन्हि। अगिला बर्ष ओ विलाँएत जाएत आगू पढ़बा' ले'। अहांके जा क' ओकरा आन' पड़त।

—कत' ? बम्बईसँ ?

हँ, ओ लिखलकए जे एकसरो आबि सकैए किन्तु एते दूर एकसरे आब' ले' कहबाक हमरा अपनहि ने साहस होइए।

—हुनका पहुँचा देबाले' केओ ने छन्हि ?

—नइ, काकाकेँ छुट्टी नहि होएतन्हि।

द्विजदास हठात् स्वीकार नहि कए सकलाह ; सोचए लगलाह।

सती कह' लगलथीन्ह—हमर बिआह जहिआ भेल तखन ओ छओ-सात बर्षक बच्चा छलि। तकरा बाद एक बेरि ओकरासँ कलकत्तामे भेँट भेल' तखन ओ एन्ट्रेन्स पास क' क' आइ० ए० मे पढ़ब शुरू केने छलि। तकरा कए वर्ष भेलैक। हम ओकरा बड़ मानैं छिऐ। लालबाबू, यदि कष्टो क' क' एक बेरि ओकरा आनि दितहुँ। अएबाक हेतु ओ अधिक काल चिट्ठी लिखैए किन्तु कोनो सुयोग नहि भेटैए।

द्विजदास कहलथीन्ह—किन्तु एखने कोना सुयोग भेल ? माए मानि गेलए कि ?

सती एहि प्रश्नक सहसा उत्तर नहि द' सकलथीन्ह—आ नहि द' सकलथीन्ह—तेँ वास्तव मे एक तरहक व्याकुलता हुनका मुँह पर अएलन्हि। कने थम्हि क' कहलथीन्ह--एखन तक नीक जेकाँ कहलन्हिहेँ नहि, अपन तीर्थयात्रा ल' क' तेहन झूमल छथि जे, आशा करै छी आपत्ति नहि करतीह। आ' से छोड़ि, जखन ओ अपने एतए नहि रहतीह—तखन ओ दू-तीन मास एतए बढ़िआ जेकाँ रहि सकत।

द्विजदास मोने-मोन बुझलन्हि—सासुक हुकुम नहिओ भेटने ई अपन प्रवासी बहिनिकेँ एतए एक बेरि आन' चाहैत छथि। पुछलथीन्ह—अहाँक काका कि ब्रह्म समाजक छथि ?

सती कहलथीन्ह—नइ ! किन्तु हिन्दुओ समाज हुनका सभकेँ अपन कहि क' ग्राह्य नहि करै छन्हि। ओ सभ ठीक कत' जे छथि, से प्रायः अपनो ने बुझै छथि। अहिना दिन कटल जाइ' छन्हि।

ई अवस्था बहुतो लोकक। द्विजू मने मन क्षुण्ण भए कहलथीन्ह—जाए ले' हमरा आपत्ति नहि, हुनका एत' अनिऔन्ह। माएकेँ त' चिन्हिते छिऐ, होएत त' खाएब-पीब, छूआ-छूति ल' क' तेहन गोटेक काण्ड क' बैसत जे बहिनि केँ ल' क' अहाँक लज्जाक सीमा नइ रहत। अइसँ बरू हमरा सभ केँ चल गेलाक बाद हुनका अनबाक व्यवस्था करू, सब तरहेँ नीक होएत।

ई जे नीक विचार से सती अपनहुँ जनैत छलीह—किन्तु जखन अ. अपनहि चिट्ठी लीखि कए अएबाक बात उठओलथीन्ह अछि, तखन कोन रूपेँ जे अनिश्चित भविष्यक सम्भावना पर विचार करैत चिट्ठीक उत्तर देथीन्ह—से नहि सोचि सकलीह। एहि हेतु संकोच वा दुःखे कि कम ? कहलथीन्ह---अपन बहिन थीक तेँ नहि कहै छी, लाल बाबू, मुदा ओइ बेरि गोटेक मास तक ओकरा कलकत्तामे अत्यन्त लगमे पाबि नीक जेकाँ बुझलहुँ जे रूप आ गुणमे एहन कन्या संसार मे दोसर आओर नइ। बाहरसँ ओकरा लोकनिक आचार-विचार जेहन देखाउ, माए यदि दुइओ दिन ओकरा लगमे देखथीन्ह—त म्लेच्छ कन्या सभहिक प्रति हुनकर धारणा बदलि जएतन्हि।

द्विजदास कहलथीन्ह—मुदा इएह दू टा दिन जे माएकेँ देखाएब कठिन। ओ देखहि ने चाहती जे, इहो त सत्य।

सती कहलथीन्ह—मुदा ओकर रूप सेहो त नजरि पड़तन्हि। आँखि मूनि क' ई त नहि ने अस्वीकार करथीन्ह। ओहो त एक तरहक परिचय थिकैक। द्विजदास चुप रहलाह। सती कहलथीन्ह—हमर ई निश्चित

विश्वास जे वन्दनाकें संसारमे केओ अवहेलना नहि कए सकैत छैक। भाइओ ने।

द्विजदास विस्मयापन्न भए जिज्ञासा कएलथीन्ह—वन्दना ? ई नाम जेना कतहु सुनने छी, भौजी—। कतहु जेना देखने छी, अच्छा थम्हू त, अखबार मे त' ने—जेना एकटा फोटो...............

ई बात समाप्त नहि भए सकलन्हि—नौकरनी बजैत घरमे ढूकल—कहलकन्हि---बहुआसिनि, अहाँ अइ ठाम छी ? अहाँक काका अपन बेटी संङे ब्रम्बईसँ अएलाहे। बाहरमे केओ ने छै--बड़को मालिक ने छथीन्ह। सरकार बाबू हुनका सभकें ल' क' निचला कोठरीमे बैसओलथीन्हहें। ई घटना एकदम अभावनीय ! 'ऐं की कहै छी ?' बजैत-बजैत सती बड़ी जोरसँ घरसँ बहार भए गेलीह। पाछाँ-पाछाँ द्विजदास गेलाह।

## ४

नितान्त साहेबी परिच्छद-विभूषित एक प्रौढ़ भद्र लोक कुर्सी पर बैसल छलाह, एवं एक बीस-एकैस वर्षक युवती हुनके लग मे ठाढ़ि देवाल मे टाङल एक वेश पैघ जगद्धात्री देवीक चित्रकें अत्यन्त मनोयोग-पूर्वक देखि रहल छलीह। हुनको पहिरना जे छलन्हि से निछक्क मेम साहेब जेकाँ नहि होउन्ह, बङ्गालियो स्त्रीगण जेकाँ हठात् मन नहि मानत। विशेषत: देहक रंग जेना उज्जरक रेखाक सटले सन—एहन गोर। देहक गठन ओ मुहक श्री अनिन्द्य सुन्दर। देअओरक लग सती जे एखने गर्व्व-पूर्वक बजत छलीह—जे हुनकर रूप पर त सासुक दृष्टि पड़बे करतन्हि,—वस्तुत: ई बात सत्य। बहिनिक एहन रूप ल' क' अहंकार छजि सकैत छैक। घरमे अबैत देरी सती पाएर छूबि क' प्रणाम कएलथीन्ह—कका, बेटीक घरमे एतेक दिन पर पाएरक

धूरा देलहुँ !

भद्र लोक ऊठि ठाढ़ भए सतीक माथ पर हाथ फेरैत आशीर्वाद देलथीन्ह; हँसैत कहलथीन्ह—हँ हए बूढ़ी, पड़लह पाएर। कहिआ कोन कालमे काकाकेँ नोत देलहुन्ह कि कहा पठओलहुन्ह जे अस्वीकार कएलथुन्ह। कहिओ कहलह अबैले? अपनहि जखन चल अएलहुँ तखन बड़का उपराग देब' बैसलीहे—पाएरक धूरा पड़ल? द्विजदासक प्रति आँखि पड़ैत देरी जिज्ञासा कएलथीन्ह— ई के? सती पाछाँ देखि कहलथीन्ह—ओ हमर देअओर--द्विजू।

द्विजदास दूरहि सँ नमस्कार कएलथीन्ह। वन्दना बहिनिकेँ प्रणाम कए हँसैत बजलीह—ओ, इएह थिकाह? जनिक कारणे जमिन्दारी जएबा पर अछि, हमरा चिट्ठी लिखने छलउहेँ—कुल, गोत्र, त्यागी—महान् स्वदेशी!

---एहन बात तोरा कहिआ लिखलिअह?

--इएह त ओहि दिन। एतबे दिनमे बिसरि गेलहुं?

---सती गरदनि हिलाक' कहलथीन्ह---नहि, ई सभ नहि लिखलिअह---तोरा मन नहि छह।

द्विजदास एते काल संकोच वश एक रूपेँ सञ्च भेल छलाह—अनात्मीय परिचित युवती स्त्रीगणक सम्मुख की करब उचित, की बजला सँ नीक होएत---किछुओ स्थिर नहि कए सकल छलाह। एहिसँ पहिने कहिओ संयोगो ने भेटल छलन्हि---किन्तु एहि नवागत तरुणीक आश्चर्य्य स्वच्छन्दता सँ ओ जेना एक तरहक नवीन शिक्षा पओलन्हि। अपन अकारण ओ अशोभन जड़ताकेँ तत्क्षण हूँटाए, ओ अपूर्व्व आनन्दक स्वाद ग्रहण कएलन्हि। स्त्री-गणोंकेँ जे शिक्षा ओ स्वाधीनताक प्रयोजन--ई बात ओ बुद्धिसँ सभ दिन स्वीकार करैत छलाह—एवं भाए आ, माएक सङ्ग शास्त्रार्थ करैत काल इएह युक्ति देथीन्ह जे ओहो सभ मनुष्य थीक, आ तेँ शिक्षा ओ स्वाधीनताक

हेतु स्त्रीगणेकेँ दावी छैक। मूर्ख बना' क' ओकरा घरमे बन्द करब अन्याय ! किन्तु आइ एहि अतिथि युवतीक आकस्मिक परिचयसँ ओ क्षण भरिमे पहिले पहिल बुझलन्हि एहि सभ मामूली दाबी-ताबीक युक्तिक अपेक्षा बड़का बात ई जे पुरुषक चरम ओ परम प्रयोजनक हेतु रमणीक शिक्षा ओ स्वाधीनताक आवश्यकता। ओकरा वञ्चित राखि कए पुरुष जे कतेक अपना केँ वञ्चित करैत अछि, ई सत्य एतेक स्पष्ट रूपेँ ओ एहिसँ पहिने कहिओ नहि देखने छलाह। ओहि महिलाकेँ उद्देश्य कए हँसैत कहलथीन्ह —अहीँक कहब ठीक, भौजी बिसरि गेलीहे। किन्तु ई ल' क' वाद-विवाद कएलासँ लाभ नहि। ई बाजि, ओ (छद्म गाम्भीर्य सँ) मुह गम्भीर कए बजलाह—भौजी, अहीँक जोरेँ तँ हमरा जोर, आ अहीँक चिट्ठीमे ई बात ? वेश, हमरा अहाँ सभ छोड़ि दिअ', हमहूँ अपन समस्त अधिकारक परित्याग करै' छी। अहाँ लोकनिक जमिन्दारी अक्षय रहओ, अहाँ एक बेरि स्पष्ट मुहे आदेश करू, हम आइए ओकीलकेँ बजा सभ लीखि-पढ़ि दै' छी। इएह गवाह रहथु, देखू जे हम ई क' सकै छी कि नहि !—साहेब मुह उपर उठा' देखि कए कहलथीन्ह—तोहर देओर बड़का भारी स्वदेशी, नहि सती ?

सती कहलथीन्ह—हँ, बड़का भारी।

—तोरा कहलेसँ लीखि पढ़ि कए अपन हिस्सा जमिन्दारी छोड़ि देथुन्ह ? सती मूड़ी हिला कहलथीन्ह—ओ खूब खुशीसँ कए सकैत छथि। हुनक असाध्य किछु नहि।

नन्दना कौतुहल दमन नहि कए सकलीह—जिज्ञासा कएलथीन्ह—सत्ये कहै' छिअन्हि ? सभ दिन ले' ई सभ त्याग कए सकैत छी ?

द्विजदास क्षण भरि हुनक मुह पर दृष्टिपात कए कहलथीन्ह—सत्ये कए सकैत छी। ओहिसँ हमरा एको रत्ती लोभ नहि अछि। देशक पन्द्रह आना लोककेँ यदि एको साँझ भरि पेट खेनाइ नहि भेटै छै—भरि दिन मेहनति कएलो उत्तर नहि—आ' विना परिश्रम कएने हमरा सभकेँ सभदिन पोलाओ

पूरी भेटए—ओ पापक अन्न हमरा नहि रुचैए—गराँ लाग' लगैए। ओ विषय सम्पत्ति हमर गेनहि नाक। तखन देशक आन पाँच गोटे जेकाँ खटिक' खएने बाँचब। भेटत तँ बढ़िञा, नहि जूरत त ओकरे सभ सङे उपास क' क' मुइला सँ प्रायः गोटेक दिन स्वर्गो जाएब, मुदा एहि रास्तासँ एकर कोनो आशा नहि।

वन्दना निष्पलक दृष्टिसँ देखैत ई सभ सुनैत छलीह, बात समाप्त भेलो पर किछु नहि कहलथीन्ह, खाली हुनका मुहसँ एक निश्वास बहार भेलन्हि।

सती हठात् जेना प्रकृतिस्थ भेलीह—। लाल बाबूक ई छोड़ि क' जेना आर दोसर कोनो बाते ने। बजैत-बजैत एहन कण्ठस्थ भ' गेलन्हिहेँ—कहलथीन्ह—ई पुरना वक्तृता पाछाँ देब लाल बाबू, बहुत समय भेँटत। काका केँ प्रायः एखन तक हाथो पाएर ने धोल भेलन्हिहेँ। वन्दना, चल' हए ऊपर जा कए अपन नूआ-तूआ बदलह ?

'साहेब' जिज्ञासा कएलथीन्ह—हमर जमाए—ओझाजी कत' छथि, नहि देखै' छिअन्हि—।

सती कहलथीन्ह—ओ भिनसरे एकटा जरूरी काजे बाहर गेलथीन्ह, अबैत देरी हेतन्हि बुझि पड़ैए।

बन्दना पुछलथीन्ह—बहिन, अहाँक सासुकेँ त' नहि देखै' छिअन्हि, अङने मे छथि किने ?

सती कहलथीन्ह—हँ' एखन तक छथिहे, मुदा जल्दीए कैलास मानसरोवरक तीर्थ-यात्रा करतीह। सभ दिन भिनसुरका पहर त' खाली पूजे-पाठमे लागलि रहैत छथि ! आर कनेक कालक बाद हुनका देखबहुन।

वन्दना पुछलथीन्ह—ओ बहुत बेशी धर्म्म-कर्म्म मे लागलि रहैत छथि ?

सती कहलथीन्ह—हँ।

---विधवा भेलाक बाद सुनैछी घर संसार किछु नहि देखै' छथीन, की सत्ये ?

--सत्ये हुए। सभ टा हमरे देख' सुन' पड़ैए। वन्दना उत्सुक भए जिज्ञासा कएलथीन्ह---ओ त' अहाँक सत-सासु छथि, बहिन।

सती हंसि कए कहलथीन्ह---कहिओ ई बात देखलउहें त' नहि, भ' सकैए लोक सभ झूठे कहैत हो।

द्विजदास उत्तर देलथीन्ह---वास्तव मे मिथ्ये बजैए। कारण सत-सासु भेला सँ--भाइक सतमाए किने ? झूठ बात। सतमाए छथि परन्तु भाइक नहि, हमर। अच्छा से एखन रहओ, स्नान जलखइक बाद ओहि वस्तुक आलोचना पाछाँ करब---एखन ऊपर चलू। अच्छा हम देखैत छिऐ भौजी, आर देरी नइ करू, हिनका सभकें नेने अबिऔन्ह। ई बाजि ओ हिनका सभहिक हेतु इन्तजाम कर' जाइत छलाह कि एहि समय माएकें देखि ठमकि क' ठाढ़ भए गेलाह।

अधिक सम्भव दयामयी खबरि पाबि पूजे परसँ उठि चल अइलीह अछि। वयस बेसी नहि छन्हि, एहि कारणे, विधवा भेलाक बादो ओ सभ कोनो अनात्मीय पुरुषक सोझाँ नहि होइत छलीह---आड़सँ बात करैत छलीह। किन्तु आइ एके बेरि बीच घरमे आबि ठाढ़ि भेलीह। साड़ी कपार पर तक घीचल छलन्हि, किन्तु मुहक सभ भाग देखाइत छलन्हि।

"हमर मझिला काका, माए। आ, ई हमर बहिनि, वन्दना।" ई बाजि सती लग आबि हठात् सासुके' प्रणाम कएलन्हि। एहन अकारण प्रणाम करबाक प्रथो नहि, आ ने केओ एना करैए। दयामयी प्रायः मोने मोन आश्चर्य्यित भेलीह, मुदा हुनका (पुतहुक) उठिकए ठाढ़ि होइत देरी, स्नेह ओ यत्नपूर्वक हुनक चिबुक स्पर्श कए आङुरक प्रान्तभागक चुम्बन करैत आशीर्वाद देलथीन्ह—किन्तु वन्दनाक प्रति, आँखि जाइत देरी हुनक दृष्टि रुक्ष भए गेलन्हि। बहिनिक देखा देखीसँ ओहो लग आबि प्रणाम कएलथीन्ह, मुदा ओ (दयामयी) स्पर्श नहि कएलथीन्ह–प्रत्युत् बूझि पड़ैछ, स्पर्श बँचएबाक हेतु, एक डेग पाछू हँटि गेलीह। —खाली अस्फुट स्वरें बजलीह निके रहू।

फरि कहलथीन्ह—समधि, नमस्कार। हमर बेटा पुतहुक भाग्य जे हठात् हिनकर पाएरक धूरा घरमे पड़ल।

भद्र लोक प्रति-नमस्कार कए कहलथीन्ह---कतेक कारणे समय नहि भेटैए, बुझलन्हि समधिन, मुदा बिना कहने सुनने जे एना भ' क' घम द' चल अएलिएन्हिहें से क्षमा करिहथि। आब दोसर बेरि जखन आएब, तखन ठीक जकाँ पहिनहिसँ खबरि द' देबन्हि।

दयामयी एहि सभ बातक उत्तर नहि देलथीन्ह—खाली कहलथीन्ह—एखन तक पूजा-पाठ खतम नहि भेलए—अच्छा'फेरि हम आएब। बहुआसिनि, हिनका सभकें ऊपर ल' जइऔन्ह खाए-पीबएमे किछु गड़बड़ ने होइन्ह। विपिन आबथि त' हमरा लग एक बेरि पठा देबन्हि। ई बाजि ओ विना कोनो आन दिशि देखनहि बाहर चल गेलीह। वाह्यतः प्रचलित सौजन्य मे विशेष किछु त्रुटि भेलन्हि से नहि, किन्तु भीतर-भीतर सभकें बुझि पड़लन्हि, शुभ्र ज्योत्सनाक बीचमे एक कारी मेघ खण्ड निर्मल आकाशक एक भागसँ दोसर भाग चल गेल।

## ५

वन्दना स्नानादिसँ निवृत्त भए बैसबाक घरमे प्रवेश कएलन्हि त' देखै' छथि जे पिता पहिनहिसँ तैयार भेल छथीन्ह। एक गोट बढ़िञा आराम कुर्सी पर बैसल, आँखिमे चश्मा लगओने संवाद पत्रमे मनोनिवेश कएने छथि। लगक एक छोट टेबुल पर एक गेँट एकबार राखल, आ लगमे ठाढ़ भेल द्विजदास तारीख मिला-मिला सरिआ कए रखैत छलथीन्ह। ट्रेनमे आ' काजक भीड़क कारणे कए दिनसँ ओ एकबार नहि पढ़ने छलाह। कन्या कें घर मे अबैत देखि आँखि उठाक' पुछलथीन्ह—बच्चा, हम सभ दू बजे वाली गाड़ी सँ चल जाएब, सएह बिचारलउँहें। तोहर मोन होअओ, त घुमिती काल तोराँ एहिठाम पहुँचा कए हम सोझे बम्बइ चल जाएब, की?

—कलकत्ता मे अहाँकेँ कए दिन लागत बाबू ?

—पाँच-सात दिन; दिन आठेक, ओइसँ बेसी नहि ।

—किन्तु तकरा बाद हमरा बम्बइ के ल'जाएत ?

—से व्यवस्था वढ़िञा जेकाँ भ'जएतह । ई बाजि, ओ कने काल सोचि कहलथीन्ह—अच्छा वेश, तोहर मोन यदि होअह त' इएह कए दिन तोँ सती लग रहह, फिरबा काल हम तोरा सङे बम्बइ नेने जएब्रह, की ?

वन्दना कनि काल चुप रहि कहलथीन्ह—अच्छा, बहिनकेँ पूछि लैत छिअन्हि ।

द्विजदास कहलथीन्ह—भौजी भनसाघर गेलीहे, देरी होएतन्हि, हाथक बण्डिल देखाक' पुछलथीन्ह—अहाँकेँ की दिअ' ?

एकबार ? ओ हम नहि पढ़ै छी ।

—एकब्रार नहि पढ़ै छी ?

—नहि । ओहिमे हमर धैर्य्य नहि रहैए । साँझू पहर बैसि कए ब्राबूसँ सभटा गप्प सूनि लै छी । ताहिसँ हमर भूख मेटा जाइए ।

—आश्चर्य्य ! हम सोचै छलहुँ, अहाँ अवश्ये बहुत बेशी पढ़ैत होएब ।

वन्दना कहलथीन्ह—हमरा विषयमे बिना किछु बुझनहि एना किए सोचलहुँ ? वेश विचित्र बात !

द्विजू अप्रतिभ भए रहल छलाह, वन्दना हँसिकए कहलथीन्ह—अहाँ लोकनि कतेक देशोद्धार कएलहुँ, आ' अंङरेज सभ ताहि सँ खिसिआ कए कतेक आँखि लाल पीअर कएलक, एहि सभमे हमरा एको रत्ती कौतूहल नहि, बाबूकेँ छन्हि ।

इएह देखिऔन्हि ने एकबार मे गड़ल छथि, वाह्यज्ञान शून्य सन नहि ।

साहेबक कानमे खाली 'बाबू' शब्द टा गेलन्हि—किन्तु आँखि उठएबाक समय नहि पओलन्हि—बजलाह—कने सबूर करह । कहै छलिअह—ठीक इएह जवाब हम तकै छलहुँ ।

बेटी मूह विचुका कए कहलथीन्ह—अहाँ सभटा ताकि-ताकि क' भरि दिन पढ़ैत रहू बाबू, हमरा एकोरत्ती हड़बड़ी नहि अछि। द्विजदासकेँ लक्ष्य कए कहलथीन्ह—बहिनिक मुहे सुनने छी, अहाँकेँ बड़ पैघ 'लाइब्रेरी' अछि। बरू ताही ठाम चलू, देखी अहाँकेँ केहन पोथी सभ अछि।

—चलू।

'लाइब्रेरी'क घर तिनमहला पर। वेश चाकर सिड़ही, उपर चढ़ैत द्विजदास कहलथीन्ह—लाइब्रेरी वेश पैघ अछि, किन्तु हमर नहि, भाइक। हम खाली देखैत रहै छी जे कत' कोन पुस्तक बहराएल, आ' आज्ञानुसार कीनि क' आनि दैत छिअन्हि।

—किन्तु पढ़ै' त छी अहीँ?

—से किछु नहि। पढ़ै' छथि ओएह, जिनकर लाइब्रेरी छिअन्हि। आश्चर्य शक्ति, आ' अद्‌भुत हुनकर मेधा-शक्ति।

—के भाइ?

—हँ। यूनिभर्सीटीक विशेष छाप-ताप हुनका देहमे नहि लागल छन्हि, ई बात सत्य; किन्तु बूझि पड़ैए, एहन विशेष पाण्डित्य, एहि देशमे कम्मे लोककेँ छन्हि। प्रायः नहिए। अहाँक बहिनोए ओ थिकाह, कहिओ हुनका देखलिएन्हिहेँ नहि?

नहि। केहन छथि देखबा मे?

—ठीक हमर उनटा। जेना दिन आर राति। हम कारी, आ हुनक वर्ण कांचन गौर! हुनक देहक जोर एहि परोपट्टामे नामी छन्हि—लाठी तरुआरि आ बन्दूक चलएबामे जोड़ा नहि। खाली माएकेँ छोड़ि हुनका मुँह दिशि देखि कए बात करबाक ककरो साहस नहि होइ छैक।

वन्दना हँसिकए कहलथीन्ह—हमर बहिनिओ के नहि?

द्विजदास कहलथीन्ह—नहि, अँहूक बहिनिओ के नहि।

—बड़ खिसिआह छथि, बुझि पड़ैए।

—नहि, सेहो नहि। अंगरेजी मे 'एरिस्टोक्रैट' कहिक' जे बात छैक, हमर भाइ प्राय: कोनो जन्म मे ओकरे सभहिक राजा छलाह। हमर धारणा धरि सएह अछि। खिसिआह कि नहि, से पुछलहुँ ? कोनो प्रकारेँ क्रोध करबाक हुनका अवकाशे ने होइ छन्हि।

वन्दना कहलथीन्ह—भाइक ऊपर अहाँक बहुत भक्ति अछि, नहि ?

द्विजदास चुप रहलाह। कने कालक बाद कहलथीन्ह—एकर जवाबक कहिओ यदि सम्भावना होएत, त पाछाँ कहिओ देब।

वन्दना सविस्मये कहलथीन्ह—एकर अर्थ ?

द्विजदास कने हँसि कए कहलथीन्ह—अर्थ यदि एखनहि कहि देब तखन ओ जवाब देबाक दोसर दिन प्रयोजन नहि रहत। आब ई रहओ। वेश पैघ लाइब्रेरी। जहिना दामी, अलमारी, कुर्सी, टेबुल आदि वस्तु सभ—तहिना सुश्रृँखलाबद्ध सभ बढ़िआ जेकाँ सजाओल। एक गोट देहातक गाम मे ई विराट काण्ड देखि कए वन्दना आश्चर्य्यित भए गेलीह। बम्बइ शहरमे एहि वस्तुक अभाव नहि, ओकर तुलना मे ई प्राय: किछु नहि। किन्तु एकटा गाम मे वास करैत, कोनो एक व्यक्तिक खाली अपना हेतु एतेक अधिक संचय-सत्ये विस्मयक व्यापार। पुछलथीन्ह—वास्तवमे एतेक किताब अहाँक भाइ पढ़ै छथि कि ?

द्विजदास कहलथीन्ह—पढ़ै छथि आ पढ़लन्हिहेँ। आलमारी बन्द नहि छैक, कोनो पोथी खोलि कए देखिऔक ने---हुनक पढ़बाक चेन्ह देख' मे आओत।

—एते समय कोना भेटै छन्हि ? दिन राति खाली इएह करै छथि कि ?

द्विजू घाड़ टेढ़ कए कहलथीन्ह—नहि। कम सँ कम हमरा धरि नहि बुझल अछि। से छोड़ि, हमरा सभहिक विषय सम्पत्ति बहुत बेशी नहि त एकदम कम्मो नहिए कहब। ओकर कत की होइ छैक, से सभ भाइक नजरि पर। समय भेटबाक रहस्य ठीक हमरो नहि भेटैए, अहीँ जेकाँ हमरो विस्मय कम नहि, तखन खाली इएह सोचैछी, जे संसारमे कहिओकाल एक—दू गोट

व्यक्ति जन्म लैछ, जे साधारण मनुष्यसँ बाहर। भाइ ओही जातिक लोक। प्राय: हिनका सभकें हमरा जेकाँ पढ़ह ने पड़ैत छन्हि। छापाक अक्षर अपनहि सँ दिमागि मे जा कए छाप पड़ि जाइ छन्हि। किन्तु भाइक बात एखन रहओ। अहाँ एखनो आँखिसँ नहि देखलिअन्हि हें, हमरा मुहें एकदिसाह आलोचना अतिशयोक्ति बूझि सकैत छी।

—किन्तु हमरा सुन' मे बड़ बढ़िञा लगैए।

—मुदा नीके लागब त' सभटा नहि। पृथ्वी पर हम सभ आ' अन्य साधारण दश जन छी। एक मात्र असाधारण व्यक्तिए यदि समस्त जगहकें छापि कए बैसथि, त' हम सभ कत' जाएब? भगवान मुह खाली अनके स्तव-गानक हेतु त' नहि देलन्हिहें।

वन्दना सहास्ये कहलथीन्ह—अर्थात् भाइकें छोड़ि एखन छोट भाइक किछु स्तवगान कर' चाहैत छी, सएह ने?

द्विजदास हँसलाह—कहलथीन्ह—चाहैत' छी, मुदा सुयोग कहाँ भेटैए। जे परिचित छथि से सभ काने ने देताह—अपरिचितक सोझाँ किछु गुनगुना सकैत छी। किन्तु साहस नहि होइए, डर होइए, अभ्यासक अभावक कारणें अपन स्तव अपना मुहे किछु गड़बड़ा ने जाए।

—नहिओ गड़बड़ा सकैए एक बेरि चेष्टा कए क' देखू। हमर विश्वास जे पुरुष सभ एहि विद्या मे आजन्म सिद्ध। आ'र देरी नहि करू, आरम्भ करू।

द्विजू माथ हिलाकए कहलथीन्ह—न, नहि होएत। ताहिसँ बरू, चुपचाप बैसि कए दू-चारि गोट पुस्तक देखू हम जा कए भौजी कें पठा दै छिअन्हि। ई कहि उनटा चल जएबा ले' उद्यत होइतहिँ वन्दना जोर द' क' बाजि उठलीह-बाह, अहाँ वेश छी, हमरा एकसरे छोड़िक' नहि जाएब। पुस्तक हम वहुत पढ़ने छी, ओकर काज नहि। अहाँ बरू, गप्प करू हम सुनै छी।

—कथीक गप्प।

—अहाँ अपन।

ताहिले' एकरत्ती सबूर करू, हम एखने नीचा जा कए एक खूब बढ़िञा वक्ता पठा दैत छी ।

वन्दना कहलथीन्ह—पठएबन्हि बहिनिकें किने ? तकर काज नहि । हुनका जे किछु कहबाक छलन्हि से चिट्ठिएमे लीखि देने छथि ? ओ सभ सत्य कि नहि, एखन सएह सुन' चाहै छी ।

द्विजदास कहलथीन्ह—नहि, सत्य नहि । अन्ततः बारह आना झूठ । अच्छा, अहाँ कि जल्दिए विलाँएत जाइत छी ?

वन्दना बुझलन्हि—ई व्यक्ति अपना प्रसंग मे आलोचना नहि चाहैत छथि—आओर जिद करबाक घनिष्टता एखन अशोभन होएत । कहलथीन्ह—बाबूक इच्छा सएह छन्हि । स्कूली शिक्षा ओही ठाम जाक' समाप्त कर' कहै छथि । अहूँ किए ने चलै छी ?

द्विजदास कहलथीन्ह—हमरा अपना आपत्ति नहि अछि, मुदा रुपैया कत' सँ आओत ? ओत' विद्यार्थी कें पढ़ओलोसँ काज नइ चलत, आ एतेक भार खाली भौजीक ऊपर नहि लाद' चाहै छिऐन्हि । ई आशा व्यर्थ ।

सूनि कए वन्दना हँसलीह । कहलथीन्ह—द्विजूबाबू, ई अहाँक खिसिआएल सन बात होइए । नहि त' जतेक सम्पत्ति अहाँ सभकें अछि ताहि सँ खाली अहाँ अपनेटा नहि इच्छा कएलासँ एहि गामक आधा लोककें संगे नेने जा सकैत छी । वेश, ओ व्यवस्था हम क' दै छी; अहाँ जएबा ले' तैआर होउ । द्विजू कहलथीन्ह—ई व्यवस्था होब' बला नहि । रुपया बहुत अछि ई बात सत्य, से सभ भाइक, हमर नहि, हम दये ऊपर छी, ईहो कहब अत्युक्ति नहि होएत ।

वन्दना फेरि हँसबाक चेष्टा करैत कहलथीन्ह—अत्युक्ति जे की, आ कोन; से हमहूँ बुझैत छी । किन्तु ईहो क्रोधक बात । बहिनिक चिट्ठीमे एक बेरि सुनने छलहुँ जे अहाँ जे सम्पत्ति अपने नहि अर्ज्जन कएने छी, से लेबाले' अहाँ अनिच्छुक । ई बात ठीक कि ?

द्विजदास कहलथीन्ह—यदि ठीको होअए, त' ई मनुष्यक धर्म्मबुद्धिक बात, क्रोधक नहि । किन्तु इएह सभटा कारण नहि ।

समस्त कारण कि नहि सुनि सकै छी ?

द्विजदास चुप रहलाह। वन्दना क्षण भरि हुनका मुह दिशि देखि आस्ते-आस्ते कहलथीन्ह—हम स्वभावतः कौतूहली नहि, आओर हमर ई आग्रह जे व्यर्थ आतिशय्य, से बोध हमरा अपनहुँ होइछ, किन्तु बोध भेनहिँ संसारक सभ प्रयोजन नहि खतम भए जाइत छैक,—अभाव मुह बाबिक' देखैत रहैत छैक। अहाँक विषयमे हम एतेक वेशी सुनने छी, जे अहाँ जएह घरमे पैसलहुँ, अपरिचित जेकाँ अहाँ बुझिए ने पड़लहुँ, जेना कए बेरि देखने रही। तहिना सहजहिँ चिन्हबामे आबि गेल। बहिनि एते बात कहने छथि, आओर हमरा नहि कहतीह ? आर किछु नहि होअओ, हुनके जेकाँ हमहू तँ एक आत्मीय लोक थिकहुँ ?

ई बात सूनि द्विजू अवाक् भए गेलाह, एवं अकस्मात् सभ किछु मोन पड़ि गेलासँ हुनका संकोच ओ विस्मयक अवधि नहि रहलन्हि। एकदम अनचिन्हार, वयष्का कन्याक संग निर्ज्जन मे एहि रूपेँ आलाप करबाक इतिहास ई प्रथमे; देबाल मे घड़ी दिशि देखलन्हि—एको घंटासँ बेशी बीति गेल छलनि एहि बीचमे यदि केओ हिनका सभकेँ तकने होइन्हि, त' एहि अङनामे जे एकर उत्तर की, से ओ सोचि नहि सकलाह। प्रायः भाइ अङना आबि गेलाह—माएक पूजा समाप्त भए गेलन्हि—हठात् देह मन हुनक व्याकुल भए एके बेरि सिड़ही दिशि पड़ाए चाहलकन्हि—किन्तु किछु नहि कए सकबाक कारणेँ तेहिना स्तब्ध भेल बैसल रहलाह।

—किए, बजलहुँ नहि ? बाजू ने।

द्विजू ध्यानस्थ भेलाह—कहलथीन्ह—यदि कहबो करब, त अहीँकेँ पहिले पहिल कहब; भौजिओकेँ आइ तक नहि कहने छिअन्हि।

—ओ अपन बुझारति करतीह—हम मुदा बिना सुनने....।

वाजब जे उचित नहि एहि विषय मे द्विजू केँ संशय नहि छलन्हि, किन्तु अनुरोधक उपेक्षा करब हुनका शक्तिक बाहर। हन-बुद्धि जेकाँ कने काल देखैत रहि, कहलथीन्ह—वस्तुतः बाबू हमरा किछुओ नहि दए गेलाह।

वन्दना चमकि उठलीह—इस, झूठ बात ! ई भइए नहि सकैए।

प्रत्युत्तरमे द्विजू माथ हिला खाली बुझओलथीन्ह—भ' सकैए।

—किन्तु ओकर कारण ?

—भ' सकैए बाबू केँ ई धारणा भए गेल छलन्हि; जे हमरा देलासँ हुनक सम्पत्ति नष्ट भ' सकै छन्हि।

—एहि धारणाक वास्तव मे कोनो कारण छलन्हि कि ?

—छलन्हि। हमरा बँचएबा ले' एक बेरि हुनक बहुत रुपैया नष्ट भेल छलन्हि।

वन्दनाकेँ मोन पड़लन्हि एहि आशयक कोनो बात एक बेरि सतीक चिट्ठीमे छलन्हि। जिज्ञासा कएलथीन्ह—बाबू 'उइल' क' गेल छथि ?

द्विजदास कहलथीन्ह—ई खाली भाइए जनै छथि। ओ कहै' छथीन्ह—नहि !

वन्दना निःश्वास फेँकि कहलथीन्ह—तखन नहि कोनो। हम सोचलहुँ, ओ वास्तवमे 'उइल' क' क' अहाँकेँ वंचित कए गेल छथि।

द्विजदास कहलथीन्ह—हुनक अपन इच्छाक अभाव नहि छलन्हि, किन्तु बूझि पड़ैए भाइ नहि कर' देलथीन्ह।

—भाइ नहि कर' देलथीन्ह ?—आश्चर्य्य !

—भाइकेँ चिन्हलासँ आश्चर्य्य नहि होएत। सन्ध्या भए गेल छलैक, हम कोठलीमे ए।टा पोथी तकै छलहुँ, घरमे तखनहु नौकर इजोत नहि देने छलैक। हठात् बाबूक बात कान मे गेल—। भाइ कहलथीन्ह—नहि। बाबू जिद कर' लगलथीन्ह—नहि किए विपिन ? हमर पिता-पितामह कालक सम्पत्ति हम नष्ट होब' नहि देब। परलोकोमे हमरा शान्ति नहि भेटत। तैओ भाइ जवाब देलथीन्ह—नहि, ई किन्नहुने भ' सकैए। बाबू कहलथीन्ह—तैओ

हम तोरे हाथमे सभ सम्पत्ति द' दै छिअह, यदि नीक बूझि पड़ह--दिहक, यदि से नहि बूझि पड़ओ, त' ओकरा नहि दिहक। एकरा बादो बाबू दू-तीनि वर्ष जिबै छलाह, किन्तु हम निश्चय जनै छी, ओ अपन विचार बदललन्हि नहि। वन्दना कम्मे जोर सँ पुछलथीन्ह—ई बात आओर केओ जनै छथि ?

—केओ ने। चोरो' क' सुनने छलहुँ। वन्दना बहुत काल चुपचाप बैसि अस्फुट स्वरेँ कहलथीन्ह—सत्ये, अहाँक भाइ अद्भुत् मनुष्य छथि। द्विजदास शान्त भावेँ खाली बजलाह—हँ, किन्तु एखन हम नीचा जाइ छी, हमरा बड़ देरी भ'गेल। अहाँ बैसल बैसल किताब पढ़ू, जतेक काल तक केओ बजाबए नहि।

वन्दना हँसि कए कहलथीन्ह—एखन किताब पढ़बाक रुचि नहि, चलू हमहूँ चलै छी। अन्ततः आठ-दस दिन त एहि ठाम छी, पोथी पढ़बाक बहुत समय भेटत। द्विजदास चलबा ले तैआर भेल छलाह—ठाढ़ भए पुछलथीन्ह—अहाँ अपन बाबू सङ्ग कलकत्ता नहि जाएब ?

—नहि। हुनका घुरती कालमे बम्बइ चल जाएब। द्विजदास कहलथीन्ह —वरु हम कहब, हुनका फिरबे काल अहाँ किछु दिन एत' रहि जइतहुँ। वन्दना कहलथीन्ह—पहिने सएह मोन छल, किन्तु एखन देखै' छी ओहि मे बड़ असुविधा। हमरा पहुँचएबा ले' केओ नहि; किन्तु अहाँ यदि तैआर होइ त अहीँक विचार सुनब।

—किन्तु हम त' तखन नहि रहब। एही सोम दिन माए केँ ल'क' कैलास तीर्थ यात्रा करब।

वन्दनाक दुनू आँखि आनन्द ओ उत्साह सँ उज्जवल भए गेलन्हि,—कैलास ? कैलास जाएब ? सुनै छिए ओ एक परमाश्चर्य वस्तु। अहाँ सङ्ग आओर के सभ जएताह ?

—ठीक नहि जनै छी, प्रायः आओरो केओ-केओ।

—हमरा सङ्ग नेने चलब ?

द्विजदास चुप रहलाह। वन्दना क्षुण्ण अभिमानक कण्ठें जोर कए हँसबाक चेष्टा करैत कहलथीन्ह—आ' एही हेतु, ठीक ओहि समय एहिठाम रहबाक परामर्श दैत छी ?

द्विजदास हुनका मुँह दिशि देखि शान्त भावें कहलथीन्ह—सत्ये, ओही हेतु परामर्श देलउहें। भौजी एते बात लिखलन्हिहें, खाली इएह टा खबरि नहि देलन्हि जे हमरा लोकनिक ई केहन पुरान हिन्दूक घर अछि ? एकर आचार-विचारक कठोरताक कोनो आभास चिट्ठी मे नहि भेटल ?

वन्दना माथ हिला कए कहलथीन्ह—नहि।

—नहि ? आश्चर्य्य ! कने थम्हि कए द्विजदास कहलथीन्ह—खाली हमरा छोड़ि अहाँक छुइल पानि पर्य्यन्त पीब' बाला लोक एहि घर मे केओ नहि भेटत।

—किन्तु भाइ ?

—नहि।

—बहिन ?

—नहि, ओहो नहि। हमरा चल गेलाक बाद। तैओ कहुना अहाँ प्रायः दू दिन एतए रहि सकै छी, मुदा माएक रहैत एको दिन अहाँ बुते रहल नहि होएत। वन्दनाक मुह फक भ' गेलन्हि—सत्य कहै छी ?

—सत्ये कहै छी।

ठीक एही समय निचला सीढ़हीसँ सतीक सोर करब सुनबामे अएलन्हि

—लाल बाबू ! वन्दना ! अहाँ दुनू गोटे करै' छी की ?

अबै' छी भौजी, बाजि द्विजदास जल्दीसँ विदा होएबा ले' उद्यत भेलाह; वन्दना पांशु मुँहें दाबल कण्ठें खाली कहलथीन्ह—एते बात हम किछुओ ने जनै छलहुँ। धन्यवाद !

# ६

वन्दना नीचा आबिकए देखलन्हि—पिता हृष्ट चित्तेँ भोजन पर बैसल छथीन्ह। ओही बैसक-खानामे एक गोट छोट टेबुलक ऊपर चानीक थारी बाटी मे भोजन देल गेल छन्हि। एक दीर्घाकृति अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति लगमे ठाढ़ भेल छथीन्ह; हुनक देहक शक्तिमान गठन, ओ अत्यन्त गोरे रंग देखिकए वन्दना चिन्हलथीन्ह जे ई विप्रदास। सती संगहि अबैत छलथीन्ह, किन्तु ओ प्रवेश नहि कएलथीन्ह—दोआरि लग ठाढ़ि भए प्रणाम करबाले इशारा करैत कहल-थीन्ह जे हैँ इएह।

बंगालीक कन्याकेँ ई सिखएबाक काज नहि, आ' एहि सँ पहिने माएकेँ जेना भ'क' ओ भूमिष्ठ भए प्रणाम कएने छलथीन्ह ओहिना हिनको करितथीन्ह—किन्तु कोना जे हिनक मोन एकदम विद्रोह कए उठलन्हि। हिनक अनन्य-साधारण विद्या ओ बुद्धिक विवरण द्विजदासक मुहेँ नहि सुनलासँ प्रायः एहि प्रचलित शिष्टाचारकेँ लंघन करबाक बात हुनका मोनमे नहिओ उठितन्हि किन्तु इएह परिचय वन्दना केँ कठिन बना देलकन्हि। बहिनिक मर्य्यादा रक्षा कए ओ हाथ जोड़ि नमस्कार कएलथीन्ह ठीक, मुदा एहिसँ हुनक उपेक्षे विशेष स्पष्ट भेलन्हि—बात बजलीह ओ पिताक संगे। कहलथीन्ह—अहाँ एकसरे खाए बैसि गेलहुँ बाबू, हमरा नहि सोर कएलहुँ।

साहेब मूड़ी ऊपर उठओलन्हि—हमरा जे गाड़ीक समय भ'गेल हुए, तोरा त' कोनो हड़बड़ी नहि छह। हमरा चल गेलाक बाद तोँ सभ स्थिरसँ खेनाइ पिनाइ करबह।

सती आड़सँ मूड़ी हिलाए एहि बातक अनुमोदन कएलथीन्ह। वन्दना हुनका लक्ष्य कए कहलथीन्ह—बहिन, एते रास दामी, चानीक बासन किएक नष्ट कएलहुँ, बाबूकेँ त' ऐनामेल की चीनी-माटिक थारी मे खाए द' सकै' छलि-अन्हि। साहेबक चिबाएब बन्द भेलन्हि। अत्यन्त सरल प्रकृतिक मनुष्य

बेचारे कन्याक कथाक तात्पर्य्य किछुओ नहि बुझलन्हि – व्यस्त ओ लज्जित भए गेलाह—जेना दोष हुनक अपने होइन्हि—सएह त; सहए त, ई हम देखवे ने कएलहुँ; सती कत' गेलीह—हमरा त डिश' मे खेनाइ देलहिसँ भ' जइतह।

विप्रदासक मुह क्रोधसँ गम्भीर ओ कठोर भ'गेलन्हि। आइ तक हुनका एतेक भारी अपमान करबाक केओ साहस नहि कएने छल—जेना कि ई नावागत कुटुम्ब-कन्या कएलकन्हि। बासन नष्ट होएबाक दुश्चिन्ता एक गोट छलना मात्र। असलमे ई हिनका लोकनिक आचारनिष्ठ परिवारक प्रति निर्ल्लज्ज व्यंग्य, आओर खूब सम्भव हिनकें लक्ष्य कए क'। ई दुरभि-सन्धि के एकरा बुद्धि मे अनलकैक, विप्रदास नहि सोचि सकलाह; किन्तु—उक्त बात एहि नीक वृद्ध व्यक्तिकें उपलक्ष्य कए क' जे भेल ताहि सँ हुनक विरक्तिक सीमा नहि रहलन्हि। किन्तु से भाव दमन कए ओ कने हँसि कए कहलथीन्ह—अहाँ अपन बहिनिसँ सुनलउहें जे ई एक कट्टर हिन्दूक घर थिकैक ? एहि ठाम ऐनाभेल कि चीनी माटिक वरतन रहबाक कोनों सम्भावना नहि,—ई नहि सुनलउहें ?

वन्दना कहलथीन्ह—किन्तु दामी बरतन सभ त' दूरि—भ' गेल।

साहेब व्याकुल भए बाजि उठलाह—किन्तु सुनल अछि जे घी लगा क' थोड़ेक आगिमे झरका देलासँ····विप्रदास ई बात कान नहि देलन्हि—जहिना बजैछलाह तहिना वन्दनाकें लक्ष्य क' कहलथीन्ह—एहि घरमे चानीक बासनक कमी नहि छैक, किन्तु कोनो काजे ने होइ छैक। अहाँक बाबू सम्बन्ध मे हमर गुरुजन, एहि घरक अत्यन्त सम्मानित अतिथि, चानीक बासनक दाम जतेक होउक, हुनक मर्य्यादाक आगाँ ओ अत्यन्त तुच्छ। अहाँ लोकनिक अएबाक उपलक्ष्यमे यदि ई सभ नष्टो भ'जाए त' भ'जाओ ने। ई बाजि कने हँसि कए कहलथीन्ह—अहाँक बहिनि जेकाँ अहूँक विवाह यदि गोटेक कट्टर हिन्दू घर मे होअए तखन अहाँक बाबूक गेला पर अहाँ हुनका माटिक थारीमे खाए देबन्हि—फेकिओ देलासँ ककरो किछु नहि बूझि पड़तैक, की ? वन्दना, की कहै छी ?

—इस—से हेतै की ? बाबू ले' हम सोनाक थारी बाटी बनाक' रखने रहबन्हि।

विप्रदास हँसी मुँहे उत्तर दे लथीन्ह—से अहाँ बुते नहि होएत। जकरा बुते होएतैक से बापक विषयमे एहन कथा मुहोमे ने आनत; एतेक जे अनका अपमानो करबाक हेतु नहि। अहाँ अपन बाबूकेँ जतेक मान' छिअन्हि आओर एक गोटे अपन काकाकेँ ओहिसँ बेशी मानैत छथिन्ह।

सूनि कए साहेबक मोनसँ जे खाली एक गोट भार उतरि गेलन्हि सएह नहि, समस्त अन्तस्तल आनन्दसँ भरि गेलन्हि। बजलाह अपनेक ई बात धरि वास्तवमे बहुत सत्य। हमर भाए जखन हठात् मरि गेलाह, तखन सती बड़ छोट रहए, विदेशमे नौकरी करैत रही, बेशी काल गाम घर जाएब बनए नहि, आओर अएलो उत्तर समाजक शासनसँ एकसरे रह' पड़ए। किन्तु सती कोनो काल बजओलासँ दौड़िक' चलि अबैत। वन्दना जल्दीसँ हुनका रोकल थीन्ह—ओ वात रह'दिअ ने बाबू।

—नहि, नहि—हमरा से सभटा मोने अछि—झूठ नहि ने। एक दिन हमरा सङे हमरे थारी मे खाए बैसि गेलि—ओकर माए ई देखि क' त.......

—ओह्—बाबू, अहाँ जे की बजै छी तकर ठेकान नहि। कहिआ बहिनि अहाँ सङे....अहाँ के किछु मोन नहि अछि।

साहेब मुह उठा' प्रतिवाद कएलथीन्ह—वाह्—मोन—अछि त ! आ' पाछाँ एही ल'क' किछु गड़बड़ होअए—एहि ले तोहर माए ओहि दिन डरेँ एकदम.......

वन्दना बजलीह—बाबू, आइ निश्चय अहाँक ट्रेन छूटत। कए बजलैक से बुझलिऐ ?

साहेब व्यस्त भए पाकेटसँ घड़ी बहार कएलन्हि—समय देखि निरुद्वेगक स्वास त्याग करैत कहलथीन्ह—तोँ त एना डर देखा दै छह जे चमकि उठैत छी। एखनो बहुत देरी छै—बढ़िञा जेकाँ गाड़ी पकड़ि सकैछी।

विप्रदास सहास्ये हुनक बात ल' क' बजलाह—हँ गाड़ीमे एखनो बहुत देरी अछि। अपने निश्चिन्त पूर्वक भोजन कएल जाओ, हम अपनहि जा क' अपनेकेँ गाड़ीमे बैसा आएब।

ई बाजि ओ घरसँ बाहर भए गेलाह।

दोआरि लगसँ सतीक लग आबि कए ठाढ़ि भेला पर वन्दना अत्यन्त मृदु-कण्ठे पुछलथीन्ह—बहिन, बाबू की काण्ड कएलन्हि, सुनलहुँ ?

सती माथ हिला कहलथीन्ह—हँ।

वन्दना कहलथीन्ह—अहाँक सासुक कानमे ई बात गेलासँ प्रायः अहाँकेँ कष्ट उठब' पड़त, नइ बहिन ?

सती कहलथीन्ह—हेतैं' त होब' दहक। एखन चुप् रह', काका सुनताह।

किन्तु अहाँक स्वामी—ओहो त अपने काने सभटा सुनि गेलाह—एहि अपराधक मार्जना प्रायः हुनको ओत' नहि ?

सती हँसलीह—कहलथीन्ह—अपराध यदि सत्ये भेल रहत त' हमही मार्जना किए चाहब ? ओ विचार हम हुनकेँ ऊपर छोड़िक' निश्चिन्त भेल छी। यदि रहब' त' अपने आँखिए देखि लिह'। काका, अहाँकेँ की आनि दिअ ?

साहेब मुँह उठाकए कहलथीन्ह—पूर्ण-पूर्ण। हमर भोजन समाप्त भ' गेल हए, आर नहि किछु चाही। ई बाजि उठि ठाढ़ भेलाह।

क्रमशः स्टेशन यात्रा करबाक समय भए गेल; नीचामे ओसाराक कातमे मोटर अपेक्षा करैत छन्हि, ओछाओन, बैग इत्यादि वस्तु दोसर गाड़ीमे राखल गेलन्हि, साहेब लगमे ठाढ़ भेल विप्रदासक सङ्ग गप्प कए रहल छथि—कि एही समय वन्दना कपड़ा तपड़ा पहिरि प्रस्तुत भेलि लग आबि ठाढ़ि भेलीह। कहलथीन्ह—बाबू, हमहूँ अहीँ सङ्ग जाएब।

पिता विस्मित भेलथीन्ह—एहि रौदमे स्टेशन गेलाक की प्रयोजन ?

वन्दना कहलथीन्ह—खाली स्टेशने नहि, कलकत्ता जाएब। अहाँ जखन

बम्बइ जाएब, हम अहीं सङ्ग चल जाएब।

विप्रदास अत्यन्त आश्चर्यित भए कहलथीन्ह—ई कोन बात?—अहाँ एत' थोड़े दिन रहब, से सुनल छल।

वन्दना उत्तरमे खाली बजलीह—नहि।

किन्तु अहाँ एखन तक भोजनो ने कएलहुँ अछि?

नहि—कोनो काज नहि। कलकत्ते जाकए, खा' लेब।

अहाँ जाइछी, से अहाँक बहिनि सुनलनिहें?

वन्दना कहलथीन्ह—ठीक नहि कहि सकैछी। हम चल जाएब त सुनिए लेतीह।

विप्रदास कहलथीन्ह—अहाँक बिना खएने, एना भ' क' चल गेनाइ, ई सूनि हुनका बड़ दुःख होएतन्हि।

वन्दना मुँह उठा कए बजलीह—दुःख कथीक? हमरा ओ लेआओन क' क' त नहि बजओने छलीह जे बिना खएने चल गेलासँ हुनक आओजन नष्ट होएतन्हि—ओ अबोध नहि छथि, बुझतीह। ई कहि ओ आओरो बात नहि बढ़ा' जल्दीसँ गाड़ीमे जाकए बैसि रहलीह।

साहेब मने मन बुझलन्हि—किछु अवश्य गड़बड़ सड़बड़ भेलैए। नहि त हठात् अकारण किछु कर'बाली स्त्रीगण ई वन्दना नहि। खाली बजलाह—हमरो त इएह बुझल छल ओ किछु दिन एत' सती सङ्ग रहत। किन्तु एक बेरि जखन गाड़ी पर जाकए बैसल्ए, तखन ई उतरत नहि।

विप्रदास उत्तर नहि देलथीन्ह—चुपचाप हुनका पाछाँ जाकए मोटरमे बैसि गेलाह।

गाड़ी बिदा भेल। अकस्मात् ऊपर आँखि उठओलासँ वन्दना देखलन्हि—तिनमहलाक लाइब्रेरी घरक खिड़की धएने द्विजदास चुप भेल ठाढ़ छथि।

आँखि मिलैत देरी ओ हाथ उठा' नमस्कार कएलथीन्ह।

# ७

स्टेशन पहुँचला पर बुझलन्हि जे कतए की एक आकस्मिक दुर्घटनाक कारणेँ ट्रेनमे आइ बड़ देरी छैक, प्राय: एको घण्टासँ वेशी देरी होएतैक। परिचित स्टेशन मास्टर हठात् दु:खित पड़लासँ एक व्यक्ति मद्रासी, 'रिलीभिङ् हैण्ड' काल्हिसँ काज करैत छलैक, ओ ठीक समाचार नहि दए सकलन्हि, खाली अनुमान कएलक जे देरी एको घण्टा भ' सकै' छै', दुइओ घण्टा भ' सकै छैक। विप्रदास साहेबक मुँह दिशि देखि कए कहलथीन्ह—कलकत्ता पहुँचैत राति भए जाएत, आइ नहि गेलासँ काज नहि चलत ?

किए ने चलत ? हमरा त—

वन्दना बाधा देलथीन्ह—बाबू, से नहि होएत। एक बेरि बिदा भ' गेलाक बाद आर फेरि घूरि क' जाएब नहि होएत।

विप्रदास अनुनयक स्वरेँ कहलथीन्ह—किए ने होएत, वन्दना ? विशेष क' अहाँ बिना खएनहि चल अएलउ हें—भरिदिन कि उपासले रहब ?

वन्दना माथ हिला क' कहलथीन्ह—नहि, हमरा भूख नहि अछि। फिरिओ गेलासँ हम नहि खाएब।

साहेब मोने मोन क्षुण्ण भेलाह—कहलथीन्ह—एकरा लोकनिक शिक्षे-दीक्षा भिन्न। एक बेरि जिद्द पकड़लासँ फेरि छोड़ वाला नहि।

× × × ×

स्टेशन पँघ नहिओ भेलासँ एकगोट छोट 'वेटिङ् रूम' छैक, ओहिमे गेलासँ देखलन्हि जे एक 'छौँड़ा-वयस'क वङ्गाली साहेब ओ हुनक स्त्री घरकेँ भिनसरे पहरसँ दखलिओने छथि। साहेव सम्भवत: बैरिस्टर, किम्वा डाक्टर, किंवा

विलाँयत-पास कोनो प्रोफेसेरो भए सकैत छथि। एहि देहात दिशि कतए आएल छलाह, से एकटा रहस्य। आराम कुर्शीक दूनू हाथ पर पद-द्वय दीर्घप्रसार कएने अर्द्ध-सुप्त।

आकस्मिक जन-समागमक कारणें किछु मात्र चक्षुरुन्मीलन कएलन्हि—भद्रता प्रकाशक उद्यम एहिसँ बेशी अधिक अग्रसर नहि भेल। किन्तु महिला धरि कुर्शी छोड़ि व्यस्त भए उठि ठाढ़ि भेलीह। प्राय: मेमसाहेब एखन तक पूर्ण रूपेण नहि बनलीह अछि, किन्तु ऊँच एँड़ीवाला जुत्ता, ओ पोसाक परिच्छदक छटा देखि कए मन होइछ जे एहि दिशि चेष्टामे त्रुटि नहि भए रहल छन्हि।

घरक बीचमे आओर एक आराम कुर्शी छलैक,—वन्दना पिताकें ओहि पर वैसा कए, अपने एकगोट बेंच पर जाकए बैसलीह एवं अत्यन्त समादरसँ विप्रदासकें आह्वान कए कहलथीन्ह—ओझाजी, व्यर्थ ठाढ़ किए रहब, हमरा लग आबि कए बैसू। वृहत्काष्ठमे दोष नहि—अहाँक जाति नहि जाएत।

सुनि कए वन्दनाक पिता कने हँसलाह—कहलथीन्ह—हिनका छूआ-छूतिक बड़ बेशी विचार छन्हि कि?

विप्रदास अपनहुँ हँसलाह—कहलथीन्ह—विचार अछि, परन्तु की भेलासँ खूब बेशी होएत, से नहि बुझलासँ एकर उत्तर कोना देब?

वृद्ध पुछलथीन्ह—इएह लिअ, बन्दना जेना बाजलि?

विप्रदास कहलथीन्ह—ओ बिना खएने जे छथि—तें बड़ खिसिआ' गेलीहे। स्त्रीगण सभ खिसिआ'क' जे बात सभ बजैत अछि, ओ ल' क' आलोचना नहि करक थीक।

वन्दना कहलथीन्ह—हम खिसिआएल नहि छी, एको रत्ती ने।

विप्रदास कहलथीन्ह—छी, आ खूब बेशी खिसिआइलि छी। नहि त अहाँ कलकत्ता नहि आ' क' हमरा गाम फिरि' कए चलितहुँ। आ' से छोड़ि अहाँकें अपने मन पड़त, जे एखने हम सभ केओ एके गाड़ीमे बैसि कए

अएलहु", जाति जएबाक रहैत त पहिनहि गेल रहैत, बेञ्चक बात अहाँक एक छलना मात्र ।

बन्दना कहलथीन्ह—छलने रहओ, किन्तु सत्ये कहू त ओझाजी, ह मरा सभसँ छूआछूति करबाक हेतु अहाँके" गाम जा' कए फेरि स्नान कर' पड़त कि नहि ?

चलू ने, गाम पर जाकए अपने आँखिए देखि लेब ?

नहि । अहाँ जनै छी, माएके" प्रणाम कर' गेलिअन्हि त ओ छुअएबाक डरे" दूर हटि गेलीह ? बजैत बजैत हुनकर मुह क्रोध आ लाजसँ लाल भए गेलन्हि ।

विप्रदास ई लक्ष्य कएलन्हि । उत्तरमे खाली शान्त भावे" कहलथीन्ह—ई बात झूठ नहि, आ' अथच सत्यो नहि । एकर असल कारण हुनका लग नहि रहलासँ अहाँ बूझब कोना ? किन्तु से सम्भावना त नहि ।

न, नहि ।

एहि तीव्र अस्वीकारक हेतु एते काल पर विप्रदासके" स्पष्ट भए गेलन्हि । मनेमन हुनक क्षोभक अवधि नहि रहलन्हि । क्षोभ नाना कारणे । हिनक सतमाएक सम्बन्धमे ई बात आंशिक सत्य मात्र, एवं ई अपनहुँ एहिमे बहुत किछु संलग्न छथिहे । परन्तु बुझाकए कहबाक सुयोगो नहि छन्हि, समयो नहि छन्हि । अन्य पक्षके" धीर-चित्तसँ बुझबाक ओ विचार करबाक मनोवृत्तिक नितान्त अभाब । सुतरां चुप रहि जाएब छोड़ि आओर उपाय नहि । विप्रदास एके बेरि नीरव रहि गेलाह ।

'छौँड़ा साहेब' पाएर नीचा कए, 'टाइ' ठीक कए उठा कए, बैसलाह' पुछलथीन्ह—अहाँ जमिन्दार विप्रदास बाबू, नहि ?

हँ ।

अहाँक नाम सुनलउहे" । लगे—एहिठामक एक गाममे हमर स्त्रीक मातृक । बेङ्गॉल देखबाक हेतु जखन अएबे कएलहुँ, तखन हुनक इच्छा जे एक बेरि एतहु जाइ । तेँ अएलहुँ । हम आब पञ्जाबमे 'प्रैक्टिस' करै' छी ।

विप्रदास नीक जेकाँ देखलथीन्ह—ई व्यक्ति हुनके सम-वयसी, एक आध वर्षक एमहर ओमहर भए सकैए, ओहिसँ बेशी नहि।

साहेब कहए लगलथीन्ह—कालिहए अहाँक कथा होइ छल। लोक सभ बजैए—अहाँ बड़ भयंकर—अर्थात्—जे बड़ कड़ा जमिन्दार छी। हँ ई अवश्य जे दू चारि गोट ब्राह्मण पण्डित—कट्टर हिन्दू बूझि कए बेश प्रशंसो कएलक। एखन देखैछी, बात झूठ नहि।

अपरिचितक एहि अयाचित आलोचनासँ वन्दना ओ हुनक पिता दूनू गोटे आश्चर्य भेलाह, किन्तु विप्रदास किछु उत्तर नहि देलथीन्ह। बुझि पड़ैछ, ओ एहन अन्यमनस्क छलाह जे सभ बात हुनका कानोमे ने गेलन्हि।

ओ फेरि बाजए लगलाह—हम अपना लेक्चरमे अधिक काल कहैत रहै छिऐ जे चाही—'रियल, सौलिड' शिक्षा—फाँकी-बाजी नहि, ठगपनी नहि। अहाँके उचित थीक जे एकबेरि यूरोपसँ घूरि आबी। ओहिठामक आवहवा, ओतुक्का 'फ्री एयर ब्रीद' नहि कए अएलासँ मनमे 'फ्रीडम' नहि अबै छै—कुसंस्कारसँ जे मन मुक्त चाही, होब' नहि चाहैत छै। हम लगातार पाँच वर्ष ओहि देशमे छलहुँ।

वन्दनाक पिता अन्तिम बात पर खुसी भए कहलथीन्ह— ई बात सत्य।

उत्साह पाबि ओ कने फूलि उठलाह, बाजए लगलाह—एहि 'डिमोक्रेशी'क युगमे सभ केओ समान, केओ ककरो छोट नहि; आ' चाही प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन अधिकार जोर क' क' 'एसर्ट' करब। कंसिक्वेन्स' ओकर जे होउक। हमरा रुपया रहैत त अहाँक जमिन्दारीक प्रत्येक प्रजाकेँ हम अपने खरचे यूरोप घुमा अनितिऐक। अपन 'राइट' ककरा कहै छैक—ई बात ओ सभ तखन अपने बूझि जाइत।

वन्दनाकेँ प्रायः बड़ अधलाह लगलन्हि ओ आस्ते आस्ते कहलथीन्ह—ई अपन प्रजाक ऊपर अत्याचार करैत छथि' ई खबरि अहाँके के देलक ? आशा करै'छी, अहाँक ममिआ ससुरक ऊपर कोनो जुलुम नहि भेल् ए।

ओ, ई अहाँक बहिनोए थिकाह ? 'थैंक्स', - नहि, ओ कोनो अभियोग नहि कएलन्हि । अपन स्त्रीकें उद्देश्य कए सहास्ये कहलन्हि—अहूँक बहिन सभ यदि हिनकें जेकाँ रहितथि !—आशा करैछी, अहाँ विलायत घूमि आइलि छी ?

नहि गेलउहें—? जाउ,जाउ,। 'फ्रीडम' साहस, शक्ति, ककरा कहैत छैक—ओहि देशक स्त्रीगण सभ—सत्य कि····की से एकबेरि अपना आँखिए देखि आउ। हम 'नेक्स्ट टाइम' जएबाकाल हिनका सङ्ग लए जएबाक विचार करैत छी ।

ककरो कोनो बात बजबाक पहिनहि स्टेशनक ओएह 'रिलिभिङ हैण्ड'— मुँह भीतर कए सूचित कएलकन्हि जे ट्रेन 'डिस्टैण्ट सिग्नल' पार भए गेलैक आएल पँओ ।

सभ व्यस्त भए प्लैटफार्म पर अएलाह ।

गाड़ी ठाढ़ भेला पर देखलन्हि जे छुट्टीक बाजारक यात्रीक संख्याक सीमा नहि। तिल धरबाक कतहु जगह भेटब कठिन। खाली एक गोट फर्स्टक्लास आ' एकटा सेकेण्ड क्लास। सेकेण्ड क्लास भरल—एक दल फिरंगी (अङरेज) रेलवे-सरभैण्ट कलकत्ताक कोनो खेल देखबा ले' जाइत अछि, आ बुझि पड़ैछ— ओकरे सभमेसँ कए गोटे स्थानाभावक कारणें फर्स्टक्लास मे बैसल छैक। पर्य्याप्त मद पीने एकरा सभहिक जेहने चेहरा भयंकर, तेहन व्यवहारो वेपरबाह। गाड़ीक दरबाजा (केबाड़) रोकने ओ सभ गोटे चीत्कार कए उठल 'गो'—जाओ—जाओ !

स्टेशन मास्टर आएल—गार्ड आएल, ओ सभ ग्राह्य ने कएलकन्हि ।

छौंड़ा साहेब बजलाह—आब ?

वन्दना डरें कहलथीन्ह—चलू आइ गाम फीरि चली ।

विप्रदास कहलथीन्ह—नहि ।

नहि त' की— ? नहि त' रातुक ट्रेने——

छौँड़ा साहेब बजलाह—ओ छोड़ि आओर उपाय की ? कष्ट होएत से होअओ ।

विप्रदास मूड़ी हिला क' कहलथीन्ह—नहि । गाड़ीमे चारि-पाँच गोटे अछि; आओर चारि-पाँच गोटाक जगह होएबाक चाही ।

वन्दनाक पिता व्याकुल भए बजलथीन्ह—चाही त बुझलहुँ, किन्तु ओ सभ जे मातल अछि ।

विप्रदासक समस्त देह जेना कठिन लोह जेकाँ कड़ा भए गेलन्हि, कहलथीन्ह—से ओकरा सभक सख—हमरा लोकनिक नहि ।

चलू—हम सङ्ग जाएब । आ' तुरन्ते गाड़ीक हैण्डिल ध' क' खूब जोरसँ धक्का दए केबाड़ खोललन्हि । वन्दनाक हाथ ध' क' घीचि कहलथीन्ह—आउ । छौँड़ा साहेब के सोर क' क' कहलथीन्ह— 'राइट एसर्ट' करबाक अछि त अपन स्त्रीकेँ ल' क' ऊपर आउ । अत्याचारी जमिन्दारक सङ्ग रहबा मे डर नहि ।

मातल साहेब सभ एहि व्यक्तिक मुह दिशि कने काल देखि चुप्पेचाप ओहि भागक बेंच पर बैसि गेल ।

## ८

हल्ला सूनिकए लगेक कोठलीक सह-यात्री साहेब सभ प्लैटफार्म पर उतरि ठाढ़ भेल आ रुक्ष कण्ठे एक सङ्ग बाजि उठल—ह्वाट्स अप ? भाव ई जे सङ्गी सभहिक हेतु ओ सभ पराक्रम देखएबा ले' प्रस्तुत ।

विप्रदास अदूर-वर्त्ती गार्डकेँ इशारासँ ल'ग मे बजा' कहलथीन्ह ई हो सभ अधिक सम्भव फस्टक्लासक पैसेन्जर नहि, अहाँक ड्यूटी थीक एकरा सभकेँ हँटाबी ।

ओहो बेचारा साहेब – किन्तु अत्यन्त कारी साहेब' सुतरां ड्यूटी होउक वा जे होउक – इतस्ततः करए लागल । कतेको गोटे तमासा देखैत छल—ओएह मद्रासी रिलीभिङ् हैण्ड सेहो ठाढ़ छल – ओकरा हाथ बहार क' ल'ग बजा, विप्रदास पाँच रुपैयाक नोट दए कहलथीन्ह— हमर नाम हमर नोकर

सभसँ बूझि लेब। अहाँ अपन ऑफीसरक ओतए एकटा तार पठा' दिऔन्हि त जे ई सभ मातल अङरेज सभ बरजोरी फस्टक्लास मे चढ़ल अछि, आ उतर' नहि चाहैए। आ' ईहो खबरि द' देबन्हि गे गार्ड ठाढ़ भेल तमासा देखै' छलाह, आ किछु सहायता नहि कएलन्हि।

गार्ड अपन विपत्ति देखलक। साहस कए क' ल'ग आबि कहलकैक—'डौण्ट यू सी दे आर बिग पीपुल ?' अहूँ सभ रेलवेक सरभैण्ट—रेलवेक पास अछि—बी केयरफुल

ई बात मातलो लोकक पक्ष' मे उपेक्षणीय नहि। अतएव ओहो सभ उतरि कए लगेक दोसर कोठरी मे चल गेल—किन्तु ठीक अहिंसभावें नहि गेल। दाबल कण्ठे जे सभ बाजि गेल ताहिसँ मन वेश निश्चिन्त नहि भए सकैत छल। से जे होउक, पंजावक बैरिस्टर साहेब गार्डके धन्यवाद कए कहलथीन्ह,—अहाँ नहि रहितहुँ त हमरा लोकनिक जाएब नहि होइत।

ओ—नो—। ई हमर ड्यूटी।

गाड़ी खुजबाक घंटी बजलैक। विप्रदास उतरबाक उपक्रम करैत कहलथीन्ह—आब हमरा जनैत, हमरा जएबाक काज नहि। ओ सभ आब किछु नहि करत।

बैरिस्टर कहथीन्ह—साहस नहि करत। नौकरीक डर त छैक ?

वन्दना रास्ता रोकि, ठाढ़ि भए कहलथीन्ह—नहि, से नहि होएत, नौकरीएक डर चरम 'गैरेण्टी' नहि, सङ्गे अहाँके जाइए पड़त।

विप्रदाद हँसिकए कहलथीन्ह—पुरुष रहितहुँ त' बुझितिऐक जे एहिसँ बढ़ि कए 'गैरेण्टी' संसार मे आओर नहि छैक। किन्तु हम जे किछु खाकए नहि अएलउहें।

खा कए त हमहूँ नहि अएलउहें।

ओ त अहाँक सखक गप्प। किन्तु कनेके कालक बाद आओत होटलबाला

—बड़का स्टेशन—जतहि मोन होएत ततहि खा' सकै' छी।

वन्दना कहलथीन्ह—किन्तु से इच्छा नहि होएत। उपास हमहूँ क' सकै' छी।

विप्रदास कहलथीन्ह—कए सकबाक काज नहि—हम उतरि जाइ छी। बैरिस्टर साहेबके‍ँ कहलबीन्ह—अहाँ सङे रहलिअन्हि—कने देखबैन्हि। यदि आवश्यकता पड़ए त·······

वन्दना कहलथीन्ह—चेन घीचि कए गाड़ी ठाढ़ कराएब ? से हमरो बुते होएत। ई कहि ओ खिड़की बाटे मुह बढ़ाक' गामक नौकरके‍ँ कहि देलथीन्ह—अहाँ सभ माएके‍ँ जाकए कहि देबैन्हि जे ओ सङे गेलथीन्ह। कान्हि कि परसू फिरताह।

ट्रेन विदा भेल।

वन्दना लग आबि बैसलीह कहलथीन्ह—अच्छा ओझाजी, अहूँ त एको रत्ती कम नहि छी ?

किए ?

अहाँ जे जोर क' क' हमरा सभके‍ँ बैसओलहुँ—ओ सभ पीबि क' मातल छल, यदि उतरि नहि जाइत आ' मारामारी करैत तखन ?

विप्रदास कहलथीन्ह—से भेलासँ ओकरा सभहिक नौकरी जइतैक।

वन्दना कहलथीन्ह—किन्तु हमरा सभहिक की जाइत—देहक अस्थि पंजर ? ओ नौकरीसँ कोनो तुच्छ वस्तु नहि।

विप्रदास ओ वन्दना दूनू गोटे हँसए लगलाह, दोसर महिला सेहो एक रत्ती हँसि, धाड़ फिरओलन्हि—खाली हुनक स्वामी पंजाबक नवीन बैरिस्टर मुह गम्भीर कएने छलाह।

वन्दनाक पिता एतेक काल विशेष मनोयोग नहि देने छलाह, आलोचनाक शेष अंश दिशि कान जइतहिँ सोझ भए बैसि बजलाह—नहि नहि, हँसीक गप्

नहि. एहि तरहक घटना ट्रेसमे होइत रहैत छैक से एकबार मे बहराइत छैक—। तें त जोर जबर्दस्ती करबाक हमर इच्छा नहि छल, रातुक ट्रेनसँ गेलासँ सभतरहक सुविधा होइत।

बन्दना कहलथीन्ह—रतुको ट्रेन मे यदि मातल साहेब सभ रहैत' बाबू ?

पिता कहलथीन्ह—से कि कहिओ सत्ये होइछै हए ? से भेलासँ त नीक लोकक आएबे जाएब बन्द भ' जएतैक। ई बाजि ओ एक गोट मोट चुरुट धरएबामे प्रयुक्त भेलाह।

वन्दना आस्ते आस्ते बजलीह—ओझाजी, नीक लोकक परिभाषा ल' क' बाबूकें जीरह नहि करिअन्हु।

विप्रदास हँसि कए, मूड़ी हिलाकए कहलथीन्ह—नहि, से हम बुझैत छी।

अच्छा, ओझाजी, नेनामे खेलएबाक फिल्डमे साहेब सभक सङ कहिओ मारामारी कएने छी ? सत्ये कहब।

नहि, से सौभाग्य कहिओ नहि भेलए।

वन्दना कहलथीन्ह-लोक बजैए, देहातक लोक क लेखे अहाँ एकटा 'टेरर'। सुनलउहें घरमे सभ केओ अहाँसँ बाघ जेकाँ डेराइए, सत्ये ?

किन्तु सुनलहुँ ककरासँ ?

वन्दना गलाकें सम्हारिकए कहलथीन्ह—बहिनिसँ।

की कहै छथि ओ ?

कहै छथि—डरें देहक शोणित जेना पानि भ' जाए।

केहन पानि ? मातल साहेब कें देखलासँ हमरा सभकें जेना होइए, तेहिना ?

वन्दना सहास्यें माथ हिलबैत कहलथीन्ह—हँ, बहुत किछु एहिना।

विप्रदास कहलथीन्ह—ई बड़ आवश्यक। नहि भेलासँ स्त्रीगणकें शासन मे राखल नहि होइ' छै'। अहाँक विआह भेलासँ साढ़कें ई विद्या सिखा देबन्हि।

वन्दना कहलथीन्ह—सिखा देबन्हि। किन्तु सभ विद्या सदरिकाल नहि चलै छै, से बूझि लेब। बहिन सभ दिन बड़ शुद्ध लोक छथि—मुदा हम रहितहुँ त सभके हमरे डरेँ चल' पड़ितैक।

विप्रदास कहलथीन्ह—अर्थात् डरसँ सौंसे अङनाक लोकक देहक शोणित पानि भए जइतैक। खूब, आश्चर्य्य नहि। कारण एके पहरमे जे नमूना देखा अएलउहेँ—ताहिसँ विश्वासे करबाक प्रवृत्ति होइछ। कम स कम माए धरि कहिओ ने बिसरत।

वन्दना मनेमन कने उत्तेजित भए उठलीह—कहथथीन्ह, अहाँक माए की कएलन्हि बुझलहुँ, हम प्रणाम कर' गेलिअन्हि त ओ फाछू हँटि गेलीह।

विप्रदास किछु मात्र विस्मय प्रकाश नहि कएलन्हि, कहलथीन्ह—माएक एतबे टा ने देखलहुँ, आओर किछु देखबाक सुयोग त नहि भेटल। भेटलासँ बुझितहुँ जे एही कारणेँ खिसिआकए बिना खएनहि चल अएनाइ सन गलती आओर कोनो ने।

वन्दना कहलथीन्ह—मनुष्यक आत्म सम्भ्रम कहि क' त कोनो वस्तु छैक।

विप्रदास हँसि कए कहलथीन्ह—आत्म सम्भ्रमक धारणा पओलहुँ कतए' सँ ? स्कूल कॉलेजक मोट मोट पोथी पढ़ि क' त ? किन्तु माए त अङरेजी नहि जनैए, किताबो ने पढ़ने अछि। ओकर जानबाक सङ अहाँक धारणा मिलत कोना ?

वन्दना कहलथीन्ह, किन्तु हम त खाली अपने धारणा ल' क' चलि सकब।

विप्रदास कहलथीन्ह—चलि सकलासँ अनेक ठाम गलती होएत, जेना अहाँसँ आइ भेलए। विदेशक पोथी सँ जे सिखलउहे—तकरे एकदम ठीक मानि लेलहुँ' तेँ एही रूपेँ चलैत अएलहुँ। नहि त नहि करितहुँ; गुरुजनकेँ अकारणे असम्मान करबामे धाख होइत। आत्म-मर्य्यादा ओ आत्म-अभिमान मे भेद बुझितिऐक।

वन्दना भेद नहि बुझलन्हि, ई धरि बुझलन्हि जे हुनक आजुक आचरण

विप्रदासकेँ अन्तस्तलमे लगलन्हि अछि। हुनका अपना ले नहि, माएक असम्मान क कारणेँ।

दू तीनि मिनट धरि चुप रहि वन्दना हठात् प्रश्न कएलथीन्ह—माए जेकाँ अहूँ खूब कट्टर हिन्दू, नहि ?

विप्रदास कहलथीन्ह—हँ।

तहिना छूआ छूतिक बात विचार करै छी ?

करै छी।

प्रणाम कर गेलासँ तहिना दूर हँटि जाइछी ?

हँटि जाइछी। समय असमयक हिसाब हमरा सभकेँ देख' पड़ैए।

हमरा बहिनिओकेँ एहिना अन्ध बनओने छिअन्हि ?

से अहाँ अपन बहिनिएकेँ पुछू ने। तखन हँ, पारिवारिक नियम हुनको मान' पड़ैत छन्हि।

वन्दना हँसि कए कहलथीन्ह—अर्थात् बाघक बिना डर कएने ककरो चल' बाला नहि।

विप्रदासो हँसि कए कहलथीन्ह—नहि चल' बाला नहि। जेना दिनुक गाड़ीमे बाघक डरेँ मनुषकेँ रातुक गाड़ीसँ जाए पड़ैत छैक—ओ प्राण-धर्म्मक स्वाभाविक नियम।

वन्दना कहलथीन्ह—बहिन स्त्रीगण छथि, सहजहिं दुर्बल; हुनका ऊपर सभ नियम चला सकैत छिअन्हि—किन्तु द्विजू बाबू त सुनैछी, पारिवारिक नियम केँ मानिक' नहि चलै छथि, ताहि विषयमे बाघ महाशयक की विचार छन्हि।

ई प्रश्न हुनका खोँचाड़बेक हेतु वन्दना कएने छलथीन्ह—आ आशा कएने छलीह जे ई हुनका विद्ध करतन्हि—किन्तु विप्रदासक मुह पर कोनो चिह्न प्रकाश नहि पओलक, तहिना हँसि कए कहलथीन्ह—ई सब गूढ़ तथ्य अधिकारी व्यक्तिरेकके प्रकाश करब निषेध।

द्विजू बाबू अपने त बुझताह किने ?

विप्रदास धाड़ टेढ़ कए कहलथीन्ह—समय भेलासँ बुझबे करताह। ओ जनै छथि जे रक्त-मांसमे बाघकेँ पक्षपातित्व नहि होइ छैक।

कने काल ले' वन्दनाक मुह फक् भ' गेलन्हि। एकरा बाद जे ओ की प्रश्न करथीन्ह, से नहि सोचि सकलीह।

ई परिवर्त्तन विप्रदासक तीक्ष्ण दृष्टिसँ नहि नुका सकल।

पिता सोर कएलथीन्ह—हए, हमरा कने पानि दएह त।

वन्दना उठिकए सुराहीमेसँ पानि दए, फेरि आबि कए बैसलीह। फेरि द्विजदासक कथा चलाएब हुनका डर भेलन्हि। आन विषयक अवतारणा करैत कहलथीन्ह—बहिनिक सासुक हेतु नहि, मुदा हमरा नहि खएने चल अएबाक कारणेँ यदि बहिनकेँ दुःख होइन्हि, त हमहूँ दुःखित होएब। हम सएह बात एखन सोचैत छी।

विप्रदास कहलथीन्ह—अहाँक बहिन कष्ट पओतीह सएह भेल पैघ, आ' हमर माए जे लज्जा-बोध करत, कष्ट पाओत, से भेल तुच्छ। तकर अर्थ, मनुष्य असल वस्तुकेँ नहि बूझि कते उनटा पुनटा चिन्ता करैए!

वन्दना कहलथीन्ह—एकरा उनटा चिन्ता किए कहै छिऐ ? वरं, इएह त स्वाभाविक।

विप्रदास चुप रहलाह। हुनक क्षुण्ण मुहक आकृति वन्दना देखलन्हि।

बाहरमे अन्हार भए गेल छलैक, किछुओ नहि देखना जाइत छलैक तैओ खिड़कीक बाहर देखैत बड़ी काल तक वन्दना चुप भेलि बैसलि रहलीह। आन दिन एहि समयमे ट्रेन हावड़ा पहुँचल रहितैक, किन्तु आइ एखनो दू घंटा देरी। ओ मुह फिराक' देखलन्हि विप्रदास पाकेटसँ एकटा छोट नोटबुक बहार क' किछु किछु लिखैत छथि।

पुछलथीन्ह—अच्छा ओझाजी, एकटा बातक जबाब देब ?

कोन बात ?

अहाँ कहने छलहुँ हमरा सभकेँ आत्म-सम्भ्रम-बोध खाली स्कूल कालेजक पुस्तकधारणासँ अछि। किन्तु अहाँक माए त स्कूल कालेजमे नहि पढ़लन्हि— हुनक धारणा, कतुक्का शिक्षासँ छन्हि ?

विप्रदास विस्मित भेलाह, किन्तु किछु बजलाह नहि।

वन्दना कहलथीन्ह —हुनका विषयमे कौतुहल हम मोनसँ नहि हटा सकैछी। ओ गुरुजन, हम ई अस्वीकार नहि करैछो, किन्तु संसारमे सएह बात कि सभ बातसँ पैघ ?

विप्रदास पहिनहि जेकाँ स्थिर रहलाह।

वन्दना कहए लगलथीन्ह—आइ हम सभ छलहुँ हुनका घरक अनाहूत पाहुन। ई त हमर पोथी पढ़ल विदेशक शिक्षा नहि। तैओ, ई सभ किछुने—खाली वयसमे हम छोटि छी तेँ हमर अपमान अहाँ सभ ग्राह्य नहि करब।

एखनो विप्रदास किछु नहि बजलाह, ओहिना चुप रहलाह।

वन्दना कहलथीन्ह, तैओ हम हुनकासँ क्षमा मङैछिअन्हि। हमरा आचरणक कारणे हमर बहिनकेँ जाहिसँ दुःख नहि होइन्हि।

कने थम्हिकए बजलीह— हमर बाप माए विलाँयत गेल छलाह तेँ मेम साहेब छोड़ि आन कोनो रूपेँ हुनका ओ बुझबे ने करै' छथीन्ह। सुनैछी, एहिमे आइओ कालिह, बहिनिक गञ्जनाक परिसमाप्ति नहि। हुनक धारणा सङे हमर धारणा नहि मिलत, तैओ हुनका कहबन्हि—हम जे होइ, अपमान जे अपमान-ई छोड़ि आओर किछु नहि। बहिनिक सासुओ करथि, तैओने।

बजैत बजैत हुनका आँखिमे कने नोर भरि गेलन्हि।

विप्रदास स्थिरसँ कहलथीन्ह—मुदा ओ त अहाँक अपमान नहि कएलन्हिहेँ।

वन्दना जोर द' क' कहलथीन्ह—निश्चय कएलन्हिहेँ।

विप्रदास तुरन्ते उत्तर नहि देलथीन्ह, कनेकाल चुप रहि तखन कहलथीन्ह —नहि, माए अहाँक अपमान नहि कएलक। किन्तु ओकरा अपना छोड़ि

अहाँके ई बात आन नहि बुझा सकैए। तर्क कएलासँ नहि, ओकरा लगमे रहलासँ ई बात अहाँ बुझब।

वन्दना खिड़कीक बाहर देखैत रहलीह।

विप्रदास कहए लगलथीन्ह—एक दिन बाबूक सङ्ग माएक झगड़ा भेलैक। कारण तुच्छ, किन्तु बात बढ़ि गेलैक बेश। अहाँके सभ बात नहि कहि सकै छी, किन्तु ओही दिन बुझलहुँ हमर बिनु पढ़लि लिखलि माएके आत्मर्य्यादाक ज्ञान कतेक गम्भीर छैक।

वन्दना सहसा घूरि कए देखलन्हि अपरिसीम मातृ गर्वसँ विप्रदासक समस्त मुख-मंडल उद्भासित भए गेलन्हि अछि।

किन्तु ओ किछु नहि बाजि फेर खिड़कीक बाहर देखए लगलीह।

विप्रदास बाजए लगलाह—बहुत दिनक बाद माएके कोन एकठा बातक सूरे इएह पुछलिऐक, माए, एते पैघ आत्ममर्य्यादाक ज्ञान तोरा कत'सँ भेलौक।

वन्दना मुँह नहि फिरा' कए कहलथीन्ह—की कहलन्हि ओ?

विप्रदास कहलथीन्ह....अहाँ प्रायः जनैछी, हम माएक अपन बेटा नहि छिऐक। ओकरा अपन दूगोट बेटा बेटी छैक—द्विजू आ' कल्याणी। माए कहलक, तोरा तीनू गोटाके एक सङ्ग एके ओछाओना पर मनुष्य बनएबाक भार जे हमरा देने छलाह, सएह ई विद्या हमरा दान कएलन्हि, आन केओ नहि। ओही दिनसँ हम बुझै छी, माएक एहि गम्भीर आत्म-सम्मानक बोध ककरो एको दिन ले' नहि बुझ देलकैक जे ओ हमर अपन जननी नहि, सतमाए थीक। एकर अर्थ बुझै छिऐ?

कनेकाल चुप रहि फेरि ओ बाजए लगलाह—अभिवादनक उत्तरमे के कतेक हाथ उठओलक, कते दूर हँटिकए ठाढ़ भेल, नमस्कारक प्रतिनमस्कारमे के कते माथ निघुड़ओलक, इएह ल' क' मर्य्यादाक लड़ाइ सभ देशमे छैक; अहङ्कारक निशाक खोराक अहाँ लोकनिक पाठ्य पुस्तकक प्रति पत्रमे पाएब, किन्तु माए नहिओ भ' क' अनकर नेनाक माए भ' क' जाहि दिन माए हमरा

सभहक वृहत् परिवारमे पाएर रखलन्हि, ओहि दिन आश्रित आत्मीय परिजनक गरामे जेना विष भरि गेलन्हि। किन्तु जाहि वस्तु ल' क' ओ समस्त विषकें अमृत बना लेलन्हि, से गृह-कर्त्रीक अभिमान नहि, से गृहिणीपनाक जवर्दस्ती नहि, से माएक अपन मर्य्यादा। ओ एतेक ऊँच जे ओकरा केओ लङ्घन नहि कए सकल। किन्तु ई तत्व अछि खाली हमरा लोकनिक देशमे। विदेशक लोक ई बात सभ त जनैत नहि अछि, ओ सभ एकबारक खबरि देखिकए कहै छन्हि,—हिनका सभकें दासी, सिक्कड़ जड़ल अन्तःपुरक बाँदी, नौकरनी।

बाहरसँ, भ' सकैए, सएह देखाइत हो, दोष ओकरा सभकें नहि देबैक, किन्तु घरक दास दासिओक सेवाक नीत्रामे अन्नपूर्णा राज राजेश्वरीक मूर्त्ति यदि ओकरा सभहिक नजरि पर नहि पड़ैत छथीन्ह—त तें कि अहूँ सभहिक दृष्टि ओहि पर नहि पड़त ?

वन्दना अभिभूत दृष्टिएँ विप्रदासक मुहक प्रति देखैत रहलीह।

वारिस्टर साहेब जोरसँ बाजि उठलाह—ट्रेन एते काल पर हावड़ा प्लेटफर्म मे 'इन्' कएलक।

वन्दनाक पिताकें प्रायः तन्द्रा आएल छलन्हि, चमकि कए तकलन्हि, बजलाह—ह, बँचलहुँ।

वन्दना मृदुकण्ठे चुप चुप कहलथीन्ह—हमरा आओर कलकत्तामे उतरबाक इच्छा नहि होइए, ओझाजी। मन होइए अहाँक माए लग फिरि जाइ। जा क' कहिअन्हि, माए हम नीक नहि कएलहुँ, हमरा क्षमा करू।

विप्रदास खाली हँसलाह, किछु बजलाह नहि।

स्टेशन पर उतरि ओ पुछलथीन्ह—अपने कत' जाएब ?

राय साहेब कहलथीन्ह—बराबरि त' ग्रैण्ड होटलमे जाइछी, ओकरा तारो द' देने छिऐक—ओतहि जाएब।

एहि व्यक्तिक सोझाँ ग्रैण्ड होटलक बातसँ आइ जेना वन्दनाकें लाज होअ' लगलन्हि।

पंजाबक वारिस्टर साहेब गाड़ीक अएबामे लेट होएबाक प्रति अतिशय क्रोध

प्रकाश कए बेरि-बेरि बुझबए लगलाह जे हुनका बी० एन० क लाइनसँ जाएक होएतन्हि—तेँ वेटिङ् रूम छोड़ि आओर कतहु जएबाक नहि। विप्रदास निश्शब्द ठाढ़ छथि, राय साहेब अपनो कने लज्जित भ' क' कहलथीन्ह—किन्तु ओझाजी, अपने ?—अपनहुँ—हमरे—सभक सङ—

ग्रैण्ड होटलमे ?—बाजि विप्रदास हँसलाह,—कहलथीन्ह हमरा ले' चिन्ता नहि। बउ बाजारमे द्विजूक एकटा घर छन्हि, अधिक काल आब' पड़ैए—लोक वेद सेहो छैक—अच्छा आइ ओतहि चलै चलू ने।

वन्दना पुलकित भए गेलीह—चलू, सभ केओ ओतहि चलब। हुनका माथपरसँ जेना एकटा बोझ उतरि गेल होइन्ह। आनन्दक प्रावल्यें ओहि दूनू सहयात्रियोकेँ ओ सादर आह्वान कए सभक संग मोटरमे जाकए बैसलीह।

## ९

बन्दना भिनसरू पहर ऊठि कए देखलन्हि, एहि डेराक सम्बन्धमे ओ जे अनुमान कएने छलीह, ई से नहि। सोचने छलीह, पुरुषक डेरा, अधिक संभव एकर कोनो कोनमे जंगल, सिड़हीक लगमे थूक, पानक पीकक दाग—टूटल फाटल असबाब सभ मैल ओछाओन, धरनि, कड़ीमे झोल लटकल—मकड़ाक जाल,—इएह सभ विश्रृङ्खल वस्तु। गत रातिमे सामान्य इजोतमे थोड़बे कालमे किछु बेशी देखल नहि भेलन्हि, किन्तु आइ सभ सुश्रृङ्खल व्यापार, परिच्छन्न वस्तु देखिकए ओ वास्तवमे आश्चर्य्यित भेलीह। वेश पैघ घर, अनेक कोठरी, कतेक ओसारा, सभ परिस्कार पवित्र, झक-झक करैत। दोआरिक आगाँ एक गोट मध्यवयसी विधवा स्त्रीगण ठाढ़ि छलि, देखबामे नीक लोकक घरक जेकाँ, ओकरा गराँमे आँचर द' क' प्रणाम करैत देरी वन्दना संकोचें किछु चंचल भेलीह।

ओ कहलकन्हि—बहिन, अहीँ ले हम एत' ठाढ़ि छी, चलू पैखाना आ' नहएबाक घर देखा' दै' छी। हम एहि डेराक कमेनिहारि थिकहुँ।

वन्दना पुछलथीन्ह—बाबू उठलाह ?

नहि, राति सुतबामे देरी भेल रहन्हि, प्राय: उठबामे देरी हेतन्हि।

हमरा सभक सङ आओर दू गोटे जे आएल छथि—ओ सभ ?

नहि, ओहो सभ ने उठलाहे ।

आहांक बड़का मालिक ? ओहो सुतल छथि ?

दासी हँसि कए कहलकन्हि, नहि, ओ गंगा-स्नान, पूजा-पाठ सभ क' क' कचहरीक घरमे गेलाह । बजबिऔन्ह कि ?

वन्दना कहलथीन्ह, नहि, काज नहि ।

पैखाना ओ स्नानक घर फूटे—कने दूर पर एकटा बरामदा पार क' क' जाए पड़त । वन्दना जाइत-जाइत कहलथीन्ह—अहांक एहू ठाम 'बाथरूम' सुतबाक कोठरी लग रहब कठिन, नहि ?

दासी कहलकन्हि—नहि । माए बीच बीचमे काली माइक दर्शन ले' कलकत्ता अबैत छथीन्ह, त' एहि डेरामे रहैत छथीन्ह किने, तें ओ सभ होब' बला नहि ।

वन्दना मने मन कहलन्हि—एहू ठाम ओएह प्रबल-प्रताप माए । आचार अनाचारक कठिन शासन । ओ फीरि कए कपड़ा, आङी, गमछा आदि आनि-कए कहलथीन्ह, एत' यदि दू चारि दिन रह' पड़ए त' अहाँके की कहि क' सोर करब ? एत' अहाँ छोड़ि कए आनो केओ कमेनिहारि—दाइ छै ?

ओ कहलकन्हि—छैक, मुदा ओकरा सभके आनो बहुत काज रहै छै' । ऊपर अएब़ाक समय नइ भेटै छै' । अहाँ के जे काज होअए से हमरे कहब, हमर नाम छी अन्नदा । परन्तु हम त निछक्क देहाती लोक छी, कहिओ दोष, त्रुटि, सेहो भ' जाएत ।

ओकर विनय वाक्यसँ वन्दना मने मन बेश प्रसन्न भए पुछलथीन—अहांक घर कत अछि, अन्नदा । अहाँके के के अछि ?

अनन्दा कहलकन्हि—हमर घर हिनके लोकनिक गाममे, बलरामपुर । एके टा बेटा अहि, तकरा इएह सभ लिखा पढा क' काज देने छथीन्ह, अपन बहु ल' क' ओ गामहिमे रहैए । नीके-जकां रहैए ।

वन्दना कौतूहलसँ प्रश्न कएलथीन्ह—तखन आहाँ अपने एखन तक नोकरी किए करै' छी, बेटा पुतोहु ल' क' घरे पर रहि सकै' छी ?

अन्नदा कहलकन्हि—इच्छा त होइए, बहिन; मुदा क' नइ होइए। कष्टक दिनमे बाबू लोकनिकेँ बात देने छलिअनि जे यदि हमर बेटा मनुष बनत त अनका धीआ पूता के मनुष बनएबाक भार उठाएब। ओएह भार आब गरदनि सँ नइ उतारल पार लगैए। देशक कतेक रास नेना एत' पढ़ै' लिखै' छैक। हम नहि देखबै' त ओकरा सभके देख' बाला केओ नइ।

ओ सभ एही डेरामे रहै छैक ?

हँ, एही डेरा मे रहि क' कालेजमे पढ़ै छै। मुदा अहाँके आब देरी होइए, हम बाहर जाइ छी, अहाँ जएह सोर करब कि हम चल आएब।

वन्दना 'बाथरुम' मे ढुकैत देखलन्हि भीतर मे अनेक तरहक व्यवस्था। लगेमे गोड़ तिनिएक कोठरी; स्पर्श-दोष बचएबाक हेतु जतेक तरहक उपाय बुद्धिमे आबि सकैत छैक, ताहि मे त्रुटि नहि। बुझलन्हि, ई सभ माएक व्यवहारक हेतु। पाथरेक बैसकी, पाथरेक चौकी, एक दिश गोड़ तिनिएक खूब पैघ पैघ तामक तमघैल आ बासन—बूझि पड़ैछ—गंगाजल रखबा लेल' सभ दिन माजल जाइत, झक् झक् करैत। ओ कहिआ आइलि छलीह—आ फेर कहिआ अओतीह केओने जनैए, तैओ अवहेलाक चिह्न मात्र कतहु आँखिसँ नहि देखब। जेना एही ठाम छथि, तेहिना सयत्न, सतर्क व्यवस्था। ई जे खाली हुकुम द' क' शासन कएलासँ नहि होइ छैक, ओहिसँ पैघ किछु एक गोट वस्तु सभटा नियन्त्रित करैत छैक, ई बात वन्दना देखितहि बूझि गेलीह। आओर इएह माए, स्त्रीगण जे एहि संसारमे सर्व-साधारणसँ कतेक उर्द्ध स्थान पर अवस्थित छथि, ई बात ओ बहुत काल तक अपने मने स्तब्ध ठाढ़ि भेलि सोचए लगललीह। गल्पमे, लेखमे, पुस्तकमे भारतीय नारी जातिक वहुत दुःखक कथा ओ पढ़ने छथि, हुनका सभिक हीनताक लज्जा सँ ओ अपने नारीक मर्म्मस्थल मे अत्यन्त ग्लानि पओलन्हि अछि, ई मिथ्या नहि, किन्तु एहि घरमे एक-सरि ठाढ़ि भेलि ओ सभ सत्य बूझब कि मानब हुनका आइ आघात करैत छलन्हि।

बाहर अएला पर अन्नदा हँसी मुहे कहलकन्हि, बहुत देरी भ' गेल बहिन;

करीब दू घंटा—ओ सभ निचला घरमे खएबाले बाट देखै छथि। चलू।

अहांक बड़का मालिक कचहरीक घरसँ बहरएलाह ?

हँ ओहो नीचहि छथि।

हमरासभक सगे त नहि खएताह ?

—अन्नदा सहास्ये कहलकन्हि—खएबो करितथि त दुपहरक बाद, बहिन। आइ आर सेहो नइ। एकादशी, सन्ध्याक बाद प्रायः किछु फल तल खएताह।

वन्दना कोनाक किछु बुझि गेलि छलीह जे ई स्त्रीगण एहि घरकँ खाली दासी-जातीय नहि, कहलथीन्ह—ओ त ब्राह्मणघरक विधवा नहि छथि, एकादशीक उपास कोन दुःखे करताह ? कालिह गाड़ीमे, एकादशी नहि होउक, दशमीक उपास हुनका ओहिना भ' गेलन्हि।

अन्नदा कहलकन्हि—से होउक, उपास हुनका देहमे नहि लगै छन्हि। माए कहै छथीन्ह—ओइ जन्ममे तपस्याक क' क' विविन अइ जन्ममे उपास सिद्धिक वर पओने छथि, हुनक खाएब देखि क' अवाक् भ' जाए पड़ै छै।

वन्दना नीचा आबि कए देखलन्हि—हुनका समहिक अभ्यस्त चाह, रोटी, अंडा प्रभृति टेबुल पर सुसज्जित, एवं पिता ओ सस्त्रीक पंजाबक बारिस्टर क्षुधासँ चञ्चल।

हुनका लोकनिक धैर्य्य प्रायः शेष सीमा पर पहुचल छन्हि, तुरन्ते एकबार फेकि कए साहेब अनुयोगक कण्ठे कहलथीन्ह—इह--एते देरी हए, भिनसुरका-पहर आब देखै' छी, कोनो काज नहि होएत।

विप्रदास लगेमे बैसल छलाह—वन्दना जिज्ञासा कएलथीन्ह—ओझाजी, अहां नहि खाएब ?

विप्रदास व्यंग बुझलन्हि, हँसि कए कहलथीन्ह. चाह हम नहि पिबै छी, खाइ' छी खाली दालि भात। सेहो एखन नहि,—हमरा ले' चिन्ता नहि, अहाँ बैसि जाउ।

वन्दना एकर उत्तर नहि देलथीन्ह, पिता ओ अतिथि दूनू गोटाकेँ उद्देश कए कहलथीन्ह, हमरासँ गलती भ' गेल, हमरा कहा पठाएब उचित छल, से-

नहि भेल, । हमरा खएबाक इच्छा नहि अछि, किन्तु अहाँ सभ आओर अपेक्षा नहि करू, आरम्भ करू। हम बरू अहाँ सभकें चाह तैआर क'दै छी । ई बाजि ओ तुरन्त ओहि काजमे लागि गेलीह ।

सभ व्यस्त भेलाह । नौकर एक दिशि ठाढ़ छल ओ कुण्ठित भेल, पिता उद्वेगसँ पुछलथीन्ह किछु होइ तने छ' हए । सस्त्रीक वारिस्टर की जे वजताह किछु नहि बुझलन्हि ।

वन्दना चाह तैआर करैत कहलथीन्ह, नहि बाबू, किछु नहि होइए, खाली खएबाक इच्छा नहि होइए ।

तखन खएबाक काज नहि । कालिह वेशी रातिक जे खएलह से पचल' हए नहि । से छोड़ि दिन चढ़लासँ पित्त बढ़ि गेल हेत' किने ।

सएह भेलए बुझि पड़ैए । वेर भेलासँ ओझाजी सङे बैसि कए दालि भात खाएब, एह डेरामे से प्राय: पचि जाएत । एहि बातपर आन केओ तेना भ 'क' ध्यान नहि देलथीन्ह—किन्तु विप्रदासक मुहक ऊपर द' क' जेना एकटा कारी छाया कने कालले भसिआ गेलन्हि ।

नौकर की सोचि क' हठात् बाजि ऊठल—आइ एकादशी, आइ साँझू पहर खाली दू टा फल मूल छोड़ि आओर त ओ किछु नहि खाइ छथीन्ह ।

वन्दना एखने ई बात सुनने छलीह, तथापि विस्मयक भान करैत बजलीह —खाली फल मूल ? बेश हल्लुक भोजन । सएह बूझि पड़ैए खूब बढ़िआ होएत । नहि, ओझाजी ?

विप्रदास हँसिकए घाड़ हिलबैत कहलथीन्ह—होएत; किन्तु केओ जे हुनका स्वच्छन्द पूर्वक उपहास क' सकैत छन्हि, आइ ई पहिले पहिल बूझि, मने मन स्तब्ध भए गेलाह । आ' हुनका मुह दिशि देखि कए वन्दना सेहो प्राय:ई अनुभव कएलन्हि ।

काज कर्म्म कए वन्दना पिताक सङे जखन डेरा पर अइलीह त अपराह्ण-पय । सस्त्रीक वारिस्टर साहेब जादूघर, चिड़आखाना, खेलक मैदान

विक्टोरिआ स्मृति-सौध प्रभृति कलकत्ताक प्रधान द्रष्टव्य वस्तु सभ परिदर्शन कए एखनो फिरल नहि छलाह। रातुक गाड़ीसँ हुनका सभकें जएबाक बात —किन्तु प्रोग्राम बदलि कए ओ सभ जाएब स्थगित कएलन्हि अछि।

राय साहेब कपड़ा बदलए ले' अपन कोठरी गेलाह। वन्दनाकें अपना कोठरीक आगाँ अन्नदासँ भेंट भेलन्हि। ओ हँसैत अनुयोगक सुरे कहलकन्हि--बहिन भरि दिन बिना खएने काटलउँ, अहाँक फल तल सब आनि क' रखने छी, कने जल्दीसँ हाथ मुह धो लिअ, हम एते कालमे सभ ठीक क' दै छी, की ?

किन्तु बड़का मालिक—ओझाजी ? ओ कत' छथि ?

अन्नदा कहलकन्हि—हुनका ले आओर बेशी व्यस्त होएबाक काज नइ, बहिन, ई सभ हुनक सभदिनक बात। खएबाक अपेक्षा नहिए खाएब हुनक नियम।

किन्तु ओ छथि कत' ?

ओ गेल छथि दक्षिणेश्वर, कालीक दर्शन कर'। एखने अओताह।

वन्दना कहलथीन्ह—सएह नीक, हुनके अएलासँ ठीक होएत। मुदा आन सभ ? हुनका सभहिक की व्यवस्था भेलन्हि हें, ? चलू त अन्नदा, अहाँ सभक भनसाघर एक बेर देखि आउ।

अन्नदा कहलकन्हि—चलू। किन्तु अइ साँझ हुनका समाहिक व्यवस्था भनसाघरमे नइ भेलन्हिहें बहिन, भेलन्हि हें होटलमे—खेनाइ ओतहिसँ अओतन्हि।

वन्दना आश्चर्य्यित भए क' कहलथीन्ह—से की बात ? ई विचार अहाँ सभकें के देलक ?

बड़का मालिक अपने हुकुम द' गेल छथीन्ह।

किन्तु ई सभ अखाद्य कुखाद्य ओ सभ खएताह कत' ? एहि डेरा मे ? अहाँ-सभक माए सुनतीह त' की कहतीह ?

अन्नदा अप्रतिभ भ' क' कहलकन्हि—नहि, ओ नहि सुनि सकथीन्ह।

लगैक एक घरमे सभटा ठीक भेलन्हिहें। वासन तासन होटले वाला नेने अओतन्हि—कोनो असुविधा नहि होएतन्हि।

वन्दना कहलथीन्ह—हुकुम त द' गेलथीन्ह मुदा तामिल के कएलन्हिहें? हुनका लग एक बेरि हमरा ल' जा' सकै छी?

से कोन पैघ बात बहिन, चलू ने ल' जाइ छी।

चलू।

मुखर्जी लोकनिक एक बड़का तिजारति—कारबार कलकत्तामे चलै छन्हि। निचला महलमे गोड़ चारिएक कोठरी ल' क' ई आफिस।

किरानी, गुमास्ता, सरकार, चपरासी, मैनेजर आदि व्यवसायक सभ लोक काज करै छथि, वन्दनाक प्रवेश करैत देरी सभ उठि कए ठाढ़ भेल। वयस ओ पद मर्य्यादाक लक्षणेसँ मैनेजर-व्यक्तिकें सहजहिं चीन्हि, इसारासँ हुनका बाहर बजा' कए कहलथीन्ह होटलमे आर्डर द' एलिऐ ए अहाँ अपने?

मैनेजरकें मूड़ी हिला क' स्वीकार करैत देखि, कहलथीन्ह आओर एक बेरि जाउ, ओकरा सभकें रोकि आउ।

मैनेजर विस्मित भेलाह—इतस्ततः करैत कहलथीन्ह—बड़का मालिक नहि फीरि क' अएला तक—

वन्दना कहलथीन्ह—प्रायः तखन रोकबाक समय नहि रहत। औझाजी खिसिअएताह त हमरा ऊपर खिसिअएताह। अहाँकें डर नहि। जाउ, देरी नहि करू। ई बाजि ओ जाए ले' तैयार भेलीह, उत्तरक अपेक्षो ने कएलन्हि।

हत-बुद्धि मैनेजर बुझलक—साधारण बात नहि। विप्रदासक आज्ञा अमान्य करब कठिन, एतेक कि असम्भव कहि सकै छी, किन्तु ई अपरिचित स्त्रीगणक सुनिश्चित, निस्संशय शासनक अवहेलना करब कम कठिन नहि। प्रायः तहिना असम्भव। क्षण काल विमूढ़ जेकाँ स्तब्ध ठाढ़ भेल, द्विधा जड़ित सूरे कहलकन्हि—जी, त जाइ छी रोकि अबै' छिऐ'। किछु अगाउ द' आएल छिऐ'।

अच्छा द आएल छिऐ' त रहुओ, मुदा अहाँ देरी नहि करू। वाजि ओ फिरि अइलीह।

सन्ध्या काल घूमि कए अएलाक बाद विप्रदास समाचार बुझलन्हि। खुशी होएताह कि खिसिअएताह किछु सोचि नहि सकलाह।

भनसा घरमे देखलन्हि आयोजन सम्पूर्ण-प्राय। वन्दना एकटा छोट स्टूल पर बैसलि भनसीआ—ब्राह्मणकेँ ल' क' व्यस्त। उठि ठाढ़ि भए कृत्रिम विनयक स्वरमे कहलथीन्ह—क्रोधमे आविकए मैनेजर बाबूकेँ नौकरीसँ बरखास्त त ने कएलिअन्हिहेँ?

विप्रदास कहलथीन्ह—ओझा जी, एतेक क्रोधी छथि ई खबरि के देलक अहाँके?

वन्दना कहलथीन्हो—लोक कहैं छैक बाघक गन्ध एक योजन दूरसँ बूझि पड़ छै'।

विप्रदास हँसलाह—किन्तु अतिथि लोकनिक की उपाय होएतन्हि? हिनका सभकेँ त रातिमे 'डीनर' खएबाक अभ्यास छन्हि—तकर की होएतन्हि, कहू त।

वन्दना कहलथोन्ह—जिनका नहि भेलासँ काज नहि चलतन्हि तिनका लोकक सङ्ग होटल पठा दिऔन्ह। विलक रुपैया हम देबैक।

हँसी नहि बन्दना, ई प्रायः नीक नहि भेल।

नीक होइत—बूझी, ई सभ वस्तु एहि डेरामे अनलासँ? माए सुनितथि त की कहितथि, कहू त?

बिप्रदास जे ई बात नहि सोचने छलाह से नहि, किन्तु स्थिर नहि कएने छलाह—कहलथीन्ह—ओ नहि जानि सकतथि।

वन्दना माथ हिलाक' कहलथीन्ह—बूझि जइतथि—हम चिट्ठी लीखि दितिअन्हि।

किए?

किए? कहिओ जे नहि कएने छलहुँ, दू दिन ले—ई क्रए गोट बाहरक

लोक ले' किए कर'ब ? कहिओ ने !

सूनि कए विप्रदास जे खुशी भेलाह से नहि, विस्मयापन्न भेलाह।

कनेकाल चुप रहि कए कहलथीन्ह—किन्तु अहाँ जे कालिहसँ किछु खएलहुँहे नहि' वन्दना; क्रोध कि शान्त नहि होएत ?

हुनका कण्ठस्वरमे एहि बेरि किछु स्नेहक सूर छलन्हि।

वन्दना मृदुकण्ठे जबाब देलथीन्ह—हमरा खिसिआ किए देलहुँ ? मुदा सुनू, अहाँक खएवाक फलाहारक बस्तु सभ आनल गेल, ताबल सन्ध्या-वन्दन क' लिअ, हम जा कए सभ ठीक क' दै' छी। किन्तु आन केओ यदि परसि देत, त हम आइओ नहि खाएब, कहि दैत छी।

अच्छा जाउ—बाजि, विप्रदास ऊपर चल गेलाह।

प्राय: गोटेक घंटाक बाद वन्दना फल मूल, फलाहारी मधुर आदि उज्जर पाथरक थारीमे हाथमे नेने विप्रदासक घरमे आबि ठाढ़ि भेलीह—अन्नदाक हाथमे आसन ओ पानिक गिलास छलैक।

पानि ल'क' ओ सभटा पोछि कए ठाँओ कए देलकन्हि।

विप्रदास वन्दनाक दिशि देखि क' सविस्मये पुछलथीन्ह—अहाँ एखन फेरि स्नान कएलहुँहे कि ?

अहाँ खाए बैसू, कहि ओ थारी बाटी रखलन्हि।

## १०

विप्रदास आसन पर बैसि कए फेरि ओएह प्रश्न कएलथीन्ह—सत्ये, फेरि नहा अएलहुँहे ? दु:खित पड़ब तखन ?

से होअओ, किन्तु हमरा हाथे नहि खएबाक छल प्रपंच आविस्कार कर' नहि देब, इएह हमर प्रण। स्पष्ट क'क' कह' पड़त जे अहाँक छुइल नहि खाएब। अहाँ म्लेच्छक बेटी थिकहुँ।

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह—किताबमे पढ़लहुँहें नहि जे दुरात्माके छलक अभाव नहि रहै छैक।

वन्दना कहलथीन्ह—पढ़लहु हें, परन्तु अहाँ दुरात्मनहि छी, भयानको नै छी; हमरे सभ जेकाँ दोष गुणसँ युक्त मनुष छी। से नहि भेलासँ आइ ओहि बेचारा सभहिक 'डीनर' वन्द नहि कर' जइतहुँ।

मुदा सत्य कारण की छल ?

सत्ये कारण अहाँके कहैछी। अहाँ सभक परिवारमे ओ सभ नहि चलैए। ने देशक घरमे' ने एत'। किए ओ काज तखन करब ग' ?

परन्तु बुझल त अछि—ओ सभ केओ विलाँयतसँ आएल, एहने खानाक हुनका सभके अभ्यास छन्हि। वन्दना कहलथीन्ह—अभ्यास जे होउन्ह, तैंओ बंङ्गाली थिकाह। बङ्गाली अतिथिके डीनर नहि खाए भेटलन्हि तें मरि गेलाह—कतहुँ एहन बात नहि सुनलहुँहें। तें ई आग्रह अग्राह्य। अहाँक ई फाजिल बात होइए।

विप्रदास कहलथीन्ह—तखन काजक कथा कने सुनी।

वन्दना बजलीह—से ठीक हम नहि जनैछी। किन्तु बुझि पड़ैए जे अहाँ मुँहसँ जे बजै' छी, से सभटा भीतरसँ नहि मानै' छी। नहि त माएसँ चोराक' ई व्यवस्थो ले' कखनहु तैआर नहि होइतहुँ। लोक सभ झूठे अहांसँ एते डेराइए। जकर डर करक चाहिए से अहाँ नहि, अहांक माए।

सूनि क' विप्रदास कनेको नहि खिसिएलाह, प्रत्युत कने हँसि कए कहलथीन्ह—अहाँ दूनू गोटाके चिन्हि गेलहुहें। परन्तु ई बात माएसँ चोराक' होइ छल ई खबरि अहाँ कत' सँ सुनलहुँ ?

वन्दना नाम नहि कहलथीन्ह—खाली कहलथीन्ह—हस पुछारी क'क' बुझि गेलहुँहें। ई एहन भयंकर दुर्घटना होइत जे बहिन हमरा कहिओ क्षमा नहि करितथि। सभ दिन अभिसम्पात क'क' कहितथि जे वन्दनेक कारणे एना भेल। तें किन्नहु ई काज हम अहाँके नहि कर' देलहुँ।

विप्रदास कहलथीन्ह—अहाँ अत्यन्त आत्मीय कुटुम्बमे सबसँ पैघ छी। ई अहीँक सन बात होइए। किन्तु बिना चोरओने नुकओने, अहाँक हाथक छुइल

हमर खेनाइ चलि सकैए कि नहि, ई बात ओहि लोकके पुछने छलिऐक ? बरू से बूझि आउ, तते काल हम बैसै' छी, ई कहि ओ हँसि कए थारी कने घुसका देलथीन्ह ।

वन्दनाक मुँह पहिने लज्जासँ लाल भ' गेलन्हि, पाछा सम्हरिक' कहलथीन्ह नहि ई बात हम हुनका नहि पुछबन्हि ग', अहांकें खएबाक काज नहि ।

विप्रदास कहलथीन्ह—किन्तु मुश्किल त ई जे अपना घरमे अहांकें उपासलो त नहि राखि सकै छी,—ई कहि ओ खाए लगलाह ।

वन्दना कने काल चुपचाप रहि, पुछलथीन्ह—किन्तु एकरा बाद की करब ?

गाम जाक' गोबर खाक' प्रायश्चित करब, कहि ओ हँस लगलाह ।

मुदा हुनक हँसी रहितो ई सत्य कि परिहास, वन्दना निश्चित रूपें नहि बूझि, फेरि स्तब्ध भए गेलीह ।

विप्रदास कहलथीन्ह—माए सङे त बुझारति होएबे करत, परन्तु अहांक बहिनिक शास्तिसँ जे परित्राण पाएब, ई ओकरो सँ बेशी । बाजि फेरि सहास्ये कहलथीन्ह—विश्वास नहि भेल ? अच्छा पहिने विआह होअओ, तखन ओझाजी क बात बुझबन्हि, ई कहि क्रमहि खएबाक वस्तुकें निश्शेष-प्राय कए ओ उठि ठाढ़ भेलाह ।

एमहर 'डीनर' त खारिज भेलन्हि परन्तु अन्यान्य रूचिकर आहार्य्य पदार्थक आयोजनमे अवहेलना नहि भेलन्हि । सुतरां परितृप्तिक हिसाबे कतहु कोनो त्रुटि नहि भेलन्हि । सभ काज समाप्त कएलाक बाद ओछाओन पर पड़लि वन्दना सोचए लगलीह जे हुनका प्रति विप्रदासक आचरण अप्रत्याशितो नहि । प्राय: अन्यायो नहि, एवं अपन सम्बन्धी भइओ कए जाहि कारणें एतेकाल घनिष्ठता ओ परिचय नहि छलन्हि—सेहो एते दिनक प्राचीन बात नवीन रुपें आघात बोध करब, खाली वाहुल्य नहि, बिडम्बना । प्रणाम कर' गेला उत्तर विप्रदासक माए स्पर्श दोष बँचा क' हँटि गेलथीन्ह, तकरा प्रतिवादमे वन्दना बिना खएनहिँ खिसिआ क' चल अइलीह । शिक्षा-विहीन नारीक उद्धत

धर्म्मबोध हुनका आघात नहि कएलकन्हि, से नहि, तथापि एहि मूढ़ताकेँ सेहो गोटेक दिन बिसरब सहज, किन्तु विप्रदास जे कएलन्हि—तकरा प्रतिवादमे की करब जे उचित वन्दना नहि सोचि सकलीह। हिनका हाथक छुइल फल मूल मिष्टान्न ओ खएलथीन्ह अछि ई सत्य, किन्तु से स्वेच्छासँ नहि, ओ जबर्दस्ती रूपेँ। पाछाँ बलरामपुरक कदर्य्य काण्ड फेरि एहू ठाम ने होअए, एहि डरेँ। ई—जेना वताहक हाथसँ प्राण-रक्षा करब। किन्तु ई अनाचार विप्रदासकेँ हृदयमे लगलन्हि अछि—गाम जा' क' ओ प्रायश्चित्त करताह—ई बात कहुना जेना निश्चित रूपेँ अनुमान कए वन्दनाक आँखि मे निम्न नहि अएलन्हि; अथच इहो बड़ी काल सोचलन्हि जे ई बात एते' भयंकर किए? हुनका लोकनिक चलबाक पथ त' एक नहि—संसारमे दूनू गोटा ले प्रशस्त स्थान छन्हि। दैवात् संघर्ष यदि गोटेक दिन भइए जाइक—त' होउक। एहि प्रश्नक सम्मुखीन होएबाक आह्वान एहि जीबनमे हिनका के दैत छन्हि? एहिना कए ओ अपनाकेँ अपनहि शान्त करबाक अनेक चेष्टा कएलन्हि, तथापि एहि व्यक्तिक निशब्द अवज्ञा कोनहुना मनसँ हँटा नहि सकलीह।

सोचैत सोचैत कखन—कोनो काल ओ सूति रहलीह, किन्तु अस्वस्थ वाधा-ग्रस्त निद्रा अकस्मात् टूटि गेलन्हि। तखनो भोर नहि भेल छलैक—असमाप्त निद्राक अवसन्न जड़िमा दूनू नेत्रकेँ आछन्न कएने छन्हि—किन्तु ओछाओन पर ओ नहि रहि सकलीह, बाहर आबि ओसाराक 'रेलिङ्' पर भर द' क' ठाढ़ि भए देखलन्हि—अल्पोज्ज्वल आकाश निशान्तक अन्धकारमे गाढ़तर भए गेल अछि; दूरमे बड़का सड़क पर क्वचित् कदाचित् गाड़ीक शब्द अस्फुट सुनबामे अबैछ, लोकक चलाचलमे एखनो वेश विलम्ब, जमस्त डेरा एकान्त, नीरव,—सहसा दृष्टि पड़लन्हि दुमहलाक माएक पूजा-कोठलीमे इजोत जरै छै—आओर तकरे एक सूक्ष्म रेखा रुद्ध गधाक्षक छिद्र बाटे सम्मुखक स्थान पर पड़ैत छैक। एक बेरि मनमे भेलन्हि—नौकर सभ प्रायः बिजुली बन्द करब बिसरि गेलैक—किन्तु दोसरे क्षण मनमे भेलन्हि, प्रायः ई विप्रदास—पूजा पर बैसलाह।

कौतूहल अदम्य भए गेलन्हि। बुझलन्हि, हठात् देखार भए गेलासँ लज्जा करबाक सीमा नहि पओतीह—एहि रातिमे कोठरी छोड़ि नीचा अएबाक—कोनो कारण देल पार नहि लगतन्हि—किन्तु आग्रह संवरण नहि कए सकलीह।

ध्यानक कथा वन्दना पुस्तकमे पढ़ने छथि, चित्रमे देखने छथि, किन्तु एहिसँ पहिने कहिओ आँखिसँ नहि देखने छलीह। निश्शब्द रातिक निसंङ्ग अन्धकारमे ओएह दृश्य आइ हिनका दृष्टि-गोचर भेलन्हि। विप्रदासक दूनू आँखि मुद्रित, हुनक बलिष्ठ दीर्घ देह आसन पर स्तब्ध भेल छन्हि, ऊपरक बातीक ज्योति हुनक मुह, कपार पर प्रतिफलित भए पड़ैत छन्हि,—विशेष किछु नहि, प्रायः कोनो आन समय देखलासँ वन्दना हँस' लगितथि, किन्तु तन्द्राजड़ित दृष्टिमे ई मूर्ति आइ हिनका मुग्ध कए देलकन्हि। एहि तरहेँ ओ कतेक काल जे ठाढ़ि छलीह से हुनका होश नहि, हठात् जखन चैतन्य भेलन्हि, तखन पूर्व्वक आकाश वेश साफ भए गेल छलैक, आ' नौकर सभहिक निन्न टूटि गेलैक, आब उठल सन। भाग्यसँ केओ एहि बीचशे ऊठि कए हुनका सम्मुख नहि अएलन्हि। आओर ओ अपेक्षा नहि कए स्थिरसँ ऊपर चढ़ि अपना कोठरी गेलीह—सुतैत देरी गम्भीर निद्रा-मग्न होएबामे हुनका कनेको विलम्ब नहि भेलन्हि।

केबाड़पर कने जोरसँ आघात कए अन्नदा सोर कएलकन्हि—अए बहिन, बड़ दिन उठलै—ऊठब नइ ?

वन्दना व्यस्त भए केवाड़ खोललन्हि, बाहर आबि ठाढ़ि भेलीह—वास्तवमे अबेर भ' गेलन्हि, लज्जित भए पुछलथीन्ह—ओ सभ आइओ हमरा ले' बैसल छथि कि ? कने सबेरे किए ने हमरा उठा देलहुँ ? स्नान क' तैयार होएबामे गोटेक घंटासँ कम नहि लागत, अन्नदा।

हुनक विषण्ण मुहक दिशि देखि कए अन्नदा हँसिकए कहल कन्हि—डर नइ बहिन, आइ ओ सभ सबूर नहि क' सकलाह, जलखइ क' लेलन्हि। आब जते' काले अहाँक मन हो, नहाउ सोनाउ। केओ ने सोर करत।

सूनि क' वन्दना जेना बँचलीह । ओहो हँसि कए कहलथीन्ह—अहाँ सभक बहुतो रास बात पसन्न नहि करै छी, मुदा ई धरि करै छी । सभ केओ दल बान्हिक' घड़ोक काँटा मिलाक' जे गिड़बाक पाला नहि—ई बड़का आराम ।

अन्नदा कहलकन्हि—मुदा अहाँके भिनसरू पहर भूख नहि लगैए, बहिन ?

वन्दना कहलथीन्ह—एको दिन ने । आ' तँओ नेनासँ ल' क' एखन तक सभ दिन खाइत अएलहुँहे । अच्छा जाइ छी, आर नहि देरी करब, ई बाजि ओ चल गेलीह ।

करीब दू घंटाक बाद नीचामे विप्रदासक सङ्े हुनका भेँट भेलन्हि । ओ कचहरी घरक सभ काज समाप्त कए बाहर अबैत छलाह । वन्दना नमस्कार कएलथीन्ह ।

चाह पीलहुँ ?

हँ ।

ओ सभ अपेक्षा नहि कए सकलाह—किन्तु अहींक—

वन्दना रोकिक' कहलथीन्ह, एहिले उपराग त' नहि देलहुँहे ओझाजी ?

विप्रदास हँसिकए बजलाह—मिजाजक बहादुरी अछि ई अस्वीकार नहि करब, किन्तु दूनू बहिनमे भेद जेना सूर्य्य आ चन्द्रमा । सुनलहुँहे जे जल्दीए विलाँयत जाइछी—शिक्षाकेँ पक्का कर'बा ले । जाउ, घूमि क' अएला पर खबरि देब, जा' क' मूर्त्ति कने देखि आएब ग' ।

सूनि कए वन्दना हँसलीह, किन्तु उत्तर नहि देलथीन्ह ।

विप्रदास कहलथीन्ह—ओहि देशमे, सुनैछी लोकके बारह बजे तक सुत' पड़ैछै—कठिन साधना ! अहाँके मुदा कष्ट क' क' साध' नहि पड़त—एही देशसँ अभ्यास अछि ।

वन्दना एहू बेरि हँसलीह—किन्तु ओहिना चुप रहि विप्रदासक मुह दिशि देखैत रहलीह । नितान्त सादा सीधा साधारण नीक लोकक मुह । हास्य

परिहासमे स्नेहशील, आने लोक जेकां एक गोट लोक— । तैओ गत रातिक नीरवतामे निर्ज्जन गृहक स्तब्ध मौन एहि मूर्तिकें केहन जे रहस्यावृत बुझने छलीह—एहि दिवालोकमे ओ कथा स्मरण कए हुनक कौतूहलक सीमा नहि रहलन्हि ।

ओझाजी, ई सभ कत' ? ककरो देखैं नहि छिअन्हि ?

विप्रदास कहलथीन्ह—एकर माने ओ सभ नहि छथि । अर्थात् श्वसुर महाशय एवं सस्त्रीक वारिस्टर महाशय—तीनू गोटे गेलाहे हावड़ा रेलवे स्टेशन—गाड़ी रिजर्व करावै ले ।

वन्दना विस्मयसँ पुछलथीन्ह—सस्त्रीक वारिस्टर महाशय क' सकै छथि परन्तु बाबू किए करओताह ? हुनका छुट्टी बितबामे एखनो आठ दश दिन बाँकी छन्हि । आ' से छोड़ि हमरा बिना कहनहि ···· ?

विप्रदास कहलथीन्ह —कहबाक समय नहि पओलन्हि—प्रायः टहलि कए अएलाक बाद भिनसरे बम्बइक आफिससँ जरूरी तार अएलन्हि—मुहक भाव देखलासँ ई सन्देह नहि रहल जे बिना गेने कोनो उपाय नहि ।

मुदा हम एते जल्दी किए जाएब ?

विप्रदास ओही सूरमे सूर मिला क' कहलथीन्ह—निश्चय—अहाँ किए जाएब ? हमहूँ त' सएह कहै' छी ।

वन्दना बूझि नहि सकलीह—तें जिज्ञासु भेलि मुह देखए लगलथीन्ह ।

विप्रदास कहलथीन्ह —बहिनिकें एकटा तार द' दिऔन्हिने—देओरकें सङ्ग नेने आबि जाथि । अहाँ सभकें जोड़ीओ खूब मिलत—अतिथि सत्कारक काज सँ हमरा जान छुटनहि बांचब ।

वन्दना सभये व्यग्र स्वरें जिज्ञासा कए उठलथीन्ह—से कि सम्भव भ' सकैए, ओझा जी ? माए कि कहिओ एहि प्रस्ताव पर मत देथीन्ह ? हमरा त' ओ देखिओ नहि सकै' छथि ।

विप्रदास कहलथीन्ह—एक वेरि चेष्टा क' क' देखि लिअ ने । कही त'

सभहक वृहत् परिवारमे पाएर रखलन्हि, ओहि दिन आश्रित आत्मीय परिजनक गरामे जेना विष भरि गेलन्हि । किन्तु जाहि वस्तु ल' क' ओ समस्त विषकें अमृत बना लेलन्हि, से गृह-कर्त्रीक अभिमान नहि, से गृहिणीपनाक जवर्दस्ती नहि, से माएक अपन मर्य्यादा । ओ एतेक ऊँच जे ओकरा केओ लङ्घन नहि कए सकल । किन्तु ई तत्व अछि खाली हमरा लोकनिक देशमे । विदेशक लोक ई बात सभ त जनैत नहि अछि, ओ सभ एकबारक खबरि देखिकए कहै छन्हि,—हिनका सभकें दासी, सिक्कड़ जड़ल अन्तःपुरक वाँदी, नौकरनी ।

बाहरसँ, भ' सकैए, सएह देखाइत हो, दोष ओकरा सभकें नहि देबैक, किन्तु घरक दास दासिओक सेवाक नीचामे अन्नपूर्णा राज राजेश्वरीक मूर्त्ति यदि ओकरा सभहिक नजरि पर नहि पड़ैत छथीन्ह—त तें कि अहूँ सभहिक दृष्टि ओहि पर नहि पड़त ?

वन्दना अभिभूत दृष्टिएँ विप्रदासक मुहक प्रति देखैत रहलीह ।

वारिस्टर साहेब जोरसँ बाजि उठलाह—ट्रेन एते काल पर हावड़ा प्लेटफर्म मे 'इन्' कएलक ।

वन्दनाक पिताकें प्रायः तन्द्रा आएल छलन्हि, चमकि कए तकलन्हि, बजलाह—ह, बँचलहुँ ।

वन्दना मृदुकण्ठे चुप चुप कहलथीन्ह—हमरा आओर कलकत्तामे उतरबाक इच्छा नहि होइए, ओझाजी । मन होइए अहाँक माए लग फिरि जाइ । जा क' कहिअन्हि, माए हम नीक नहि कएलहुँ, हमरा क्षमा करू ।

विप्रदास खाली हँसलाह, किछु बजलाह नहि ।

स्टेशन पर उतरि ओ पुछलथीन्ह—अपने कत' जाएब ?

राय साहेब कहलथीन्ह—बराबरि त' ग्रैण्ड होटलमे जाइछी, ओकरा तारो द' देने छिऐक—ओतहि जाएब ।

एहि व्यक्तिक सोझाँ ग्रैण्ड होटलक बातसँ आइ जेना वन्दनाकें लाज होअ' लगलन्हि ।

पंजाबक वारिस्टर साहेब गाड़ीक अएबामे लेट होएबाक प्रति अतिशय क्रोध

प्रकाश कए बेरि-बेरि बुझबए लगलाह जे हुनका बी० एन० क लाइनसँ जाएक होएतन्हि—तेँ वेटिङ् रूम छोड़ि आओर कतहु जएबाक नहि। विप्रदास निश्शब्द ठाढ़ छथि, राय साहेब अपनो कने लज्जित भ' क' कहलथीन्ह—किन्तु ओझाजी, अपने ?—अपनहुँ—हमरे—सभक सङ—

ग्रैण्ड होटलमे ?—आजि विप्रदास हँसलाह,—कहलथीन्ह हमरा ले' चिन्ता नहि। बउ बाजारमे द्विजूक एकटा घर छन्हि, अधिक काल आब' पड़ैए—लोक वेद सेहो छैक—अच्छा आइ ओतहि चलै चलू ने।

वन्दना पुलकित भए गेलीह—चलू, सभ केओ ओतहि चलब। हुनका माथपरसँ जेना एकटा बोझ उतरि गेल होइन्ह। आनन्दक प्राबल्यें ओहि दूनू सहयात्रियोकें ओ सादर आह्वान कए सभक संग मोटरमे जाकए बैसलीह।

## ९

बन्दना भिनसरू पहर ऊठि कए देखलन्हि, एहि डेराक सम्बन्धमे ओ जे अनुमान कएने छलीह, ई से नहि। सोचने छलीह, पुरुषक डेरा, अधिक संभव एकर कोनो कोनमे जंगल, सिड़हीक लगमे थूक, पानक पीकक दाग—टूटल फाटल असबाब सभ मैल ओछाओन, धरनि, कड़ीमे झोल लटकल—मकड़ाक जाल,—इएह सभ विश्रृङ्खल वस्तु। गत रातिमे सामान्य इजोतमे थोड़बे कालमे किछु वेशी देखल नहि भेलन्हि, किन्तु आइ सभ सुश्रृङ्खल व्यापार, परिच्छन्न वस्तु देखिकए ओ वास्तवमे आश्चर्य्यित भेलीह। वेश पैघ घर, अनेक कोठरी, कतेक ओसारा, सभ परिस्कार पवित्र, झक-झक करैत। दोआरिक आगाँ एक गोट मध्यवयसी विधवा स्त्रीगण ठाढ़ि छलि, देखबामे नीक लोकक घरक जेकाँ, ओकरा गराँमे आँचर द' क' प्रणाम करैत देरी वन्दना संकोचें किछु चंचल भेलीह।

ओ कहलकन्हि—बहिन, अहीँ ले हम एत' ठाढ़ि छी, चलू पैखाना आ' नहएबाक घर देखा' दैँ छी। हम एहि डेराक कमेनिहारि थिकहुँ।

वन्दना पुछलथीन्ह—बाबू उठलाह ?

नहि, राति सुतबामे देरी भेल रहन्हि, प्राय: उठबामे देरी हेतन्हि।

हमरा सभक सङ आओर दू गोटे जे आएल छथि—ओ सभ ?

नहि, ओहो सभ ने उठलाहे ।

आहाँक बड़का मालिक ? ओहो सुतल छथि ?

दासी हँसि कए कहलकन्हि, नहि, ओ गंगा-स्नान, पूजा-पाठ सभ क' क' कचहरीक घरमे गेलाह । बजबिऔन्ह कि ?

वन्दना कहलथीन्ह, नहि, काज नहि ।

पैखाना ओ स्नानक घर फूटे—कने दूर पर एकटा बरामदा पार क' क' जाए पड़त । वन्दना जाइत-जाइत कहलथीन्ह—अहाँक एहू ठाम 'बाथरूम' सुतबाक कोठरी लग रहब कठिन, नहि ?

दासी कहलकन्हि—नहि । माए बीच बीचमे काली माइक दर्शन ल' कलकत्ता अबैत छथीन्ह, त' एहि डेरामे रहैत छथीन्ह किने, तें ओ सभ होब' बला नहि ।

वन्दना मने मन कहलन्हि—एहू ठाम ओएह प्रबल-प्रताप माए । आचार अनाचारक कठिन शासन । ओ फीरि कए कपड़ा, आङी, गमछा आदि आनि-कए कहलथीन्ह, एत' यदि दू चारि दिन रह' पड़ए त' अहाँकें की कहि क' सोर करब ? एत' अहाँ छोड़ि कए आनो केओ कमेनिहारि—दाइ छै ?

ओ कहलकन्हि—छैक, मुदा ओकरा सभकें आनो बहुत काज रहै छै' । ऊपर अएबाक समय नइ भेटै छै' । अहाँ के जे काज होअए से हमरे कहब, हमर नाम छी अन्नदा । परन्तु हम त निछक्क देहाती लोक छी, कहिओ दोष, त्रुटि, सेहो भ' जाएत ।

ओकर विनय वाक्यसँ वन्दना मने मन बेश प्रसन्न भए पुछलथीन—अहाँक घर कत अछि, अन्नदा । अहाँकें के के अछि ?

अनन्दा कहलकन्हि—हमर घर हिनके लोकनिक गाममे, बलरामपुर । एके टा बेटा अहि, तकरा इएह सभ लिखा पढा क' काज देने छथीन्ह, अपन बहु ल' क' ओ गामहिमे रहैए । नीके-जकां रहैए ।

वन्दना कौनूहलसँ प्रश्न कएलथीन्ह—तखन आहाँ अपने एखन तक नोकरी किए करै' छी, बेटा पुतोहु ल' क' घरे पर रहि सकै' छी ?

अन्नदा कहलकन्हि—इच्छा त होइए, बहिन; मुदा क' नइ होइए। कष्टक दिनमे बाबू लोकनिकेँ बात देने छलिअनि जे यदि हमर बेटा मनुष बनत त अनका धीआ पूता के मनुष बनएबाक भार उठाएब। ओएह भार आब गरदनि सँ नइ उतारल पार लगैए। देशक कतेक रास नेना एत' पढै' लिखै' छैक। हम नहि देखबै' त ओकरा सभके देख' बाला केओ नइ।

ओ सभ एही डेरामे रहै छैक ?

हँ, एही डेरा मे रहि क' कालेजमे पढै छै। मुदा अहाँके आब देरी होइए, हम बाहर जाइ छी, अहाँ जएह सोर करब कि हम चल आएब।

वन्दना 'बाथरुम' मे ढुकैत देखलन्हि भीतर मे अनेक तरहक व्यवस्था। लगेमे गोड़ तिनिएक कोठरी; स्पर्श-दोष बचएबाक हेतु जतेक तरहक उपाय बुद्धिमे आबि सकैत छैक, ताहि मे त्रुटि नहि। बुझलन्हि, ई सभ माएक व्यवहारक हेतु। पाथरेक बैसकी, पाथरेक चौकी, एक दिश गोड़ तिनिएक खूब पैघ पैघ तामक तमघैल आ बासन—बूझि पड़ैछ—गंगाजल रखबा लेल' सभ दिन माजल जाइत, झक् झक् करैत। ओ कहिआ आइलि छलीह—आ फेर कहिआ अओतीह केओने जनैए, तैओ अवहेलाक चिह्न मात्र कतहु आँखिसँ नहि देखब। जेना एही ठाम छथि, तेहिना सयत्न, सतर्क व्यवस्था। ई जे खाली हुकुम द' क' शासन कएलासँ नहि होइ छैक, ओहिसँ पैघ किछु एक गोट वस्तु सभटा नियन्त्रित करैत छैक, ई बात वन्दना देखितहि बूझि गेलीह। आओर इएह माए, स्त्रीगण जे एहि संसारमे सर्व-साधारणसँ कतेक उर्द्ध स्थान पर अवस्थित छथि, ई बात ओ बहुत काल तक अपने मने स्तब्ध ठाढि भेलि सोचए लगललीह। गल्पमे, लेखमे, पुस्तकमे भारतीय नारी जातिक वहुत दुःखक कथा ओ पढ़ने छथि, हुनका सभिक हीनताक लज्जा सँ ओ अपने नारीक मर्म्मस्थल मे अत्यन्त ग्लानि पओलन्हि अछि, ई मिथ्या नहि, किन्तु एहि घरमे एक-सरि ठाढ़ि भेलि ओ सभ सत्य बूझब कि मानब हुनका आइ आघात करैत छलन्हि।

बाहर अएला पर अन्नदा हँसी मुहे कहलकन्हि, बहुत देरी भ' गेल बहिन;

करीब दू घंटा—ओ सभ निचला घरमे खएबाले बाट देखै छथि। चलू।

अहाँक बड़का मालिक कचहरीक घरसँ बहरएलाह ?

हँ ओहो नीचहि छथि।

हमरासभक सगे त नहि खएताह ?

—अन्नदा सहास्ये कहलकन्हि—खएबो करितथि त दुपहरक बाद, बहिन। आइ आर सेहो नइ। एकादशी, सन्ध्याक बाद प्रायः किछु फल तल खएताह।

वन्दना कोनाक किछु बुझि गेलि छलीह जे ई स्त्रीगण एहि घरक खाली दासी-जातीय नहि, कहलथीन्ह—ओ त ब्राह्मणघरक विधवा नहि छथि, एकादशीक उपास कोन दुःखे करताह ? काल्हि गाड़ीमे, एकादशी नहि होउक, दशमीक उपास हुनका ओहिना भ' गेलन्हि।

अन्नदा कहलकन्हि—से होउक, उपास हुनका देहमे नहि लगै छन्हि। माए कहै छथीन्ह—ओइ जन्ममे तपस्याक क' क' विविन अइ जन्ममे उपास सिद्धिक वर पओने छथि, हुनक खाएब देखि क' अवाक् भ' जाए पड़ै छै।

वन्दना नीचा आबि कए देखलन्हि—हुनका समहिक अभ्यस्त चाह, रोटी, अंडा प्रभृति टेबुल पर सुसज्जित, एवं पिता ओ सस्त्रीक पंजाबक बारिस्टर क्षुधासँ चञ्चल।

हुनका लोकनिक धैर्य्य प्रायः शेष सीमा पर पहुचल छन्हि, तुरन्ते एकबार फेकि कए साहेब अनुयोगक कण्ठे कहलथीन्ह—इह-‐-एते देरी हए, भिनसुरका-पहर आब देखै' छी, कोनो काज नहि होएत।

विप्रदास लगेमे बैसल छलाह—वन्दना जिज्ञासा कएलथीन्ह—ओझाजी, अहाँ नहि खाएब ?

विप्रदास व्यंग बुझलन्हि, हँसि कए कहलथीन्ह, चाह हम नहि पिबै छी, खाइ' छी खाली दालि भात। सेहो एखन नहि,—हमरा ले' चिन्ता नहि, अहाँ बैसि जाउ।

वन्दना एकर उत्तर नहि देलथीन्ह, पिता ओ अतिथि दूनू गोटाकें उद्देश कए कहलथीन्ह, हमरासँ गलती भ' गेल, हमरा कहा पठाएब उचित छल, से-

नहि भेल, । हमरा खएबाक इच्छा नहि अछि, किन्तु अहाँ सभ आओर अपेक्षा नहि करू, आरम्भ करू। हम बरू अहाँ सभके चाह तैआर क'दै छी । ई बाजि ओ तुरन्त ओहि काजमे लागि गेलीह ।

सभ व्यस्त भेलाह । नौकर एक दिशि ठाढ़ छल ओ कुण्ठित भेल, पिता उद्वेगसँ पुछलथीन्ह किछु होइ तने छ' हए । सस्त्रीक वारिस्टर की जे बजताह किछु नहि बुझलन्हि ।

वन्दना चाह तैआर करैत कहलथीन्ह, नहि बाबू, किछु नहि होइए, खाली खएबाक इच्छा नहि होइए ।

तखन खएबाक काज नहि । काल्हि वेशी रातिक जे खएलह से पचल' हए नहि । से छोड़ि दिन चढ़लासँ पित्त बढ़ि गेल हेत' किने ।

सएह भेलए बुझि पड़ैए । वेर भेलासँ ओझाजी सङ्गे बैसि कए दालि भात खाएब, एह डेरामे से प्रायः पचि जाएत । एहि बातपर आन केओ तेना भ 'क' ध्यान नहि देलथीन्ह—किन्तु विप्रदासक मुहक ऊपर द' क' जेना एकटा कारी छाया कने काल्हे भसिआ गेलन्हि ।

नौकर की सोचि क' हठात् बाजि ऊठल—आइ एकादशी, आइ साँझू पहर खाली दू टा फल मूल छोड़ि आओरे त ओ किछु नहि खाइ छथीन्ह ।

वन्दना एखने ई बात सुनने छलीह, तथापि विस्मयक भान करैत बजलीह —खाली फल मूल ? बेश हल्लुक भोजन । सएह बूझि पड़ैए खूब बढ़िआ होएत । नहि, ओझाजी ?

विप्रदास हँसिकए घाड़ हिलबैत कहलथीन्ह—होएत; किन्तु केओ जे हुनका स्वच्छन्द पूर्वक उपहास क' सकैत छन्हि, आइ ई पहिले पहिल बूझि, मने मन स्तब्ध भए गेलाह । आ' हुनका मुह दिशि देखि कए वन्दना सेहो प्रायःई अनुभव कएलन्हि ।

काज कर्म्म कए वन्दना पिताक सङे जखन डेरा पर अइलीह त अपराह्ण-प्राय । सस्त्रीक वारिस्टर साहेब जादूघर, चिड़आखाना, खेलक मैदान

विक्टोरिआ स्मृति-सौध प्रभृति कलकत्ताक प्रधान द्रष्टव्य वस्तु सभ परिदर्शन कए एखनो फिरल नहि छलाह। रातुक गाड़ीसँ हुनका सभके जएबाक बात —किन्तु प्रोग्राम बदलि कए ओ सभ जाएब स्थगित कएलन्हि अछि।

राय साहेब कपड़ा बदलए ले' अपन कोठरी गेलाह। वन्दनाकेँ अपना कोठरीक आगाँ अन्नदासँ भेँट भेलन्हि। ओ हँसैत अनुयोगक सुरे कहलकन्हि--बहिन भरि दिन बिना खएने काटलउँ, अहाँक फल तल सब आनि क' रखने छी, कने जल्दीसँ हाथ मुह धो लिअ, हम एते कालमे सभ ठीक क' दै छी, की ?

किन्तु बड़का मालिक—ओझाजी ? ओ कत' छथि ?

अन्नदा कहलकन्हि—हुनका ले आओर बेशी व्यस्त होएबाक काज नइ, बहिन, ई सभ हुनक सभदिनक बात। खएबाक अपेक्षा नहिए खाएब हुनक नियम।

किन्तु ओ छथि कत' ?

ओ गेल छथि दक्षिणेश्वर, कालीक दर्शन कर'। एखने अओताह।

वन्दना कहलथीन्ह—सएह नीक, हुनके अएलासँ ठीक होएत। मुदा आन सभ ? हुनका सभहिक की व्यवस्था भेलन्हि हेँ, ? चलू त अन्नदा, अहाँ सभक भनसाघर एक बेर देखि आउ।

अन्नदा कहलकन्हि—चलू। किन्तु अइ साँझ हुनका समाहिक व्यवस्था भनसाघरमे नइ भेलन्हिहेँ बहिन, भेलन्हि हेँ होटलमे—खेनाइ ओतहिसँ अओतन्हि।

वन्दना आश्चर्य्यित भए क' कहलथीन्ह—से की बात ? ई विचार अहाँ सभके के देलक ?

बड़का मालिक अपने हुकुम द' गेल छथीन्ह।

किन्तु ई सभ अखाद्य कुखाद्य ओ सभ खएताह कत' ? एहि डेरा मे ? अहाँ-सभक माए सुनतीह त' की कहतीह ?

अन्नदा अप्रतिभ भ' क' कहलकन्हि—नहि, ओ नहि सुनि सकथीन्ह।

लगेक एक घरमे सभटा ठीक भेलन्हिहें। वासन तासन होटले वाला नेने अओतन्हि—कोनो असुविधा नहि होएतन्हि ।

वन्दना कहलथीन्ह—हुकुम त द' गेलथीन्ह मुदा तामिल के कएलन्हिहें ? हुनका लग एक बेरि हमरा ल' जा' सकै छी ?

से कोन पैघ बात बहिन, चलू ने ल' जाइ छी ।

चलू ।

मुखर्ज्जी लोकनिक एक बड़का तिजारति—कारबार कलकत्तामे बलै छन्हि। निचला महलमे गोड़ चारिएक कोठरी ल' क' ई आफिस ।

किरानी, गुमास्ता, सरकार, चपरासी, मैनेजर आदि व्यवसायक सभ लोक काज करै छथि, वन्दनाक प्रवेश करैत देरी सभ उठि कए ठाढ़ भेल। वयस ओ पद मर्य्यादाक लक्षणेसँ मैनेजर-व्यक्तिकें सहजहिं चीन्हि, इसारासँ हुनका बाहर बजा' कए कहलथीन्ह होटलमे आर्डर द' एलिऐ ए अहाँ अपने ?

मैनेजरकें मूड़ी हिला क' स्वीकार करैत देखि, कहलथीन्ह आओर एक बेरि जाउ, ओकरा सभकें रोकि आउ ।

मैनेजर विस्मित भेलाह—इतस्ततः करैत कहलथीन्ह—बड़का मालिक नहि फीरि क' अएला तक—

वन्दना कहलथीन्ह—प्रायः तखन रोकबाक समय नहि रहत। ओझाजी खिसिअएताह त हमरा ऊपर खिसिअएताह। अहाँकें डर नहि। जाउ, देरी नहि करू। ई बाजि ओ जाए ले' तैयार भेलीह, उत्तरक अपेक्षो ने कएलन्हि ।

हत-बुद्धि मैनेजर बुझलक—साधारण बात नहि। विप्रदासक आज्ञा अमान्य करब कठिन, एतेक कि असम्भव कहि सकै छी, किन्तु ई अपरिचित स्त्रीगणक सुनिश्चित, निस्संशय शासनक अवहेलना करब कम कठिन नहि। प्रायः तहिना असम्भव। क्षण काल विमूढ़ जेकाँ स्तब्ध ठाढ़ भेल, द्विधा जड़ित सूरे कहलकन्हि —जी, त जाइ छी रोकि अबै' छिऐ'। किछु अगाउ द' आएल छिऐ'।

अच्छा द आएल छिऐ' त रहओ, मुदा अहाँ देरी नहि करु। बाजि ओ फिरि अइलीह।

सन्ध्या काल घूमि कए अएलाक बाद विप्रदास समाचार बुझलन्हि। खुशी होएताह कि खिसिअएताह किछु सोचि नहि सकलाह।

भनसा घरमे देखलन्हि आयोजन सम्पूर्ण-प्राय। वन्दना एकटा छोट स्टूल पर बैसलि भनसीआ—ब्राह्मणकेँ ल' क' व्यस्त। उठि ठाढ़ि भए कृत्रिम विनयक स्वरमे कहलथीन्ह—क्रोधमे आविकए मैनेजर बाबूकेँ नौकरीसँ बरखास्त त ने कएलिअन्हिहें ?

विप्रदास कहलथीन्ह—ओझा जी, एतेक क्रोधी छथि ई खबरि के देलक अहाँके ?

वन्दना कहलथीन्हो—लोक कहैं छैक बाघक गन्ध एक योजन दूरसँ बूझि पड़ छै'।

विप्रदास हँसलाह—किन्तु अतिथि लोकनिक की उपाय होएतन्हि ? हिनका सभकेँ त रातिमे 'डीनर' खएबाक अभ्यास छन्हि—तकर की होएतन्हि, कहू त।

वन्दना कहलथीन्ह—जिनका नहि भेलासँ काज नहि चलतन्हि तिनका लोकक सङे होटल पठा दिऔन्ह। विलक रुपैया हम देबैक।

हँसी नहि वन्दना, ई प्रायः नीक नहि भेल।

नीक होइत—बूझी, ई सभ वस्तु एहि डेरामे अनलासँ ? माए सुनितथि त की कहितथि, कहू त ?

विप्रदास जे ई बात नहि सोचने छलाह से नहि, किन्तु स्थिर नहि कएने छलाह—कहलथीन्ह—ओ नहि जानि सकतथि।

वन्दना माथ हिलाक' कहलथीन्ह—बूझि जइतथि—हम चिट्ठी लीखि दितिअन्हि।

किए ?

किए ? कहिओ जे नहि कएने छलहुँ, दू दिन ले—ई कए गोट बाहरक

लोक ले' किए कर'ब ? कहिओ ने !

सूनि कए विप्रदास जे खुशी भेलाह से नहि, विस्मयापन्न भेलाह।

कने काल चुप रहि कए कहलथीन्ह—किन्तु अहाँ जे कालिहसँ किछु खएलहुँहें नहि' वन्दना; क्रोध कि शान्त नहि होएत ?

हुनका कण्ठस्वरमे एहि बेरि किछु स्नेहक सूर छलन्हि।

वन्दना मृदुकण्ठें जबाब देलथीन्ह—हमरा खिसिआ किए देलहुँ ? मुदा सुनू, अहाँक खएबाक फलाहारक बस्तु सभ आनल गेल, ताबल सन्ध्या-वन्दन क' लिअ, हम जा कए सभ ठीक क' दै' छी। किन्तु आन केओ यदि परसि देत, त हम आइओ नहि खाएब, कहि दैत छी।

अच्छा जाउ—बाजि, विप्रदास ऊपर चल गेलाह।

प्राय: गोटेक घंटाक बाद वन्दना फल मूल, फलाहारी मधुर आदि उज्जर पाथरक थारीमे हाथमे नेने विप्रदासक घरमे आबि ठाढ़ि भेलीह—अन्नदाक हाथमे आसन ओ पानिक गिलास छलैक।

पानि ल'क' ओ सभटा पोछि कए ठाँओ कए देलकन्हि।

विप्रदास वन्दनाक दिशि देखि क' सविस्मये पुछलथीन्ह—अहाँ एखन फेरि स्नान कएलहुँहें कि ?

अहाँ खाए बैसू, कहि ओ थारी बाटी रखलन्हि।

## १०

विप्रदास आसन पर बैसि कए फेरि ओएह प्रश्न कएलथीन्ह—सत्ये, फेरि नहा अएलहुँहें ? दु:खित पड़ब तखन ?

से होअओ, किन्तु हमरा हाथे नहि खएबाक छल प्रपंच आविस्कार कर' नहि देब, इएह हमर प्रण। स्पष्ट क'क' कह' पड़त जे अहाँक छुइल नहि खाएब। अहाँ म्लेच्छक बेटी थिकहुँ।

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह—किताबमे पढ़लहुँहें नहि जे दुरात्माकें छलक अभाव नहि रहैं छैक।

वन्दना कहलथीन्ह—पढ़लहुँ हे', परन्तु अहाँ दुरात्मनहि छी, भयानको नै छी; हमरे सभ जेकाँ दोष गुणसँ युक्त मनुष छी। से नहि भेलासँ आइ ओहि बेचारा सभहिक 'डीनर' वन्द नहि क़र' जइतहुँ।

मुदा सत्य कारण की छल ?

सत्ये कारण अहांके कहैछी। अहाँ सभक परिवारमे ओ सभ नहि चलैए। ने देशक घरमे' ने एत'। किए ओ काज तखन करब ग' ?

परन्तु बुझल त अछि—ओ सभ केओ विलाँयतसँ आएल, एहने खानाक हुनका सभके अभ्यास छन्हि। वन्दना कहलथीन्ह—अभ्यास जे होउन्ह, तैओ बंङ्गाली थिकाह। बङ्गाली अतिथिके डीनर नहि खाए भेटलन्हि तेँ मरि गेलाह—कतहुँ एहन बात नहि सुनलहुँहे। तेँ ई आग्रह अग्राह्य। अहांक ई फाजिल बात होइए।

विप्रदास कहलथीन्ह—तखन काजक कथा कने सुनी।

वन्दना बजलीह—से ठीक हम नहि जनैछी। किन्तु बुझि पड़ैए जे अहाँ मुँहसँ जे बजै' छी, से सभटा भीतरसँ नहि मानै' छी। नहि त माएसँ चोराक' ई व्यवस्थो ले' कखनहु तैआर नहि होइतहुँ। लोक सभ झूठे अहांसँ एते डेराइए। जरूर डर करक चाहिए से अहाँ नहि, अहांक माए।

सूनि क' विप्रदास कनेको नहि खिसिएलाह, प्रत्युत कने हँसि कए कहलथीन्ह—अहाँ दूनू गोटाके चिन्हि गेलहुहे। परन्तु ई बात माएसँ चोराक' होइ छल ई खबरि अहाँ कत' सँ सुनलहुँ ?

वन्दना नाम नहि कहलथीन्ह—खाली कहलथीन्ह—हस पुछारी क'क' बुझि गेलहुँहे। ई एहन भयंकर दुर्घटना होइत जे बहिन हमरा कहिओ क्षमा नहि करितथि। सभ दिन अभिसम्पात क'क' कहितथि जे वन्दनेक कारणे एना भेल। तेँ किन्नहु ई काज हम अहांके नहि कर' देलहु।

विप्रदास कहलथीन्ह—अहाँ अत्यन्त आत्मीय कुटुम्बमे सबसँ पैघ छी। ई अहींक सन बात होइए। किन्तु बिना चोरओने नुकओने, अहांक हाथक छुइल

हमर खेनाइ चलि सकैए कि नहि, ई बात ओहि लोकके पुछने छलिऐक ? बरू से बूझि आउ, तते काल हम बैसै' छी, ई कहि ओ हँसि कए थारी कने घुसका देलथीन्ह ।

वन्दनाक मुँह पहिने लज्जासँ लाल भ' गेलन्हि, पाछा सम्हरिक' कहलथीन्ह नहि ई बात हम हुनका नहि पुछबन्हि ग', अहांकें खएबाक काज नहि ।

विप्रदास कहलथीन्ह—किन्तु मुश्किल त ई जे अपना घरमे अहांकें उपासलो त नहि राखि सकै छी,—ई कहि ओ खाए लगलाह ।

वन्दना कने काल चुपचाप रहि, पुछलथीन्ह—किन्तु एकरा बाद की करब ? गाम जाक' गोबर खाक' प्रायश्चित करब, कहि ओ हँस लगलाह ।

मुदा हुनक हँसी रहितो ई सत्य कि परिहास, वन्दना निश्चित रूपें नहि बूझि, फेरि स्तब्ध भए गेलीह ।

विप्रदास कहलथीन्ह—माए सङ्‍ त बुझारति होएबे करत, परन्तु अहांक बहिनिक शास्तिसँ जे परित्राण पाएब, ई ओकरो सँ बेशी । बाजि फेरि सहास्ये कहलथीन्ह—विश्वास नहि भेल ? अच्छा पहिने विआह होअओ, तखन ओझाजीक बात बुझबन्हि, ई कहि क्रमहि खएबाक वस्तुकें निश्शेष-प्राय कए ओ उठि ठाढ़ भेलाह ।

एमहर 'डीनर' त खारिज भेलन्हि परन्तु अन्यान्य रूचिकर आहार्य्य पदार्थक आयोजनमे अवहेलना नहि भेलन्हि । सुतरां परितृप्तिक हिसाबे कतहु कोनो त्रुटि नहि भेलन्हि । सभ काज समाप्त कएलाक बाद ओछाओन पर पड़लि वन्दना सोचए लगलीह जे हुनका प्रति विप्रदासक आचरण अप्रत्याशितो नहि । प्राय: अन्यायो नहि, एवं अपन सम्बन्धी भइओ कए जाहि कारणें एतेकाल घनिष्ठता ओ परिचय नहि छलन्हि—सेहो एते दिनक प्राचीन बात नवीन रुपें आघात बोध करब, खाली वाहुल्य नहि, बिडम्बना । प्रणाम कर' गेला उत्तर विप्रदासक माए स्पर्श दोष बँचा क' हँटि गेलथीन्ह, तकरा प्रतिवादमे वन्दना बिना खएनहिँ खिसिआ क' चल अइलीह । शिक्षा-विहीन नारीक उद्धत

धर्म्मबोध हुनका आघात नहि कएलकन्हि, से नहि, तथापि एहि मूढ़ताकें सेहो गोटेक दिन बिसरब सहज, किन्तु विप्रदास जे कएलन्हि—तकरा प्रतिवादमे की करब जे उचित वन्दना नहि सोचि सकलीह। हिनका हाथक छुइल फल मूल मिष्टान्न ओ खएलथीन्ह अछि ई सत्य, किन्तु से स्वेच्छासँ नहि, ओ जबर्दस्ती रूपें। पाछाँ बलरामपुरक कदर्य्य काण्ड फेरि एहू ठाम ने होअए, एहि डरें। ई—जेना वताहक हाथसँ प्राण-रक्षा करब। किन्तु ई अनाचार विप्रदासकें हृदयमे लगलन्हि अछि—गाम जा' क' ओ प्रायश्चित्त करताह—ई बात कहुना जेना निश्चित रूपें अनुमान कए वन्दनाक आँखि मे निम्न नहि अएलन्हि; अथच इहो बड़ी काल सोचलन्हि जे ई बात एते' भयंकर किए? हुनका लोकनिक चलबाक पथ त' एक नहि—संसारमे दूनू गोटा ले प्रशस्त स्थान छन्हि। दैवात् संघर्ष यदि गोटेक दिन भइए जाइक—त' होउक। एहि प्रश्नक सम्मुखीन होएबाक आह्वान एहि जीबनमे हिनका के दैत छन्हि? एहिना कए ओ अपनाकें अपनहि शान्त करबाक अनेक चेष्टा कएलन्हि, तथापि एहि व्यक्तिक निश्शब्द अवज्ञा कोनहुना मनसँ हँटा नहि सकलीह।

सोचैत सोचैत कखन—कोनो काल ओ सूति रहलीह, किन्तु अस्वस्थ वाधा-ग्रस्त निद्रा अकस्मात् टूटि गेलन्हि। तखनो भोर नहि भेल छलैक—असमाप्त निद्राक अवसन्न जड़िमा दूनू नेत्रकें आच्छन्न कएने छन्हि—किन्तु ओछाओन पर ओ नहि रहि सकलीह, बाहर आबि ओसाराक 'रेलिङ्' पर भर द' क' ठाढ़ि भए देखलन्हि—अल्पोज्ज्वल आकाश निशान्तक अन्धकारमे गाढ़तर भए गेल अछि; दूरमे बड़का सड़क पर क्वचित् कदाचित् गाड़ीक शब्द अस्फुट सुनबामे अबैछ, लोकक चलाचलमे एखनो वेश विलम्ब, जमस्त डेरा एकान्त, नीरव,—सहसा दृष्टि पड़लन्हि दुमहलाक माएक पूजा-कोठलीमे इजोत जरै छै—आओर तकरे एक सूक्ष्म रेखा रुद्ध गवाक्षक छिद्र बाटे सम्मुखक स्थान पर पड़ैत छैक। एक बेरि मनमे भेलन्हि—नौकर सभ प्रायः बिजुली बन्द करब बिसरि गेलैक—किन्तु दोसरे क्षण मनमे भेलन्हि, प्रायः ई विप्रदास—पूजा पर बैसलाह।

कौतूहल अदम्य भए गेलन्हि। बुझलन्हि, हठात् देखार भए गेलासँ लज्जा करबाक सीमा नहि पओतीह—एहि रातिमे कोठरी छोड़ि नीचा अएबाक—कोनो कारण देल पार नहि लगतन्हि—किन्तु आग्रह संवरण नहि कए सकलीह।

ध्यानक कथा वन्दना पुस्तकमे पढ़ने छथि, चित्रमे देखने छथि, किन्तु एहिसँ पहिने कहिओ आँखिसँ नहि देखने छलीह। निश्शब्द रातिक निसंङ्ग अन्धकारमे ओएह दृश्य आइ हिनका दृष्टि-गोचर भेलन्हि। विप्रदासक दूनू आँखि मुद्रित, हुनक बलिष्ठ दीर्घ देह आसन पर स्तब्ध भेल छन्हि, ऊपरक बातीक ज्योति हुनक मुह, कपार पर प्रतिफलित भए पड़ैत छन्हि,—विशेष किछु नहि, प्राय: कोनो आन समय देखलासँ वन्दना हँस' लगितथि, किन्तु तन्द्राजड़ित दृष्टिमे ई मूर्ति आइ हिनका मुग्ध कए देलकन्हि। एहि तरहेँ ओ कतेक काल जे ठाढ़ि छलीह से हुनका होश नहि, हठात् जखन चैतन्य भेलन्हि, तखन पूर्व्वक आकाश वेश साफ भए गेल छलैक, आ' नौकर सभहिक निन्न टूटि गेलैक, आब उठल सन। भाग्यसँ केओ एहि बीचशे ऊठि कए हुनका सम्मुख नहि अएलन्हि। आओर ओ अपेक्षा नहि कए स्थिरसँ ऊपर चढ़ि अपना कोठरी गेलीह—सुतैत देरी गम्भीर निद्रा-मग्न होएबामे हुनका कनेको विलम्ब नहि भेलन्हि।

केवाड़पर कने जोरसँ आघात कए अन्नदा सोर कएलकन्हि—अए बहिन, बड़ दिन उठलैं—ऊठब नइ ?

वन्दना व्यस्त भए केवाड़ खोललन्हि, बाहर आबि ठाढ़ि भेलीह—वास्तवमे अबेर भ' गेलन्हि, लज्जित भए पुछलथीन्ह—ओ सभ आइओ हमरा ले' बैसल छथि कि ? कने सबेरे किए ने हमरा उठा देलहुँ ? स्नान क' तैयार होएबामे गोटेक घंटासँ कम नहि लागत, अन्नदा।

हुनक विषण्ण मुहक दिशि देखि कए अन्नदा हँसिकए कहल कन्हि—डर नइ बहिन, आइ ओ सभ सबूर नहि क' सकलाह, जलखइ क' लेलन्हि। आब जते' काले अहाँक मन हो, नहाउ सोनाउ। केओ ने सोर करत।

सूनि क' वन्दना जेना बँचलीह । ओहो हँसि कए कहलथीन्ह—अहाँ सभक बहुतो रास बात पसन्न नहि करै छी, मुदा ई धरि करै छी । सभ केओ दल बान्हिक' घड़ीक काँटा मिलाक' जे गिड़बाक पाला नहि—ई बड़का आराम ।

अन्नदा कहलकन्हि—मुदा अहाँकेँ भिनसरू पहर भूख नहि लगैए, बहिन ?

वन्दना कहलथीन्ह—एको दिन ने । आ' तैओ नेनासँ ल' क' एखन तक सभ दिन खाइत अएलहुँहेँ । अच्छा जाइ छी, आर नहि देरी करब, ई बाजि ओ चल गेलीह ।

करीब दू घंटाक बाद नीचामे विप्रदासक सङ्गे हुनका भेँट भेलन्हि । ओ कचहरी घरक सभ काज समाप्त कए बाहर अबैत छलाह । वन्दना नमस्कार कएलथीन्ह ।

चाह पीलहुँ ?

हँ ।

ओ सभ अपेक्षा नहि कए सकलाह—किन्तु अहीँक—

वन्दना रोकिक' कहलथीन्ह, एहिले उपराग त' नहि देलहुँहेँ ओझाजी ?

विप्रदास हँसिकए बजलाह—मिजाजक बहादुरी अछि ई अस्वीकार नहि करब, किन्तु दूनू बहिनमे भेद जेना सूर्य्य आ चन्द्रमा । सुनलहुँहँ जे जल्दीए विलाँयत जाइछी—शिक्षाकेँ पक्का कर'बा ले । जाउ, घूमि क' अएला पर खबरि देब, जा' क' मूर्त्ति कने देखि आएब ग' ।

सूनि कए वन्दना हँसलीह, किन्तु उत्तर नहि देलथीन्ह ।

विप्रदास कहलथीन्ह—ओहि देशमे, सुनैछी लोककेँ बारह बजे तक सुत' पड़ैछै—कठिन साधना ! अहाँकेँ मुदा कष्ट क' क' साध' नहि पड़त—एही देशसँ अभ्यास अछि ।

वन्दना एहू बेरि हँसलीह—किन्तु ओहिना चुप रहि विप्रदासक मुह दिशि देखैत रहलीह । नितान्त सादा सीधा साधारण नीक लोकक मुह । हास्य

परिहासमे स्नेहशील, आने लोक जेकाँ एक गोट लोक—। तैओ गत रातिक नीरवतामे निर्ज्जन गृहक स्तब्ध मौन एहि मूर्तिकेँ केहन जे रहस्यावृत बुझने छलीह—एहि दिवालोकमे ओ कथा स्मरण कए हुनक कौतूहलक सीमा नहि रहलन्हि।

ओझाजी, ई सभ कत' ? ककरो देखैं नहि छिअन्हि ?

विप्रदास कहलथीन्ह—एकर माने ओ सभ नहि छथि। अर्थात् श्वसुर महाशय एवं सस्त्रीक वारिस्टर महाशय—तीनू गोटे गेलाहे हावड़ा रेलवे स्टेशन—गाड़ी रिजर्व करावै ले।

वन्दना विस्मयसँ पुछलथीन्ह—सस्त्रीक वारिस्टर महाशय क' सकै छथि परन्तु बाबू किए करओताह ? हुनका छुट्टी बितबामे एखनो आठ दश दिन बाँकी छन्हि। आ' से छोड़ि हमरा बिना कहनहि .... ?

विप्रदास कहलथीन्ह —कहबाक समय नहि पओलन्हि—प्रायः टहलि कए अएलाक बाद भिनसरे बम्बइक आफिससँ जरूरी तार अएलन्हि—मुहक भाव देखलासँ ई सन्देह नहि रहल जे बिना गेने कोनो उपाय नहि।

मुदा हम एते जल्दी किए जाएब ?

विप्रदास ओही सूरमे सूर मिला क' कहलथीन्ह—निश्चय—अहाँ किए जाएब ? हमहूँ त' सएह कहै' छी।

वन्दना बूझि नहि सकलीह—तेँ जिज्ञासु भेलि मुह देखए लगलथीन्ह।

विप्रदास कहलथीन्ह —बहिनिकेँ एकटा तार द' दिऔन्हिने—देओरकेँ सङ्गे नेने आबि जाथि। अहाँ सभकेँ जोड़ीओ खूब मिलत—अतिथि सत्कारक काज सँ हमरा जान छुटनहि बाँचब।

वन्दना सभये व्यग्र स्वरेँ जिज्ञासा कए उठलथीन्ह—से कि सम्भव भ' सकैए, ओझा जी ? माए कि कहिओ एहि प्रस्ताव पर मत देथीन्ह ? हमरा त' ओ देखिओ नहि सकै' छथि।

विप्रदास कहलथीन्ह—एक बेरि चेष्टा क' क' देखि लिअ ने। कही त'

तार देबाक एकटा फारम पठा दी—की कहै छी ?

वन्दना उत्सुक दृष्टिएँ क्षण काल निश्शब्दे देखैत रहलीह—अन्तमे की सोचि क' कहलथीन्ह—जाए दिअ' ओझा जी, ई हमरा बुते नहि होएत।

अच्छा छोड़ि दिअ।

हम बरू बाबूक सङ्गे होएत त' चल्ले जाएब।

सएह नीक, कहि विप्रदास चल गेलाह।

खएबाक टेबुल पर पिताक टेलिग्राम पड़ल छलन्हि—वन्दना खोलि क' देखलन्हि सत्ये बम्बइक आफिसक तार। आएब जरूरी, विलम्ब करबाक उपाय नहि।

वन्दना घर जा कए फेरि एक बेरि गद्दी तद्दी सरिआब' लगलीह।

बाबू एखनो नहि फिरलथीन्ह अछि, गोटेक घंटाक बाद अन्नदा घरमे ढूकि क' कहलकन्हि—अहाँ नामे एकटा तार आएले बहिन, इएह लिअ।

हमर तार ? सविस्मये हाथमे ल' क' वन्दना खोलि क' देखलन्हि—वलरामपुरसँ माए हुनके तार देलथीन्हहें। सस्नेह अनुरोध कएलथीन्ह अछि जे पिताक सङ्ग ओ कोनो रूपें फिरि कए नहि चलि जाथि। बहुआसिनि द्विजूक सङ्ग रातिक गाड़ीसँ यात्रा करतीह।

## 99

रातुक गाड़ीसँ अबै छथि बहिनि, आ संगे अबै छथीन्ह द्विजदास। वन्दनाक आनन्दक सीमा नहि। ओहि दिन बहिनिक सासुरमे अपन आचारसँ ओ मने-मन बड़ लज्जित छलीह अथच प्रतीकारक उपाय नहि देखैत छलीह। आइ अत्यन्त अनिच्छो रहैत हुनका पिताक सङ्ग बम्बइ जाए पड़ितन्हि, अकस्मात् असम्भावित पथसँ एहि समस्याक मीमांसा भए गेलन्हि। टेलीग्रामक कागतकें वन्दना अनेक बेरि उनटओलन्हि पुनटओलन्हि, अन्नदाकें पढ़िकए सुनओलथीन्ह आओर उत्सुक भावें अपेक्षा करैत रहलीह पिताक हेतु—ई छोट कागतक टुकरीकें पिताक हाथमे दए देथीन्ह। विप्रदास डेरा पर नहि छथि,

खबरि लेलासँ बुझलन्हि जे किछु काल पहिने ओ बाहर गेलाह अछि—ई व्यवस्था ओएह कएलन्हि अछि, तेँ हुनका बुझएबाक काज नहि, तैओ एक बेरि कहए पड़तन्हि आओर एहि कहबाक भाषाकेँ ओ मने-मन आलोचना करैत काल देखिलन्हि—कोनो शब्द पर हुनका मनःपूत नहि होइ छन्हि। आनन्द प्रकाशक सहज रास्ता जेना कखन बन्द भए गेल छन्हि। बहु निन्दित जमिन्दार जातीत ई कड़ा प्रकृतिक लोक—हिनका सुरूहेसँ अधलाह लगैत छलथीन्हि—एखन ओ वेश दुर्बोध्य, तथापि क्रमहि हुनका मनमे एकटा जेना परिवर्त्तन भए रहल छलन्हि।

ओ देखैत छलीह—एहि मनुष्यक आचरण परिभित, कथा स्वल्प, व्यवहार भद्र ओ मधुर, तैओ की एकटा व्यवधान हुनक प्रत्येक पद-क्षेपपर, प्रति-मूहूर्त्तमे, अनुभव कएल जा सकैछ। सभक बीचमे रहिओ कए ओ सभसँ दूर रहैत छथि। आश्रित, परिजन, दासी, नौकर, कर्मचारी वर्ग सभ हिनका श्रद्धा करैत छन्हि, भक्ति करैत छन्हि, किन्तु ओहूसँ वेशी भय करैत छन्हि। ओकरा लोकनिक भाव जेना एहि रूपक—बड़का मालिक अन्नदाता, बड़का मालिक रक्षा-कर्त्ता, बड़का मालिक दुर्दिनक अवलम्ब, किन्तु बड़का मालिक ककरो आत्मीय नहि। पितृ-वियोगमे हुनका ऊपर दाबी कए सकैछी, मुदा पुत्रक विवाहक उत्सवमे भोजक निमन्त्रण नहि दए सकैत छिअन्हि। ई घनिष्ठ सम्बन्ध ओसभ सोचि नहि सकैछ।

काल्हि वन्दना भनसाघरक दासीकेँ सरल, किञ्चित निर्वोध सोचि बाते-बात एकर कारण अनुसन्धान करैत छलीह किन्तु अनेक रूपें जीरह कएलो उत्तर खाली इएहटा बाहर कए सकलीह जे ओ एकर कारण नइ जनैए—खाली सभ केओ हुनकासँ डेराइत छन्हि—तेँ ओहो डेराइत अछि—आओर दोसरोकेँ प्रश्न कएलासँ इएह उत्तर भेटितन्हि। मुखर्जी परिवारमे ई जेना एक संक्रामक व्याधि। ओहि दिन ट्रेनमहक दैवात् ओ क्षुद्र घटना अवलम्वन कए विप्रदासक वलिष्ठ प्रकृति वन्दनामे क्षणिक प्रकाश पाबि, फेरि सम्पूर्ण रूपे आत्म-गोपन भए गेलन्हि। गाड़ीमे ओहि दिन लगमे बैसि कए हास परिहासक कते बात

कएलन्हि किन्तु आइ बुझिए ने पड़ैत छन्हि जे ओएह लोक एहि घरक बड़का मालिक थिकाह।

हठात् नीचामे एकटा गोलमाल भेलैक—के एक गोटे दौड़ि क' खबरि देलकन्हि जे हुनक पिता रायसाहेब स्टेशनसँ फिरलाहे नांङड़ भ' क'। वन्दना खिड़कीसँ हुलकी द' क' देखलन्हि—पञ्जाबक वारिस्टर ओ हुनक पत्नी दूनू गोटे दूनू भाग धएने साहेबकेँ गाड़ीसँ उतारि रहल छथीन्ह। हुनक एक पाएरक जता, मौजा खूजल—आ' ओहि म गोड़ दूइएक तीनि भीजल रूमाल बान्हल। प्लैटफार्मपर मेलाक हल्लामे केओ हुनका पाएर पर एकटा भारी काठक बक्सा पटकि देलकन्हि। लोक सभ हुनका पकड़ि कए, ऊपर आनि, ओछओना पर सुता-देलकन्हि, दरवान दौड़ल डाक्टरकेँ सोर करैले। डाक्टर आबि वैण्डेज बान्हि औषध देलथीन्ह—विशेष किछु नहि, किन्तु किछु दिन ले' हुनक चलब फिरब बन्द भेलन्हि।

दोसरा दिन दुपहरिआमे सती अएलथीन्ह—वन्दना कलरव-पूर्ण स्वरसँ अभ्यर्थना करबाक हेतु आइत छमकि कए ठाढ़ भए गेलीह—देखलन्हि मोटरसँ उतरि रहल छथि—खाली बहिनि नहि—संङे छथीन्ह हुनक सासु—दयामयी। उच्छ्वसित आनन्दक कलरोल बन्द भ' गेलन्हि, वन्दना आड़ष्ट भावेँ कोनहुना प्रणाम कए विधि पुरा क' एक कातमे जाकए ठाढ़ि भ' गेलीह, किन्तु दयामयी लग आबि आइ हुनक चिबुक स्पर्श कए चुम्बन कएलथीन्ह, हँसिक' पुछलथीन्ह—निके छी किने बाउ ?

वन्दना माथ हिला कहलथीन्ह—निके छी। माए—हठात् अहाँ जे आबि गेलहुँ ?

दयामयी कहलथीन्ह—नहि अबितहुँ त कोना बनैत कहू त'। हमर एकटा बताहि बेटी, खिसिआ कए बिना खएने पीने चल आइलि, ओकरा बौँसि क' गाम पर फिराक' नहि ल' गेने शान्ति कोना पाएब कहू ?

वन्दना कुण्ठित हास्येँ कहलथीन्ह—कोना बुझलहुँ जे हम खिसिआ क' अएलहुँहें ?

दयामयी कहलथीन्ह--पहिने बेटा बेटी होअओ, हमरा जेकाँ ओकरा सभकेँ पालि पोसिक' मनुष बनाउ, तखन अपने बुझबै' जे बेटीक खिसिअएलासँ माए कोना बुझि जाइ छैक ?

ई बात सभ ओ तेहन मधुर शब्दें ओ भावें कहलथीन्ह, जे वन्दना आओर कोनो जबाब नहि दए बैसि कए एहू बेरि, पाएर छूबि प्रणाम कएलथीन्ह। उठि क' ठाढ़ि होइत कहलथीन्ह—हमर बाबू बड़ जोर दुःखित छथि, माए।

दुःखित ? कि भेलन्हिहें हुनका ?

पाएरमे चोट लगलासँ काल्हिसँ ओछाओनपर पड़ल छथि, उठि नहि सकै छथि। ई कहि दुर्घटनाक सभ बात विवृत कएलथीन्ह।

दयामयी व्यस्त भए गेलीह—दवाइ-तवाइमे कोनो त्रुटि त' ने भेलन्हि ? चलू त, कोन कोठरीमे छथि अहाँक बाबू—हमरा ल' चलू। पहिने हुनका देखि आबिऔनग तखन कोनो काज। ई कहि ओ सतीकें सङ्ग नेने वन्दनाक पाछाँ-पाछाँ ऊपर चढ़ि रायसाहेबक कोठरीमे प्रवेश कएलन्हि।

आइ हुनक पाएरक दर्द वेशी नहि छलन्हि—हिनका सभकेँ देखि कए उठि बैसलाह आ' नमस्कार कएलथीन्ह। दयामयी हाथ उठा' प्रति नमस्कार करैत सहास्ये कहलथीन्ह—समधि पाएर कोना टूटल—कत' ढूकल छलिऐ ? सती ओ वन्दना दूनू आन दिशि मुह फिरओलन्हि। रायसाहेब निरीह लोक, प्रतिवादक सूरे बुझब' लगलथीन्ह—जे कतहु ढुकबाक कारणे नहि, स्टेशन-प्लैटफार्म पर विना दोषहि ई दुर्गति भेलन्हि अछि।

दयामयी हँसि कए कहलथीन्ह, जे होएबाक छल से भेल—एखन आब किछु दिन एहि बेटी सभहिक जिम्मा घरमे बन्द रहू। पाछाँ एकटा बेटी बुते ठीक नहि रही, तें दोसरो केँ घिसिअओने नेने अएलहुँहें। दूनू गोटे थोड़े दिन तक सेबा करथु।

रायसाहेब सएह विश्वास कएलन्हि एवं एहि अनुग्रह ओ सहानुभूतिक हेतु बहुत धन्यवाद देलथीन्ह।

अच्छा फेरि आएब —एखन जाइ छी हाथ पाएर धोइ ग, कहि बिदा भए दयामयी अपना घर गेलीह।

दोसर मोटरसँ पहुँचलाह द्विजदास ओ हुनक भातिज बासुदेव। बहिनिक बेटाकेँ वन्दना ओहि दिन नहि देखि सकलथीन्ह। ओ पाठशालामे छलैक, आ' छुट्टी नहि भेल छलैक। पितामहीकेँ छोड़ि बासू नहि रहैत अछि तेँ सङ्गे अएलाहिहेँ आ' हुनके सङ्गे चल जएतन्हि।

काका परिचय करा देलथीन्ह—बासुदेब प्रणाम कएलकन्हि। वन्दनाक पाएरमे जूता देखि कए ओ मने-मन विस्मित भेल, किछु बाजल नहि; आठ नओ वर्षक नेना, मुदा बुझैत छैक सभ बात।

वन्दना स्नेह-पूर्वक अपना छातीमे सटा'क'—पुछलथीन्ह—हमरा चिन्हलहुँ बासू ?

चिन्हलहुँ, मौसी।

मुदा अहाँ त तखन पाँचे बर्षक छलहुँ, मन रह' बाला बात त नहि, बाउ।

तैओ मोन अहि मौसी, अहाँकेँ देखिते चीन्हि गेलहुँ। हमरा गामपरसँ अहाँ खिसिआ क' चल अएलहुँ, हम पाठशालासँ फीरिक' गेलहुँ त अहाँ केँ नहि देखलहुँ।

खिसिआ क' चल अएबाक बात अहाँकेँ के कहलक ?

काका कहलन्हि।

वन्दना द्विजदासक प्रति देखि पुछलथीन्ह—खिसिअएबाक बात अहाँ कोना बुझलहुँ ?

द्विजदास कहलथीन्ह—खाली हमहीँ नहि, घरक सभकेओ जनैए। से छोड़ि, अहाँ ई बात नुकएबोक त विशेष चेष्टा नहि कएलहुँ।

वन्दना कहलथीन्ह—सभ केओ हमर खिसिअएबेटा बुझलन्हि—ओकर कारण की, से केओ बुझलन्हि ?

द्विजदास कहलथीन्ह – सभ केओ नहि जानओ, हम त जनै' छी। राय साहेबकें एकसरे टेबुलपर खाए देल गेलन्हि, तें।

वन्दना कहलथीन्ह—कारण यदि सएह होअए, त हमर क्रोध करब अहाँ उचित नहि बुझै छी ?

द्विजदास कहलथीन्ह—बुझै' छी। यद्यपि हुनको सभकें दोसर कोनो उपाय नहि छलन्हि।

अहाँ हमरा बाबू सङे बैसि क' खा' सकै' छी ?

सकै' छी। मुदा भाइ मना क' देताह तखन नहि।

तखन नहि सकै' छी ? किन्तु अहाँकें मना करबाक अधिकार भाइकें छन्हि—ई अहाँ बुझै' छी ?

द्विजदास कहलथीन्ह—ई हुनक काज थिकन्हि—हमर नहि। हमरा पक्षमे भाइक अवाध्य होएब अनुचित—हम एतबे बुझै' छी।

वन्दना कहलथीन्ह—जे कर्त्तव्य बुझब—सेहो करबाक अहाँकें साहस नहि ?

द्विजदास कने' काल चुप रहि कहलथीन्ह—देखू, ई ठीक साहस, असाहसक विषय नहि। स्वभावत: हम भीरु लोक नहि छी, किन्तु भाइक प्रकाश्य निषेधक अवज्ञा करबाक बात हम सोचिओ नहि सकैत छी,। नेना अवस्थामे बाबूक बहुत बात हम नहि सुनिअन्हि—ताहि ले' दण्डो नहि पओलहुँ से नहि, किन्तु हमर भाइ अन्य प्रकृतिक लोक छथि। हुनका केओ कखनो उपेक्षा नहि करै' छन्हि।

उपेक्षा कएलासँ की होएतैक ?

की होएतैक से हम नहि जनै' छी—परन्तु हमरा परिवारमे ई प्रश्न आइ तक उठबे नहि कएलैक अछि।

वन्दना कहलथीन्ह—बहिनिक चिट्ठीसँ बुझलहुँ जे अहाँ देशक हेतु कतेक काज करै' छी जे भाइक इच्छाक विरुद्ध, से सभ कोना करै' छी।

द्विजदास कहलथीन्ह—हुनक इच्छाक विरुद्ध भइओ क' हुनक निषेधक विरुद्ध नहि। से भेलासँ नहि क' सकितहुँ।

वन्दना दू तिनि मिनट चुप रहि कहलथीन्ह—बहिनिक चिट्ठीसँ अहाँकेँ जे बुझै' छलहुँ अहाँ से नहि। एखन हुनका भरोस द' सकै' छिअन्हि जे हुनका सभकेँ डर नहि। अहाँक स्वदेश सेवाक अभिनयसँ मुखर्जी-वंशक विपुल सम्पत्तिक एक कणो कोनो दिन नोकसान नहि होएतन्हि। बहिनि निश्चिन्त भ' सकै' छथि।

द्विजदास हँसि कए कहलथीन्ह—बहिनिक नोकसान होइन्हि—इएह कि अहाँ चाहै छी ?

वन्दना विव्रत भए कहलथीन्ह—वाह्—से किए चाहव। हम चाहै' छी हुनका सभहिक डर मेटाउन्ह, ओ सभ निर्भय होथु।

द्विजदास कहलथीन्ह—अहाँकेँ एकर चिन्ता नहि, ओ सभ निर्भये छथि। अन्ततः भाइक विषयमे ई बात निस्संकोचेकेँ हि सकै छी जे भय कहि क' कोनो वस्तु ओ आइ तक नहि बुझलथीन्ह अछि। ई ओ हुनक प्रकृतिक विरुद्ध।

वन्दना हँसि कए कहलथीन्ह—एकर अर्थ भय वस्तु सभटा घरक सभ केओ मिलि कए अहीँ सभ बाँटि लेलहुँ—हुनकर हिस्सा किछुओ ने छोड़लिअन्हि—इएह ने।

सूनि कए द्विजदासो हँसलाह। कहलथीन्ह—बहुत किछु तेहने सन। तखन अहूँकेँ वञ्चित नहि कएल जाएत—थोड़ेक जे बाँचल छैक, से अहूँकेँ भेटत। तीनि चारि दिनसँ एक सङ छी, हुनका चिन्हलिअन्हिहेँ नहि एखन तक ?

वन्दना कहलथीन्ह—नहि। अहाँ सङ रहि कए हुनका चीन्हि जएबन्हि, एहि आशासँ छी।

द्विजदास कहलथीन्ह—अच्छा त' पहिल पाठ लिअ—ई जूता खोलि क' फेकू।

नौकर आबि क' कहलकन्हि—माए अहाँ सभकेँ बजबै' छथि।

चलैत चलैत वन्दना पुछलथीन्ह—हठात् माए किए अइलीह ?

द्विजदास कहलथीन्ह—प्रथम त' कैलाश यात्रा सम्बन्धमे मामी सभहिक सङ विचार करब, दोसर अहाँकेँ घुराक' बलरामपुर ल' जाएब । देखब—फेरि 'नहि' नहि कहि बैसिऔन्हि ।

वन्दना कहलथीन्ह—अच्छा सएह होएत ।

माएक सामने अहाँकेँ मिस् राय कहब नहि चलत । अहाँ हमरासँ अवस्था मे छोट छी, भौजीक छोट बहिनि, तेँ नामे ध' क' सोर करब । खिसिआक' फेरि गोटेक काण्ड नहि क' बैसू ।

वन्दना हँसि क' कहलथीन्ह—नहि, खिसिआएब किए ? हमरा नामे ध' क' सोर करब । किन्तु अहाँकेँ की कहब ?

द्विजदास बजलाह—हमरा द्विजू बाबू सऐह कहि सकै' छी । मुदा भाइकेँ ओझा जी कहलासँ काज नहि चलत । हुनका सभ बड़का मालिक, बड़का भाइ, कहै छन्हि—अहूँकेँ सएह कह' पड़त । ई भेल अहाँक दोसर पाठ ।

किए ?

द्विजदास कहलथीन्ह—तर्क कएलासँ सीखल नहि होइ' छै'—मानि लेब' पड़ै' छै' । पाठ कण्ठस्थ भ' गेला पर एकर कारण प्रकाश करब, एखन नहि ।

वन्दना कहलथीन्ह—ओझा जी मुदा अपने आश्चर्य्यित होएताह ।

द्विजदास कहलथीन्ह—भेलो उत्तर क्षति नहि—परन्तु माए आ' भौजी, ई सभ—एहिसँ बड़ शी होइतीह ।

सिड़हीक एक कोनमे जूता खोलि क' राखि वन्दना दयामयीक घरमे उपस्थित भेलीह । पाछाँ गेलथीन्ह द्विजदास आ' बासू । श्रो मोटा खोलि कए की एकटा करै' छलीह आ' लगमे ठाढ़ि भेलि अन्नदा प्रायः घरक सभ वस्तुक विवरण दैत छलन्हि । दयामयी मुह उठाक' देखलन्हि—बिना किछु भूमिकाक, सहज कण्ठे पुछलथीन्ह—अहाँक नहाएब, कपड़ा तपड़ा बदलब भ' गेल' बाउ ?

हे माए भ' गेल ।

तखन एक बेरि भनसाघर जाउ त' बाउ। एते रास लोकक ठाकुर–भनसीआ की ठीक ठाक कएलकए—बुझबो ने कएलहुँहैं। हमहूँ कने पूजा पाठ क' क' अबै' छी।

वन्दना चुप्पे चाप देखैत रहलीह। ओ एहि दिश दृष्टि-पातो ने कएलथीन्ह—कहलथीन्ह द्विजूक देह नीक नहि छैक, ओ भिनसरू पहर बिना किछु खएनहि आएल अछि। ओकर खेनाइ कने जल्दी भए जाइ, बाउ। ई कहि, ओ अन्नदाक सङे पूजाक कोठरी दिशि चल गेलीह। वन्दनाक उत्तर लेबअपेक्षो नहि कएलथीन्ह।

वन्दना पुछलथीन्ह—की भेल छल ?

द्विजदास कहलथीन्ह—इएह कने ज्वर सन।

की खाएब एखन ?

द्विजदास कहलथीन्ह—साबुजदाना आ बार्ली छोड़ि जे देब सएह।

वन्दना पुछलथीन्ह—भनसाघरमे जाएब त' अन्तमे एहिले कोनो फेरि गंड गोल त'ने उठत ?

द्विजदास कहलथीन्ह—नहि। अन्नदा बहिन, सएह परिचय प्राय: अहाँक विषयमे देलथीन्ह अछि। हुनकर बात माए कखनो नहि टारथीन्ह। बड़ मानै' छथीन्ह। म्लेच्छ अपवाद बूझि पड़ैए अहाँक हटल।

वन्दना कने काल चुप रहि क' कहलथीन्ह—खूब आश्चर्य्यक बात।

द्विजदास स्वीकार करैत कहलथीन्ह—हँ। एही बीचमे अहाँ की कएलहुँ, अन्नदा बहिन की बात माएकें कहलथीन्ह—नहि जनैछी, किन्तु आश्चर्य्यित भेलहुँहें अहूँसँ बेसी हम अपनहिं। मुदा आओर देरी नहि करू, जाउ खएबाक ठीक करू ग। फेरि भेंट होएत। बाजि दूनू गोटे माएक कोठरीसँ बाहर भए गेलाह।

## १२

कैलाश तीर्थ यात्रामे पथक दुर्गमताक विवरण सूनि मामी लोकनि टाङ पाछाँ घीचि लेलन्हि—दयामयीक अपनहुँ विशेष उत्साह नहि देखि पड़ैछ, तथापि हुनक कलकत्तामे पाँच छओ दिन बीति गेलन्हि—दक्षिणेश्वर, कालीघाट ओ गंगास्नान आदिमे। काजक लोकैक हाथमे काजक भार पड़ैत छैक—एहि डेराक आब प्राय: सभ भार वन्दनाक ऊपरमे पड़ि गेलन्हि अछि। सती किछुओ ने करै' छथि, बहिनिकें अगुआ दैत छथि, अपने सासुक सङे घुमैत फिरैत छथि। तैओ कतहु बाहर होइ' काल वन्दना कें सोर क' क' कहै छथीन्ह—आबह ने हए, हमरा सभक सङे चलह ने। तोरा सङे रहलासँ ककरो कोनो बात पूछ' नहि पड़ैए।

विप्रदासोकें आइ काल्हि करैत गाम गेल नहि भेलन्हि अछि, माए खाली बाधा द' क' कहै' छथीन्ह, विपिनकें चल गेलासँ हुनका के सङे ल' जएतन्हि। ओहि दिन सन्ध्याकाल ओ विक्टोरिया मेमोरियल देखि कए अइलीह, विप्रदास कें सोर कए बजओलथीन्हआ' उत्तेजना सहित कहए लगलथीन्ह—विपिन तों जे कह' बाउ, लीखलि पढ़लि स्त्रीगणक बाते भिन्न।

विप्रदास बुझलन्हि—ई वन्दनाक विषय। पुछलथीन्ह—की भेलौए माए?

दयामयी कहलथीन्ह—की भेलए? एकटा शुद्ध लल-मुहा अङरेज—सर्जेन्ट आबिकए हमरा सभहिक गाड़ी रोकलक। भाग्यसँ नेना सङमे छलि, अङरेजीमे की दूटा बात बुझा'क' कहि देलकैक—साहेब तखने गाड़ी छोड़ि क' चल गेल। नहि रहलासँ की होइत कह' त। प्राय: सोझे नहि छोड़ैत, भ' सकैए—थाना पर्य्यन्त खीचि क' ल' जाइत। तखन की गंडगोल होइत? तोहर नवका पञ्जाबी ड्राइवर जे छह से त जेना एकटा जन्तु—!

विप्रदास हँसि कए पुछलथीन्ह—की कएने छलही तोँ सभ ? धक्का देने छलही ?

वन्दना आबि कए ठाढ़ि भेलीह । दयामयी घाड़ हिलाक' उच्छ्वसित कण्ठेँ कहलथीन्ह—अहीँक कथा कहै' छलिअन्हिहेँ, बाउ, । पढ़लि लिखलि स्त्रीगणक बाते भिन्न ! मुदा सभटा दोष ओहि मेम छौंड़ीक छलै । चलब' नहि अबै' छै' तैओ चलाओत ।—जानत नहि, तैओ बहादुरी करत ।

विप्रदास सहास्ये कहलथीन्ह—पढ़लि लिखलि स्त्रीगणक बाते एहि तरहक माए । मेम साहेब निश्चय पढ़' लिख' जनैए ।

माए ओ वन्दना दूनू गोटे हँसलीह । वन्दना कहलथीन्ह—ओझा जी, ओ मेम साहेबक दोष, लिखबा पढ़बाक नहि । माए, हम भनसा घरसँ एक बेरि कने देखि अबैछी । काल्हि द्विजू बाबू ले' आँटाक रोटी बाबाजी कने कड़ा क' देलथीन्ह—तैँ ओ नीक जेकाँ खएबो ने कएलन्हि—ई कहि ओ चल गेलीह । दयामयी स्नेहक दृष्टिसँ ओहि दिशि कने काल देखैत ठाढ़ि रहि बजलीह—सभ दिशि दृष्टि रहैत छन्हि । खाली पढ़बे लिखब नहि विपिन, ई एहन कोनो काज नहि छै' जे नहि जनै' छथि । आ' तेहने मधुर बाजब । भार द' क' निश्चिन्त—संसारक किछु देखबाक काज नहि ।

विप्रदास कहलथीन्ह—म्लेच्छ कहि क' घृणा त' नै करै' छही माए ?

दयामयी कहलथीन्ह—तोहरो बात जे होइ' छह । म्लेच्छ किए हेती ग' ? ओकर माए एक बेरि विलाँएत गेल छलैक—तैँ लोक सभ मेम साहेब कहि क' दुर्नाम पसारि देलकैक— । नहि त' हमरे सभ जेकाँ बङ्गाली घरक वन्दना । जूता पहिरै' छथि त तै मे की ? विदेशमे एना सभ पहिरैए । लोकक सोझाँ बहार होइ' छथि—त—तै सँ की दोष ? बम्बइमे त घोघ नहिक' सकै' छथि—नेनासँ जे सिखलन्हिहेँ से करै' छथि । हमरा जेहने बहुआसिन, तेहने ओहो । बापक सङ्गे चल जएतीह—कहै छथि, सुनि कए मन ······· कोना दनि करैए ।

विप्रदास कहलथीन्ह—मन कोनदनि कएलासँ त नहि काज चलतउ, माए । वन्दना त रह' नहि अइलीहे—दू दिनक बाद हुनका जाइए पड़तन्हि ।

दयामयी कहलथीन्ह—जइतीह से सत्य—किन्तु छोड़बाक मन नहि होइए। इच्छा होइए जे सभ दिनक हेतु पकड़ि क' राखि लिअन्हि।

विप्रदास कने काल मौन रहि कहलथीन्ह—से त आब साध्य होएबा जोगर नहि माए—अनका घरक कन्याकें एते नहि धर। दू दिन ले अइलीहे, सएह नीक। ई कहि ओ किछु अन्य मनस्क-जेकाँ भेल बाहर चल गेलाह।

ई बात दयामयीक मनोनुकूल नहि भेलन्हि। किन्तु ओ क्षणक हेतु। बल-रामपुर फीरि कए जएबाक केओ नामे नहि करैए। हुनका लोकनिक दिन बितए लगलन्हि उत्सवक दिन जेकाँ। हँसि कए, गप्प क'क'—आ' चारू दिशि यत्र तत्र परिभ्रमण क' क'।

सभक सङे हास्य परिहास्यसँ एतेक सहज, सरल होइत दयामयीकें केओ कहिओ नहि देखने छलन्हि। हुनका अन्तरमे कत' कोनो आनन्दक उत्स निरन्तर प्रवाहित भए रहल छलन्हि—अपन वयस ओ प्रकृति-सिद्ध गाम्भीर्यकें ओही स्रोतमे जेना भसिआ देब' चाहैत छथि। सतीक सङे आभास, इसारासँ की बात होइ' छन्हि से खाली सासु आ' पुतोहुएटा वुझैत छथि, आओर एक व्यक्ति जँ किछु अनुमान करैत अछि त अन्नदा। सस्त्रीक पञ्जाबक बारिस्टर साहेब एते' दिन रहि कए काल्हि अपन घर गेलाह—हुनक दूनू गोटाक नाम वसन्त, ई लए क' दयामयी जएबा काल हँसी कएने छलथीन्ह, एवं वचन-बद्ध करओने छलथीन्ह जे कर्म स्थल पर जएवासँ पहिनहि फेरि भेँट द'क' जाए पड़-तन्हि, होइन्हि त कलकत्तामे नहि त बलरामपुरमे। रायसाहेबक पाएर नीक भए गेलन्हि—आगामी सप्ताहमे ओ बम्बइ यात्रा करताह, दयामयी अपने दरवार क'क' वन्दनाकें किछु दिन कें छुट्टी देआ देलथीन्हहें—ओ जे बम्बइक बदला बलरामपुर जाकए अन्ततः गोटेक मास आओर रहतीह—ई व्यवस्था भए गेलन्हि अछि।

मुखर्जी लोकनिकें मामिला मोकदमा हाईकोर्टमे लगले रहै' छन्हि। एकटा पैघ मामिलाक तारीख लगचिआ गेलन्हि—तें विप्रदास स्थिर कएलन्हि जे

आओर किछु दिन रहि, ओहि मोकदमाक तारिख देखि,—सभकेँ ल' क' गाम जएताह। कतेक कारणे हुनका सदरि काल बाहरे रह' पड़ै' छन्हि। आइ रवि थिकैक। दयामयी आबि कए हँसैत पुछलथीन्ह—एकटा हँसीक गप्प सुनल'हें विपिन ?

विप्रदास अदालतिक कागत देखैत छलाह, चौकी छोड़ि उठि ठाढ़ भेलाह कहलथीन्ह—की बात, माए ?

दयामयी कहलथीन्ह—द्विजूक आइ कोन एकटा हल्ला फसादिक मिटिङ् छलैक—पुलिस होअ' नहि देतै आ ओ सभ करबे करत। लाठा लाठी, माथ कपार फुटितैक—सुनिक' डरेँ प्राण उड़ि जाइए।

ओ गेलाहे कि ?

नहि। सएह बात त तोरा कह' अएलिअ हे। ककरो मना कएलाक बात नहि सुनत—एते' कि भौजिओक नहि,—अन्तमे सुन' पड़लै' वन्दनाक बात ?

ई बात जतेक ने हँसीक होउक—माएक सुपरिचित मर्य्यादामे कत' जे किछु आघात कएलकन्हि। विप्रदास मने मन विस्मित भेलो उत्तर मुँहसँ खाली बजलाह—सत्ये कि ?

दयामयी हँसि क' उत्तर देलथीन्ह—सएह त होइत देखलहुँ' कहिआ कि ओहि दूनू गोटाकेँ शर्त भेल छलैक जे एतए एक गोटे जूता नहि पहिरत, चालि चलनिमे एहि डेराक नियमकेँ नहि तोड़त, आ' तकरा बदलामे दोसर गोटाकेँ ओकर कहब कर' पड़तैक। वन्दना ओकरा घरमे जा'क' खाली बजलथीन्ह—द्विजू बाबू शर्त मन अछि किने ? अहाँ आइ किन्नहुँने जा सकै' छी। द्विजू स्वीकार कए बजलाह—वेश त सएह होएत।

सूनिक' हमर चिन्ता हँटल—की क' आओत, की फसाद होएत—मालिक नहि जिबै छथि—कोना क' डरे जे ओकरा ल'क' हम सभ रहै छी से कि कहिअ' ?

विप्रदास चुप रहलाह। माए कह' लगलथीन्ह—पहिने ओकरा स्कूल, कालेज, पढ़ब, सुनब, परीक्षा पास करब छलैक, एखन से बलाए खतम भेलैक

हाथमे काज नहि रहलासँ कखन जे कोन झंझट घरमे ल' आओत, केओ ने जनैए। डर होइए जे अन्तमे गोटेक बेरि एतेक पैघ कुलमे ओ कोनो कलंक ने लगाबए।

विप्रदास हँसि कए मूड़ी हिलओलन्हि—कहलथीन्ह—नहि, नहि ओ डर नहि कर माए, द्विजू कलंकक काज कखनो ने करताह।

माए कहलथीन्ह—मानि लएह यदि ओकरा जहल भ' जाइक ? ओ डर कि नहि अछि ?

विप्रदास कहलथीन्ह—आशंका अछि, जनै' छी, किन्तु जहलमे त कलंक नहि छैक, कलंक छैक काजमे। एहन काज ओ कहिओ नहि करताह। मानि ले यदि हमरे कहिओ जहल जाए पड़ए,—भइओ सकैए, तखन कि हमरा ले तों लज्जा पएबें ? कहबें जे विपिन वंशक कलंक ?

ई बात दयामयीकें शूल-बिद्ध कएलकन्हि। के जानए एहिमे कोनो निहित इङ्गित त नहि छैक ? एहि बेटाकें हृदयमे लगा' कए एतेक पैघ कएलन्हि अछि। नीक जेकाँ जनै छथि, सत्यक हेतु, धर्मक हेतु एहन कोनो काज नहि अछि जे विप्रदास नहि कए सकैत छथि। कोनो विपत्ति, कोनो फलाफलकें, अन्यायक प्रतिवाद करैत काल, ओ ग्राह्य नहि करैत छथि। जखन ओ खाली अठारह वर्षक छलाह तखन एक गोट मुसलमानक परिवारक पक्ष ल'क' ओ एकसरे एहन काण्ड कएने छलाह जे कोना क' जे प्राण ल' क' फीरि अएलाह—से आइओ दयामयीक हेतु समस्याक विषय।

वन्दनाक मुँहे ओहि दिनुक ट्रेनक घटना सूनि ओ डरसँ एके बेरि निर्व्वाक् भए गेलि छलीह। द्विजूक हेतु हुनका उद्वेग छन्हि ई सत्य, किन्तु अन्तस्तलमे ओहिसँ बहुत बेशी डर छन्हि बड़का बेटाकें ल' क'। मने मन ठीक इएह बात सोचै' छलीह। विप्रदास कहलथीन्ह—की, माए, कलंकक दुर्भावना गेलौक ? जहल गोटेक दिन हमरहु भए सकैए जे।

दयामयी अकस्मात् व्याकुल भए कहलथीन्ह दुर् तोहर दुश्मनके होअओ—ओ सभ अलच्छ बात मुँहमे नहि आन' बाउ। फेरि कहलथीन्ह—तोरा जहल होएतह—हमरा अछैत ? एतेक दिन भगवान भगवत्तीकें गोहरओलहुँ तखन

किए ? एते' धन सम्पत्ति तखन कथीले अछि ? तइसँ पहिने सर्व्वस्व बेचि देब तँओ ओ नहि होअ' देब, विपिन।

विप्रदास निघुड़ि क' पद-धूलि लेलथीन्ह—दयामयी सहसा हुनका अपना छातीमे सटा क' कहलथीन्ह—द्विजूकेँ जे हेतै—होउक ग', किन्तु तोँ हमरा आँखिसँ फराक होएबह त हम गंगामे डूबि मरब। ई नहि सहि सकैछी, से जानि लएह। बजैत-बजैत कए ठोप नोर हुनका आँखिसँ खसि पड़लन्हि।

माए—आइ साँझ की—कहैत-कहैत वन्दना घरमे ढुकली। दयामयी हुनका छोड़ि क' आँखि पोछि लेलन्हि, वन्दनाक विस्मित मुँह दिशि देखि सहास्ये कहलथीन्ह—नेनाकेँ कते दिनसँ छाती नहि लगओने छलहुँ, आइ एकरत्ती मन भ' गेल लेबा'ले।

वन्दना कहलथीन्ह— बूढ़ बेटा— मुदा हम सभकेँ कहि देबै ?

दयामयी प्रतिवाद करैत कहलथीन्ह—हे बूढ़क बात मुँह नहि आनू वन्दना इएह त ओहि दिनक ई बात—बिआहक बाद हम अङना अएलहुँ, हमर पिसिआ सासु तखनो जिबै छलीह। विपिनकेँ हमरा कोरामे द'क' बजलीह—इएह लिअ' अहांक जेठका नेना, बहुआसिनि। काजकर्म्मक कारणे कतेक कालसँ किछु नहि खएने छैक—पहिने खो आ पिआ' क' ओकरा सुता देबैक, तखन आओर कोनो दोसर काज हेतैक। ओ प्रायः दख' चाहलनि जे हमरा बुते ई होएत, कि नहि—के जानए हमरा बुते भेल कि नहि, ई बाजि ओ फेर हँसलीह।

वन्दना कहलथीन्ह—अहाँ तखन की कएलहुँ, माए।

दयामयी कहलथीन्ह—घोघक तरसँ देखलहुँ—एकै बेरि सोनक गढ़ल जिबैत पुतरी—बड़का-बड़का आँखि खोलि हमरा दिशि देख रहल अछि। छातीमे लगा क' ओत'सँ पड़एलहुँ। आचार अनुष्ठान, विधि व्यवहारत खन कतेक बाँकी छलैक। सभ हल्ला कर' लागल, मुदा हम कान नहि देलहुँ। कत' कोन घर दोआरि, नहि चिन्हैत छलिऐक। जे कमेनिहारि सङे दौड़लि छलि, ओ घर देखा देलक, आ ओकरा कहलिऐ, अए, लाउ त हमर नेनाक दूधक बाटी, एकरा बिना पिअओने हम एको डेग नहि हँटब। ओहि दिन आन आन अङनाक लोक सभ बाजए निर्ल्लज्जि बेहाया,—केओ बाजल आओर कतेक

बात, मुदा हम किछु कान नहि देलहुँ। मने-मन कहलहुँ—बाज' दिऔ ओकरा सभके॔। जे रत्न हमरा कोरामे आएल, ओकरा आओर केओ नहि छीनि सकैए। हमर ओइ नेनाकेँ अहाँ कहै छी, बूढ़?

तीस वर्ष पहिलुका घटना—अश्रु-जल आ हास्य मिश्रित हुनक मुँह बन्दनाक आँखिमे अपूर्व रूपें देखि पड़लन्हि—अकृत्रिम स्नेहक सुगम्भीर तात्पर्य्य एना भ' क' उपलब्धि करबाक सौभाग्य हुनका कहिओ ने भेल छलन्हि। अभिभू। दृष्टिसँ कने काल देखि ओ अपनाकेँ सम्हारलन्हि, आ हँसि क' कहलथीन्ह—माए अहाँ अपन दूनू बेटामे ककरा वेशी मानै छी, से सत्ये कहू त?

सूनि क' दयामयीओ हँसलीह—कहलथीन्ह असम्भव सत्य भेलो उत्तर बाजक नहि चाही, शास्त्रमे निषेध छैक।

वन्दना बाहरक लोक—इएह थोड़े दिनसँ परिचय भेलन्हि अछि, हिनका आगाँ ई सभ पूर्व विवृत बातक आलोचनासँ विप्रदास अस्वस्ति बोध करै' छलाह—कहलथीन्ह कहलो उत्तर अहाँ बुझबै' नहि वन्दना, अहाँक अंग्रेजी पोथीमे ई सभ तत्व नहि। ओकरा सङे मिला कए' जँचाइ कर' लागब त माएक बात अत्यन्त अद्भुत बूझि पड़त। ई आलोचना रहओ।

सूनि क' वन्दना खुसी नहि भेलीह, कहलथीन्ह अङरेजी पोथी अहूँ त कम नहि पढ़ने छी ओझाजी, आहाँ तखन कोना बुझै छिअन्हि?

विप्रदास कहलथीन्ह—के कहलक माएकेँ हम सभ बुझै छिऐ वन्दना—हम सभ नहि बुझै' छिऐ'। ई सभ बात खाली हमरा माइएक पोथीमे छैक, ओकर भाषा भिन्न, अक्षर भिन्न, व्याकरण भिन्न। ओ खाली अपनहिटा बुझैत अछि, आओर केओ ने।

हँ, माए, जे कह' आएल छले'हें, से त एखन तक कहबे ने कएलें?

वन्दना बुझलन्हि—ई इसारा हिनकहिँ। कहलथीन्ह—माए अइ साँझमे की भानस हेतै' सएह पूछ' आएल छलहुँ—हम जाइछी, मुदा अहूँ कने जल्दीए आएब। सभटा बिसरि क' फेरि बेटाकेँ कोरामे ल' क' जुनि बैसि रहू ई कहि, विप्रदासक प्रति कने कटाक्ष' करैत चल गेलीह।

हुनका चल गेलापर दयामयीक मुँहपर दुश्चिन्ताक छाया पड़लन्हि—क्षण काल इतस्ततःकए द्विधा-कण्ठें कहलथीन्ह विपिन, तों त' खूब धार्मिक; जनैत छह, माएके कखनहु नहि ठकक चाही ।

विप्रदास कहलथीन्ह—दोहाइ माए, एना भूमिका नहि बान्ह । की पुछबाक छौ,' पूछ ।

दयामयी कहलथीन्ह—तों ई बात आइ हठात् किए बजलह जे तोरो जेल भ' सकै' छह । कैलास जएबाक बात एखनो नीक जेकाँ मनसँ नहि गेलए—किन्तु आब त हम एको डेग कतहु नहि जाएब ।

विप्रदास कहलथीन्ह—कैलास पठब'ले' हमहूँ व्यस्त नहि छी माए; किन्तु पाँछाँ दोष हमरा ऊपर नहि दिहें । ओ त' खाली एकटा उदाहरण—द्विजूक बात तोरा बुझाब' लगलिऔ जे खाली जेल गेलासँ ककरो वंशमें कलंक नहि लगै' छै' ।

दयामयी माथ हिलओलन्हि—ओहिसँ हम नहि ठकाएब, विपिन । अलाए-बलाए बाज बाला लोक तों नहि छह । की त तों किछु कएलहे, नहि त किछु एकटा करबाक फिराकमे छह,—हमरा सत्ये सत कह ।

विप्रदास कहलथीन्ह—तोरा सत्ये कहै' छिऔ माए, हम किछु ने कएलहुँहें मुदा मनुषक हृदयमे कते' तरहक विषय बात अबैत जाइत रहैत छैक, तकर की कोनो ठीक निर्देश देल पार लागत, माए ?

दयामयी पहिनहि जेकाँ माथ हिला क' कहलथीन्ह—नहि सेहो ने । नहित तोरा देखलेसँ आइ काल्हि हमर मन कोनादनि करैए । तोरा मनुष बनओलहुँ हें—हमरा अछैत अन्तमे की तों एहन नमकहरामी करबह बाउ । कहैत-कहैत हुनक आँखि नोरसँ भरि गेलन्हि ।

बिप्रदास विषण्ण भए कहलथीन्ह—अमङ्गल कल्पना क' क' यदि तों अनेरे डर करहिं—तखन हम कोन प्रतिकार क' सकैछी कह ? तों त जनै' छें, विना तोहर बिचारक हम कोनो काज नहि करै' छी ।

दयामयी कहलथीन्ह—नहि करै' छह ई सत्य, मुदा काल्हि द्विजूके सोर क' क' काज कर्म्म बुझबा' ले किए कहै' छलहक ?

पैघ भेलाह हमरा आब सहायता नहि करताह ?

दयामयी खिसिआक' कहलथीन्ह—ओकर ओतेक शख' ! हमरा ठगह नहि विपिन, तों आइ एते थाकि गेलाहे, तोरो काज भेल' ओकर सहायता लेबाक ? तोरा मनमे की छह खोलि क' कह' ।

विप्रदास चुप रहलाह, ई बात नहि कहलथीन्ह जे ओ अपनहि एखने द्विजदासक भविष्यक सम्बन्धमे सोचबाक हेतु कहने छलथीन्ह । किन्तु एहि बातक आभास पाओल गेल दयामयीक दोसर बातसँ । कहए लगलथीन्ह—हमरा लोकनिक ई पुण्यक संसार, धर्म्मक परिवार—एत' अनाचार नहि चलि सकैए । हमरा लोकनिक घर नियमसँ नीक जेकाँ बान्हल । तोहर विआह करओने छलिअह सतरह वर्षक वयसमे—से तोहर विचार ल' क' नहि, हमरा लोकनिक मनोरथ भेल छल तें । किन्तु द्विजू बजैए जे ओ विआह नहि करत । ओ एम० ए० पास कएलकए' ओकरा नीक अधलाह बुझबाक ज्ञान भेल छैक ओकरा ऊपर ककरो जोर नहि चलतै' । यदि ओ गृहस्थ-संसारी नहि होअए त हमर ओकरा ऊपर विश्वास नहि, ओ जाहिसँ हमर ससुरक सम्पत्तिमे हाथ देब' नहि आबए ।

विप्रदास पुछलथीन्ह—द्विजू कहिआ बजलाहे जे ओ बिआह नहि करताह ।

अधिक काल त बजैए । कहै' छै' बिआह कर' बला लोक बहुत अछि, से सभ करओ । ओ करत खाली देशक काज । तोरा सभके होइ छह जे एत' अएलाक बादसँ हम खाली दिन राति घुमैत रहै' छी, मनमे खूब सुखी छी । मुदा हमरा सुख नहि । ताहि परसँ आइ तों देल' है जहलक दृष्टान्त—जेना हमरा बुझब' ले दोसर कोनो आओर दृष्टान्त छलैके नहि । एक दिन नीक जेकाँ बुझबह विपिन !

विप्रदास कहलथीन्ह—हुनक भौजीकें कहुन ने हुकुम देबा ले' ।

हुनको बात ने ओ सुनतन्हि ।

सुनथीन्ह माए, सुनथीन्ह । समय भेलेसँ सुनथीन्ह । कने हँसि कए कहल-थीन्ह, आ' यदि हमरा आज्ञा दै", त हम गोटेक कन्याक पुछारी करी ।

वन्दना आबि घरमे ढुकलथीन्ह । अनुरोधक स्वरे" कहलथीन्ह— अहाँ अएलहुँ त नहि ? हम कखनसँ बैसलि छी, माए ।

चलू बाउ, हम अबै' छी ।

विप्रदास कहलथीन्ह—हमरा सभहिक ओ अक्षय बाबूक कन्या तोरा मन छौक, माए ? आब से पैघ भेलैक । कन्याक जेहने रूप तेहने गुण । हमरा लोकनिक अपन अपेक्षित, कहइँ त जा' क' देखि अबिऐक, बातो चीत शुरू करी । हमर विश्वास जे द्विजुओ पसिन्द करथीन्ह ।

नहि, नहि, से एखन रहओ । दयामयी गोटेक पल ले' वन्दनाक मुह दिशि देखलथीन्ह—आ' कहलथीन्ह बहुआसिनिक इच्छा—नहि, नहि, विपिन बहु-आसिनिके" बिना पुछने ई सभ करबाक काज नहि ।

वन्दना बात बजलीह । सुन्दर, शान्त आँखिए दूनूक प्रति दृष्टिपात कए, कहलथीन्ह—एहिमे दोष की माए ? ओ त कलकत्तेमे छथीन्ह, चलू ने, बहिनिक सङ्‌ हम सभ देखि अबै' छिअन्हि ।

सूनि कए दयामयी विव्रत भए गेलीह—की जे उत्तर देथीन्ह—किछु सोचि नहि सकलीह ।

विप्रदास कहलथीन्ह—ई उत्तम प्रस्ताव माए । अक्षय बाबू स्वधर्म्म-निष्ठ पण्डित ब्राह्मण, संस्कृतक अध्यापक । बेटीके" स्कूल कओलेजमे पास नहि करओलन्हिहे" ई निश्चय, किन्तु बेश यत्नसँ सिखओलथीन्ह अछि बहुतो विषय । एक दिन हुनका ओहि ठाम हमरा नोत छल, ओहि दिन हम ओकरा बहुत रास बात पुछने छलिऐक । बुझलहुँ, बाप बड़ सखसँ बेटीक नाम रखने छलथीन्ह मैत्रेयी, से असार्थक नहि भेलन्हि । जो ने माए एक बेरि ओकरा देखि अबही—तोहर जेठकी पुतोहु कम-सँ-कम मनमे स्वीकार करथुन्ह जे हुनको छोड़ि संसारमे रूपसी कन्या छैक ।

माए हँस' चाहलथीन्ह मुदा हँसलीह नहि,—मुहमे बाते ने किछु अएलन्हि ।

बन्दना फेरि अनुरोध कएलथीन्ह—चलू ने माए, हम सभ जा' क' एक बेरि मैत्रेयीकें देखि अविअन्हि । बेशी दूर त नहि छैक ।

दयामयी नीक जेकाँ देखलन्हि जे बन्दनाक मुहपर एखन ओ लावण्य नहि, जेना एक छाया झाँपि देलकन्हि अछि । एखन, एतेे कालपर हुनका उत्तर भेटलन्हि—कहलथीन्ह नहि बाउ, दूर त नहि छै' से जनै' छी मुदा ओतबो समय हमरा नहि अछि । चलू हम सभ देखी ग—अइ सांझ की भानस होएतैक । ई कहि ओ बन्दनाक हाथ धए घरसँ बाहर भए गेलीह ।

## १३

सन्ध्यावन्दन समाप्त कए विप्रदास तखने अपन लाइब्रेरीक घरमे आबिकए बैसल छथि; भिनसुरका डाकक सभ चिट्ठी आ मोकदमाक कागज-पत्र गामघरसँ आएल छन्हि, से देखबाक काज । एही समय माए आबि प्रवेश कएलथीन्ह—हँ हए विपिन, तों कते' बढ़ा' क' बजै' छह कह' त !

विप्रदास कुर्शी छोड़ि ऊठि ठाढ़ भेलाह—कथीक माए ?

अक्षयबाबूक बेटी मैत्रेयीकें हम सभ देखि अएलिऐक ।

कन्या कि अधलाह छैक ?

दयामयी एक रत्ती इतस्ततः कए कहलथीन्ह—नहि, अधलाह नहि कहै' छिऐ'—सभ ठाम एहन कन्या देखबामे नहि अबैए ई सत्य, मुदा तें कि हमर बहुआसिनि सङ तों ओकर तुलना कएलह ? बहुआसिनिक बात जाओ, रूपमे बन्दनेक आगां ओ ठाढ़ि भ' सकैए ?

विप्रदास विस्मयापन्न भए कहलथीन्ह—तखन भरिसक तों सभ अनका ककरो देखि अएलेहें, ओ मैत्रेयी नहि ।

दयामयी हँसि कए कहलथीन्ह—ओएह छिऐ। हमरा सभक संङ ओ कते' गप्प कएलक, कते आदर यत्नसँ ओ बहुआसिनि सभकें खोआओलकन्हि—तकरा बाद कते पोथी, कते ओकर लिखबा'-पढ़बाक बात वन्दना संङ भेलैक--आ तों कहै' छह जे हम सभ अनका देखि अएलहुँहें ?

विप्रदास कहलथीन्ह—वन्दनाक सभ प्रश्नक उत्तर, भ' सकैए, ओ नहि देने होइक, किन्तु माए, लिखबा-पढ़बामे, वन्दना, स्कूल-कालेजक कते' किताब पढ़लन्हि अछि, कते परीक्षा पास कएलन्हि अछि, आ' ओकरा खाली बापक लगमे घर बैसलि सिखनाइ, से जेहिना हमरा सङ तोहर छोटका बेटाक भेद।

सूनि कए दयामयीक दूनू आँखि कौतुकसँ नाचि उठलन्हि—चुप रह' विपिन, चुप रह'। द्विजू ओहि कोठरीमे अछि, सुनि क' लाजसँ डेरो छोड़ि क'पड़ाएत। कने रहि क' बजलीह—तोहर माए मूर्ख छथुन्ह त तें कि एते मूर्ख जे खाली कालेजक पास करब कें चतुर्वर्ग बुझथुन्ह। से नहि हए, वरू, छोट-छोट बातमे बेश मधुर शब्दें ओ वन्दनाक सभ बातक जबाब देलकन्हि—। किन्तु हम त कहै' छिअह—हमरा लोकनिक गृहस्यक घरमे काज कोन एते लिखल पढ़ल केरि। हमरा एक गोट पुतोहु जेहने छथि—आओर दोसरो एहने भेलासँ काज चल जाएत। नहि त विद्याक घमंडसँ ओ मने-मन अपन गुरुजनकें छोट—अधलाह बुझति, से नहि होब' देबै।

विप्रदास बुझलन्हि जे जिरहक जबाब माएके गड़बड़ा जाइ' छैक, हँसि कए कहलथीन्ह—से डर नहि कर माए। विद्या जकरा कम, घमंड होइ छैक ओकरे बेशी। ओ वापक लगमे यदि वास्तवमे किछु सिखने होएत त आचार-बिचारमे सभक नीचा रहत—से तों देखिहें।

युक्ति माए अस्वीकार नहि कए सकलथीन्ह, कहलथीन्ह—ई बात तोहर सत्य, मुदा पहिनेसँ बुझबै' कोना से कहह। से छोड़ि हमरा सभक देहात-गाममे केओ पढ़ाइ लिखाइ त जांच कर' नहि आओत—परन्तु पुतोहु देख'

आओत त सभ नाक मूह चढ़ा क' बाजत बूढ़ीकें कि आँखि नहि छलन्हि जे एहन पुतोहुक लग एहन कें ल' अनलन्हि। ई हमरा नहि सहि होएत।

विप्रदास कने काल चुप रहि कहलथीन्ह—किन्तु अक्षयबाबूकें त किछु एकटा जबाब देब' पड़त माए। ओहि दिन हुनका भरोस देने छलिअन्हि जे अधिक संभव हमर माए अस्वीकार नहि करत।

सुनि कए दयामयी व्यस्त भए कहलथीन्ह—ई बात नहिए कहितहुन सएह नीक होइतह, विपिन। से आब जे होअओ, बहुआसिनिक की बिचार छन्हि से सूनि क' तखन हुनका कहिऔन्ह।

विप्रदास कहलथीन्ह—अक्षयबाबू हमरा सभक नितांत आन केओ नहि थिकाह। एते' दिन परिचय नहि छल, तें प्रकाश नहि भेल छल। किन्तु आत्मीयतेक हेतु नहि कहै छिऔक, तों जखन अपन एक बेटाक बिआह करओने छले—अपने इच्छासँ करओने छले—आन ककरो पुछ' नहि गेलही। आ' ऐहि बेरि किए सभगोटाक बिचार लेबाक काज पड़लौ, माए?

तर्कमे हारि कए दयामयी हँसी-मुहे बजलीह—किन्तु आबजे बूढ़ि भेलहुँ बाउ,—आ'र कते दिन बाँचब, कहह ने। मुदा जकरा ल' क' सभ दिन घर कर' पड़तन्हि, हुनकर बिचार बिना नेने बिआह कोना करएबन्हि—? नहि-नहि, दू दिन तों कने हमरा सभकें सोच' दएह। कहि ओ बाहर चल गेलीह। बाहर आबि दयामयी अपना घर नहि जाकए समधिएक कोठरीक दिशि बिदा भेलीह। इएह कए दिनक घनिष्ठतासँ वन्दनाक पितासँ हिनक बहुत रास संकोच दूर भए गेल छलन्हि—अधिक काल अपने आबि हुनका विषयमे पुछारी कए जाइत छलथीन्ह।

एमहर संध्या भए गेल छलैक, पूजा पर बैसलासँ जल्दी नहि उठतीह ई सोचि कए हुनका घरमे जाकए पुछलथीन्ह—कोना छथि?

बात सम्पूर्ण नहि भ' सकलन्हि। घरक दोसर भागमे बैसल एक सुन्दर युवक वन्दनाक सङे मृदु कण्ठें गप्प करैत छलाह—एकदम साहेबी पोसाकमे

एहि अपरिचित लोकक मोझाँ हठात् आबि गेलासँ दयामयी सलज्जे पाछाँ हटबाक उपक्रम करैत छलीह कि रायसाहेब कहि उठलथीन्ह—कत' पड़ाइ छथि समधिन,—ई जे हमर सुधीर। ओकरासँ लाज कथीक ? ओ त विप्रदास द्विजदासे जेकाँ हिनकर बेटा। हमर दु:खित पड़बाक खबरि सूनिक' मद्रासस देख' अएलाहे।

सुधीर, ई वन्दनाक बहिनिक सासु—विप्रदासबाबूक माए—हिनका प्रणाम करिऔन्ह ।

सुधीरकें—प्राय: प्रणाम करबाक अभ्यास नहि, ओहि पोसाकमे कएनाइओ कठिन, ओ लग आबि माथ निघुँड़ाकए आदेश पालन कएलन्हि।

एहि युवकक संगे दयामयीक सन्तान सम्बन्ध जे कोन रूपें भेलन्हि —इएह बुझबाक हेतु रायसाहेब कहए लगलथीन्ह। हिनकर पिता आ'हम एके संङे बिलायँतमे पढ़ै छलहुँ समधिन, तहिएसँ हम सभ बड़का मित्र । सुधीर अपनो बिलायँतक बहुत रास परीक्ष पास कए क' मद्रासक शिक्षा बिभागमे नीक नौकरी करैत छथि । बात स्थिर भेल छैक जे हिनका लोकनिक बिआहक बाद किछु दिनक छुट्टी ल' ओ वन्दनाकें संङे फेरि बिलाँयँत जएताह—ओत' मन होएतैक त वन्दना कालेजमे नाम लिखाओत, नहि त खाली देश देखि क' दूनू गोटे घूरि क' चल अओताह । देखू सुधीर, अहाँ सभ यदि एही अगस्त सेप्टेम्बरमे जाएब स्थि करी— त हमहूँ मास तिनिएक छुट्टी ल' क' एक बेरि घूरि अबितहुँ। की कहै छह हए बुढ़ी—बाउ, नीक नहि होएत ?

वन्दना ओहीठमसँ आस्ते-आस्ते कहलथीन्ह—किएने होएत बाबू, अहाँ सङे रहब त आओर बढ़िञा होएत।

रायसाहेब उत्साहित भए कहलथीन्ह—ताहिसँ आओर एकटा सुबिधा ई होएतह जे तोरा सभहिक बिआहक बादो गोटेक मासक समय भेटत—कोनो प्रकारक हड़बड़ी नहि होएत। बुझलहुँ किने सुविधा, सुधीर ?

एहि पर सुधीर ओ वन्दना दून गोटे मूड़ी हिला कए स्वीकृति देलथीन्ह। दयामयी एते कालपर बुझलन्हि—ई युबक रायसाहेबक भावी जमाता। अतएब हिनको पुत्र-स्थानीय। हृदय एके बेरि आलोड़ित होआए लगलन्हि—किन्तु ओहो विप्रदासक माए, बलरामपुरक बहु-ख्यात मुखर्जी-परिवारक कर्त्री क्षणहिमे अपनाकें सम्हारि कए ओहि युवककें पुछलथीन्ह—सुधीर, अहाँ सभक घर कत' अछि ?

सुधीर कहलथीन्ह—एखन बम्बइ। मुदा बाबूक मुहे सुननेछी, जे पहिने छल दुर्गापुर, बर्द्धमानमे। ओत' प्रायः हमरा सभकें आब किछु नहि अछि।

कोन दुर्गापुर सुधीर ? वर्द्धमान जिलामे ?

सुधीर कहलथीन्ह—हँ। बाबूक मुहें सएह सुनने छी। कालना लग कोनो एकटा छोट गाम छैक—एखन भरिसक ओ प्रान्त मलेरिआसँ सत्यानाश भए गेल छैक।

दयामयी कने काल मौन रहि प्रश्न कएलथीन्ह—अहाँक पिताक की नाम थिकन्हि ?

सुधीर कहलथीन्ह—हमर बाबूक नाम, श्री रामचन्द्रबसु। दयामयी चमकि उठलीह। पुछलथीन्ह—अहाँक पितामहक नाम कि हरिहर वसु छलन्हि ?

प्रश्न सूनि रायसाहेब पर्य्यन्त विस्मयापन्न भेलाह, कहलथीन्ह—अहाँ कि हुनका सभकें जनै छिअन्हि, समधिन ?

हँ, जनै' छिअन्हि। दुर्गापुरमे हमर मातृक अछि। नेनामे हम नानीक सङ रहि क' मनुष भेलहुँ। तें ओहिगामक सभकें चिन्है' छिऐक। हुनका-लोकनिक आङन हमरे सभक टोलमे छलन्हि। किन्तु एखन आओर वेशी बात कहबाक समय नहि अछि सुधीर, हमरा पूजामे अबेर होइए। हे मुदा, अहूँ बिना खएनहि नहि चल जाउ। हम एखन सभ ठीक क' देबा ले' कहि दैत छिऐ'।

सुधीर सहास्ये कहलथीन्ह—ओहिमे आओर बाँकी नहि अछि, विप्रदास-

बाबू पहिनहि ओ काज करा देने छथि।

करा देने छथि ? अच्छा त एखन जाइछी, ई कहि दयामयी बाहर भए गेलीह। वन्दनाक प्रति एको बेरि देखबो ने कएलथीन्ह, एकटा बातो ने पुछलथीन्ह।

दोसरा दिन प्रातःकाल स्नान-पूजा समाप्त कए विप्रदास सभ दिनुक अभ्यास जेकाँ माएके॑ प्रणाम करबाक हेतु आइओ हुनका घरमे प्रवेश कए अत्यन्त आश्चर्य्यित भए देखलन्हि जे हुनक वस्तु सभ बान्हल जाइत छन्हि।

ई की माए ? कतहु जएबें कि ?

दयामयी कहलथीन्ह—तोरा त तकलिअह, नहि भेटलाह त दत्तबाबूके॑ पुछबओलिअन्हि—बुझलहुँ जे साढ़े नओ बजेक गाड़ीसँ विदा भेलासँ साँझूपहरसँ पहिनहि गाम पहुँचि जाएब। मुदा परसू तोहर मोकदमाक तारीख—तों त सङ जा' नहि सकबह, द्विजूके॑ कहि दहक जे ओ हमरा सभके॑ पहुँचा देत।

विप्रदास देखलन्हि—माएक दूनू आँखि लाल, मुह सुखाएल, देखलासँ बूझि पड़ैछ जेना भरि राति हुनका ऊपर एक विहाड़ि बहैत छलन्हि।

विप्रदास भय-पूर्व्वक पुछलथीन्ह—हठात् कि कोनो जरूरी बात भ' गेलैए माए ?

माए कहलथीन्ह—दू दिन ले' अएलहुं, आठ-दश दिन बीत गेल—ओम्हर भगवान भगवत्तीक पूजा कोना होइ'छन्हि—नहि जनैछी; पाँच-छओटा गाय बिआएले छैक—ओकरा सभकें की भेलै' सेहोने बुझलहुँ, बासूक पाठशाला जाएब कामहि होइ छै—आओर देरी करब नहि ने होएत, विपिन।

ई सभ बात दयामयीक आगाँ तुच्छ नहि ई सत्य, किन्तु असल बात जे ओ प्रकाश नहि कएलन्हि—ई बात विप्रदास बुझलन्हि; कहलथीन्ह—तँओ कि आइए नहि गेलासँ काज नहि हेतौ, माए ?

नहि बाउ, तों हमरा बाधा नहि दएह । द्विजूके सङ जाए लें' कहि दहक, नहि त आओर केओ हमरा पहुँचा देअओ ।

सएह होएतौक माए, कहि विप्रदास पाएरक धूरा माथ लगा, बाहर भए गेलाह । अपन सुतबाक घर आबि देखलन्हि सती अत्यन्त व्यस्त, आ' लगमे बैसलि अन्नदा सन्देश भरल कोही, फल, ओ नेनाक दूधक बाटी ताटी सरिआ कए राखि रहल अछि ।

सती माथक नूआ घीचि उठि ठाढ़ि भेलीह । विप्रदास पुछलथीन्ह—अन्दना बहिनि, बात की छिऐ—बुझलहकहे ?

नहि, भाइ, किछु ने बुझलिऐए । भिनसरू पहर माए सोर क' क' कहलन्हि—नेना आ पुतोहुकें गाड़ीमे खाए पीबक कष्ट नहि होअए —तें किछु इन्तजाम क' दहुन्ह—हम सभ नओ बजेक गाड़ीसँ जाएब ।

विप्रदास सतीकें कारण पुछलथीन्ह—ओहो मूड़ी हिला क' कहलथीन्ह जे ओहो किछु ने जनैत छथीन्ह ।

सूनि कए विप्रदास स्तब्ध भए गेलाह । अन्नदा नहिओ बूझि सकैत अछि मुदा पुतोहु सासुक बात नहि जनैत छथिन्ह—ई कोन बात थीक ? कनेक काल चुपेचाप ठाढ़ भए ओ नीचा चल गेलाह । उद्वेगक सङ इएह सोचए लगलाह जे ई सभ बात माएक स्वभावक नितान्त विरुद्ध । के जाने कोन गंभीर दुःख हुनक एहि विपर्य्यस्त आचरणक अन्तरालमे प्रच्छन्न रहलन्हि जे ककरो लग ओ प्रकाश नहि कएलन्हि अछि ।

दयामयी यात्रा कए जखन नीचा अइलीह तखनो ट्रेनमे वेश देरी—किन्तु कथू कारणें हुनका आइ विलम्ब नहि सहि होइत छन्हि । आगूमे मोटर प्रस्तुत, आ' दोसर पर चीज वस्तु राखि नोकर सभ बैसि गेलैक अछि; बैग हाथमे नेने विप्रदासकें अबैत देखि ओ विस्मयक स्वरें प्रश्न कएलथीन्ह—द्विजू कत' गेल ?

विप्रदास कहलथीन्ह—ओ नहि जएताह माए, हमहीं तोरा पहुँचा द'

अबै' छिऔ।

किए, जाए ले' राजी नहि भेलह—बुझि पड़ैए ?

विप्रदास सविस्मयें कहलथीन्ह—एहन बात तोरा बाजक नहि चाहिऔक माए। तोहर हुकुम देलासँ कहिआ ओ अवाध्य भेलथुन्हहें कह त ?

एखन भेलै' कि ? किए ने गेल ?

हमहीं जाए ले' नहि कहलिअन्हि माए,—बाजि विप्रदास कने हँसि कए कहलथीन्ह—जाहि हेतु तों अपने एते व्यस्त भ' गेलेहें—सएह तोहर देवता, तोहर गायक जेर,—ओकरा सभहिक कि हाल भेलैक सएह सभ हमहूँ अपना आँखिए देखब, तें जाइ छी। आर किछु नहि, माए।

आन कोनो समय दयामयी अपनहुँ हँसि कए कते रास बात बेटाकें कहितथि, किन्तु एखन चुप्पे रहलीह।

अन्नदा वन्दनाकें बजाबए गेल छलि, ओ एखन स्नान कए पिताक घर जाइत छलीह, अन्नदाक आह्वान पाबि जल्दीसँ नीचा आबि ई व्यवहार देखि हत-बुद्धि भए गेलीह। दयामयी कहलथीन्ह—आइ हम सभ गाम जाइ छी, वन्दना।

गाम ? ओत' की भेलैए माए ?

नहि, किछु भेलैए नहि। परन्तु दू दिन ले आबि कए, दश बारह दिन भ' गेल, आओर गाम घर छोड़ि क' रहल नहि ने पार लागत। अहाँक बाबूसँ भेंट नहि भेल, एखनो ऊठल नहि छथि—हमर ई त्रुटि ओ माफ करथि। द्विजू रहल, अन्नदा रहलि, अहूँ कने देखबैक जे हुनकर अवहेलना नहि होइन्हि। आउ बहुआसिन, आओर देरी नहि करू,—ई कहि ओ गाड़ीमे जाकए बैसिलीह।

सती पाछांमे छलथीन्ह, ओ लग आबि बहिनिक हाथ धरैत देरी कानए लगलीह—हम सभ चललहुँ,—आर किछु हुनका मुहसँ बहार नहि भेलन्हि।

आँखि पोछैत पोछैत गाड़ीमे जा कए अपन सासु लग बैसि गेलीह ।

वन्दना स्तब्ध—विस्मयसँ निर्व्वाक् ठाढ़ि भेलि,—जेना पाथरक मूर्त्ति—अकस्मात् ई की भेल ?

वासू आबि कए जखन हुनका पाएर छूबि प्रणाम कए कएलकन्हि—हम जाइ छी मौसी,—तखन हुनका चैतन्य भेलन्हि—जे ओहो एखन तक ककरो प्रणाम नहि कएलथीन्ह अछि। जल्दीसँ बासूक कपोल पर एक चुम्बन दैत ओ गाड़ीक फाटक लग आवि हाथ बढ़ा' दयामयी ओ बहिनिके पाएर छूबि प्रणाम कएलन्हि। सती चुप्पे हुनक चिबुक स्पर्श कएलथीन्ह—माए अस्फुट स्वरें आशीर्वाद देलथीन्ह किन्तु की जे कहलथीन्ह—केओ बुझलकन्हि नहि। मोटर विदा भेल।

अन्नदा कहलकन्हि—चलू बहिन, हम सभ ऊपर जाइ।

ओकर स्नेहक कण्ठ-स्वरें वन्दना लज्जित भेलीह, कने कालक विह्वलताकें मोनसँ जोरसँ फेंकि कहलथीन्ह—अहाँ जाउ अन्नदा, हम भनसाघरक काज ताज खतम क' क' अबैछी। ई कहि ओ ओहि दिशि चल गेलीह।

काल्हिओ दुपहरिआमे बात भेल छल जे राय साहेब बम्बइक हेतु विदा होएताह—तखन सभ केओ सङ्ग सङ्ग बलरामपुर यात्रा करताह। किन्तु आइ ओहि बातक उल्लेख पर्य्यन्त नहि, सुदूर भविष्यमे कोनो एक दिनक हेतु मौखिक आह्वान पर्य्यन्त नहि।

गोटेक घंटाक बाद अपनहि हाथें चाहक सभ सरंजाम लए वन्दना अपन पिताक घर गेलीह कि ओ अत्यन्त आक्षेप-पूर्व्वक बाजि उठलाह—समधिन सभ चल गेलीह—सवेरे हम उठि नहि सकलहुँ—कह' त, छीः छीः हमरा ओ सभ की बुझने होएतीह।

वन्दना कहलथीन्ह—बाबू हम सभ कहिआ बम्बइ जाएब ?

पिता कहलथीन्ह—तोहर त बलरामपुर जएबाक बात छलह, गेलह किए नहि, बाउ ?

वन्दना कहलथीन्ह—अहाँके एत' एकसर छोड़ि क' कोना जाएब बाबू ? अहाँ जे एखनो निके नहि भेलहुँहें ।

निके त' भ' गेलहुँ, बाउ । समधिनके वचन देने छिअन्हि जे तों जएबह, नहि होएत तँ जएबा काल रास्तासँ हम तोरा वलरामपुर पहुँचा क' तखन जाएब । की कहै छह, बाउ ।

नहि बाबू, से नहि होएत । अहाँके एते' दूरक रास्ता हम एकसरे नहि जाए देब ।

कन्याक बात सूनि पिता पुलकित चित्त तिरस्कार करैत कहलथीन्ह—दुर बूढ़ी, भेँट भेलासँ समधिन तारा संगे हँसी क' क' कहथुन्ह—बूढ़ बापकें बेटी आँखिक ओट नहि कर' चाहै छन्हि, छीः ।

अहाँ खाउ बाबू, हम जाइछी —कहि वन्दना बाहर चल अइलीह ।

## १४

सन्ध्या उत्तीर्ण-प्रायः—वन्दना आबि द्विजदासक घरक दोआरि लग ठाढ़ि भए सोर कएलथीन्ह—एक बेरि आबि सकै छी, द्विजू बाबू ? भीतरसँ शब्द अएलन्हि—आबि सकै' छी, एक बेरि नहि शत सहस्त्र—असंख्य बेरि ।

वन्दना केबाड़क दूनू पल्लाकेँ नीक जेकाँ ठेलि प्रवेश कएलन्हि आओर घरक सभ बत्तीकेँ बारि खुजल खिड़की लग एकटा कुर्सी घीचि कए बैसि गेलीह ।

द्विजदास हाथक पोथीकेँ एक दिशि राखि ओछाओन पर ऊठि बैसलाह, कहलथीन्ह—की हुकुम ?

की पढ़ै छलहुँ ?

भूतक गप्प ।

अतिथि पैघ कि भूतक गप्प पैघ ?

भूतक गप्प पैघ ।

वन्दना विरक्त भए कहलथीन्ह—सदरिकाल हँसी नीक नहि। हम सभ जे अहाँक घरमे पाहुन छी से अहाँकें बूझल अछि ?

द्विजदास कहलथीन्ह—अहाँ सभ जे भाइक घरमे पाहुन छिअन्हि से ज्ञान हमरा पूर्ण मात्रामे अछि। एवं घर वाला आदेश दए गेल छथि जे अहाँ लोकनिक यत्नमे त्रुटि नहि होअए। निश्चय होइत नहि, किन्तु एहि भूतक गप्पमे हमर आत्म-विस्मृत भए जएबाक कारणें किञ्चित् शैथिल्य भेल अछि। अतएव अतिथिकआगाँ हम क्षमा प्रार्थना करै' छी।

समस्त दिन हमरा केहन कष्टसँ बीतल अछि से अहाँ जनैछी ?

निश्चय जनै' छी।

निश्चय जनै' छी ? आ तैओ प्रतिकारक कि कोनो उपाय कएलहुँहें ?

द्विजदास कहलथीन्ह—नहि करबाक प्रथम कारण पहिनहि निवेदन कएल अछि, द्वितीय कारण ई जे प्रतिकार हमर साध्यातीत।

किए ?

से हमरा बाजब उचित नहि।

वन्दना पुछलथीन्ह—माए आ' बहिनि एना हठात् गाम किए चल गेलीह ?

बहिनि गेलीह प्रवल पराक्रान्त सासुक हुकुमसँ। नहि त' ओ निर्दोष। किन्तु माए किए गेलीह ?

माइए जानथि।

अहाँ नहि जनै' छी ?

द्विजदास कहलथीन्ह—एकदम जे नहि जनै' छी, ई कहब मिथ्या होएत। कारण भौजी किछु अनुमान कएलन्हिहें आ' हम ओकर यत् सामान्य किछु लाभ कएलहुँहें।

वन्दना कहलथीन्ह—देखू, द्विजू बाबू, हमरा लोकनिमे प्रतिज्ञा भेल छल जे हम एहि घरक सभ बात सुनब आ अहूँ हमर सभ बात सुनब। अहाँ जनै' छी, हम अहाँक एको गोट आदेशक उल्लंघन नहि कएलहुँ अछि; कहैत-कहैत हुनक आँखिमे नोर अबैत छलन्हि—ओ आन दिशि मूड़ी घुमा' कहुना कए अपनाकें सम्हारलन्हि।

द्विजदास व्यथित भए कहलथीन्ह—नितान्त अर्थ-हीन बात तें कहबाक हमरा इच्छा नहि छल। माए अहीं ऊपर खिसिआ कए चल गेलीहे, ई ठीक किन्तु अहांक कोनो अपराध नहि अछि। समस्त दोष हुनक अपनहि छिअन्हि। भौजिओक किञ्चित् छन्हि—कारण प्रत्यक्षमे नहि रहिओ कए परोक्षमे एहि चक्रान्तमे योग देने छलथीन्ह—ई हमर सन्देह। किन्तु सभसँ निरपराध वेचारा द्विजदास अपने।

वन्दना अधीर भए उठलीह—कहू ने जल्दी—जे चक्रान्त कोन बातक ?

द्विजदास कहलथीन्ह—चक्रान्त शब्द प्रायः सङ्गत नहि। किन्तु माए कएने छलीह मने मन अपना ले' स्वर्ण-लंकाक भाग। मुदा हिसाबमे गलती भेलासँ जखन भाग्यमे पड़लन्हि शून्य तखन संसारक ऊपर खिसिआ उठलीह। खिसिअएबो शब्द ठीक नहि—एक रूपें आशा भङ्गक-क्षुब्ध अभिमान।

वन्दना चुप्पेचाप देखैत रहलीह—द्विजदास कहए लगलथीन्ह,—जनैं छी अहाँ ई बात निश्चय जे एक दिन अहाँक ऊपर जहिना हुनक वितृष्णा छलन्हि आ अन्य दिन भेलन्हि तेहने गम्भीर स्नेह। रूप, गुण, विद्या बुद्धिमे—काज-कर्म्ममे दया-मायामे—एक भौजीकें छोड़ि माए ककरो अहाँक जोड़ा नहि लगाबथि। अहाँकें म्लेच्छ कहत—ई ककर साध्य ? तखने माए कमर कसि कए प्रमाण कए बैसितथि जे एते' पैघ निष्ठावती ब्राह्मण-कन्या समस्त भारतवर्षमे तकलासँ नहि भेटत। ई कहि द्विजदास अपन रसिकताक आनन्दसँ अट्टहास कए उठलाह। ई हँसी वन्दनाकें अधलाह लगबो कएलन्हि तैओ ओ हँसलीह।

द्विजदास कहलथीन्ह—हँसै छी कि वन्दना, असलमे सएह त' भेल अछि सभसँ झंझट।

वन्दना कहलथीन्ह—एहिमे झंझट किए होएत ?

द्विजदास कहलथीन्ह—तखन अवधान पूर्व्वक श्रवण करू।

दयायीकें दुइ पुत्र—ज्येष्ठ ओ कनिस्ठ। ज्येष्ठक प्रति जेहने अगाध आशा ओ भरोस, कनिष्ठक प्रति तेहने अपरिसीम सन्देह ओ भय। हुनक

धारणा, जे अपदार्थतामे पृथ्वी पर कनिष्ठसँ बढ़िकेँ दोसर नहि। किन्तु माए त? गर्भमे धारण कए सन्तानकेँ ओ सहजहि तिलाञ्जलि नहि दए सकैत छथि, तेँ मने मन पुत्रक सद्गतिक उपाय सोचलन्हि—अहाँक कान्ह पर हुनका सुप्रतिष्ठित कए हुनका संसारक मरुभूमि निर्भय उतीर्ण करा देथीन्ह। परन्तु विधाता विपरीत अकस्मात् काल्हि साँझू पहर आविस्कृत भेल जे वन्दनाक स्कन्ध देशपर स्थान नहि,—छोट नाओ ओ—अर्थात् जेदयामयीक सभ संकल्प, सभ स्वप्न-जाल ध्वस्त विध्वस्त कए के एक सुधीरचन्द्र—ओहि पर पहिनहिसँ समारूढ़, ओकरा हटाओत से साध्य ककर? ई बाजि ओ एक बेरि फेरि उच्च हास्यसँ घर भरि देलन्हि।

वन्दना किछु काल नीरव रहि हुनक मुह दिशि देखि प्रश्न कएलथीन्ह—एहि रूपक विकट हँसीक कारण अहाँकेँ की अछि? माए अपदस्थ भेलीह अछि तेँ—आ'कि अहाँ अपने अव्याहति पओलहु—तकरे आनन्दोच्छ्वास? कोन?

द्विजदास स्मित-मुहेँ कहलथीन्ह—हर्ष वास्तबमे ई दूनू मे कोनटासँ नहि तथापिई कबूल करैत बाधा नहि होइछ जे अकस्मात् पदस्खलनसँ—माए जन-एहि नीक धाराशायिनी मूर्ति देखि दर्शक रूपेँ हम किंचित् स्वाभाविक आनन्द-रस उपभोग कएलहुँ अछि। तखन हुनका एहिसँ क्षति विशेष नहि होएतन्हि यदि एहिसँ ओ अन्ततः शिक्षा ग्रहण करथि जे संसारमे बुद्धि पदार्थ खाली हुनका अपनहिटा नहि छन्हि—ओहिमे अनको दावी रहि सकैत छैक। कारण हमरा नहि, त भाइओकेँ माए अपन षडयन्त्रक आभास देने रहितथीन्ह त आर किछु नहि होउक, ई कर्म्म-भोगसँ निस्कृति पाबि सकैत छलीह। भाइ ओ हम—दूनू गोटे जनै' छलहु जे अहाँ आनक बाग्दत्ता-बधू छी, परस्पर प्रणय शृङ्खलामे आवद्ध—अतएव एहि व्यवस्थामे अन्यथा होएब सम्भबो नहि आ उचितो नहि।

वन्दना पुछलथीन्ह—अहाँ सभ ककरासँ—कहिआ ई सुनलहुँ?

द्विजदास कहलथीन्ह—अहाँक बाबूसँ । एतए हमरा सभक अएला पर ओहि दिन रायसाहेब अहाँ लोकनिक प्रेम, वाग्दान ओ आशु विवाहक मनोज्ञ आलोचनासँ हमरा दूनू भाँइक दूनू कानमे सुधावर्षण कएने छलाह । नहि नहि, खिसिआउ नहि, वन्दना ! शुद्ध लोक, निरीह व्यक्ति बेचारे, चित्तक प्रफुल्लतासँ आत्मीय लोकक आगाँ सुसंवाद दाबि कए रखबाक प्रयोजने ने बुझलन्हि ।

वन्दना किछु काल मौन रहि प्रश्न कएलथीन्ह—एही हेतु कि ओझाजी हमरा सभकेँ मैत्रेयीकेँ देखबा ले' पठओने छलाह ?

द्विजदास कहलथीन्ह—से ठीक नहि जनै' छी । कारण भाइक मनक सभ बात देवतो सभसँ अज्ञात । खाली एतबे टा जनै' छी जे हुनका मनमे सुश्री मैत्रेयी सर्व्व-गुणान्विता कन्या । बलरामपुरक धनी ओ महा-माननीय मुखर्जी परिवारक अयोग्या नहि ।

वन्दना पुछलथीन्ह—मैत्रेयीक सम्बन्धमे अहाँक अभिमत की अछि ?

द्विजदास कहलथीन्ह—एहि घरमे ई प्रश्न अवैध, हम तृतीय पक्ष । प्रथम ओ द्वितीय पक्ष—अर्थात् माए औ भाइ जाहि कोनो स्त्रीगणक गरॉमे हमरा वान्हि देताह—तिनके कण्ठ-लग्न भेल हम परमानन्द पूर्वक झुलैत रहब । इएह एहि घरक सनातन रीति, एहिमे परिवर्त्तन नहि ।

हुनक बजबाक भंगीसँ वन्दना हँसलीह, कहलथीन्ह—आर मानि लिअ, मैत्रेयीक बदला वन्दनाक गल-देशमे यदि ओ सभ अहाँकेँ बान्हि देथि ?

द्विजदास कपारपर हाथमारि कहलथीन्ह—हाय वन्दना ! ओ आशा वृथा । दुष्ट राहु पूर्णचन्द्र ग्रास कएलक, कत ' केर सुधीर चन्द्र कूदि क' आबि, कोठामे आगि लगा देलक—द्विजदासक स्वर्ण-लंका आँखिक सम्मुख भस्मीभूत भए गेल । ई प्रसंग बन्द करू कल्याणी, अभागलक हृदय विदीर्ण भए रहल छैक ।

हुनक नाटकीय उक्तिसँ वन्दना फेर एक बेरि हँसि कए कहलथीन्ह—सोना लंका सभटा त नहि जरलैक द्विजूबाबू, अशोक बन बँचि गेल छलैक । हृदय विदीर्ण नहिओ भए सकैछ ।

द्विजदास माथ हिला' क' कहलथीन्ह—से आश्वासन वृथा। श्रीरामचन्द्रकेँ बरिआतिक जोर छलन्हि किन्तु हम त सर्व-वादि-सम्मत सभ तरहेँ हत-भाग्य द्विजदास। हमर दग्ध अदृष्टमे सभ आशा जरि कए छाउड़ भए गेल, किछुओ बाँकी नहि।

नहि, नहि गेलए।

की नहि गेलए?

वन्दना जोर दए कहलथीन्ह—किछुओ नहि गेलए। द्विजदास हत्त-भाग्य कहि क' वन्दना हत-भागिनी नहि। हमरा अदृष्टकेँ जरा क' छाउड़ करत ई साध्य सुधीरक नहि। संसारमे ककरो नहि, माइओक नहि, अहाँक भाइओक नहि।

हुनक शान्त दृढ़ कण्ठस्वरसँ द्विजदास अवाक् भए देखैत रहलाह।

चुप रहलहुँ जे? हमर मनक बात अहाँ नहि बुझलहुँ—आइ कि ई छल कर' चाहै छी?

नहि छल नहि कर' चाहै छी वन्दना, अनुमान कएने छलहुँ से मानै छी, किन्तु सन्देहो बहुत छल।

वन्दना कहलथीन्ह—ओ सन्देह जेना आइसँ चल जाए। कने काल हुनका मुह दिशि देखि कहलथीन्ह—मुदा सन्देह हमरा त नहि छल, ओएह पहिले दिनसँ। गामसँ खिसिआ क' चलि अएलहुँ, एकसरे घरक खिड़की लग ठाढ़ भेल हाथ उठा कए इसारासँ अहाँ विदा देलहुँ। खाली एके पहरक परिचय, तैओ किजे ओकर अर्थ—हमरा लग एतेक स्पस्ट छल, अहाँ सोचि सकै' छी?

द्विजदास चुप छथि ई देखि वन्दना कहलथीन्ह—सन्देह गेल?

द्विजदास कहलथीन्ह—कनेक आओर धक्का देलासँ चल जाएत। किन्तु सोचै'छी, हमर संशय हैटाएबाक इएह पद्धति कि सभ दिन चलाएब?

वन्दना कहलथीन्ह—सभ दिनक व्यवस्था पहिने आबओ त। मुदा सभ जानिओ क' जे ताच्छिल्यक अभिनय करैछ तकरा बुझएबाक हेतु हमरा दोसर कोनो मार्ग नहि।

किन्तु ओ हम नहि, माए। ओकरा कोना बुझएबैक?

वन्दना कहलथीन्ह—माए अपने बुझतीह । हमरा ओ बेटी जेकाँ मानै छथि । आइ हठात् जते चंचल भ' क' ने चल जाथु, जे बुझि क' गेलीहे ओ जे सत्य नहि, ई बात यदि माइएकें हम नहि बुझा सकबन्हि, तखन हम कथीक आशा करब कहू त । हमरा कोनो चिन्ता नहि अछि द्विजू बाबू, एक ने एक दिन हुनका सभ बात हम बुझएबे करबन्हि । बाजैत-बाजैत हुनक गला भरि गेलन्हि आ दूनू आँखिमे नोर भरि गेलन्हि ।

सत्य ओ मिथ्याक द्विधा द्विजदाससँ हँटिओकए नहि हँटैत छलन्हि, किन्तु एहि आँखिक जल ओ कण्ठस्वरक निगूढ़ परिवर्त्तनसँ हुनक समस्त संशय जेना दूर भए गेलन्हि । ई त खाली परिहास नहि । विस्मय ओ व्यथासँ आलोड़ित भए ओ बाजि उठलाह—ई की वन्दना अहाँ कनै छी जे ?

प्रत्युत्तरमे वन्दना बात नहि कहलथीन्ह—खाली नोर पोछि दोसर दिशि देखए लगलीह ।

द्विजदास अपनहुँ बहुत काल चुप रहि धीरे-धीरे कहलथीन्ह—सुधीर त अहाँक कोनो दोष नहि कएलकए, वन्दना ?

वन्दना मुह फिरा क' देखलथीन्ह नहि, खाली कहलथीन्ह—दोषक विचार कथी ले—कहू त ? हम कि हुनक अपराधक प्रतिशोध लेब' चाहै' छिअन्हि ?

द्विजदास एहि बातक उत्तर नहि पाबि, बुझलन्हि ई प्रश्न निरर्थक भेल । फेरि किछुकाल निश्शब्द रहि कहलथीन्ह—सुधीर अहाँलोकनिक अपन समाजक —अथच शिक्षा, संस्कार, अभ्यास, आचारमे मुखर्जी सभहिक संग अहाँकें कतहु भेल नहि होएत । तखन कथी ले अहाँ एकरा सभहिक कारागारमे चिर-कालक हेतु आएब ग ? हमरा ले ? आइ भरिसक अहाँ नहि बुझी, किन्तु यदि कहिओ कोनो दिन ई गलती बूझाएत तखन परितापक सीमा नहि रहत । हमरा अहाँ की रूपें बुझलहुहें नहि जनैछी, मुदा भौजी, माए, भाइ, हमरा लोकनिक पूजा-देवताकघर, हमरा सभहिक अतिथि-शाला, हमरा लोकनिक आत्मीय स्वजन—हम एही सभक एक लोक । हमरा फूट भ' क' अहाँ कोनो दिन नहि पाएब ।

दीर्घ काल अहाँके कि ई सहि होएत ?

वन्दना कहलथीन्ह, नहि सहि सकलासँ मनुषके मरबाक पथ सभ दिन खुजल रहैत छैक, द्विजूबाबू; कोनो जहल तकरा बन्द नहि कए सकैत छैक। अहूँ हमरा की बूझलहुँहे नहि जनै' छी, हमर सासु, हमर देआदनी, हमर भैँसुर, हमर देवता, अतिथि-शाला, हमरा लोकनिक आत्मीय स्वजन—हिनका सभसँ भिन्न राखि हम अपन स्वामीके एको दिन ले नहि पाब' चाहैत छी। ओ सभक सङ्‌ एक रहि क' जाहिसँ हमरा सङ्‌ रहथि।

द्विजदास विस्मयापन्न भए कहलथीन्ह—ई सभ धारणा त अहाँक नहि, ई अहाँ ककरासँ सिखलहुँ वन्दना ?

वन्दना कहलथीन्ह—केओ हमरा सिखओलक नहि द्विजूबाबू, किन्तु माएक लगमे रहि क' आ ओझाजीके देखि क' ई सभ हमरा अपनहि मनमे भए गेलए। एहिघरमे सभसँ बढ़ि क' माए, तकरा बाद ओझाजी, तकरा बाद बहिनि, तखन अहाँ, एहि ठाम अन्नदोक एकटा विशेष स्थान छन्हि। एहि घरमे यदि जगह कहिओ भेटत, त हिनका सभक छोटे भ' क' भेटत मुदा ओ हमरा एको रत्ती असंगत नहि बूझि पड़त।

सूनि क' द्विजदासके जहिना नीक लगैत छलन्हि तहिना मन व्यथित सेहो भए गेलन्हि। किन्तु वन्दनाक मनक बात एना भ' क' बूझि लेब अन्याय। ई आलोचना नहि होएब उचित। जोरसँ अपनाके कठिन कए क' ओ बजलाह—मुदा माएके हमरालोकनिक ई सभ बात बुझा कए कोनो लाभ नहि। ओ अहाँके अपन बेटी जेकाँ मानै छलीह, ई हम जनै छी, तेँ हुनक एकान्त मनक ई आशा छलन्हि, आहाँ होएब एहि घरक छोट पुतहु, अहाँ दूनु बहिनिक हाथमे अपन दूनू बेटाके सौँपि, ओ जइतथि कैलास, यदि फिरि कए नहि अबितथि—ओहि दुर्गम पथमे यदि परलोकक आह्वान अबितन्हि—ई बात मनमे राखिक' ओ निर्भये यात्रा करतथि जे हुनक वृहत् संसारक दायित्व-हस्तान्तरमे आओर कोनो रूपे गड़बड़ नहि छन्हि। किन्तु से होएबाक बात आब नहि, हुनका विचारेँ

वाग्दानक अर्थ सम्प्रदान। प्रेम कए, जकरा सम्मति देने छिअन्हि सएह अहाँक स्वामी। विआहक मन्त्र पढ़ल नहि गेल्ए ई कहि क' अहाँ हुनका त्याग कए सकै' छअन्हि, किन्तु ओहि शून्य आसनपर जाकए दयामयीक बेटा नहि बैसताह ग।

सूनि कए दुःखसँ वन्दनाक मुह पांडुर भए गेलन्हि, पुछलथीन्ह—माए कि ई सभ कहि गेलीहे द्विजूबाबू ?

द्विजदास कहलथीन्ह—अन्ततः कहब असम्भव नहि बूझि पड़ैछ। भौजी कहै' छलीह जे माएकेँ सभसँ वेशी भेलन्हि ई दुःख जे सुधीर हमरा सभक जातिक नहि थीक। असलमे अहाँ सभ जाति नहि मानै' छी। ई एते पैघ विभेद जे किछु द' क' ई फाँक भरल नहि जा सकैछ।

अहूँ की इएह बात कहै' छी ?

हम त तृतीय पक्ष वन्दना, हमरा बाजक की अछि ?

रायसाहेबक आहारक समय निकटवर्त्ती भए रहल छन्हि, वन्दना ऊठि ठाढ़ि भेलीह। बाहर होएबाक पूर्व कहलथीन्ह—बाबूक छुट्टी खतम भेलन्हि—कालिह ओ चल जएताह। हमहूँ कि हुनके सङ्ग चल जाउ, द्विजूबाबू ?

द्विजदास कहलथीन्ह—ईहो कि हमरा कहबाक थीक वन्दना ? यदि जाइ, हमरा अहाँ अन्यथा—गलत नहि बूझब। अहाँक गेलाक बाद अहाँक दिक्षिसँ हम माएकेँ सभ बात कहबैक, लाज नहि करब। तकरा बाद रहल हमरा लोकनिक आजुक संध्याकालक स्मृति, आओर रहल हमरलोकनिक वन्देमातरम्‌क मन्त्र।

वन्दना एकर कोनो उत्तर नहि देलथीन्ह—चुप्पे घरसँ चल जाइत रहलीह।

## १५

अपन घरमे आबि कए वन्दना अत्यन्त ग्लानि बोध करए लगलीह। हुनका कोन निशा लागल छलन्हि जे निर्लज्जि उप-याचिका जेकाँ अपन हृदय खोलि कए समस्त आत्म-मर्य्यादाकेँ तिलाञ्जलि दए अएलीह अछि? अथच द्विजदास पुरुष भइओ कए जेहने रहस्यावृत छलाह तहिना रहलाह। हुनक मुहक भावमे ने छलन्हि आग्रह, ने छलन्हि उल्लास, ओ ने आशा देलन्हि, ने देलन्हि सान्त्वना। बरञ्च परिहासक छलेँ इएह कथा वारंबार बजलाह जे ओ तृतीय पक्ष। हुनक इच्छा-अनिच्छा एहिघरमे अवान्तर विषय। आ खाली कि इएह? माएक नाम ल' क' कहलन्हि वाग्दान माने सम्प्रदान। कहलन्हि—निरपराध सुधीरक शून्य आसनपर जा कए दयामयीक बेटा नहि बैसथीन्ह ग। किन्तु अपमानक बात जेना एहूसँ पूर्ण नहि भेल। हिनक आँखिमे नोर देखि ओ अन्तमे दयार्द्र चितेँ खाली इएहटा वचन देलन्हि जे वन्दनाक ई सभ बेहायापनक खिस्सा माएक आगाँ ओ उल्लेख करताह।

आओर एहीपर कि शेष। द्विजदासक बातपर ओ प्रार्थित भावेँ कहने छल-थीन्ह एहि परिवारमे जत' जे केओ अछि, सभक छोट भ' क' ओ आबए चाहैत छथि। आर ओ नहि सोचि सकलीह; ओही ठाम स्तब्धभावेँ बैसिलि हुनका मनमे खाली इएह बात होअए लगलन्हि जे प्रकृतितः ओ अत्यन्त तुच्छ भए गेलीह अछि—एतेक छोट जे आत्म-घाती भेली उत्तर एहि हीनताक प्रायश्चित नहि भए सकैछ।

बाहरसँ के आबि कहलकन्हि रायसाहेब हुनका सोर करैत छथीन्ह। ऊठि ओ पिताक घर गेलीह—जा कए बारम्बार जिद्द कए हुनका राजी करओलन्हि—कालिह हुनका सभकेँ बम्बइ जाए पड़तन्हि। यद्यपि बात छलन्हि जे विप्रदासक फीरि कए अएलापर रतुका ट्रेनसँ ओ यात्रा करताह। हठात् एहि रूपेँ चल जाएब जे नीक नहि होएतन्हि एहिमे साहेबकेँ सन्देह नहि छलन्हि—छुटिआ

छलन्हि, स्वच्छन्दे रहिओ गेलासँ बनितन्हि—तथापि कन्याक प्रस्तावसँ हुनका राजी होअहि पड़लन्हि।

ओछाओनपर पड़लि वन्दनाक आँखिसँ नोर बहए लगलन्हि तकरा बाद-कोनो समय ओ सूति रहलीह। प्रातःकाल ऊठि कए ओ अपन आ पिताक चीज वस्तु सरिआ लेलन्हि, फोनसँ गाड़ी रिजर्भ करओलन्हि एवं बम्बइ तार पठा देलथीन्ह। सन्ध्या काल ट्रेन छन्हि—किन्तु कथू ले' हुनका विलम्ब नहि सहि होइ' छन्हि।

तखन समय करीब नओक अन्दाज। अन्नदा घरमे ढुकैत देरी आश्चर्य्यित भेलि—ई की काण्ड!

वन्दना मैल कपड़ा सभकेँ फूट क' एकटा पेटीमे रखैत छलीह, कहलथीन्ह—आइ हम सभ जाएब।

से त आइ नहि बहिन, जएबाक बात त कालिह।

नहि, आइए जाएब—कहि ओ काज करए लगलीह, मुह नहि उठओलन्हि।

अन्नदा कने काल चुप रहि कहलकन्हि—अहाँ उठू, हम सरिआ दै' छी। अहांकेँ तकलीफ होइए।

तकलीफ देखबाक काज नहि, अहाँ जाउ अपना काज ले। एहि घरक सभ लोकक प्रति जेना हुनका घृणा भए गेलन्हि अछि।

कारण नहिओ जानि कए-कोनो गड़बड़, खिसिआएल सन बात भेलैक अछि से अन्नदा बुझैत छलि। हठात् माए कालिह गाम चल गेलीह—आइ वन्दना सेहो तहिना हठात् जएबा ले उद्यत। किन्तु क्रोधक बदला क्रोध करब अन्नदाक प्रकृति नहि, ओ जेहने सहिष्णु, तेहने शिष्ट; किछु क्षण चुपे ठाढ़ि भए कुण्ठित स्वरेँ कहलकन्हि—हमरासँ दोष भ' गेल बहिन, आइ हम सबेरे नहि ऊठि सकलहुँ।

वन्दना मुह उठा' देखलथीन्ह, कहलथीन्ह हम त तकर कैफियत नहि मङै छी अन्नदा, ओकर काज पड़ए त अपन मालिककेँ देबन्हि। द्विजूबाबू त अपने घरमे छथि, हुनका कहिऔन्हि ग। ई कहि ओ फेरि काजमे मन देलन्हि। वन्दना पिताक एक मात्र सन्तांन्न—एहि हेतु किछु विशेष आदरसँ प्रतिपालत। सह्य'

करबाक शक्ति हुनका कम। किन्तु ई बूझि; कटु-कथा कहबाक शिक्षा सेहो हुनका नहि भेलटन्हि अछि, आ प्राय: एहन भयंकर कठोर वाक्यो ओ जीवनमे ककरो नहि कहलथीन्ह अछि। तेँ—ई बजलापर ओ मने मन लज्जा बोध करैत छलीह ताबत अन्नदे सलज्ज मृदु कण्ठे कहए लगलन्हि—डाक्टर सभ चल गेलथीन्ह, फड़िच्छ भेल जाइछै-ई बूझि सोचलहुँ जे आब नहि सूतब, सुतबो ने केलहुँ मुदा देबालमे ओङठिक' बैसैत कखन जे आँखि मुना गेल—कोना एते बेर चढ़ि गेलै से बुझबो ने केलिऐक। मालिकक कथा अहाँ कहै छी, बहिन, मुदा अहूँ कि हमर मालिक नहि छी ? कहू त, एहन अपराध हमरासँ कहिओ भेलए ? उठू, हम सरिआ दैछी।

अन्तिम अंशक बात प्राय: वन्दनाक कानमे नहि गेलन्हि, अन्नदाक मुह दिशि देखि क' कहलथीन्ह—डाक्टर सभ चल गेलथीन्ह—माने ?

अन्नदा कहलकन्हि—रातिमे द्विजू बड़ा जोर दु:खित भ' गेल छलाह। एत' जहिआ अएलाह तहिएसँ हुनक देह नीक नहि छलन्हि—मुदा ओ किछु मोजर नहि देथि। कालिह माए सभकेँ गाम ल' जएबाक बात जखन उठलै त हमरा कहाँ पठओलगिह जे माए जाहिसँ नहि बूझए, मुदा भाइकेँ कहि दहुन ग जे हमर गाम जाएब माफ करथि, आइ हमरा उठि नहि होइए—ततेक वेशी अबल छी।

हुनका मनुष बनओने छिऐन्हि हम तेँ हुनक सभ बात हमरे सङे। डर भेल, कहलिअन्हि-ई की बात ? शरीर खराब अछि त नुकबै' छी किए? हुनक स्वभावे छन्हि सभ बातकेँ हँसि क' उड़ादेब—ओ कतेक ने भारी बात होअओ। तहिना कने हँसिक' कहलन्हि—तोँ हुनका सभकेँ विदा क' दहुन अनु बहिन, तकरा बाद हम अपनहि चङ्गा भ' जाएब। सोचलहुँ माएक सङे हुनका नहि बनै' छन्हि, कतहु सङे नहि जाए चाहैत छथि, तकरे ई एक बहाना। तेँ एहि ले किछु चिन्ता नहि भेल। बड़का भाइ हुनका सभकेँ ल' क' चल गेलथीन्ह। तकरा बाद भरि दिन ओ सूति क' वितओलन्हि, किछु खएलन्हि नहि। दुपहरिआमे जा क' पुछलिअन्हि—द्विजू, बाउ कोना छी ? कहलन्हि—निके छी। परन्तु हुनकर चेहरा देखि क' से नहि बुझाएल। डॉक्टर अनब' चाहलहुँ—द्विजू किन्तहुँ ने अनब' देलन्हि, कहलन्हि किए व्यर्थ भाइक धन दूरि करबहुन बहिन, तोहर अपव्ययक

बात सूनि मलिकीनी खिसिअएथुन्ह । माएक ऊपर हुनक ई अभिमान एखन तक नहि गेलन्हिहें । दिनभरि खएलन्हि नहि, ओछाओन पर पड़ल-पड़ल बितओलन्हि । साझूँ पहर जाक' पुछलिअन्हि—द्विजू, यदि वास्तवमे देह नीक अछि त भरि दिन सुतल किए छी ? ओ ओहिना हँसिकए कहलन्हि, अनु बहिन शास्त्रमे लिखल छैक जे सुतल रहबासन पुण्य काज आर संसारमे कोनो नहि । एहिसँ मुक्ति भेटैत छैक एक रत्ती परलोकक नीक चेष्टामे छी, तोरा डरनहि । सभ बातमे हुनका हँसी, बातमे जितब पार नहि लागत । खिसिआक' चल अएलहुँ मुदा मनसँ डर नहि गेल । ओ एकटा पोथी ल' क' पढ़ब सुरू क' देलन्हि ।

अन्नदा कने थम्हि कए कह' लगलन्हि—राति-तखन १२ बजै छल होएत—हमरा केबाड़पर धक्का । के छी ? बाहरसँ जबाब आएल—अनू बहिन, हम । केबाड़ खोल', एते रातिमे द्विजू किए सोर कएलन्हि—व्यस्त भ' केबाड़ खोलि बाहर अएलहुँ—द्विजूक ई की मूर्त्ति ? आँखि एकदम धसि गेलन्हि, गला बाझल, देह कँपैत, मुदा तैओ हँसी । कहलन्हि—बहिन, मनुष, बनओने छे तोँ, तोहर निन्न तोड़लिऔए । यदि आँखि मूनहि पड़ए त तोरे कोरामे माथ राखि क' आँखि मूनब । ई कहि अन्नदा झरझर कए कानए लगलि । ओकर कानब जेना वन्दे ने होअए चाहैक, तेहने भीतरसँ अदम्य आवेग । अपनाकेँ सम्हारएमे ओकरा कते-काल लगलैक । तकरा बाद कहलकन्हि—छातीमे सटाक हुनका घर ल' गेलिअन्हि—जेहने रद्द तेहने पेटक दर्द । बुझि पड़ए जे ई राति आब नहि बीतत, कखन हिनक श्वास बन्द भ' जेतन्हि । डाक्टर सभकेँ बजबाओल गेल ओ सभ अएलाह—औषध देलथीन्ह, गरम जलसँ सेद भेलन्हि—नौकर सभ जागल बैसल रहल, भोर होइत-होइत द्विजूकेँ निन्द भेलन्हि । डाक्टर सभ कहलन्हि जे आब डर नहि । किन्तु कोना भ' क' जे राति कटलए बहिन, बुझि पड़ैए जेना दु:स्वप्न देखने रही—ओ सभ किछु नहि भेलैक । कहि अन्नदा फेरि आँचरसँ आँखिक नोर पोछलक ।

वन्दना आस्ते आस्ते कहलथीन्ह—हम किछु ने बुझलिऐ—हमरा किए ने उठा' देलहुँ अन्नदा ?

अन्नदा कहलकन्हि—भिनसरु पहर की एकटा गड़बड़ भेल रहए। आओर अहाँके व्यर्थ व्यस्त नहि केलहुँ। नहि त, द्विजू कहने छलाह।

वन्दना ई प्रसङ्ग छोड़ि कहलकन्हि—द्विजू बाबू एखन कोना छथि ?

अन्नदा कहलथीन्ह—निके छथि, सूतल छथि। डाक्टर सभ कहि गेलथीन्ह-हें जे साँझू पहरसँ पहिने हुनका निन्द नहि टुटतन्हि। बड़का मालिक अएलासँ बाँचब बहिन।

हुनका कि खबरि गेलन्हिहें ?

नहि। दत्तबाबू कहलन्हि जे ओकर आवश्यकता नहि, ओ अपने अओताह।

ओइ घरमे लोक छै' किने ?

हँ बहिन दू गोटे बैसल छैक।

डाक्टर सभ फेरि कखन अओथीन्ह ?

साँझक पहिने। कहि गेलथीन्हहें आओर डर नहि।

डाक्टर सभ अभय दए गेलथीन्ह अछि, वन्दनाकेँ इएह सान्त्वना। ई छोड़ि हुनका करबेक की छन्हि ?

वन्दना जा'कए पिताकेँ द्विजदासक दुःखित पड़बाक सम्बाद देलथीन्ह, किन्तु वेशी किछु ने कहलथीन्ह। ओ एतबे सूनि क' व्यस्त भ' उठलाह—कहाँ, हम त किछु ने बुझलिऐक ?

नहि, हमरा सभक निन्द तोड़ब केओ उचित नहि बुझलक।

परन्तु ई त नीक नहि भेल ?

वन्दना चुप रहलीह; ओ कनेक कालक बाद अपनहि बजलाह—टिकट किनवाले पठओलिऐए, गाड़ी रिजर्भ भ' गेलए—हमरा सभक जएबामे देखै छी किछु गड़बड़ भेल।

वन्दना कहलखीन्ह—गड़बड़ किए होएत बाबू, हम सभ रहिए कए हुनका सभक कोन उपकार करै' छिअन्हि ?

नहि उपकार नहि परन्तु तैओ—

नहि बाबू, एहिना क' क' खाली देरी भेल जाइए आर अहाँ मन नहि बदलू। ई कहि वन्दना बाहर भए गेलीह।

बेर खसल जाइत छैक, वन्दनाक घरमे पैसि अन्नदा एकटा चौकी पर बैसलि, हुनका लोकनिक यात्रामे तखनो घंटा दुइएक देरी। वन्दना पुछलथीन्ह —द्विजबाबू निके छथि ?

हँ, बहिन, सुतल छथि।

वन्दना कहलथीन्ह—हमरा सभकेँ जएबा काल ककरोसँ भेँट नहि भेल। एक गोटाक तखन निन्द नहि टुटतन्हि, आ दोसर गोटाक गाड़ी जखन अओतन्हि तखन हम सभ बहुत दूर चल गेल रहब।

अन्नदा सेहो स्वीकार कएलकन्हि—हँ, बड़का मालिक अओता नऔ बजे राति धरि। कने कालक बाद कहलकन्हि—हुनका आबि गेलासँ हमरा सभक जान बाँचत। सभक डर खतम होएत।

मुदा कोनो डर त नहि ने अन्नदा ?

अन्नदा कहलकन्हि—नहि ठीक, मुदा बड़का मालिकक डेरा पर रहबाक बाते दोसर, बहिन। तखन ककरो ऊपर कोनो भार नहि रहैं' छैक। सभ हुनके। जेहने बुद्धि तेहने बिचार, तेहने साहस, तेहने गम्भीर लोक। सभके बूझि पड़ै छै' जे बड़का बड़क गाछक छाया तरमे छी।

ओएह पुरान बात, ओएह विशेषणक घटा। मालिकक सम्बन्धमे ई मज्जागत भेल छैक। आन काल बन्दना बिना कटाक्ष कएने नहि छोड़ितथिन्ह किन्तु एखन चुप्पे रहलीह। अन्नदा कह' लगलन्हि—मुदा ई द्विज — दूनू भाँइ जेना पृथ्वीक ई पीठ ओ पीठ।

बन्दना आश्चर्यं भए पुछलथीन्ह—किए ?

अन्नदा कहलकन्हि—सएह त छै बहिन; नै छन्हि दायित्वक बोध, ने छन्हि

ओकर झंझटने गाम्भीर्य। भौजी कहै' छथीन्ह—ओ थिकाह शरद कालक मेघ, नहि छन्हि बिजुरी, ने जल, खाली उड़िआएल घुरै छथि। बात कतबो ने भारी होउक हँसि कए, खेला क' बात केँ उड़ा देताह। ने गृही, ने वैरागी,—कतेक खदुका हुनकासँ 'बुझारत भ' गेल' फारखती देलहुँ'—लिखा कए परित्राण पओने अछि, तकर हिसाब नहि।

वन्दना कहथीन्ह—ओझाजी खिसिआइ नहि छथिन्ह?

खिसिआइ नहि छथीन्ह! खूब--बेश खिसिआइ छथीन्ह! माए त आओर। मुदा हुनका पओतन्हि कत लोक? थोड़े दिनले ओ तेहन ने निपत्ता भ' जाइ छथि जे भौजी कते कानब बाजब सुरु करै' छथीन्ह—तखन सभ मिलि क' ताका-हेरी करै' छथीन्ह—पकड़ि कए अनै' छथीन्ह। मुदा एना क' क' त सभ दिन नहि ने बिततन्हि बहिन। हुनको विआह हेतन्हि, धियापूता हेतन्हि—तखन एहि तरहेँ रहलासँ त दिवालिआ भ' जएताह।

वन्दना कहलथीन्ह—ई बात अहाँ सभ हुनका किए ने कहै' छिअन्हि।

अन्नदा कहलकन्हि--बहुत कहल गेलन्हिहेँ—मुदा ओ काने ने दै' छथीन्ह। कहै छथीन्ह—तोरा सभकेँ सोच कथीक? देवालिआ यदि भइए जाएब त भौजी त देवलिआ नहि ने हेती! तखन सभ केओ जा कए' हुनके कपार पर वैसवन्हि।

वन्दना हँसि कए कहलथीन्ह—बहिन कि बजै' छथिन्ह?

अन्नदा कहलकन्हि—देओरक ऊपर हुनक आदर-स्नेहक सीमा नहि। कहै छथीन्ह—हम खाएब आ लालबाबू उपास पड़ताह? हमर पाँच सए रुपैयाक भागी त आर केओ नहि लेत, हमरा सभकेँ गरीबी चालिसँ ओहीसँ बढ़िआँ जेकाँ चल जाएत। बड़का मालिक अपन लाखक लाख रुपैआ ल'क' सुखसँ रहथु। हम सभ माङ' नहि जेबन्हि।

सूनि क' वन्दनाकेँ कतेक जे नीक लगैत छलन्हि से नहि कहि। जे ई बात कहै छथिन्ह से हुनके बहिनि। अथच जाहि समाजमे, जाहि वातावरणमे

औ अपने मनुष भेजीहे, ओतए ई बात केओ ने बजैए—भए सकैछ केओ सोचितो नहि अछि। बजबाक कखनो प्रयोजनो छैक कि नहि, सएह के जनैए।

किन्तु अन्नदा जे बजैत अछि से जेना बहुत प्राचीन कालक एक गप्प। ई सभ एकान्नवर्त्ती परिवार। खाली बाहरक आकृतिसँ नहि, भीतरक प्रकृतिसँ पर्य्यन्त। अन्नदा एतए खाली दासी नहि, द्विजदासक ओ 'बहिनि' से खाली मुहसँ बाजिक' नहि, आइओ हुनकर सभ बात एकरे आँगू। एहि अन्नदाक बाप एहि परिवारमे काज करैत छलै—एकर धीआ-पुता एतहि मनुष भेलैक, एतहि संगहि काज करै' छैक, जीवन निर्वाहकरै छैक। अन्नदाकें अभाव नहि छैक, तैओ माया ममता कहि क' एकरा जएबा जोगर नहि। एहि समृद्ध वृहत् परिवारसँ अनुबिद्ध एहन कतेक लोकक पुरुषानुक्रमक इतिहास भेटैछ।

दयामयीक अवाध्य सन्तान द्विजदास से हो काल्हि कहने छलथीन्ह हुनक माए, भाए, भौजी, हुनक गृह-देवता, अनिथि-शाला, ई सभ लइए कए ओहो—हुनका सभसँ पृथक् कए क' वन्दनाकें कोनो दिन हुनका पएबाक संभावना नहि। तखन वन्दना अस्वीकार नहि कएलथीन्ह—तइओ आइए एक बेरि ओकर यथार्थ तात्पर्य बुझलन्हि अछि।

बात खतम नहि भेल छैक—बहुत किछु बुझवाक आग्रह हुनका प्रबल भए अएलन्हि मुदा बाधा भेलन्हि—नोकर आबि कहलकन्हि जे समय आब एक घंटास बेशी नहि। तैआर होएबा ले' वन्दनाकें उठए पड़लन्हि। समय पर रायसाहेब नोचा उतरलाह—उतरैत-उतरैत बेटीक नाम ध' क' एक बेरि हाक देलथीन्ह—वन्दनाक कानमे से पहुँचलन्हि। अन्याय जते' पेंच होउन्ह' अनिच्छा जतेक कठिन होउन्ह, जाइए पड़तन्हि। वारंवार जिद्द क' क' जे व्यवस्था अपने उपस्थित कएलन्हि अछि, ताहिमे परिवर्त्तन आब नहि होब' जोगर। घरसँ जखन बाहर भेलीह इएह बात सभसँ बेशी मनमे होइ छलन्हि

जे भविष्यमे जतेक दूर दृष्टि जाइ छन्हि, कोनो दिन कोनो रूपें एतए फिरि क' अएबाक संभावना नहि—किण्तु हुनक अनेक सुखक स्वप्नसँ ई घर पूर्ण भेल रहलन्हि—ई बात कहिओ कोनो कालमें विसरतीह नहि। सोझ रास्ता छोड़ि द्विजदासक घरक लग बाला वरामदा पर उतरैत काल ओहि घर दिशि एक बेरि आँखि घुरओलन्हि। किन्तु जे खिड़की खुजल छलैक, ताहि द' क' द्विजदास कें नहि देखि सकलथीन्ह। मोटरक लग ठाढ़ भेल दत्त बाबू; रायसाहेब हुनका बजा क' नौकर सभकें देबा ले कते रास रुपैया हाथमे देलथीन्ह एवं हठात् जएबाक हेतु अनेक दुःख प्रकाश कए, द्विजदासक विषयमे खवरि अतिशीघ्र पठएबा ले' अनुरोध कएलथीन्ह।

गाड़ीपर चढ़बासँ पहिने वन्दना अन्नदाकें एक कातमे सोर क' कहलथीन्ह द्विजूबाबूक अहाँ बहिनि थिकिअन्हि—हुनका अहाँ मनुष बनओने छिअन्हि। ई अङुठी अहाँ अपन बहुआसिनिकें देबन्हि अनु बहिन, जे ओ पहिरथि, ई कहि ओ हाथक अङुठी बहार क' हुनका हाथमे दए अपन बापक लग जा कए बैसिलीह।

मोटर विदा भेल। एतए ओतए ठाढ़ भेल कतेक नौकर चाकर ओ दत्त बाबू नमस्कार कएलथीन्ह।

वन्दना अपने अन्यमनस्क भावें ऊपर आँखि उठओलन्हि। किन्तु आइ ओ आओर एक दिन जेकाँ सभसँ नुकाक' ठाढ़ भेल—निश्शब्दें इसारासँ विदा दैत द्विजदास ठाढ़ भेल नहि। आइ ओ दुःखित, आइ ओ निद्रामे अचेतन।

# १६

दयामयीक आचरणसँ बन्दनाक प्रति जे प्रच्छन्न लञ्छना ओ अव्यक्त गंजना छलन्हि, सतीकेँ से गम्भीर रूपैँ विद्ध कएने छलन्हि। किन्तु सासुकेँ किछु कहब सहज नहि, तेँ ओ एक गोट पत्र लीखि बहिनिक हाथमे देबाक हेतु स्वामीकेँ अपना घरमे आब'ले कहा पठओलथीन्ह। दुपहरिआक ट्रेनसँ बिप्रदास कलकत्ता जएताह। एही समयमे दयामयी आबि प्रवेश कएलथीन्ह। एना ओ कहिओने नहि करैत छथि,—बेटा आ पुतहु दूनू विस्मित भेलथीन्ह। सती माथ पर आचर घीचि, बाहर जाइत छलीह, सासु निषेध कए कहलथीन्ह, नहि बहुआसिनि, जाउ नहि। अहाँक सोझा नहि रहलासँ, अहाँक बहिनिक निन्दा नहि करब, कने ठाढ़ि होउ। विपिन, तोँ बुझलह हम किए एते व्यस्त भ' क' गाम चल अएलहुँ ?

विप्रदास कहलथीन्ह—ठीक नहि जनै' छी माए, मुदा कहूँ किछु गड़बड़ भेलए से अन्दाज करै' छी।

माए कहलथीन्ह—गड़ बड़ भेल नहि परन्तु भ' सकै छल, एहिसँ भगवती हमरा रक्षा कएलन्हि। कालिह समधि बंबइ चल जएताह—ई बात भेल छलैक आ तकरा बाद वन्दना एतए आबि किछु दिन बहिनि लग रहतीह। किन्तु यदि ओहि छौड़ीकेँ कनेको बुद्धि होएतैक त एतए ओ आब नहि चाहत, बापक सङे सोझे बम्बइ चल जाएत। यदि नहि जाथि त कहि दिहौन्हि चल जाएले। बहुआसिन, मनमे दुःख नहि करू, एहन बहिनिकेँ बनवास देब नीक होएत—घर आनब नहि नीक।

विप्रदास निरुत्तर भेल देखैत रहलाह, हुनक विस्मयक सीमा नहि, दयामयी कह' लगलथीन्ह—हमर जरल कपार जे ओकरा सिनेह कर' गेलहुँ—मनमे कहलहुँ जे हमरे सभक अपन लोक थीक। ओकर चालि चलनमे

गड़बड़ छैक, सोचलहुँ—से सभ स्कूल कालेजमे पढ़बाक फल—चन्द्रमाक देहमे उड़ैत मेघ जेकां,––बसात लगलेसँ उड़ि जएतैक—किछु रहतैक नहि ! हजार होउक, बहुआसिनिक बहिन त छथि। मुदा ओ बर बिछलिअन्हिहें जा क' कायथक घरसँ—के जनै छल विपिन, बाभनक वंशमे जनमि क' ओ सभ एहन नीचा खसलूए।

विप्रदास कहलथीन्ह—इएह बात ! परन्तु ओ सभ जाति नहि मानै छथि ई बात त तों सुनने छलें, माए !

दयामयी कहलथीन्ह—सुनने छलहुँ, मुदा आँखिसँ देखने नहि छलहुँ, भरिसक मनमे नीक जेकाँ बुझबो ने कएने छलहुँ। राजारानीक खिस्सा जेकाँ। मुदा आँखिसँ देखलापर जे ककरो ऊपर ककरो एहन वितृष्णा हेतैक, से सत्ते नहि बुझने छलिऐ' बाउ। बजैत-बजैत घृणासँ जेना ओ सिहरि उठलीह, बजलीह—मरओ ग, जे इच्छा होइ छै करओ ग, ओ हमर के, मुदा हमरा घरमे आर नहि।

विप्रदास चुप भेल छथि—ई देखि कहलथीन्ह—किए जबाव त तों नहि देलह विविन ?

जबाव त तों नहि चाहलेहें माए, हुकुम देलेहें बन्दना जाहिसँ नहि आबथि, सएह हेतैक।

हुनक कथा सूनि दयामयी द्विधामे पड़लीह—हुकुम कि अन्याय देलिअ'हे, तोरा मने ?

हँ माए। वन्दना अन्याय कनिओ ने कएलन्हिहें—सामाजिक आचार व्यवहारमे हमरा सभक सङ्ग हुनका लोकनिक भेल नहि छन्हि, ओ सभ जाति नहि मानैत छथि, ई बात जानिए क' तों हुनका अएबाले नोत देने छलहुन्ह, माननहुँ छलहुन्ह। तोरा मनमे प्राय: आशा छलौक, ओ सभ मुहेसँ बजै' छथि, काज नहि करै' छथि,—एही ठाम तोहर सभसँ बढ़ि क' गलती भेलौए,—दु:खो भेलौ' एही कारणे।

दयामयी कहलथीन्ह--से प्राय: सत्य, मुदा हुनकर विआहक बात सुनलासँ तोरे कि घृणा नहि होइ छह विपिन ? तोँ कि कहै' छह, कह' त ?

विप्रदास स्मित मुहे कहलथीन्ह—हुनक विआह एखनो ने भेलन्हिहेँ किन्तु भेलो उत्तर हमरा क्रोध करब उचित नहि माए। वरू ई बुझिकए श्रद्धे करबन्हि जे हुनका लोकनिक विश्वास सत्य भए कार्य्यरूपमे परिणत होइ छन्हि, ओ सभ ककरो ठगै नहि छथीन्ह। परन्तु कलकत्तामे अनेक लोकके देखलहुँहेँ जे सभ बातक आडम्बरसँ त किछु नहि मानैत छथि, जाति-भेदमे विश्वासो ने करै छथि, गारिओ खूब दै' छथि; मुदा काजक बेरिमे देह ढील क' लै' छथि—ओहिकाल हुनका सभक कतहु कोनो पता नहि। हुनके सभके हम सभसँ वेशी अश्रद्धा करैत छिअन्हि। खिसिओ नहि माए, तोहर द्विजू भेलथुन्ह एही जातिक लोक।

सूनि क' दयामयी जे अप्रसन्न भेलीह, से नहि। द्विजूक सम्बन्धमे बजलीह—ओ एही तरहक फाँकीबाज। मुदा-अच्छा विपिन, वन्दनाकेँ यदि तोँ घृणा नहि करै छहुन्ह, त हुनकर छूइल किए ने खाइ-छह ? हुनका भनसा-घर पठबै छलिअन्हि ई बूझि क' तोँ ओइ भानसक खेनाइए छोड़ि देलह—हमरा घरमे खाए लगलाह। आन केओ नहि बूझह, हमहूँ कि नहि बूझि सकलिअह, तोँ सोचै छह।

विप्रदास कहलथीन्ह—तोँ नहि बुझबेँ त माए किए भेलेँ ? मुदा हम त सत्ये जाति मानै छी माए। हम त हुनकर छुइल नहि ने खा' सकै' छिअन्हि। जाहि दिन नहि मानब ताहि दिन प्रकाश्य रूपेँ हुनकर हाथक खाएब, कनेको नुकाचोरी नहि करब।

दयामयी कहलथीन्ह—तोँ नहि जनै छह विपिन, कोना क' हम हुनकासँ ई बात नुकबैत छलहुँ। ओ एत' आबथि कि नहि, देखिह' जे ई बात ओ बुझथि नहि। हुनका बड़ लगतन्हि ई बात। तोरा ओ बड़ भक्ति करै छथुन्ह। हुनक अन्तिम बात जेना सहसा स्नेह-रससँ आर्द्र भए गेलन्हि।

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह--हमरा ओ भक्ति करै' छथि कि नहि से नहि

जनैछी, मुदा हुनक छुइल जे हम नहि खाइ' छिअन्हि, से ओ जनै छथि।

एहन अभिमानी माउगि, ई जानिओ क' तोरा एते भक्ति करथुन्ह। एकर अर्थ ?

भक्ति करबाक बात तोँही सभ जनै छेँ माए, मुदा हम एते जनैछी जे ओ अत्यन्त बुद्धिमती,—तोरा लोकनिक सभ झाँपब लेपब हुनका आगाँ निस्फल भ' गेलौए।

दयामयी कने काल चुप्पे रहि की सोचलन्हि तकरा बाद बजलीह—तेँ बुझि पड़ैए ओ एते' जिद्द करै छलीह।

कथीक जिद्द माए ?

दयामयी कहलथीन्ह—हम विधवा स्त्रीगण, हमरा दुःख-सुख भात-तात किछु भेटि नहि भेल,—मुदा से ओ किन्नहु ने होब' देतीह। बजारसँ नाना-प्रकारक नव-नव तरकारी अनओतीह—अपने काटि बना देथीन्ह—बाभनिकेँ जोर द' क' दश तरहक तरकारी बनबा क' तखन छोड़तीह। ओ जनै' छलीह जकरा सामना-सामनी नहि द' सकै' छी, तकरा अनका हाथेँ घूस पठाब' पड़ै' छै। किए, खाइओ क' कि हम नहि बुझै' छलहुँ जे एहन भानस बाभनि बापो जन्म ने क' सकैए।

विप्रदास सहास्येँ उत्तर देलथीन्ह—नहि माए, एते' नहि लक्ष्य कएने छलहुँ। खाली कउखन कउखन सन्देह होअए जे तोहर पाहुन लोकनिक ओइ भनसाघरक विपुल आयोजनक टुकरा-टुकरी हमरो सभक भनसाघरमे छिटकि क' चल अबैए। किन्तु ओ जे दैव-कृत नहि, एक व्यक्तिक इच्छा-कृत, ई बात आनन्दक। मुदा माए, तोँ अपन अन्तिम निर्णय हमरा कह, ट्रेनक समय भेलैक, हमरा एखने दौड़' पड़त—हुनकर नोत तोँ रखलहुन आ' कि घुमा लेलहुन।

दयामयी सतीकेँ उद्देश कए पुछलथीन्ह—अहाँ की कहै' छी बहुआसिन ?

नेनामे सती सासुक सोझाँ स्वामीसँ बातचीत करथि, परन्तु आब एना नहि

करैत छथि। अधिकतर कन्नीकाटि क' चल जाइत छथि, नहि त निरुत्तर भेलि रहैत छथि। मुदा आइ बात बजलीह—आस्ते कहलथीन्ह—रह' देथुन माए, एतए ओकरा अएलाक काज नहि।

जबाब सूनि क' सासु खुसी नहि भेलथीन्ह। हुनक अभिलाषा छलन्हि आन तरहक, किन्तु अपना मुहेँ प्रकाश कएलासँ काज नहि चलतन्हि। बजलीह—पैघ घरक बेटी, अभिमान भेल, बुझि ?

नहि अभिमान नहि, परन्तु जे क' क' हम सभ चल अएलहुँहैं तकरा बाद ओकरा बजाएव नहि नीक होएतन्हि।

किए ने हेतै' बहुआसिन, एकटा अन्याय यदि भइए जाए, त तकर संशोधन कि नहि होएबाक चाही ?

नहि, नहि कहै छिअन्हि, मुदा काज की ? पहिनहु कए बेरि ओ आब' चाहलक, मुदा कहिओ हम सभ राजी नहि भेलिऐ', एखनो सव बाधा ओहिना छैक। ओ थरमे ढुकै छलन्हि, तेँ ई ओहि भनसा घरक सम्पर्क छोड़ि देलन्हि, काज कोन ओकरा एत' आवि क' ?

विप्रदास कहलथीन्ह—ओ नालिस हुनकर आहाँक नहि—बाजि हँसए लगलाह, तैओ वन्दना हमरा भक्ति करै' छथि, एकर स्वयं माए साक्षी अछि।

सती मुह उठाए देखलथीन्ह, प्रायः विसरि गेलीह जे सासु छथीन्ह—बजलीह—खाली माए किए, हमहुँ ओकर साक्षी। स्त्रीगण जखन भक्ति करै छै तखन फेरि नालिस नहि करै छै। देवी-देवता सेहो लोकके कम कष्ट नहि दै छथीन्ह—तैओ पूजा बन्द नहि ने कएल जाइ छै, कहै छै पीड़ा देलन्हि अन्तमे नीकेक हेतु।

सासुकेँ कहलन्हि—हिनको ओ कम भक्ति नहि करै छन्हि माए, कम नहि मानै छन्हि। हिनकर धारणा जे हिनका घरमे खएबाक आयोजन ओ करै छलन्हि खाली—हुनका ले—से नहि, ओ करै छलन्हि हिनका दूनू गोटा ले। हिनका दूनू गोटाकेँ ओ ओहिना मानै' छन्हि। तकरा बाद ई देलथीन्ह ओकरा भनसा

धरक भार—सभके खोअएबाक काज, मुदा हिनकर अवहेला क' क' ओ अनका सभके पोलाओ पूरी नहि खोआ सकै छलि, सभके खाली भात-दालि गिड़' पड़ै' छलै'। परन्तु आर किए एते बात घीचा क तीनी ? हम सभ जे चाहै छलहुँ से आशा आब गेल,—ओ आब नहि फिरत। ई कहि सती जल्दीसँ विदा भए गेलीह।

•अत्यन्त विस्मय पूर्वक दूनू हत-बुद्धि भए गेलाह। सतीक स्वभावमे एहि रुपक उक्ति, ई रूप आचरण, एहन असंगत जे सोचले ने जा सकैछ जे ओ प्रकृतिस्थ छथि। विप्रदास पुछलथीन्ह बात की छिऐ माए ?

दयामयी कहलथीन्ह जनै नहि छिऐ' बाउ।

कथी ले वन्दनाकें तों सभ चाहै' छलेहें ? कथीक आशा मेटएलौ ?

दयामयी मने-मन लज्जासँ जेना गड़ि गेलीह—कोनो रूपें मुहमे नहि लाबि सकलीह जे हुनक संकल्प की छलन्हि ? खाली बजलीह, ई सभ बात आओर कोनो दोसर दिन होएत विपिन, आइ नहि।

माए, अक्षय बाबूक कन्याक सम्बन्धमे किछु स्थिर कएलें ? उनका सभकें त किछु उत्तर देब' पड़त।

हमरा आपत्ति नहि विपिन, तोरा सभसिक विचार भेनहिंसँ भेल। द्विजुओकें पूछि लहक जे की कहै छह। ई कहि ओ घरसँ बाहर भए गेलीह। विप्रदास संशयमे पड़लाह। विशेष स्पष्ट नहि भेलन्हि किन्तु स्पष्ट करबाक समयो ने छलन्हि।

विप्रदास कलकत्ता आबि देखलथि—डेरा खाली। बन्दना ओ हुनक पिता किछु घंटा पहिनहि चल गेल छथि। ई संदेह जे एके बेरि हुनका नहि छलन्हि से नहि, किन्तु एते'टा आशंका नहि कएने छलाह। अन्नदा कारण नहि जनैत अछि, खाली इएह टा जनैछ जे जएबाक इच्छा रायसाहेबक तेहन नहि छलन्हि, खाली कन्या जिद्द कए क' पिताकें घिसिआ कए लए गेलथीन्ह अछि। वन्दनाक ऊपर किछु दावी नहि, रहबाक दायित्वो हुनका नहि, एतए ओ अतिथि मात्र,

तैओ जे ओ बिना भेँट कएनहि, पीड़ित द्विजदासकेँ अचेतन छोड़ि अकारण व्यस्ततासँ चल गेलीह अछि—ई सभ सोचि क्लेश बोध भेलन्हि। बहुत किछु क्रोध जेकाँ—जेना शास्ति देबाक मन होइन्हि। किन्तु प्रकाश करब हुनक प्रकृति नहि, ई भाव मनहिमे रहि गेलन्हि।

दिन चारिएक बाद विप्रदाव हाइकोर्टसँ फिरलाह-प्रबल ज्वर नेने। भए सकैछ मलेरिआ, नहि आओर किछु। आँखि लाल, माथ दुखाएब वेशी। अन्नदा लग अएलन्हि त कहलथीन्ह अनु वहिन,, दुखित त कहिओ पड़ै नहि छी, बहुत दिनमँ ज्वरासुर दैत्यकेँ फाँकी दैत एलिऐए, एहि बेर बुझि पड़ैए भोगा-ओत, जल्दी नहि छोड़त।

अवस्था देखि अन्नदा चिन्तित भेलि, किन्तु निर्भयक सुरेँ साहस दए कहलकन्हि—नहि भाइ, अहाँक पुण्यक देह—एहिमे दैत दानवक कोनो वश नहि चलतै, अहाँ दू दिनमे निकेँ भ' जाएब। मुदा डाक्टरके बजब' पठबै छिऐ— हम अवहेला नहि होब' देब।

सएह कर बहिन, ई कहि विप्रदास शय्या ग्रहण कएलन्हि।

अन्नदा विपत्तिमे पड़लि। ओमहर हठात् वासुक दुखिताह होएबाक समाद पावि द्विजदास काल्हि गाम गेलाहे, दत्तबाबू सहरमे नहि छथि—मालिकक काजसँ ओ ढाका गेल छथि। एकसर की करत की ने ई सोचि भिनसरे आबि बाजलि-- भाइ, एकटा बात पुछू—खिसिआएब तने ?

तोहर बात पर कहिओ खिबिअएलिअ'हे, अनु वहिन ?

अन्नदा लग आबि माथ पर हाथ फेरैत्त कहलकन्हि—प्राण दए अहाँक सेवा करब, मुदा मूर्ख माउगि हम, जनै त नहि ने छी किछु,। गामो पर खबरि नहि पठा सकै छिऐ—नेना दुःखित अछि, ओकरा छोड़ि क' बहुआसिनि अओती कोना, मुदा वन्दना बहिनिकेँ कि एक बेरि खबरि देलासँ काज नहि चलत ?

विप्रदास हँसि कए कहलथीन्ह—बम्बइ कि अइ टोल ओइ टोलक गप्प बहिन, जे खबरि पावि क' ओ देख' अओततीह, प्रायः हुनका नून अनैत-अनैत

एम्हर पथ्ये खतम। तकर काज नहि।

अन्नदा जीह काटि क' कहलकन्हि—दुर्, एहन बात केओ मुहमे लाबैए भाइ ! बन्दना बहिनि कलकत्तेमे छथि, एखनो हुनक बम्बइ गेल नहि भेलनिहें !

वन्दना कलकत्तामे छथि ?

हँ, हँ, हुनक मौसीक घर बालीगंजमे। मौसा पंजाबक एक बड़का डाक्टर छथीन, बेटीक विआह करब' ले' देश अएलथीन्हहें। एकाएक हाबड़ा स्टेशन पर देखासुनी भ' गेलन्हि—ओ सभ गाढ़ौसँ उतरै छलाह—आ ई सभ वम्बइ जाइ छलाह। मौसी जोर क' क' अपल घर पर फिरा क' ल' अनलथीन्ह, कहलथीन्ह—अकस्मात् जखन भेँट भ' गेल तखन जावत तक बेटीक विआह नहि होएत तावत तक किन्नहु ने छोड़थबह। खाली एक दिन अटका क' हुनकर बापकेँ ओ सभ जाए देलथीन्ह।

विप्रदास कहलथीन्ह—मौसी कि चिन्हारि छलथीन्ह ?

हँ, अपने बड़की मौसी। दूर देश रहै' जाइ छथि—सदरि काल देखा सुनी नहि होइ छन्हि, ई बात सत्य, तैंओ अपने छथीन्ह।

तोँ एते' बात बुझलहक कोना अनु वहिन ?

काल्हि ओ सभ आइलि छली बुलै' ले, द्विजूक खबरि लै ले। दुपहरिआमे उपरका ओसारा पर नाति लेकाटाँल' सिआइ करै छलहुँ, देखलहुँ बाहर ओसारा पर दू गाड़ी लोक आएले। माउगि-पुरुष—कते रास। ई सभ के ? हुलकी द' क' देखलहुँ हमर—वन्दना वहिनि। मुदा साज-बाज एहन बदलि गेल छन्हि—जे एकाएक चिन्हलो ने जाए। जेना ओ आब लोके ने। की करू, कत बैसबिऔन—हड़बड़ा गेलहुँ। कनेके कालमे बहिनि ऊपर अइलीह—सभ द' पुछलन्हि—अपने कहलन्हि—हुनका अपने मुहे सुनलहुँ—जे गोटेक मास आओर कलकत्ते रहती। कहलन्हि—वड़ बढ़िञा छी। नाटक, सिनेमा, भोज भात—घुमनाइ फिरनाइ—आमोद विनोदक अन्त नहि। सभ दिन नवे नव बात।

विप्रदास पुछलथीन्ह—बासुक दुःखित पड़बाक बात हुनका कहने छलहुन्ह।

हँ कहललिअन्हि —सुनि क' कहलन्हि ओ किछुने, छुटि जएतैं।

विप्रदास कने काल चुप रहि कहलथीन्ह—हुनका खबरि द' क' की होएतह अनु वहिन, हमहूँ निके भ' जाएब। ई कए दिन तों एक्सरे नहि देखि सकैं छह ?

अन्नदा जोर द' क' कहलकन्हि—सकब भाइ,—मुदा तैओ मनमे होइए, एक बेरि कहब उचित; नहि त बहुआसिनिकें बड़ दुःख होएतन्हि। हजार होइक, तैओ बहिनि छथीन किने ?

डेराक पता बुझल छह ?

अपना सभक ड्राइभर जनैं' छै—हुनका सभकें पहुँचा अएलन्हि।

विप्रदास बड़ी काल चुप रहि कहलथीन्ह—अच्छा दहुन एक वेरि खबरि। मुदा एते आमोद-प्रमोद छोड़ि क' कि ओ आबि सकैं छथुन्ह। मन त नहि कहैए।

अन्नदा कहलकन्हि—मनमे हमरो वेशी त नहिए होइए भाइ। हुनकर साजे बाजक बात सदरि काल आखिक आँगा नचैत अछि— तैओ एक बेरि कहा पठबै' छिअन्हि।

विप्रदास निरुत्सुक वलान्त कण्ठें खाली कहलथीन्ह—पठवहुन जखन सएह तोहर इच्छा छह।

# १७

हठात् बड़की मौसी सङ्‌ वन्दनाकेँ जखन हावड़ा स्टेशन पर भेँट भए गेलन्हि—तखन बम्बइ जाएव बन्द क' क' हुनका अपना डेरा पर ल' आनब मौसीक हेतु कष्ट-साध्य नहि भेलन्हि। ओ अपन कन्याक विवाहक उपलक्षमे स्वामीक कर्म्म-स्थल– उत्तर पश्चिमाञ्चलसँ देश अबैत छलीह। मौसीक प्रस्ताव पर राजी होएबाक असल कारण छोड़ि आओरो एकटा हेतु छलन्हि—ई एतए प्रकाश करब उचित। वन्दना नेना अवस्थासँ एते काल सुदूर प्रवासहिमे वितओने छथि—हुनक शिक्षा दीक्षा सभटा ओहि देशक, अथच जाहि समाजक अन्तर्गत ओ छथि तकर वृहत्तर अंश कलकत्तामे छैक, आओर एकरा सङ्‌ हिनका आइ ओतक घनिष्ठ परिचय नहि। समान्य परिचय जे किछु छन्हि से खाली एकबार, मासिक पत्र ओ साधारण साहित्यक गल्प उपन्यासक सहयोगसँ। जकरा सदरिकाल कलकत्ता आएब जाएब होइ छैक—तकरा मुहेँ बहुत तथ्य बीच बीचमे हिनका कानमे अवै छन्हि—ऐनिटा च्चाटर्जी एम्० ए०, विनीता व्यानर्ज्जी बी० ए०, अनसूया, चित्रलेखा, प्रियम्बदा प्रभृति बहुत भयंकर नाम ओ चमत्कारक कथा—विंशति शताब्दीक अत्याधुनिक मनोभाव ओ रोमाञ्चकर जीवन-यात्राक विवरण—मुदा एहिमे कतेक जे यथार्थ ओ कतेक जे बनाओल—दूरसँ निश्शंसय अनुमान करब हुनका पक्षमे कठिन छलन्हि। तेँ अपन समाजक कोन चित्र हुनका मनमे अतिरंजित छलन्हि आ कोन अस्वाभाविक, एक रूपेँ फीका, एहि चित्र सभकेँ प्रत्यक्ष परिचयसँ स्पष्ट ओ सत्य कए लेबाक सुयोग मौसीक बेटी प्रकृतिक विवाह उपलक्षमे जखन हिनका भेटलन्हि – तखन वन्दना उपेक्षा नहि कए सकलीह, सहजहिँ सम्मत भए हुनका लोकनिक बालीगंजक डेरा पर पहुँचि गेलीह। अपना दलक बहुतोलोकक सङ्‌ हुनक सभक जानासुनी, विशेषतः प्रकृति एतुक्के स्कूल, कालेजमे पढ़िकए बी० ए० पास कएने छथीन्ह—हुनक अपने वन्धु-बान्धवीक संख्या नितान्त

अकिञ्चित्कर नहि। अएवाक बाद एही दलक बीचमे वन्दना कए दिन वितओलन्हि पिता अनाथ राय बम्बइ चल गेलथीन्ह किन्तु सुधीर कलकत्ते रहलाह। आसन्न विवाहक आनन्दोत्सव नित्य चलि रहल अछि—ओहि दिन वेल-घरक एकटा फुलवाड़ीमे 'पिकनिक' ल' क' दल-बल सहित डेरा फिरबाक रास्तामे ओ द्विजदासक समाद लेवाले ओहि डेरा गेलि छलीह। इएह खबरि अन्नदा ओहि दिन विप्रदासकेँ देने छलन्हि।

मौसीक घरमे अपन दलक लोकक आएब जाएब, खाएब पीव, सलाह-परामर्शक कमी नहि, आइओ कए गोटाकेँ चाहक निमन्त्रण छलन्हि। अतिथि लोकनि आबि गेलथीन्ह अछि, उपरक घरमे महा-समारोह चलि रहल अछि चाह पीबाक—एही समयमे विप्रदासक प्रकाण्ड मोटर आबि फाटक भीतर प्रवेश कएलक। भृत्यक दल साकांच भए गेल—किन्तु दरवाजा खोलि देला पर जे प्रौढ़ स्त्रीगण अवतरण कएलक तकर पोशाकक सामान्यता ओ स्वल्पतासँ सभ विस्मित ओ विव्रत भए गेल। मोटरक सङे एहि मनुष्यक कोनो सामंजस्य नहि। अन्नदाक पहिरनामे छलैक सादा थानक साड़ी, तेहने एक सादा मोट चादरि देह पर ओढ़ने, पाएर खाली, हाथ खाली, माथ परक आँचरसँ कपारक आधा झाँपल; ओ अपनहुँ सलज्ज संकोचसँ किछु जड़ सड़ भेलि। नौकर, वेयरा सभहिक चपकन, मुरेठा, साज-सज्जासँ बूझब कठिन जे के कोन देशक, तैओ आगूमहक एक गोटाकेँ बंगाली अंदाज कए अन्नदा पुछलकैक—वन्दना वहिन घर पर छथि ?

ओ बङ्गालिए छल, कहलकन्हि—हँ छथि। ओ सभ ऊपरमे चाह पिवै छथि। अहाँ भीतर आबि क' वैसू।

नहि, हम एही ठाम ठाढ़ि छी, हुनका कने खबरि द' सकै' छिअन्हि ?

हँ, देबन्हि—की कहबन्हि ?

कहिऔन्हि जे विप्रदास बाबूक डेरा परसँ अन्नदा आइलि अछि ?

बेयरा चल गेल —अनतिविलम्बें वन्दना नीचा आबि अन्नदाक हाथ' धए घरमे आनि बैसओलथीन्ह ।

एना ओ कहिओ ने कएने छलीह । बिसरि गेलीह—सामाजिक मर्य्यादामे ई विधवा हुनका लग अत्यन्त छोटि—ओहि डेराक दासी मात्र । अकारणे हुनका आँखि सजल भए गेलन्हि, कहलथीन्ह अनु बहिन, अहाँ जे हमर खबरि लेव' आएब.से हम नहि सोचने छलहुँ । सोझे बुझै' छलहुँ अहाँ सभ हमरा विसरि गेल होएब ।

विसरब किए बहिन—विसरलउहें नहि । बड़का भाइ अहाँक ओत' हमरा पठओलन्हिहें, कहै' ले—

वन्दना कहलथीन्ह—मुदा ओझाजीकें पाँच छओ दिन कलकत्ता अएना भेलन्हि—अपने कने एक बेरि नहि आबि सकै' छलाह ? ओ त जनै छथि हम बम्बइ नहि जा सकलहुँ ?

हँ हमरा मुहें ई बात सुनतन्हिहें—मुदा जनै त छी बहिन, हुनका कते' काज छन्हि । एको रत्ती समय नहि भेटलन्हि ।

ई बात सूनि वन्दना खुशी नहि भेलीह, कहलथीन्ह—काज सभके रहै छै' अनु बहिन । हम सभ गेल छलहुँ तैं शिष्टता रक्षा करबाक कारणें ओ अहाँके पठअेलन्हिहैं, नहि त सोचबो ने करितथि । हुनका जा' क' कहबन्हि हमर मौसीकें हुनका एते' ऐश्वर्य्य नहि छन्हि—तैओ एक वेरि हमर खोजि खबरि लेव' ले' एहि घरमे पाएर देलासँ हुनक जाति नहि जइतन्हि, मर्य्यादोमे लाधव नहि होइतन्हि ।

एहि सभ अनुयोगक उत्तर देव अन्नदाक काज नहि । ओ ओहि डेरा पर जएबाक अनुरोध कर' लगलन्हि किन्तु सुनबाक धैर्य वन्दनाकें नहि, अन्नदाक असम्पूर्ण बातक बीचेमे बाजि उठलीह—नहि अनु वहिन, से नहि होएत । हमरा कतहु जएबाक समय नहि अछि । काल्हिक बाद परसुए हमरा बहिनिक

विआह अछि।

परसू ?

हँ परसू।

एहि समयमे दु:खितक समाद देब उचित कि नहि अन्नदा सोचि रहल छलि, किन्तु वन्दना तुरन्त प्रश्न कएलथीन्ह—हमरा जएबाक हुकुम के देलन्हि ? छोट बाबू त नहि छथि, बड़का मालिक वुझि पड़ैए ? मुदा हुनका जा क' कहि औन्हिग, जे हुकुम चलबैत हुनक अभ्यास विगड़ि गेलन्हिहैँ, हम हुनकर खदुको ने छिअन्हि ने जमिन्दारीक अमला छिअन्हि। हमरा अनुरोध कर' पड़ै छैं अपने आवि क'। वहिनि निके छथि ?

हँ ?

आर सभ ?

अन्नदा कहलकन्हि—खबरि अएलैए जे नेना दुखित छैक।

के दु:खित ? बासू ? की भेलैए ओकरा ?

से हम ठीक नहि बुझलिऐए।

वन्दना चिन्तित मुहे बजलीह—नेना दु:खित छन्हि तैंओ अपने नहि जा क' ओझाजी एत' वैसल बड़े छथि जे ? मामिला, मोकदमा टाका कौड़ी—इएह सभ ल' क' कि हुनका सभसँ वेशी....अनु बहिन ? एक रत्ती नीक अधलाहक बोध होएब त उचित ?

अन्नदा कहलथीन्ह—रुपैआक जोर नहि बहिन, आइ दू दिनसँ ओ अपनो सेज धएने छथि। नेनाक दु:खसँ ओत ओ सभ चिन्तित—खबरि नहि देल जा सकै' छै, आ एत' दत्तबाबू पर्य्यन्त नहि धयि—ओ गेल छथिन्ह ढाका; एकसर हम मूर्ख माउगि—किछु बुझै नहि छिऐ, डर होइए कहीँ बढ़ि ने जाइन्हि। भाइकेँ कहिओ किछु होइ नइ छन्हि—तेँ डर होइए। विआह भ' गेला पर एक बेरि आएब नहि बहिन ?

शंकासँ वन्दनाक मुह विवर्ण भए गेलन्हि । डाक्टर आएल छलथीन्ह, कि कहलथीन्ह ?

कहलथीन्ह—डर नहि, मुदा ओइ सङ्‌ आनो डाक्टरकेँ बजबै' ले कहलथीन्ह । अन्नदाक आँखि नोरसँ भरि गेलैक—वन्दनाक हाथ ध' क' कहलकन्हि—ई दूटा दिन जेना होएत तेना क' काटब मुदा विआह भ' गेलो पर कि अहाँ इहि आएब ? हमरा सभ पर खिविआएले रहब ? अहाँ सभकेँ कत' की खटपट भेलए से हमरा जनबाक नहि, जनितो ने छी, मुदा ई जनै छी, दोष आर जे केओ केने होअओ, भाइ नहि कएलन्हिहैँ । हुनका नहि जानि क' गलती क' सकै छी, मुदा हुनका चीन्हि क' एहन गलती नहि करब बहिन ।

वन्दना कने काल चुप रहि—ठाढ़ि भेलीह। कहलथीन—चलू हम चलै' छी ।

एखने जाएब ?

हूँ एखने जाएब ने त ।

घरमे कहिक' नहि जएबन्हि । ई सभ सोचताह जे—

कहि' गेलासँ देरी होएत अनु बहिन, । अहाँ आउ । ओ उत्तरक अपेक्षा नहि कए मोटरमे जा क' बैसिलीह । वेयराके इसारासँ सोर कए कहि देलथीन्ह मौसीकेँ कहि दहुन जे बहिनिक डेरा पर जाइ छी, ओत' विप्रदास बाबू दुःखित छथिन्ह ।

वन्दना आबि क' जखन विप्रदासक घरमे प्रवेश कएलथीन्ह तखन सूर्य्यास्त भ' गेलैक अछि मुदा इजोत जरएबाक वेर नहि भेलैक अछि । विप्रदास गेड़ुआकेँ देवालमे लगाक' ओङठल, ओछाओन पर बैसल छलाह, मुह देखलासँ नहि बूझि पड़ै' छन्हि जे बिमारी कठिन छन्हि । मनमे स्वस्ति बोध कए बजलीह—ओझाजी, नमस्कार करै छी । बहिनि रहितथि त खिसिआ क' कहितथि जे गुरुजनकेँ पाएर छूबिक' प्रणाम करक चाही । मुदा छूबैत डर होएए जे अहाँ कहीं छुआ ने जाइ ।

विप्रदास किछु नहि बाजि खाली हँसलाह। वन्दना कहलथीन्ह—हमरा किए बजओलहुहे—सेवा करे'ले ? अनु बहिन कहै छलीह औषध खेबाक वेर भए गेलन्हि। परन्तु ई की ? डाक्टरी औषधक सीसी ? वैदक बड़िआ कहाँ अछि ? डाक्टरकेँ बजएबाक बुद्धि के देलक अहाँकेँ ?

विप्रदास कहलथीन्ह—हमरा सभक देहाती भाषामे ढोङी कहिक' जे एकटा बात अछि तकर माने जनै छी वन्दना ?

वन्दना कहलथीन्ह—हँ, ओझाजी, हँ। मनुष भ' क' जे मनुषकेँ घृणा करैत अछि ? तकरासँ वढ़िक' ढोङी संसारमे आओर केओ नहि।

विप्रदास कहलथीन्ह—हँ अछि। जकरा सत्य आ मिथ्या जँचाइ करबाक धैर्य नहि --अकारणे निर्दोषिकेँ झूठ फूसि कहि क' जे हल्ला करैए—से सभ। आ' तकरा दलक सभसँ बड़का पण्डा अहाँ छी।

अकारणे कोन निर्दोषी व्यक्तिकेँ हम बनओलिऐ अहाँ कहू त।

हमरा कह' नहि पड़त, समय भेलासँ अपनहि बूझब।

अच्छा ओहि दिनक प्रतीक्षामे रहलहुँ। ई बाजि वन्दना खाटलग एकटा कुर्सी ल' क' बैसि गेलीह। कहलथीन्ह एखन कहू—कोना छी ?

वेश छी—तँओ ज्वर अछि। रातिमे आओर किछु बढ़त।

मुदा हमरा किए बजओलहुहे ? हमर अहाँकेँ कोन काज अछि ?

काज हमरा नहि, अनु बहिनकेँ छैक—ओकरा डर भेलैए। ओकरा मुहे सुनलहुँ परसू अहाँक बहिनिक विआह, भ' गेला उत्तर एक दिन आउ। हमरा जुवानी अहाँक बहिनि किछु समाद पठओने छथि—से अहाँकेँ कहब।

आइ नहि कहब ?

नहि, आइ नहि।

वन्दना दू मिनट धरि चुप रहलीह—तकरा बाद कहलथीन्ह ओझाजी अहाँकेँ दुःख कठिन नहि अछि, दू दिनमे निके भ' जाएब। हम जनै छी, हमर

प्रयोजन नहि, तैओ अहाँक सेवाक भान क' क' हम रहब, हम फीरि क' नहि जाएब। हमर पेटी ओछाओन सभ आन' ले लोक पठा देलिऐए—अहाँ आपत्ति नहि करब।

विप्रदास हँसिक' कहलथीन्ह—कथीक आपत्ति वन्दना, आहाँक रहबाक ? किन्तु बहिनिक विआह जे ?

विआह हमरा सङे नहि ने—हमरा नहिओ गेलासँ बहिनिक विआह नहि रुकतन्हि।

सत्ये नहि रहबै विआहमे ?

नहि।

मुदा एही ले' जे कलकत्तामे रहि गेलहुँ ?

वन्दना कहलथीन्ह—जाइ छलहुँ बम्बइ, स्टेशन परसँ फीरि अएलहुँ—किन्तु ठीक एही ले' नहि। दूर रहै छी, अपन समाजक प्रायः ककरो ने चिन्है छिऐ; मुहसँ त कतेक बात सुनै छिऐक, गल्प उपन्यासमे कतेक की पढ़ै छी, तकरा सङे अपनाकेँ मिला नहि सकै छलहुँ—मनमे होइए हम सभ समाजसँ बाहर एक-घरिआ छी। मौसी सोर कएलन्हि—सोचलहुँ प्रकृतिक विआहक उपलक्षमे दैवात् जे सुयोग भेटल—एहन आओर नहि भेटत। तेँ फीरि अएलहुँ, ओझा जी।

विप्रदास सहारयेँ कहलथीन्ह—किन्तु सएह विआह जे एखनो बाँकी अछि। अपन गोलक लोकके चिन्हबाक सुयोग कहाँ पओहुँलहें ?

सुयोग पूरा नहि पओलहुँहेँ, मुदा जतेक भेटलए सएह यथेष्ट।

अपना सङे हिनका सभसँ कतेक बात मिलल ? सुनि सकै छी कि ?

वन्दना हंसलीह—कहलथीन अहाँ निके होउ, तकरा बाद विस्तार-पूर्वक

सुनाएब ।

नौकर इजोत जरा देलकन्हि । माथ लगक खिड़की बंद कए औषध खोअओलथीन्ह—कहलथीन्ह—आर बैसबाक काज नहि । आब अहाँकेँ सुत' पड़त । ई कहि नुड़िआएल सुड़िआएल ओछाओनकेँ झाड़ि कए गेड़आ सभ ठिकसँ राखिदेलथिन्ह, विप्रदास केँ सुति गेला पर पाएरसँ छाती पर्य्यना चद्दरि ल' क' झाँपि कहलथीन्ह—निके भेलापर अपनाकेँ शुद्ध-पवित्र कर' ले नहि जानि आहाँकेँ कते गोबर गङ्गाजल गीड़' पड़त !

विप्रदास दूनू हाथ पसारि क' कहलथीन्ह—एते—! मुदा आश्चर्ज ई जे सेबा यत्न करब'—सेहो एक रत्ती अवैए देख'छी ।

जनै छी एक रत्ती ? नहि ओझाजी, ई नहि होएत । हमरा सभक विषयमे अहाँकेँ आओर किछु बेशी खोज खबरि लेब' पड़त ।

अर्थात्—

अर्थात् हमरा सभहिक निन्दे यदि करी, त सज्ञाने कर' पड़त । एना आँखि मूनि क' जे से बाज' हम नहि देब ।

विप्रदास मुहमे परिहासक दबल हँसी, कहलथीन्ह—ई हमरा सभक माने—ककरा सभक बन्दना ? ककरा सभक विषयमे आओर खोज खबरि लेब' पड़त ? जकरा सभसँ एखन पड़ा अएलहुँहेँ तकरा सभक ।

के कहलक हम पड़ा अएलहुँहैँ ?

हम कहै छी ?

बुझलहु कोना ?

बुझलहुँ अहाँक मुह देखि क'

वन्दना कने काल हुनका मुहक प्रति देखि कए कहलथीन्ह—द्विजू बाबू एक दिन कहने छलाह—भाइक आँखिसँ कोनो वस्तु नुकाएल नहि रहै' छन्हि । ई बात कतेक दूर जे सत्य से हम नहि विश्वास करै' छलहुँ । हम अहाँक

अस्वस्थता नहि चाहै छी, किन्तु ई सत्ये हमरा उद्धार कएलकए। सत्ये पड़ाक' एलासँ हम बाँचि गेलहुहैं। जे कए दिन अहाँ दुःखित छी, हम अहीँक ओत' रहब—तकरा बाद सोझे बम्बइ चल जाएब। मौसीक डेरा पर आब नहि जाएब। दूरसँ जकरा सभकेँ देख' चाहै छलहुँ—तकरा सभकेँ देखल भ' गेल,—एखन इच्छा नहि जे एको दिन ले' ओकरा सभक बीचमे जाक' रह' पड़ैए।

विप्रदास चुपेचाप रहलाह। वन्दना कहए लगलथीन्ह ओकरा सभके खाली साड़ी, गाड़ी, आ' प्रेमक गप्प। कत' नैनीताल, आ कत' मसूरीक होटल, हम जनित्तो ने छिऐक मुदा ओकरा सभक मुहे मुह एहि सभ द' कते जे इसारासँ बात, सुनैत-सुनैत इच्छा होइ छल जे कत छोड़िक' पड़ा जाइ। आइ एहि घरमे बैसल मनमे होइए जे ई कए दिनक अविश्रान्त अलाए बलाए धूरा बालुक विरड़ोक बीच मे हमर दिन-राति कटलए। एहि बीचमे ओ सभ बँचैए कोना' ओझाजी ?

विप्रदास कहलथीन्ह—ई रहस्य हमरा नहि बूझल अछि। मरूभूमि मे कटहा गाछ सभ जेना बाँचल रहैए—प्रायः तहिना।

वन्दना निश्वास फेकि बजलीह—दुःखक जीवन। ओकरा सभकेँ नहि छैक शान्ति, ने कोनो धार्मिक झंझट। किछु विश्वास नहि करैछ, खाली तर्क करैए। कने थम्हि क' कहलथीन्ह—एकबार पढ़ैए ओ जनैए अनेक बात। पृथ्वीपर कत कोन बात सभ दिन होइछै—किछु ओकरा सभसँ नुकाएल नहि। किन्तु हम त ओ सभ पढ़ि नहि सकैछी, तेँ आधा बात त बुझिते ने छलिऐक। सुनैत-सुनैत जखन अरुचि भ जाए तखन आओर कतहु जा क' निश्वास फेकि बँचै छलहुँ। मुदा ओंकरा सभकेँ त क्लान्ति नहि। बजैत-बजैत जेना ओ सभ मानि जाइत अछि।

मुदा अहाँ अपन बाबूक लग रहितहुँ त सुविधा होइत वन्दना,। एकबारक सभ समाचार हुनकासँ बूझि सकै छलहुँ—ओकरा सभ लग ठगैतहुँ नहि।

वन्दना हँसी मुहें कहलथीन्ह—हँ बाबूकें से अभ्यास छन्हि । सभटा खबरि बिना पढ़ने हुनका तृप्ति नहि । परन्तु हमरा—मौगी सभकें ओकर काज कोन कहू त ? की होएत जानि कए जे पृथ्वी पर कत' की होइ' छै ?

ई बात अहाँक बहिनिक मुहें शोभा पाबि सकैए वन्दना, अहाँक मुहें नहि—कहि विप्रदास हँसलाह ।

वन्दना कहलथीन्ह—ओ सभ कि हमर बहिनिसँ बेशी जनैए अहाँ सोचै छी ? एको रत्ती नहि । छुच्छ घैल तें मुहसँ ओकरा सभकें एतेक आवाज बहराइत छैक । ओकरासभक विषयमे आओर किछु नहि बुझी, ई बात धरि बुझि गेलिऐए ओझाजी ।

परन्तु ज्ञान त चाही ।

नहि चाही, नहि । ज्ञानक आस्फालनसँ मुहक मधु ओकरा सभकें विष भ' गेलैए । ओ सभ जनैए हमर बहिनि जेकाँ सभकें स्नेह करब ? बहिनि जेकाँ भक्ति क' सकैए ? नहि, ओकरा सभकें मित्र कि केओ छैक? बुझि पड़ैए केओ नहि; ओहिना पारस्परिक विद्वेष । ओकरा सभकें अभावें कि कम ? बाहरक रंग साजसँ बुझाइए ने पड़त जे भीतरमे एकरा सभक एहन फोंक-धोधड़ि । कथी लै ओकरा सभके ल' क' मथ-भुकऔलि ? समस्त भीतर जेना एके बेरि घूनसँ झाँझर भए गेल छैक ।

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह—भेलए कि वन्दना ? एते क्रोध कथी ले ? केओ रुपया त ने ठकि लेलकए ।

नहि, ठकि नहि लेलक, पैंच लेलकए ।

कते' ?

बेशी नहि, चारि-पांच सए ।

ओकरा सभक नाम जनै छिए किने ?

जनै छलिऐ, मुदा विसरि गेलिऐ—कहि वन्दना हँस' लगलीह, बजलीह—छि:छि: एते कम परिचयो पर जे ककरोसँ केओ रुपैआ माङत—से हम सोचिए ने सकै छी। बजैत मुह नहि रुकै छै, आँखिमे लज्जाक छाया एको रत्ती ने, ई जेना ओकरा लोकनिक सभ दिनक व्यापार। ई सभ कोना क' संभव होइ छै, ओझाजी ?

विप्रदासक मुह गम्भीर भए गेलन्हि। किछु काल स्तब्ध रहि, कहलथीन्ह अहाँक मनकें ओ सम बड़ विषाक्त क' देलकए वन्दना, किन्तु सभ एहने नहि, ई, ई अहाँक मौसीएक दल, अहाँ सभहिक समस्त दल नहि। जे सभ एहिसँ बाहर रहि गेल, तकलासँ प्राय: गोटेक दिन ओकरो सभसँ भेँट होएत।

वन्दना कहलथीन्ह—भेटलासँ नीके बात। तखन हम अपन धारणाक संशोधन करब—किन्तु जकरा सभकें देखलहुँहें, से सभ शिक्षित, सभ पदस्थ लोकक आत्मीय। गल्प उपन्यासक रङल भाषामे सज्जित भए ई सभ दूरसँ हमरा आँखिमे की जे आश्चर्य अपरूप जेकाँ बोध होइत छल। मनमे गर्व्वक सीमा नहि छल,—सोचितहुँ हमरा समहिक स्त्रीगणक पछुआएल रहबाक दुर्नाम आब हँटल। हमर ओ गलती एहि बेर दूर भेल, ओझा जी।

विप्रदास सहास्यें कहलथीन्ह—गलती कथीक ? ई सभ जे बहुत जोरसँ आगू दौड़ल जाइत छथि, ई त मिथ्या नहि।

सूनि कए वन्दना हँसलीह, नहि मिथ्या किए होएत, सत्ये। तँओ हमरा सान्त्वना इएह अछि जे संख्यामे ई सभ अत्यन्त अल्प छथि—हिनके सभकें बड़का मैदानमे 'मोन्यूमेंट' बना क' ठेल ठालि क' ऊपर उठा, हुसेल-हुसेल करब जेहने निष्फल, तेहने हास्यकर।

विप्रदास कहलथीन्ह—ई होइए अहाँक—एक दोसर तरहक बुड़िबकी। स्वधर्म्म-त्यागसँ विपत्ति होइ' छै वन्दना—सावधान।

वन्दना एहि बात पर ध्यान नहि देलथीन्ह, बाजए लगलीह—एहि नगण्य दलक बाहर अछि बङ्गालक वृहत् नारी-समाज। ओकरा सभके हम आइओ

नहि देखलिऐक अछि, बाहरसँ बूझि पड़ैए—देखाइओने दैत अछि, तैओ मनमे होइए वसात जेकाँ ओएह सभ ब्रह्मालीक निश्वासमे मिलल अछि। जनै छी, एहिमे अछि छोट, अछि पैघ—पैघक दृष्टान्त अछि हमर वहिनिमे, हुनक सासुमे—एहि बेर कलकत्ता आएब हमर सार्थक भेल ओझाजी। अहाँ हँसै' छी जे ?

सोचै' छी, रुपयाक शोच मनुस्यकें कोन तरहक वक्ता बना दैत छैक। ई दोष हमरो अछि किने।

कोन रुपैआक शोच—ओ पाँच सएक ?

सएह त बुझि पड़ैए।

वन्दना हँसि क' कहलथीन्ह—टाका ले आओर चिन्ता नहि। अहाँकें सेबा करबाक मजूरीक हिसावें दुन्ना ओसूल क' लेब। अहाँ नहि देब त माएसँ ओसूल करबन्हि।

अन्नदा घरमे पैसि क' कहलकन्हि—आठ बजै छै, भाइक खएवाक बेर भेलन्हि।

वन्दना व्यस्त भए कहलथीन्ह—चलू अनु बहित, चलै छी; की, जाउ ओझाजी ?

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह—जाउ, मुदा सेवामे त्रुटि भेलासँ मजूरी काटल जाएत।

त्रुटि नहि होएत अओ, नहि होएत—कहि ओहो हँसी-मुहें बाहर भए गेलीह।

# १८

वन्दना कहलथीन्ह, पथ्य तैआर भ' गेल, नेने आउ ?

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह—अहाँक सदरि काल चेष्टा रहैए हमर जाति लेबाक। सन्ध्यावन्दन एखन करबे ने कएलहुँ, पहिने ओकर उपाय त करू।

हम अपने क' देब, ओझाजी ?

नहि त एत' आन के अछि जे क' देत ? परन्तु माएक पूजाक घरमे नहि जा होएत—देहमे जोर नहि अछि। एही घरमे क' देब' पड़त। पहिने देखब जे अहाँ कोना इन्तजाम करै छी, दोष देखएबा जोगर किछु रहैए कि नहि तखन बूझब जे खेनाइ अहाँ आनि देब कि ठाकुर आनि देत।

सूनि कए वन्दना पुलकित भए गेलीह, कहलथीन्ह—हम एहि शर्त पर राजी छी। मुदा परीक्षा पास यदि होइ त झूठे कोनो छलसँ फेल नहि क' देब, से कहि दिअ।

देलहुँ ई वचन। मुदा हमरा अपने हाथे खोअओलासँ अहाँके कोन लाभ ?

से हम नहि कहब—ई बाजि वन्दना जल्दीसँ चल गेलीह।

दश मिनटक भीतर ओ स्नान कए तैआर भए एक भरल पैघ लोटा ल' क' प्रवेश कएलन्हि। घरमे जतए खिड़कीसँ पूव दिशिसँ रौद अबैत छलैक, ओहि स्थानके जलसँ नीक जेकाँ धो, अपना आँचर सँ पोछि, पूजाक घर सँ आसन, अर्घा, पञ्चपात्र, सराइ—सभ आनि सरिआ क' राखि देलथीन्ह, धुप-दानी आनि धूप जरा देलथीन्ह—तखन विप्रदासक धोती, गमछा, मुह हाथ धोएबा ले' अढ़िआ आनि लगमे राखि कए

कहलथीन्ह — आइ समय नहि अछि जे फूल तोड़ि, माला गाँथि दी, ने त सेहो क' दितहुँ, कालिह एहिमे त्रुटि नहि होएत । परन्तु आध घंटाक समय देलहुँ, ओहिसँ बेशी नहि । एखन नओ बाजलए—ठीक साढ़े नओमे हम फेरि आएब । एहि बीचमे केओ अहाँकेँ तंग नहि करत, हम जाइ छी, । कहि, ओ केबाड़ ओङठा चल गेलीह ।

विप्रदास कोनो बात नहि कहि खाली देखैत रहलाह । आध घंटाक बाद वन्दना जखन फीरि कए अइलीह तखन विप्रदास सन्ध्यावन्दन आदि समाप्त कए एक आराम कुर्शीपर पड़ल छलाह ।

पास भेलहुँ कि कि फेल ओझाजी ?

पास— फस्ट डिवीजनमे । हमर माएकेँ सेहो हारि मनओलहुँ । ककर साध्य जे अहाँकेँ कहत म्लेच्छ—म्लेच्छ सभहिक स्कूल कालेजमे पढ़ि कए बी० ए० पास कएने छी ।

आब तखन भोजन आनू ?

आनू । मुदा ताहिसँ पहिने ई सभ राखि आउ ग । कहि विप्रदास अर्घा पञ्चपात्र सभ देखा देलथीन्ह ।

ई हमरा आओर कह' नहि पड़त ओझाजी, जनै छी—ई बाजि, पूजाक पात्र सभ ओ हाथमे लेलन्हि अछि—कि एही समय घरक बाहर ओसारापर ऊँच ऐंड़ी बाला जूताक खुट्-खुट् शब्द एके सङे कानमे पड़लन्हि, एवं दोसरे क्षण अन्नदा दोआरि लग मुह बढ़ा क' कहलकन्हि—वन्दना बहिन, अहाँक मौसीजी ।

मौसी एवं आओरो दू-तीनि गोट अल्पवयसी तरुणी एके बेरि भीतर आबि गेलीह, विप्रदास ऊठि अभ्यर्थना कएलथीन्ह—आउ !

मौसी कहलथीन्ह—नोकरसँ नीचेमे बुझलहुँहेँ जे विप्रदास बाबू नीके छथि ।

विप्रदास कहलथीन्ह— हँ, हम निके छी ।

आगन्तुक स्त्रीगण सभ वन्दनाकेँ देखि यत्-परोनास्ति विस्मित भेलीह— पाएरमे जूता नहि, देहमे आङी नहि, भीजल केशसँ पहिरनाक साड़ी भीजि गेल छन्हि । पसरल कारी केश पीठ पर छिड़िआएल, दूनू हाथमे पूजाक वस्तु जात, हुनक ई मूर्त्ति हिनका सभक हेतु खाली अदृष्ट-पूर्व आ अपरिचिते टा नहि, अभावनीय । वन्दना कहलथीन्ह—अहाँ सभ दोआरि छोड़ि क' कने ठाढ़ि होउ, ई सभ राखि अबै' छी ।

एक गोट स्त्रीगण बजली—छुआ जाएत बुझि पड़ैए ?

हँ, कहि वन्दना चल गेलीह ।

कने कालक बाद ओ ओही वेशमे फीरि कए आबि विप्रदासक कुर्शी लग सटि कए ठाढ़ि भेलीह । मौसी कहलथीन्ह—हमरा सभकेँ बिना कहनहि तोँ चल अइलीह—एहि ले नहि खिसिअएलहुँ, मुदा आइ तोहर बहिनिक विआह थिकह, तोरा जाए पड़तह ।

दू गोट तरुणी बाजि उठलि—हम सभ अहाँकेँ पकड़ि क' ल' जाए ले अएलहुँहेँ ।

वन्दना कहलथीन्ह— नहि मौसी, हमरा बुते गेल नहि पार लागत ।

से की बन्दना ! नहि गेलासँ प्रकृतिकेँ कते' दुःख होएतैक, बुझै छह ?

जनै छी, तैओ हम नहि जा सकब ।

सूनि क' मौसी विस्मय ओ क्षोभसँ अधीर भए कहथीन्ह—परन्तु एही ले' तोहर वम्बइ जाएव नहि भेलह, एही ले' तोहर बाबू तोरा हमरा लग छोड़ि गेलथुन्ह । ओ सुनथुन्ह त की कहथुन्ह कह' त ?

ओएह तरुणी बाजि उठलीह—आ से छोड़ि सुधीर बाबू, मिस्टर डाटा— बड़ा खिसिआ गेलाहे । अहाँक चल आएब ओ एकदमे पसिन्न नहि कएलन्हि ।

वन्दना हुनका दिशि देखलथीन्ह मुदा जबाव देलथीन्ह मौसीकेँ; कहल-

थीन्ह—हमरा नहि गेलासँ प्रकृतिक विआह त नहि रुकतन्हि—मुदा चल गेलासँ ओझाजीक सेवा—पथ-पानि मे त्रुटि होएतन्हि, हिनका देखबा ले एत' केओ नहि छन्हि।

मुदा ओ त आब निके भ' गेलाहे। तोरा जाए ले हुनको कहब उचित, ई बाजि मौसी विप्रदास दिशि देखलथीन्ह।

विप्रदास हँसि कए कहलथीन्ह—ठीक बात। जाएले हमरा कहबो उचित, वन्दनाकेँ जाएबो उचित। वरु नहिए गेलासँ अनुचित होएतन्हि।

वन्दना माथ हिला क' कहलथीन्ह—नहि, अन्याय कि अनुचित होएत, से हम नहि बुझै छी। वेश, अहाँ कहै छी जाए ले, हम जाएब, मुदा रातिए चल आएब, ओत' रहब नहि पार लागत। ई अनुमति मौसीकेँ देब' पड़तन्हि।

एको राति नहि रहि सकबह ?

नहि।

अच्छा सएह होएतह। ई बाजि मौसी मने-मन खिसिआ क' दल-बल सहित प्रस्थान कएलन्हि।

विप्रदास कहलथीन्ह—देखलहुँ त अहाँक मौसी खिसिआ क' चल गेलीह। किन्तु अहाँकेँ हठात् ई की मन भेल ?

वन्दना कहलथीन्ह—खिसिआ क' गेली हे से जनै छी, मुदा खाली मने भेलासँ नहि जाए चाहै छी, से नहि। हुनका लोकनिक जे किछु छन्हि, सभ वस्तुक ऊपर हमरा वितृष्णा भ' गेलए तेँ ओत' नहि जाए चाहै छी, ओझाजी।

ई एकटा बढ़ाओल चढ़ाओल बात, वन्दना।

सत्ये बढ़ाओल कि नहि से कहब कठिन। हम सभ दिन अपनाकेँ अपने जिज्ञासा करै छी, अथच नीक जेकाँ बुझै छी जे ओकरा सभक वीचमे जा' क'

हमरा ने अछि सुख, ने अछि स्वस्ति। एक बेर बम्बइमे एकटा कपड़ाक मीलमे कल-कारखाना देख' गेल छलहुँ—खाली हमरा ओएह बात मोन पड़ैत रहैए—ओहिमे कतेक कल, कते चक्का, आगाँ पाछाँ—आस पासमे—सभ ठाम अविश्रान्त चलि रहल छैक, एक रत्ती असावधान भेले उत्तर जेना घाड़ मचोड़ि क' ओहिमे घोँसिआ क' फँकि देत। ओ सभ देखबामे जे नीक नहि लगैए से नहि, तैंओ मन होइए जे बहरएले सँ बाँचब। परन्तु आओर बेशी देरी नहि करब, अहाँक खेनाइ आनी ग—कहि बहराइते काल आँखि पर पड़लन्हि—दोआरि लग पाएरक धूरा, जूताक दाग; ठमकि क' ठाढ़ि भेलीह, बजलीह खेनाइ आनल नहि भेल ओझाजी, कने सबूर कर' पड़त। नौकरसँ कने एकरा सभके धोआ लै छी, ई कहि ओ घरसँ बाहर होइत छलीह कि विप्रदास सविस्मयें प्रश्न कएलथीन्ह—एते' पवित्रता अहाँ सिखलहुँ ककरासँ वन्दना ?

सूनि क' वन्दना अपनहुँ आश्चर्य्यित भेलीह, कहलथीन्ह—के सिखओलक हमरा मन नहि अछि ओझाजी, तकरा बाद कने काल चुपरहि कहलथीन्ह—बुझि पड़ैए केओ नहि सिखओलक। हमरा अपने मनमे होइए जे अहाँक सेवा करबाक ई सभ अपरिहार्य्य अङ्ग, नहि कएलासँ त्रुटि होएत। ई कहि ओ चल गेलीह।

दुपहरिआमे अभ्यस्त एवं यथोचित रूपें साज बाज कए वन्दना बिप्रदासक घरक खूजल दोआरिक लग ठाढ़ि भए वजलीह—ओझाजी, चललहुँ वहिनिक विआह देखै ले। मौसी नहि छोड़लन्हि, तें जाए पड़ैए।

विप्रदास कहलथीन्ह—आशीर्वाद दै छी, अहूँ जाहिसँ जल्दीए एहि अत्याचारक प्रतिशोध ल' सकिअन्हि। तखन अइ मौसीकें पञ्जाबसँ घीचि कए बम्बइ ल' जएवन्हि।

मौसी ऊपर क्रोध नहि अछि, मुदा अहाँके अवश्ये घीचि क' लए जाएब। डर नहि होअओ, गाड़ीक किराया हमहीं सभ देब, अहाँके अपना नहि

लागत। वन्दना हँसि कए कहलथीन्ह—घुमैमे हमरा देरी होएत, परन्तु सभटा वस्तुक इन्तजाम ठीक क' देलहुहें—अनट विलट भेलासँ हम आबि क' खिसिआएब।

खिसिआएब ने त! नहिए खिसिअएलासँ लोक आश्चर्य्य होएत। शोचत, शरीर नीक नहि छन्हि—विआहक भोज खा' क' मन किछु सुस्त भ' गेलन्हिहें।

वन्दना हँसौ मुहें कहलथीन्ह—अच्छा भेल हमर गुण-वर्णन करब। मुदा से बात एखन रहओ, अहाँ सन्ध्या तन्ध्या करै ले नीचा नहि जाएब। अनू वहिनि एतहि सभटा आनि देतीह। तकरा आध घंटाक बादे ठाकुर खेनाइ द' जएताह। एक घंटाक बाद औषद द' जाएत आ' रोशनी बंद क देत' आ केवाड़ लगा देत—ई हुकुम सभके द' गेलिऐए, बुझलहुँ।

हँ बुझलहुँ।

अच्छा, तखन चललहुँ।

जाउ। किन्तु चमत्कार लगै छी वन्दना! ई बात धरि मानबे करव। कारण, जे कपड़ा लत्ता अहाँ एखन पहिरलहुँहें सएह थीक स्वाभाविक। आ जे एत' पहिरि क' रहैछी से थीक कृत्रिम।

से कि ओझाजी, ओ सभ बजै छथि जे स्त्रीगणके जूता पहिरने अहाँ देखिए ने सकै छी?

ओ सभ झूठ कहैए—जहिना कहैए जे अहाँक हाथक धुइल हम खा' नहि सकै' छी।

वन्दना विस्मित भए प्रश्न कएलथीन्ह—झूठ किए ओझाजी, हमरा हाथक खएबामे त वास्तवमे अहाँके आपत्ति छल।

विप्रदास कहलथीन्ह—आपत्ति छल, मुदा सत्ये आपत्ति रहलासँ ओ आइओ रहैत, जाइत नहि।

बात वन्दना बुझलन्हि नहि, किन्तु विप्रदासक उक्ति असत्य बुझबो कठिन। कहलथीन्ह—द्विजू बाबू एक दिन कहै' छलाह भाइक मनक बात केओ ने बुझि सकैत छन्हि—जे किछु बाहरी, सएह टा लोक बुझैत छन्हि, परन्तु जे अन्तरक बात से दबले रहैत छन्हि—ओझाजी, ई कि सत्य ?

उत्तरमे विप्रदास खाली हँसलाह तकरा बाद कहलथीन्ह —आहाँकेँ देरी होइए वन्दना—यदि वास्तवमे अहांकेँ ओत' रहबाक मन नहि होअए त चल आएब।

चल्ले आएब ओझाजी, ओत' रहल नहि पार लागत। ई कहि वन्दना आओर देरी नहि कए नीचा चल गेलीह

दोसरा दिन सवेरे देखला पर विप्रदास पुछलथीन्ह बहिनिक विवाह निर्विघ्न समाप्त भेल ?

हँ भेलैक, कोनो विघ्न नहि भेलैक।

अपने जिद्द रखलहुँ, मौसीक अनुरोध नहि रखलिअन्हि ? कते' राति भेना फिरलहुँ ?

राति तखन तीन बजै छलै। मौसीक बात राखल नहि भेल, रातिए फिर' पड़ल। कने थम्हि कए, प्रायः वन्दना विचारि लेलन्हि जे वाजब उचित कि नहि. तकरा वाद कहए लगलथीन्ह, छलहुँ किछुए घंटा, परन्तु काज क' अएलहुँ बहुत वेशी। एक वर्ष ल' क' जे नहि क' सकल छलहुँ, पाँचे छओ मिनटमे समाप्त क' लेलहुँ। सुधीरक सङ्ग खतम भ' गेल।

विप्रदास आश्चर्य भए बजलाह—कहै छी कि !

हँ सएह। परन्तु हुनका भसिआइत नहि छोड़ि अएलिअन्हि। कालिह भिनसरू पहर जाहि छौंड़ीकेँ अहाँ देखने छलिऐ, ओकर नाम हेम—हेम-नलिनी राय। हुनके जिम्मामे सुधीरकेँ द' अएलिअन्हिहेँ। हमरा फेरि ओएह बम्बइक कल वाला बात मन पड़ैए, ओही जेकाँ हुनका सभक ओत'

प्रेमक घीचातीरी मे मनुष्यक भविष्य बनैत छैक आ' फेरि टुटिओ जाइत छै तहिना ।

विप्रदास ओहिना विस्मयें प्रश्न कएलथीन्ह—वात की भैलै ? सुधीरक सङ्गे हठात् शेष क' अएबाक माने ?

वन्दना कहलथीन्ह—शेष करबाक माने शेष करब । किन्तु ई कहबामे ओहिठाम 'हठात्' कहबाक किछु नहि । हुनका सभक ताल अत्यन्त द्रुत रहलेसँ वाहरक लेखें 'हठात्' कहि क' भ्रम होइ छैक, परन्तु असल मे से नहि । सुधीर हमरा सोर क'क' कहलन्हि—जे हम वड़ अन्याय, अनुचित कएलहुहें । पुछलिअन्हि—की अनुचित भेलए सुधीर ? ओ कहलन्हि—विना ककरो कहने जे अर्थात् हुनका विना पुछने—अकस्मात् एहि डेरा पर चल आएब हमरा लें बड़ गर्हित काज भेलए, विशेषत: जखन ओइठाम विप्रदास बाबू छोड़ि क' आओर केओ नहि । हम कहलिअन्हि—ओत' अन्नदा वहिनि छथीन्ह । सुधीर कहलन्हि जे ओ दासी छोड़ि आओर केओ नहि । हम कहलिअन्हि—ओहि अङ्गनामे सभ केओ हुनका वहिन कहैत छन्हि । सूनि क' ओएह हेम छौंड़ी मुह विजुका क' कने हँसि क' बाजलि—निछवक देहातमे ओइ तरहें कहबाक चलनि छै से सुनै छी, तैं सँ नौकर खबासनीक अहङ्कार बढ़ै छैक आओर किछु नहि । ओ सभ अपनहु पैघ नहि होइए । सुधीर कहलन्हि—हिनका सभकें अहाँ कहलिअन्हिहें जे एत अहाँ नहि रहि सकै छी, रातिए फीरि क' चल जाएब । मुदा ओहि डेरा पर अहाँक एकसर रहब हम सभ केओ पसिन्न नहि करै छी । अहाँक बाबुए सुनताह त की कहताह ? कहलिअन्हि—बाबू जे की कहताह तकर चिन्ता अहाँ के नहि हमरा । किन्तु आइओ जे सभ पसिन्न नहि करै छथि ताहिमे आहाँ अपनहु छी कि ? हेम बाजलि—निश्चय छथि । सभकें छोड़ि क' त ओ नहि छथि । एहि छौंडीकें कुटकुटा क' लगितैक एहन उत्तर देबाक इच्छा नहि भेल, तें सुधीरकें कहलिअन्हि अहाँक एहि बातक जवाबमे हमहूँ कहि सकै छलहुँ जे अहाँकें निरर्थक छुट्टी ल' क' कलकत्तामे रहब हमहूँ पसिन्न नहि करै छी, मुदा से बात हम नहि कहब । अहाँ जे तुच्छ व्यंग इङ्गित कएलहुँ से इतर समाजमे चलैत

छैक, किन्तु अहाँ सभक बड़की दलमे जे ओ समान रूपेँ चलैत अछि से हमरा नहि बूझल छल। जे किछु, आओर हमरा समय नहि, गाड़ी ठाढ़ अछि, हम चललहुँ।ओ छौंड़ी बाजि उठलि, जे अशोभन, जे अनुचित, तकर आलोचना छोट पैघसभ दलमे चलैत छैक, से बूझि लेब। कहलिऐक---अहाँ सभकेँ जनेक आलोचना चलएबाक हो चलाउ, आपत्ति नहि, हम उठलहुँ। सुधीर हठात् विचित्र, सन भ' गेलाह—मुह फक्क भ' गेलन्हि, अपनाकेँ सम्हारि क' बजलाह—अपन मौसिओकेँ नहि कहि जएबन्हि ? कहलिअन्हि—हुनका कहल छन्हि विआह समाप्त भेला पर हम चल जाएब, रातिएमे।

सुधीर कहलन्हि—कान्हि अहाँसँ एक बेर भेँट होएत ? कहलिअन्हि —नहि। ओ बजलाह—परसू ? बजलहुँ—परसुओ ने।

तकरा बाद चारिम दिन ?

नहि तकरा बादो ने।

कहिआ आहाँकेँ समय होएत ?

समय हमरा नहि होएत।

परन्तु हमरा जे एकटा विशेष जरूरी बातक विषयमे गप्प करबाक अछि ?

अहाँकें भ' सकैछ होअए, हमरा नहि अछि। इएह कहि क' उठि गेलहुँ। सुधीर जे हमरा चिन्हैत नहि छथि से नहि। सङे आबि अगुआ देबाक साहस नहि कएलन्हि, ओही ठाम स्तब्ध भए ठाढ़ रहलाह। हम गाड़ीमे आबि कए बैसलहुँ।

विप्रदास कने हँसि क' कहलथीन्ह—एकर अर्थ कि शेष करब बन्दना? ई त कने कलह मात्र। संदेह यदि होअए त भेँट भेला पर अपन बहिनिसँ पूछि लेब।

बन्दना हँसलीह नहि, गम्भीर भ' क' कहलथीन्ह—ककरो पुछबाक काज नहि ओझाजी, हम जनै छी हमरा सभक ओ बात खतम भ' गेल, ओ आर फीरत नहि।

हुनका मुह दिशि देखि विप्रदास हत-बुद्धि भए गेलाह—कहै छी कि वन्दना? एते' पैघ विषय कि कखनो एतेक थोड़ बातमे समाप्त होएत ? सुधीरक आघानकें कि एक वेर विचारि क' देखलिऐए ?

वन्दना कहलथीन्ह—देखालिऐ ए ओझाजी । ई आघात सम्हारै मे सुधीरकें वेशी दिन नहि लगतन्हि, हम जनैछी; ई हेम हुनका रास्ता देखा देतन्हि । मुदा हम अपन बात सोचै' छलहुँ । खाली गाड़िए पर वैसि कए सोचै छलहुँ से नहि अएला पर ओछाओन पर पड़लि रातिमे हम सूति नहि सकलहुँ । अस्वस्ति हम बोध करै' छी ई ठीक, परन्तु कष्ट हमरा नहि होइछ ।

कष्ट होएत क्रोध शान्त भेला पर । तखन एही सुधीर ले' अहाँ रास्ता देखैत रहब—ई कहि विप्रदास हँसलाह ।

एहू हँसीमे वन्दना योग नहि देलथीन्ह, शान्त भावेँ कहलथीन्ह—क्रोध हमरा नहि अछि । खाली इएह अनुताप होइछ जे चल अएबाक काल कठिन बात हमरा मुहसँ नहि बहराइत । देखा अएलिअन्हि जेना दोष हुनकर, बुझा देलिअन्हि जे मर्म्माहत भ' क' हम विदा भेलहुँ । परन्तु से त सत्य नहि; एहि मिथ्या आचरणक हेतु खाली लाज होइए ओझाजी, आर कथू ले' नहि । हुनक बातक अन्तमे जेना हुनक आँखि सजल भए गेलन्हि ।

विप्रदासक मनक विस्मय बहुत वेशी बढ़ि गेलन्हि, ई जे छलना नहि, एते' कालक बाद ओ बुझलन्हि । कहलथीन्ह—सुधीरकें अहाँ कि आब वास्तवमे प्रेम नहि करै' छिअन्हि ?

नहि ।

एक समय त प्रेम करै छलिअन्हि ? 'एते सहजेँ ई प्रेम गेल कोना क' ?

एते सहजेँ गेल तेँ एते जल्दी एकर उत्तर पओलहुँ । नहि त अहाँक लग मिथ्या बाजए पड़ैत । ई कहि किछु काल ओ नीरव रहि देखि कए कहलथीन्ह—अहाँ बूझ' चाहलहुँ जे कोनो दिन सुधीरकें प्रेम कएने छलिअन्हि कि नहि ! ओहि समयमे सोचै छलहुँ वास्तवमे प्रेम करै छिअन्हि, मुदा तकरा बादे

एक दोसर व्यक्ति आँखिमे पड़ल—सुधीर बिला गेलाह। एखन देखै छी, ओहो बिला गेलाहे। सुनि क' प्राय: अहाँकेँ घृणा होएत, मनमे होएत एहन तरल मन त देखने नहि छलहुँ। हम जनै' छी, स्त्रीगणक लेखेँ ई लज्जाक बात! कोनो स्त्रीगण ई स्वीकार नहि कर' चाहत। ई जेना ओकरा सभहिक चरित्रकेँ कलुषित कए दैत छैक। प्राय: हमहूँ ककरो सङ वा ककरो लग ई बात नहि मानि सकितहुँ, किन्तु किए, नहि कहि सकै छी, जे अहाँ लग कोनो बात बजबामे हमरा लाज नहि होइए।

विप्रदास चुप रहलाह। वन्दना कह' लगलथीन्ह—भ' सकैए, इएह हमर स्वभाव, भ' सकैछ ई हमर वयसक धर्म्म, अन्तस्तल शून्य नहि रह' चाहैए, चारू दिशि हथोड़िआ दैत अछि। आ' कि एहने सभ स्त्रीगणक प्रकृति होइ छै—प्रेम करबाक पात्र जे के, से ओ भरि जन्म तकैत पाबिए नहि सकैए। ई कहि, स्थिर भए, मने मन की जे सोच' लगलीह—तकरा बादे बाजि उठलीह—आ कि ओ तकबाक वस्तु नहि ओझाजी, ओ खाली मरीचिका।

विप्रदास ओहिना मौन रहलाह। वन्दनाक मनक जेना छिटकिनी खूजि गेलन्हि अछि, कहए लगलथीन्ह—एही सुधीरक सङ्ग एक वर्ष पहिनहि हमर विवाह स्थिर भए गेल छल, खाली हुनकर माए दु:खित छलथीन्ह तेँ भेल नहि। काल्हि डेरा अबै काल सोचै छलहुँ विआह यदि भ' जाइत त आइ कि हमर मन एहिना क' हुनका ठेलि सकैत छल? मनकेँ शासनमे राखितहुँ की ल' क'? धर्म्म बुद्धि ल' क'? संस्कार ल' क'? किन्तु अवाध्य मन यदि शासन मानए नहि चाहैत, तखन की होइत? जकरा बीचमे ई कए दिन काटलहुँहेँ—ठीक कि ओकरे सभ जेकाँ? एहिना षड़यन्त्र आ' नुक्का-चोरीसँ मन परिपूर्ण कए क' शुष्क हँसी मुह पर आनि लोकके ठगैत घुमितहुँ? एहिना परस्परक निन्दा कए क', शत्रुता कए क'? परन्तु अहाँ बात किए नहि बजै छी ओझा जी?

विप्रदास कहलथीन्ह—अहाँक मनमे जे विहाड़ि बहैत अछि, तकर भयानक वेगक सङे हम कोना चलि सकब, तें जानि बूझि क' चुप छी।

वन्दना कहलथीन्ह—नहि से नहि होएत, एना क' हम अहाँके बात नहि टार' देब। जवाब दिअ।

किन्तु शान्त नहि भेलासँ जवाब देलासँ लाभ की ? अहाँक आजुक अवस्था जे स्वाभाविक नहि, ई बात अहाँ बूझब कोना ?

कि'एने बूझब ओझाजी, हमर बुद्धि नहि गेलए।

गेलए नहि परन्तु घोरा गेलए। एखन रह' दिअ, सन्ध्याक बाद सभ काज ताज खतम क' क' आबि, स्थिर भ' क' बैसब, तखन कहब। यदि भ' सकत त तखने एकर उत्तर देब।

अच्छा, तखन सएह नीक, एखन हमरो जे समय नहि अछि—ई कहि वन्दना बाहर भए गेलीह।

वस्तुतः हुनका काजक सीमा नहि। भिनसरे पहर छुट्टी ल' क' अन्नदा काली घाट गेलन्हि अछि, ओकरो काज आइ हिनके ऊपर पड़लन्हि। कते नौकर चाकर, कते विद्यार्थी एत' रहि स्कूल कालेजमे पढ़ैत अछि,—तकरा सभके कते तरहक काज प्रयोजन। काजक हूलिमे हुनका मने ने पड़लन्हि जे गत राति ओ सुतलीह नहि, आइ ओ अत्यन्त क्लान्त।

सन्ध्याक बाद विप्रदासक रातुक भोजन समाप्त भेलन्हि, नोचाक समस्त व्यवस्था सम्पन्न कए वन्दना हुनका खाट लग आबि एकटा छोट चौकी घीचि बैसिलीह आ कहलथीन्ह ओझाजी, एकटा बातक सत्ये जवाब देब ?

विप्रदास कहलथीन्ह—सभके त सएह दैत छिऐक—प्रश्न की अछि ?

वन्दना कहलथीन्ह—बहिनिकें कि अहाँ सत्ये प्रेम करै छिअन्हि ? नेना अवस्थामे अहाँ सभक विआह भेल, से कते दिनक बात—कहिओ कि एहिमे अन्यथा नहि भेलए ?

विप्रदास अवाक् भए गेलाह। एहन बात जे ककरो मनमे आबि सकैत छैक, से ओ कल्पनो ने कएने छलाह। किन्तु अपनाकें सम्हारि कए सहास्यें कहलथीन्ह—अपन बहिनिएकें वरू ई बात पुछिऔन्हि ने ?

वन्दना कहलथीन्ह—ओ बुझतीह कोना क ? अहाँक मनक असली बात त सुनै छी, केओ बुझिए ने सकैए। नहि कह' चाहैत छी त नहि कहू, हम कहुना क' बूझि लेब, किन्तु यदि बाजी त सत्ये बात अहाँकें कह' पड़त।

•सत्ये बात अहाँकें कहब। किन्तु अहाँकें कि हमरा पर सन्देह होइछ?

होइए ! अहाँ बड़ पैघ, महान लोक थिकहुँ—परन्तु तैओ मनुष। मनमे होइए, अहाँ कतहु जे बड़ एकसर; एकान्त छी—ओत' आहाँक केओ सङ्गी नहि अछि, ई बात कि सत्य नहि, ओझाजी ?

विप्रदास एहि प्रश्नक ठीक उत्तर नहि देलथीन्ह—कहलथीन्ह स्त्रीकें प्रेम करब जे हमर धर्म्म थीक वन्दना।

वन्दना कहलथीन्ह—धर्म्म जते दूर प्रसारित अछि तते दूर अहाँ अत्यन्त शुद्ध छी, किन्तु ओहिसँ पैघो कि संसारमे आओर किछु ने।

देखै' त नहि छिऐक वन्दना।

वन्दना कहलथीन्ह—हम देखि सकै छी, ओझाजी, कहू से बात ?

विप्रदासक मुह जेना एकाएक पीअर भए गेलन्हि—बलिष्ठ गौर वर्ण मूह पर जेना रक्तक लेश नहि—दूनू हाथ आगू बढ़ाक' कहलथीन्ह—नहि—एकोटा बात नहि—नहि वन्दना। आइ अहाँ अपना घर जाउ, कालिह होअए, परसू होअए—फेरि जखन प्रकृतिस्थ भ' क' विचारबाक बुद्धि पाएब—तखन एकर जवाब देब। परन्तु तखन अहाँ अपने बूझब जे ई सभ जे अहाँक मौसीक डेराक लोक अहाँक बुद्धिकें आच्छन्न कएने अछि, ओहने सभ केओ नहि, धर्म्म जकरा लेखें अत्याज्य, संसारमे ओहो सभ रहैत छथि। नहि नहि, आओर तर्क नहि, अहाँ जाउ।

वन्दना बुझलन्हि—ई आदेश अबहेला करबाक योग्य नहि। इएह प्रायः ओ वस्तु जकरा एहि अङ्नाक सभ केओ डर करैत छथि। वन्दना निश्शब्दें घरसँ बाहर भए गेलीह।

# १९

दोसरा दिन दुपहरिआमे वन्दना आबि कहलथीन्ह —ओझाजी, फेरि विदा भेलहुँ मौसीक डेरा पर। एहि वेरि किछु घंटा ले नहि, एहि वेर जते दिन नहि मौसी हमरा बम्बइ पठएबाक अयवस्था कए देथि, तते दिन।

अर्थात् ?

अर्थात् अर्जेण्ट टेलिग्राम आएल्ए, बाबूक हुकुम। काल्हि भिनसरे मौसी गाड़ी पठा देतीह् हमरा ल' जाए ले।

विप्रदास कहलथीन्ह—अर्थात् बूझल गेल, अहाँक मौसीकेँ प्रतिशोध लेबाक अध्यवसाय एबं बुद्धि छन्हि। ई बूझि पड़ैछ हुनके 'प्रीपेड टेलिग्राम'क जवाब। कहाँ—देखू तार ?

नहि से अहाँकेँ हम नहि देख' देव।

सूनि क' विप्रदास किछु काल स्तब्ध रहलाह, तकरा बाद कने हँसि कए कहलथीन्ह—भगवान जे ककरो दर्प्प नहि रह' दै' छथीन्ह—ई ओकरे उदाहरण। एते दिन धारणा छल, हमरा कोनो रूपेँ पकड़ल नहि जा सकैत अछि—किन्तु देखै छी, जे ई भ' सकैछ। अन्ततः एहनो लोक अछि। अहाँक मौसीक मूड़ीमे ईहो फन्दी फुरलन्हि। दिअ ने पढ़ि क' देखै छी अभियोग कते गुरुतर, कहि ओ हाथ बढ़ओलन्हि।

एहि वेर वन्दना कागत हाथमे देलथीन्ह। राय साहेबक सुदीर्घ टेलिग्राम—समस्त आदिसँ अन्त तक पढ़ि कए फिरा देलाक बाद विप्रदास कहलथीन्ह—वास्तवमे अहाँक बाबू किछु असंगत नहि लिखलन्हिहेँ। निस्स्वार्थ परोपकारमे विपत्ति छैक—अस्वस्थ आत्मीयक सेबा कर' आएबो संसारमे सहज काज नहि।

वन्दना प्रश्न कएलथीन्ह—हमरा कि अहाँ मौसीएक डेरा फीरि कए जाए कहै छी ?

सएह त अहाँक बाबूक आदेश अछि वन्दना। ई त वलरामपुरक मुखर्जीक घर नहि, हुकुम देब' बाला एहि क्षेत्रमे अहाँक ओझाजी नहि, मौसी,—आ ताहि पर आदेश देलन्हिहें बापक मुहें—अतएव मान्य करहि पड़त।

वन्दना कहलथीन्ह—ई भेल अहाँक मामूली बात। बाबू किछु ने जनै छथि, तैओ ओएह आदेश—न्याय अन्याय जे होअओ, सुन' पड़त ? मौसीक डेरा जे की, से त अहाँ जनै छी ?

विप्रदास कहलथीन्ह—जनै नहि छी, किन्तु अहाँक मुहें सुनै छी जे नीक जगह नहि अछि। हम निके रहितहुँ त अपने जा क' अहाँकें बम्बइ पहुँचा अवितहुँ—किन्तु से शक्ति नहि अछि।

एहि अवस्थामे अहाँकें छोड़ि क' चल जाएब ? जाहि मौसीकें चीन्ही ने जानी, हुनके जिद्द सभसँ बेशी रहतन्हि ?

किन्तु उपाय की ?

उपाय इएह जे हम नहि जाएब।

तखन रहू। बाबूकें एकटा तार पठा दिऔन्ह। परन्तु मौसी लेब' अओतीह त की कहबन्हि ?

नहि जा सकै छी—खाली इएहटा बात कहबन्हि। एहिसँ वेशी नहि।

अहाँक मौसी परन्तु एहीसँ निरस्त नहि होइतीह। एहि बेर होएत त ओ हमरा गाम पर हमरा माएकें तार देथीन्ह।

ई सम्भावना वन्दनाक मनमे नहि आएल छलन्हि। सूनि क' ओ उद्विग्न भए गेलीह, कहलथीन्ह, अहाँ ठीक कहै छी ओझाजी, प्रायः ई काज ओ क' चुकलीह—खबरि देब मौसीके बाँकी नहि छन्हि। मुदा जनै छी, किए ?

विप्रदास कहलथीन्ह—जानब त सम्भव नहि, तैओ किछु अन्दाज कएल जा सकैत अछि जे एते रास उद्यम हुनक निस्स्वार्थ नहि, अहाँक एकान्त कल्याणो हेतु नहि, प्रायः किछु हुनका मनमे छन्हि।

वन्दना कहलथीन्ह—की हुनका मनमे छन्हि से हम जनै छी। हुनक भातिज आएल छथीन्ह वारिस्टरी पास कए क'—मौसी हमरा सभकें परिचय आ' गप्प-सप करा दने छथि। दृढ़ विश्वास जे ओएह हमरा योग्य वर। कारण बाबूक हम एकमात्र बेटी—जे सम्पत्ति ओ राखि जएताह तकर आयसँ उपार्ज्जन नहिओ कएला उत्तर भातिजक जीवन अनायासें कटि जएतन्हि।

विप्रदास कहलथीन्ह—भातिजक कल्याण-चिन्ता करब पीसीक पक्षमे दोषक बात नहि। छौंड़ा देखबामे केहन अछि ?

नीक।

हमरा जेकाँ होएत ?

वन्दना हँसि क' कहलथीन्ह—ई भेल अहाँक अहंकारक बात। मने मन वेश बुझै छी, जे एते रूप संसारमे आओर नहि। किन्तु से तुलना कर' गेला पर संसारक सभ कन्याकें जे सभ दिन बूढ़ि कुमारिए रह' पड़तै ओझाजी, खाली अहीं दिशि देखि क' ओकरा सभकें दिन काट' पड़तैक। तैओ कहब, देखबामे अशोक वेशे छथि—अन्ततः खाली कने-कने दोष देखैत रहबाक स्वभाव हमर नहि अछि।

तखन पसिन्द भेल अछि, से कहू ने।

यदि होएबो करए त एहि पसिन्नकें केओ दोष नहि देत से कहि सकै छी। ई कहि वन्दना हँसि क' उठि ठाढ़ि भए कहलथीन्ह—पाँच बाजल, अहाँक वार्ली खएबाक समय भेल, जाइ छी अनै ले'। एही बीचमे अशोकक बात कने आओर विचारि क' रखने रहू। करीव पाच मिनटक वाद ओ जखन फीरि अइलीह तखन हुनका हाथमे चानीक वाटीमे वार्ली—वरफक भीतर राखि कए ठंढा कएल। नेवोक रस गारि क' कहलथीन्ह—ई सभटा खाए पड़त,

रखलासँ नहि चलत। सेबाक त्रुटि देखा क' जे केओ हमरासँ कैफिअत माङ्गत से हम नहि होब' देब।

विप्रदास कहलथीन्ह—जुलुम करबाक विद्या सोलहो आना सीखि गेलहुहें—ककरो आगू ठकाएब नहि देखै छी।

वन्दना कहलथीन्ह—नहि। केओ पूछत त कहबै—ओझाजीक ऊपर हाथ फेरि क' पक्का भ' गेलि छी।

खाएब खतम भेला पर ऐंठ बाटी हाथमे ल' क' वन्दना जाइत छलीह—फीरिक' ठाढ़ि भए पुछलथीन्ह—हमर एकटा बातक जबाब देब, ओझाजी ?

की बात वन्दना ?

ससारमे सभसँ वेशी अहाँकें के मानैए, कहि सकै छी ?

सकै छी।

कहू त ओकर की नाम ?

हुनक नाम वन्दना देवी।

सूनि क' तुरन्त वन्दना बाहर चल गेलीह—परन्तु करीब पन्द्रह मिनटक बादे फीरि क' आबि ओछाओनक लग एकटा कुर्सी घीचि बैसिलीह। विप्रदास फेरि हँसि क' पुछलथीन्ह—एना दौड़ि क' पड़ा किए गेलहुँ, कहू त ?

वन्दना पहिने त जबाब नहि द' सकलथीन्ह। तकरा बाद धीरे-धीरे कहलथीन्ह—ई बात हठात् नहि सहि सकलहुँ ओझाजी, मनमे भेल जेना हमर एकटा विचित्र चोरी अहाँक हाथें पकड़ा गेलए।

तें एखनो मुह उठा क' देखि नहि सकै छी, नहि ?

से कि'ए ने सकब कहि जोरसँ मुह उठाक' वन्दना हंस' लगलीह कि एक सलज्ज भावसँ हुनक समस्त मुख मण्डल लाल भए गेलन्हि, पश्चात् आत्म संवरण करैत-करैत कहलथीन्ह—कोना क' अहाँ ई बात बुझलहुँ, कहू त।

विप्रदास कहलथीन्ह —ई प्रश्न एकदम व्यर्थ। हम कि एहन पाषाण छी जे ई हां ने बूझि सकब ? से छोड़ि, यदि कहिओ सन्देहो होइत त आइ अहाँ दिशि देखि क' ओ सन्देह नहि ने रहल।

वन्दना फेरि मुह नीचा कएलन्हि। विप्रदास कहलथीन्ह—परन्तु से कहला सँ—ओ नहि होएत वन्दना, मुह उठा क' अहाँकेँ देख' पड़त, लज्जा पएबाक अहाँ किछु ने कएलहुँहेँ—हमरा लग अहाँकेँ कोनो लाज नहि। देखू, मुह उठाउ, सुनू हमर बात।

फेरि ओएह आदेश। वन्दना मुह ऊपर उठओलन्हि, कने काल चुप रहि कहलथीन्ह—अहाँ हमरा ऊपर खूब खिसिआ गेलहुँहेँ, नहि ओझाजी ?

विप्रदास मलिन हास्येँ कहलथीन्ह—कनेको नहि। ई कि खिसिअएबाक बात ? खाली हमरो मनमे आशा इएह जे ई मिथ्या धारणा अहाँक मनमे अपने एक दिन पकड़ाएत। खाली ओही दिन एकर प्रतिकार होएत।

किन्तु यदि कहिओ ई नहि पकड़ल जाए ? एकरा गलती कहिओ नहि बुझी।

अवश्य बूझब। एहिसँ जे संसारमे कतेक अनर्थक सूत्रपात होइत छैक से यदि नहि बूझि सकी, त हमहूँ बूझब जे अहाँ हमरा एकोरत्ती नहि मानलहुँ। सुधीरक प्रेम जेकाँ ईहो अहाँक खाली एकटा खेआल मात्र—मनमे ककरो घीचि कए आनि खाली अपनाकेँ ठकब, ताहि सँ वेशी नहि।

वन्दनाक मुह तुरन्ते म्लान भए गेलन्हि—अत्यन्त व्यथित कण्ठेँ कहल-थीन्ह—सुधीरक सङे कहिओ तुलना नहि करू ओझाजी, ई हम नहि सहि सकै छी। किन्तु एहिसँ जे संसारमे अनर्थक सूत्रपात होइ छैक ई अहाँक बात हम मानब। मानव जे ई अमंगलमे लोकके घीचि क' ल अनैत छैक किन्तु से कहि क' एकरा मिथ्यो कहि स्वीकार नहि करब। मिथ्ये यदि होइत त एते स्नेह अहाँक हम पवितहु ? हम कि ई नहि पओलहुहेँ ?

निरुद्ध श्वासें विप्रदास बात सभ सुनैत छलाह—प्रश्न शेष कए वन्दनाक मुह उठओला पर ओ चकित भए बाजि उठलाह—पओलहुँ ने त वन्दना, अहाँ बहुत पओलहुहें। नहि त अहाँक हाथक हम खइतहुँ कोना क? अहाँक दिन रातिक सेवा ग्रहण करितहुँ कथीक जोरसँ? किन्तु ताहिसँ कि ग्लानिमे अधर्म्मंमे अपने जाएब आ अहाँकें घीचि क' लए जाएब? जे सभ हमरा दिशि चिर दिनसँ विश्वास रखैत अछि, मस्तक ऊँच कएने अछि, सभकें तोड़ि-फोड़ि क' हम ओकरा लोकनिक मस्तक नीच क' दबैक? अहाँ कि इएह कहैत छी?

वन्दना दृढ़ स्वरें कहलथीन्ह—से भेलासँ अहूँ स्वीकार करू जे आइ अहाँ जे नहि छोड़ि सकब से खाली दम्भकें। सत्ये कहू, ओकरा सभक लग पैघ भ' क' रहबाक मोहकें अहाँ पैघ बुझै छी। नहि त कथीक ग्लानि ओझा जी. ककरा हम सभ अधर्म्म मान' जाएब? मनुष्यक मन-गढ़न्त एकटा व्यवस्था—मनुष्ये जे बारंवार मानैत अछि, वारंवार तोड़ैत अछि—तकरे? अहाँ ओ कइओ सकब, हम नहि क' सकैत छी?

विप्रदास गम्भीर भ' क' कहलथीन्ह—अहाँ नहिओ सकव, त हम सकब। आ ताहीसँ हमरा सभक काज चल जाएत। अङरेजी पोथी बहुत पढ़लहुँहें वन्दना, मौसीक डेरा पर आलोचना बहुत सुनलहुँहें—से सभ विसरैमे समय लागत, देखै छी।

वन्दना कहलथीन्ह—अहाँ हमरा हँसी करै छी, हम परन्तु एको रत्ती हँसी नहि कएलहुहें ओझाजी, जे कहै छी सभ सत्य कहै छी।

से बुझै छी। किन्तु ई बतहपनी माथमे अनलक के?

अहाँ।

कहै छी कि? ई अधर्म्म-बुद्धि देलहु अन्ततः हम अपनहि?

हँ, अहीं देलहुँ। प्रायः जानि बूझि क' नहि, परन्तु अहाँक छोड़ि आन केओ नहि।

एहि बेर विप्रदास निर्वाक विस्मयें देखैत रहलाह। वन्दना कह' लगलथीन्ह—जकरा अधर्म्म कहि क' अहाँ निन्दा करैत छिऐक तकरा त हम नहि मानै छी—हम जनै छी, जे धर्म्म कहि क' जे अहाँ स्वीकार कएने छी से खाली अहाँक संस्कार, अत्यन्त दृढ़ संस्कार, तैओ ओ ओहिसँ वेशी किछु नहि।

विप्रदास माथा हिला क' स्वीकार कएलथीन्ह—कहलथीन्ह भ' सकैछ, ई बात अहाँक सत्य वन्दना—ई हमर संस्कार, सुदृढ़ संस्कार। किन्तु मनुष्यक धर्म्म जखन एहि रूपक संस्कारमे परिणत होइत छैक, तखने से यथार्थ होइत छैक, तखन ओ होइत छैक सहज। तखन जीवनक कर्त्तव्यमे ओकरा कोनो ठोक-ठाक बाधा नहि दैत छैक, तकरा मानि लेलासँ अपना सङे लड़ाइ क' क' नहि मर' पड़ैत छैक। तखन बुद्धि भ' जाइत छैक शान्त, अवाधा जल-स्रोत जेकाँ सहजहिं बहैत रहैत छैक। प्राय: एकरे ओहि दिन कहैत छलहुँ अत्याज्य धर्म्म—एहिमे आओर परिवर्त्तन नहि।

कोनो दिन कि एहिमे परिवर्त्तन नहि ओझा जी ?

सएह त आइओ बुझै छी वन्दना। आइओ नहि सोचि सकै छी एहि जीवनमे एहिमे कोनो परिवर्त्तनक संभावना अछि।

एते काल पर वन्दनाक दूनू आँखि वाष्पाकुल भए गेलन्हि, विप्रदास सयत्ने हुनक हाथ घीचि क' कहलथीन्ह—किन्तु एहि परिवर्त्तनेक आवश्यकता कथीक ? अहाँकें स्नेह कएलहुँहें—अहाँक प्रति ओ स्नेह रहल हमरा हृदयमे—एखनसँ ओ देत हमरा दु:खमे सान्त्वना, दुर्व्वलतामे बल, आर जखन एकसरे भार नहि वहि सकब, तखन अहाँकें सोर करब। सेहो रहल आइसँ अहाँ ले राखल। आएब किने तखन ?

वन्दना बामा हाथें आँखि पोछि कहलथीन्ह आएब यदि अएबाक शक्ति रहत, रास्ता यदि तखनो खूजल रहत—नहि त नहि ने आबि सकैछी ओझा जी।

बात सूनि क' विप्रदास जेना चौंकि उठलाह, कहलथीन्ह से त ठीक—से

त ठीके। रास्ता यदि तखनो खूजल रहत। सभ दिनक हेतु यदि बन्द नहि भ' जाए। तखन धरि आएब। अभिमानसँ मुह नहि मोड़ि लेब।

वन्दना आँखिक जल फेरि पोछि क' कहलथीन्ह—हमर एकटा भिक्षा अछि ओझाजी, हमर ई बात ककरो कहिऐक नहि।

नहि, नहि कहबैक। कह' बाला लोक जे हमरा नहि, से त अहाँ अपनहि जनै-छी।

हँ जनै छी।

दूनू गोटे किछु काल चुप रहलाह। विप्रदास कहलथीन्ह—एहि विपुल संसारमे हम जे एतेक एसकर छी, अहाँ ई वात कोना क' बुझलहुँ वन्दना ?

वन्दना कहलथीन्ह—कोना कहू कोना क' बुझलहुँ। अहाँ सभक गामसँ खिसिआ क' चल अएलहुँ – अहाँ अएलहुँ सङे। गाड़ीमे ओ मातल साहेबक बात मन अछि ? बात कोनो वेशी पैघ नहि—तैओ मनमे भेल, जकरा सभकेँ हम सभ चारू भाग देखै छी, अहाँ ताहि दलमे नहि छी, एकसरे कोनो विषय कान्ह पर उठएबामे अहाँकेँ किछु नहि रोकैए। इएह बात ओहि दिन कहै छलाह द्विजू बाबू—मिलाकए देखलहुँ ककरोसँ अहाँ कोनो वस्तुक प्रत्याशा नहि करैत छी। रातिमे ओछाओन पर सुतल अहीँ मन पड़ैत छलहुँ—कहुना निन्द नहि होअए, शेष रातिमे उठि क' देखै छी नीचा पूजाक घरमे इजोत जरैत - अहाँ बैसल छी ध्यानमग्न। एक दृष्टिएँ देखैत भोर भए गेल। पाछाँ नोकर सभ केओ यदि देखए तेँ डरे पड़ा क' चलि गेलहुँ अपना कोठरी। अहाँक ओ मूर्ति आओर विसरलहुँहेँ नहि ओझाजी –हम आँखि मुनलेसँ ओ मूर्त्ति देखि सकै छी।

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह – देखने छलहुँ हमरा पूजा करैत ?

वन्दना कहलथीन्ह—पूजा करैत त अहाँक माएकेँ सेहो देखने छिअन्हि, किन्तु ओ से नहि—ओ भिन्न वस्तु। अहाँ ककर ध्यान करै छी ओझाजी!

विप्रदास कहलथीन्ह —ई बूझि क' अहाँ की करब ? अहाँ त से नहि करब ?

नहि, से नहि करब। खाली जानबाक इच्छा होइए।

विप्रदास चुप रहलाह। वन्दना कहए लगलथीन्ह—हमरा ओही दिन सर्वप्रथम मनमे भेल जे सभक बीचमे रहिओ क' अहाँ फूटे छी—अहाँ एकसर छी। जतेक ऊपर उठि क' अहाँक सङ्गी भेल जा सकैछ ओते ऊँच ओ सभ केओ उठिए ने सकैत अछि। आओर एकटा बात पुछू ओझा जी, कहब ?

की बात वन्दना ?

स्त्रीगणक प्रेमक अहाँकेँ प्राय: प्रयोजन नहि अछि, नहि ?

एहि प्रश्नक माने ?

माने नहि बुझै छिऐ, ओहिना पुछै छी। ई बूझि अड़ैए जे अहाँ ओ चाहिते नहि छी—अहाँ लेखेँ ई एकदम तुच्छ भ' गेलए। सत्ये कि नहि, कहू।

विप्रदास उत्तर नहि देलथीन्ह—खाली हँसी मुहेँ देखैत रहलथीन्ह।

नीचाक आङनमे सहसा गाड़ीक शब्द सुनना गेलैक—आओर पाओल गेल द्विजदासक कण्ठ। दोसरे क्षण आबि अन्नदा सोर कए कहलकन्हि—द्विजू अएलाहे भाइ।

एकसरे कि ? आ' कि आओर केओ सङ्गे अएलन्हिहेँ।

नहि, एकसरे त देखै छिअन्हि, आओर केओ सङे नहि छथीन्ह।

सूनि कए वन्दना व्यस्त भए गेलीह, कहलथीन्ह—जाइ छी ओझाजी, देखिऔन्ह ग. हुनका खएबा ले किछु ठीक छन्हि कि नहि, ई कहि ओ बाहर भए गेलीह।

प्रात:काल आबि द्विजदास जखन विप्रदासकेँ पाएर छूबि प्रणाम कएलथीन्ह तखन घरक एक कातमे बैसलि वन्दना पूजाक वस्तु-जात ठीक करैत

छलीह, द्विजदास कहलथीन्ह —अगिला पंचमीमे माएक पोखरिक यज्ञ। वृहत् व्यापार भाइ !

माएक काजमे त वृहत् व्यापार होइतहिँ छैक द्विजू, एहिमे चिन्ता कथीक ? कहि विप्रदास हँसलाह।

द्विजदास कहलथीन्ह—से होइ छैक। एहि बेर ताहि सङ वासूक निकेँ होएबाक कबुलाक पूजा सेहो—सभटा मिला कए एकटा अश्वमेघ यज्ञ। अध्यापक पुरोहितक विदाइक स्मारक तैआरी होइए—कुटुम्ब, स्वजन, अतिथि, अभ्यागतक जे संक्षिप्त तालिका भौजीक मुहे सुनलहुहेँ ताहिसँ आशंका होइए जे एहि बेर ओ सभ अहाँक धनमे किछु गम्भीर घाओ लगाओत। समय रहितहिँ सतर्क होउ।

वन्दना मुह नहि उठओलन्हि—किन्तु सम्हरि नहि सकलीह, हँसीसँ ओँघड़ाए लगलीह। विप्रदास विषयी लोक, विप्रदास कृपण, ई दुर्नाम खाली माएकेँ छोड़ि प्रचार करबाक अवसर पाबि केओ छोड़ैत नहि छन्हि। विप्रदास अपनहुँ एहि हँसीमे योग दए कहलथीन्ह—एहि बेर मुदा अहाँक हिस्सा, एहि बेर खर्च होएत अहाँक।

हमर ? कोनो आपत्ति नहि, यदि रहए त। किन्तु ताहि सङ्ग व्यवस्थामे किछु हेर फेर कर' पड़त। विदाइ जे सभ पाओत से टोल-पाठशालाक पण्डित सभ नहि, वरू पाठशालाक केवाड़ बन्द क' क' जकरा सभकेँ बाहर ठेल क' राखल जाइत छैक, से सभ।

विप्रदास तहिना हँसि कए कहलथीन्ह—पाठशालाक ऊपर अहाँक क्रोध किए ? लोकक मुहेँ खाली एकरा सभक निन्दे सुनलहुँहेँ, अपने कहिओ आँखिसँ देखलहुँहेँ नहि। ओकरा सभहिक दलमुक्त कहि क' प्रायः हमरा पर्य्यन्त अहाँक अमलमे भात नहि भेटत।

द्विजदास लग आबि आओर एक बेर पाएरक धूरा लए कहलथीन्ह—ई बात टा नहि बाजब, भाइ। अहाँ दूनू दलक बाहर, अथच तृतीय स्थान जे की, सेहो हम नहि जनै छी। खाली एतबे टा बूझि क' रखने छी, जे हमर भाइ हमरा लोकनिक विचार कोटिसँ बाहर छथि।

विप्रदास बातकेँ दाबि देलथीन्ह। पुछलथीन्ह—हमर दुःखित पड़बाक बात माए बुझलक त ने?

नहि। से बरू नीक होइत, पोखरिक प्रतिष्ठाक झंझट बन्द होइत।

आत्मीय कुटुम्ब सभकेँ अनबाक व्यवस्था भेलैक?

भ' रहल्ए। भूत, भविष्य, वर्त्तमान—सभकेओ। कन्या सहित अक्षय बाबूकेँ आमन्त्रण पत्र गेलन्हि अछि, माएक विश्वास—एहि वृहत् आयोजनमे मैत्रेयीक अग्नि-परीक्षा भए जएतन्हि। हमरा ऊपर भार पड़ल्ए हुनका सभकेँ ल' जएबा ले।

माए आओर ककरो ल' जएबा ले नहि कहलकए?

हँ अनु बहिनिकेँ ल' जाए पड़त। कालेजक विद्यार्थी सभमे यदि केओ जाए चाहए त ओहो सभ।

अहाँक भौजीक कोनो फरमाइस नहि?

नहि।

नीचामे फेरि मोटरक शब्द सुनना गेल। हॉर्नक चीन्हल आवाज कानमे पड़ैत देरी, वन्दना खिड़कीसँ मुह बढ़ा क' बजलीह—मौसीक गाड़ी। हम देखी ग ओझाजी। अहाँ सन्ध्यावन्दन सभ समाप्त क' लिअ, देर भेल जाइए—ई कहि ओ वाहर चल गेलीह।

हमहूँ जाइ छी, मुह हाथ धोइ ग। गोटेक घंटाक बाद आएब, कहि द्विजदासो चल गेलाह। विप्रदासक सन्ध्यावन्दन आदि समाप्त भेलन्हि, आइ खएबाक फल फलहरी दए गेलन्हि अन्नदा। मौसीक डेरासँ जे कन्या लेबए आइलि छथीन्ह, वन्दना हुनके ल' क' व्यस्त। ई खबरि ओएह देलकन्हि।

द्विजदास यथा-समय फीरि अएलाह। हाथमे हुनकबड़काटा फिरिस्त, कलकत्ताक आधा चीज कीनि क' गाड़ीमे बुक करा चलान लेब' पड़तन्हि। दूनू भाँइ इएह

सभल' क' जखन अत्यन्त व्यस्त, तखन दोआरिक बाहरसँ प्रार्थना अएलन्हि— ओझाजी, आबि सकै छी कि ? पाएरमे मुदा हमरा जूता अछि।

जूता ! अच्छा रहओ, आउ।

वन्दना घरमे आबि प्रवेश कएलन्हि। जाहि वेशमे वलरामपुरमे हुनका प्रथम देखल गेल छलन्हि—ई सएह वेश। विप्रदास अत्यन्त विस्मयसँ जिज्ञासा कएलथीन्ह—कतहु जाइ छी कि वन्दना ?

हँ मौसीक डेरा।

कखन फीरब ?

फिरबाक बात त जनै नहि छी ओझा जी—ई कहि, ओ निघुड़ि कए विप्रदासके प्रणाम कएलथीन्ह, किन्तु आन दिन जेकाँ पाएर छूबि कए नहि। मुह नहि उठओलन्हि—खाली कपार पर हाथ ठेका कए द्विजदासकेँ नमस्कार कएलथीन्ह—तकरा बाद घरसँ बाहर भए गेलीह।

●

# २०

द्विजदास पुछलथीन्ह—वन्दना हठात् चल गेलीह किए ? हमर आबि जाएबे एकर कारण कि ?

विप्रदास कहलथीन्ह—नहि । हुनक पिता टेलिग्राम कएलथीन्ह अछि, मौसीक डेरा पर फीरि क' जा कए रहै ले, जते दिन ओ बम्बइ फीरि कए नहि जाथि ।

किन्तु हठात् मौसी कत'सँ बहरएलथीन्ह । वन्दना हमरा सङ्गे प्रायः बातो ने कएलन्हि—सदरिकाल अढ़े अढ़ रहलीह । तकराबाद प्रातःकाल होइत-होइत देखै छी चल गेलीह, एकटा नमस्कार कए गेलीह ठीक, किन्तु से हो मुह फिरा क' । हमरा विरुद्ध हुनका किछु भेलन्हिहें कि ?

प्रश्नक उत्तर विप्रदास अनठा देलथीन्ह एवं मौसीक विषय संक्षेपमे बझा-कए कहलथीन्ह—हमर दुःखित पड़ला पर अनु बहिन डरें मौसीक ओतएसँ हुनका बजा क' ल' अनलकन्हि सेवा-सुश्रूषा करबा ले । बड़ कएलन्हिहें; हुनका आगाँ अहाँ सभकें कृतज्ञ होएबाक चाही ।

द्विजदास कहलथीन्ह—उचित नहि, से नहि कहै छी । किन्तु अहाँकें सेवा करबाक अवसर पाएब एकटा भाग्य । से मूल्य यदि ओहो अनुभव कए सकथि, त कृतज्ञता हुनकासँ हमरे सभकें पएबाक चाही ।

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह—अहाँ बड़ नराधम छी ।

द्विजदास कहलथीन्ह—नराधम किन्तु निब्बेधि नहि छी । हमर बात जाओ, परन्तु ई सेवा करबाक बात माएक कानमे गेलासँ ओ चिरकाल ले हमरा सभक माएकें कीनि लेतीह । से कि साधारण सौभाग्य ?

सूनि विप्रदास हँसलाह—माएकें एते दिन पर अहाँ चिन्हलिऐ—से कहू ?

द्विजदास कहलथीन्ह—यदि चिन्हनहुँ होइऐक, त खाली अहाँटा से बुझू। हम माएक कुपुत्र, हम कुलाङ्गार, ओकरा आगू हमर इएह परिचय रहओ। एकरा आओर हँटएबाक काज नहि, भाइ।

परन्तु किए ? माए अहाँ पर विश्वास क' सकए अहाँकेँ स्नेह क' सकए ई की अहाँ सत्ये नहि चाहै छी ? एहि अभिमानसँ लाभ कि, कहू त ?

लाभ कि से नहि जनै छी परन्तु लोभ विशेष नहि। हम अहाँक स्नेह पओने छी, पओने छी भौजीक प्रेम, इएह हमर सात राजाक धन; सात जन्म दूनू हाथे उड़ओनहुँ ने हम एकरा खतम क' सकै छी, किन्तु बाजब खतम करैत करैत, हुनक मुह आँखि लाजसँ लाल भए गेलन्हि। हृदयक ई सभ आवेग उच्छ्वास व्यक्त करबासँ ओ सभ दिन पराङ्मुख—चिर दिन निस्पृहताक आचरणसँ ओकरा सभकेँ दवने, घुमब फीरब हुनक प्रकृति; क्षणहिमे अपनाकेँ सम्हारि कए, कहलथीन्ह—ई सभ आलोचना निष्प्रयोजन। जकर असल प्रयोजन से अछि ई जे हमरा दृष्टिमे वन्दनाक चल जएबाक भाव बूझि पड़ल खिसिआएल सन। एकर अर्थ कहि दिअ।

अर्थ बूझि पड़ैए इएह जे जखन अहाँ आबि गेलहुँ, तखन हुनक काज नहि। एखनसँ सेवा सुश्रूषाक भार अहाँक ऊपर।

द्विजदास कहलथीन्ह—अहाँ हँसी करै छी ठीक, परन्तु हम कहै छी, ई सभ अङरेजी निविश छौँड़ी सभ एही दम्भसँ एक दिन मरत। अहाँकेँ रोगमे सेवा करबाक दिन जाहिसँ कहिओ आबए नहि—परन्तु अएला पर प्रमाण होइत देरी नहि होएत जे भाइक सेवामे द्विजूकेँ हराएब दशटा वन्दनाक साध्य नहि होएतन्हि। ई बात हुनका बुझा देबन्हि।

स्नेह-हास्यसँ विप्रदासक मुह प्रदीप्त भए गेलन्हि, कहलथीन्ह—अच्छा कहबन्हि, परन्तु विश्वास करतीह कि नहि, नहि कहि सकै छी। तखन हँ, से परीक्षाक प्रयोजन अहाँक भाइक आगाँ नहि खाली एक गोटाक आगाँ ओकर

आवश्यकता—से थीक माए। अहाँ सभक बुझारति होएब एकटा जरूरी, बुझलहुँ द्विजू ?

नहि भाइ, नहि बुझलहुँ। किन्तु माए जखन अछि तखन एक दिन बुझारति होएबे करत। किन्तु एखन तकर कोन प्रयोजन से नहि बुझै छी। हमरा कपारमे सभटा भेल उनटा, बाबू जन्म देलन्हि—परन्तु द' नहि गेलाह एकोटा फूटल कौड़ी, ओ देलहुँ अहाँ। माए गर्भमे धारण कएलन्हि, परन्तु पालन कएलन्हि अन्नदा बहिनि आ सभ भार वहन क' क' मनुष्य बनओलन्हि—भौजी, दूनू गोटे अनका घरसँ आबि क'। पिता स्वर्गः पिता धर्मः, स्वर्गादपि गरीयसी—एहि श्लोकक आढ़मे मनकेँ कतेक दृढ़ लखि सकै छी भाइ,—अहीँ कहू।

विप्रदास कहलथीन्ह—माएक बात ल' क' आओर ओकालती नहि करब, से अहाँ अपने एक दिन बुझबैक, परन्तु बाबूक विषयमे जे अहाँक धारणा अछि से मिथ्या। आधा सम्पत्तिक मालिक अहाँ छी।

द्विजदास कहलथीन्ह—भ सकैए जे सत्ये हो—परन्तु बाबूक मृत्युक बाद हुनकर 'विल' अहाँ जराक नहि फेकने छलिअन्हि ?

के कहलक अहाँकेँ ?

एते दिन तक जे हमरा सभ दिशिसँ वरावरि रक्षा करैत अइलीहे—हुनके मुहेँ सुनल अछि।

से भ' सकैए, परन्तु अहाँक भौजी त 'विल' पढ़ि क, नहि देखलन्हि—। एहनो त भ' सकैए जे बाबू अहीँकेँ समस्त सम्पत्ति द' गेल छलाह—ई देखि खिसिआ क' हम ओकरा जरा देलिऐक, असम्भव त नहि।

सूनि कए कौतुक हँसीसँ द्विजदास पहिने त खूब हँसलाह तखन कहलथीन्ह—भाइ अहाँ जे कहुखन मिथ्या नहि बजै छी ! द्वापरमे युधिष्ठिरक मिथ्या नोट कएने छलथीन्ह वेदव्यास, आर कलियुगमे अहाँक नोट क' क' रखताह द्विजदास। दूनू होएत बराबरि, जे होओ,

ई बूझल भेल दुर्विपाकसँ सभ किछु संभव होइत छैक। आओर पाप नहि बढ़ाएब, कहू एखनसँ हमरा की कर' पड़त ?

हमरा सभहिक कारबार, विषय सम्पत्ति सभटा देख' पड़त।

परन्तु किए ? कोन कारणसँ एते भार हम ऊघब ग, से हमरा बुझ दिअ। अहाँ एकसर नहि सकै छी कि ? असम्भव। हम निष्कर्म्मा, अपदार्थ भेल जाइ छी ? नहि, नहि भेल जाइ जी। तैओ माए पूछए त कहि देबैक, पदार्थक हमरा काज नहि, अपदार्थ रहिए क' हम दिन काटि लेब, ओकरा चिन्ता नहि कर' पड़तैक। अहाँक रहैत विषय सम्पत्ति, रुपया पैसाक बोझ हम नहि लेब। अन्तमे कि अहीं जेकाँ घोरतर विषयी भ' जाउ हमहूँ ? लोक कहत ओकरा नाड़ी बाटे रक्त नहि वहै छै—खाली बहै छै टाकाक स्रोत। किन्तु कहैत-कहैत ओ लक्ष्य कएलन्हि जे विप्रदास अन्य-मनस्क भए की जेना सोचैत होथि—हुनक बात दिशि कान नहि। एना साधारण तरहे नहि होइछ, ई स्वभाव विप्रदासक नहि, कने विस्मित भए कहलथीन्ह—भाइ, सत्ये कि अहाँ चाहै छी हम काज-कर्म्म देखी, जे हमर चिरदिनक स्वप्न से स्वदेश-सेवाकें तिलाञ्जलि द' दी ?

विप्रदास फेरि हुनका मुह पर दृष्टि आवद्ध कए कहलथीन्ह—तिलाञ्जलि दिअ, एहन बात त अहाँकें कहिओने कहलहुहें द्विजू। जे अहाँक स्वप्न से अहाँक रहओ, सभ दिन रहओ; तैओ कहै छी, संसारक भार अहाँ लिअ। परन्तु किए कहू। कारण नहि बुझलासँ हम किन्नहु ई बात नहि मानब।

विप्रदास कने काल मौन रहि कहलथीन्ह—एकर कारण त खूब स्पष्ट द्विजू। आइ हम छी, परन्तु एहन त भ' सकैए आओर हम नहि।

द्विजदास जोर द' क' बाजि उठलाह—नहि, नहि भ' सकैए। अहाँ नहि, कतहु नहि, से हम नहि सोचि सकै छी।

हुनक विश्वासक प्रवलता विप्रदासकें आघात कएलकन्हि—किन्तु हँसि क' कहलथीन्ह—संसारमे सभ होइछैं अओ—एहन कि असम्भवो होइ छैक।

इएह बात सोचै मे जे डर करैए से अपनाकेँ ठकैए। आओर एहनो त भ' सकैए जे हम क्लान्त, हमरा छुट्टीक दरकार—तैओ अहाँ नहि देब ?

नहि भाइ, नहि द' सकब। ताहिसँ हल्लुक अहाँक खाली आदेश पालन करब—कहू कखनसँ हमरा की कर' पड़त ?

आइसँ एहि संसारक सभ भार लेब' पड़त।

आइए सँ ? एते' जल्दी ? वेश, सएह होएत। अहाँक अवाध्य नहि होएब। ई कहि ओ चल गेलाह किन्तु सुनि सकलाह भाइक बात—अहाँकेँ कह' नहि पड़त, हम जनै छी, अहाँ हमर अवाध्य नहि छी।

द्विजदासक काज सुरू भए गेलन्हि। ओ अलस, अकर्मण्य, उदासीन, ई छलैक सभक सभ दिनसँ अभियोग, किन्तु भाएक आदेशसँ माएक व्रत-प्रतिष्ठाक सुवृहत् अनुष्ठान सम्पूर्ण सम्पन्न करबाक सभ प्रकारक भार जखन एकसर हुनके ऊपर आबि पड़लन्हि, तखन ई दुर्नाम अप्रमाणित करबामे हुनका वेशी समय नहि लगलन्हि। ई अनभ्यस्त गुरुभार जे ओ एते स्वच्छन्दे वहन कए सकताह—एतेक आशा विप्रदासो नहि कएने छलाह, किन्तु हुनक निरलस, सुश्रृङ्खल कर्म्म-पटुतासँ ओ जेना एकदम विस्मित भए गेलाह। जे कीनि कए पठएबाक, से गाड़ीमे लदा क' द्विजदास गाम पठओलन्हि, जे ल' जएबाक से सङे रखलन्हि। आत्मीय कुटुम्बकेँ एकत्र कए यथायोग्य समादर सहित विदा कएलन्हि—एतुक्का सभ काज समाप्त कए आइ गाम जएबाक दिन ओ भाएक अन्तिम उपदेश लेबाक हेतु घरमे पैसैत देरी देखै छथि बन्दनाकेँ बैसलि। ओहि जएबाक दिनक बाद आओर ओ नहि आइलि छलीह; हुनका विषयमे, काजक व्यस्ततामे द्विजदास विसरि गेल छलाह—आइ हठात् हुनका देखि क' ओ मने मन आश्चर्यित भेलाह—परन्तु से भाव प्रकाश नहि कए खाली एकटा मामूली नमस्कारक शिष्टाचार सम्पन्न कए बजलाह—भाइ, आइ रातुक गाड़ीसँ हम गाम जाइ छी, सङे जाइ छथि अक्षय बाबू, हुनक स्त्री, ओ कन्या मैत्रेयी। अहाँक कॉलेजक विद्यार्थी सभ प्रायः काल्हि-परसू धरि जाएत,

ओकरा सभके भाड़ा द' अएलिऐकए। अनू बहिनिके कि थहाँ अपने सङ्ग ल' जएबैक ? परन्तु तीन-चारि दिन सँ बेशी विलम्ब नहि करब।

हमरा कि जाइए पड़त ?

हँ ! नहि जाइ त एक जोड़ा खड़ाम कीनि क' द' दिअ जे जा क' भरत जेकाँ सिंहासन पर बैसाएब।

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह– फाजिल लोकक अग्रगण्य छी अहाँ। परन्तु आश्चर्य्य कएलहुँ अक्षय बाबूक बात ल' क'। ओ जएताह कोना ? हुनका त छुट्टी नहि, काज कामहि होएतन्हि जे।

द्विजदास कहलथीन्ह—से होएतन्हि किन्तु नोकसान नहि, दोसर दिशि ओहिसँ बहुत बेशी बात ई जे पैघ घरमे अपन बेटीके द' सकताह। रुपैया उाला जमाए, भविष्यमे कतेक भरोस बाला, कालेजक बान्हल महिनबारीसँ बहुत बेशी।

विप्रदास खिसिआ क' कहलथीन्ह—अहाँक बात जेहने रूढ़, तेहने कर्कश। मनुष्यक सम्मान राखि क' बात बाज' नहि अबैए ?

द्विजदास कहलथीन्ह—जनै छी की नहि से कने भौजीके पूछि लेबन्हि। सौजन्यक व्यर्थ अपव्यय कर' नहि अबैए, सएह हमर दोष।

सूनि कए विप्रदास बिना हँसने नहि रहि सकलाह। अहाँक एकटा गवाही भौजी, जेना तड़िपीबाक गवाही कलाल, पाशी।

द्विजदास कहलथीन्ह—से होअओ परन्तु अहूँक बात त मधु-मिश्रित नहि होइए भाइ। कारण हमहूँ तड़िपीबा नहि आ ओहो ताड़ी हमरा ले नहि ओरिआ दैत छथि। दै छथि अमृत, दै छथिन्ह चुप्पे चाप बहुतो लोकके अन्न—जे बहुतो पैघ लोक नहि क सकैए।

विप्रदास कहलथीन्ह—तकरा सभके करबोक काज नहि, आदर दुलार क'क' देओरके एकटा जानवर बनाएब छोड़ि पैघ लोकके आनो काज छैक।

वन्दना मुह नीचा क'क' हँस' लगलीह। द्विजदास ई लक्ष्य कए बजलाह, ई ल' क' आओर तर्क नहि करब भाइ। भौजी अहाँकेँ नहि छथि। हमरा सभहिक समारमे हुनकर स्नेह जे की, से अहाँ कहिओ नहि बुझलहुँ। आन्हरकेँ इजोत देखएबाक चेष्टा निष्फल। कने हँसि क' कहलथीन्ह—वन्दना अढ़सँ हँसैत छथि, परन्तु मौसीक डेराक बदला किछु दिन हमरा सभक अङनामे जा' क' रहितथि त हमर बात बुझितथि। परन्तु रहओ ई सभ आलोचना। अहाँ कहिआ गाम जाइछी, कहू ?

हम बड़ क्लान्त छी द्विजू माएकेँ बुझा क' कहि नहि सकबैक ?

विप्रदासक एहन निर्जीव निस्पृह कण्ठस्वर जे कहिओ सुनने नहि छलाह—चमकि क' देखलन्हि क्षीण हँसी तखनो ओष्ठ प्रान्त पर खेलाइत–किन्तु ई हुनक भाइ नहि, आन केओ। बिस्मय ओ व्यथासँ अभिभूत भए पुछलथीन्ह—विमारी कि एखनो छुटलए नहि भाइ ?

नहि, छुटि गेल।

तैओ माएक काजमे अहाँ गाम नहि जा सकब, ई बात माएकेँ बुझएबै कोना क' ? डरसँ ओ अपने चल आओत, ओकर सभ आयोजन नष्ट भ' जएतैक।

विप्रदास कने काल शोचि क' कहलथीन्ह—अहाँ हमरा कहिआ जाए कहै छी ?

द्विजदास कहलथीन्ह—आइ, कालिह, परसू जहिआ होअए। हमरा आज्ञा दिअ, हम अपनहि आबि क', आहाँकेँ ल' जाएब।

विप्रदास हँसी मुहेँ किछु काल चुप्पे रहि कहलथीन्ह—बेश सएह होएत, हम अपनहि जा' सकब' अहाँकेँ फीरि क' आब' नहि पड़त।

द्विजदासक चल गेला पर वन्दना पुछलथीन्ह— ई की भेलै ओझाजी, गाम जएबा ले आपत्ति किए कएलिऐक ?

विप्रदास कहलथीन्ह—कारण त अपना काने सुनलहुँ ?

सुनलहुँ परन्तु ओ जबाब अनका ले, हमरा ले नहि। कहू कोन कारणसँ गाम नहि जाए चाहै छी। अहाँकें कह' पड़त।

हम बड़ क्लान्त।

नहि।

नहि किए? क्लान्तिक हेतु त सभकें दाबी छैक, खाली हमरे टा नहि?

अहूंकें अछि—परन्तु से सत्ये रहैत त सभसँ पहिने हमहीं बुझितहुँ। आओर सभक आँखिकें ठकि सकै छिऐ, खाली हमरा आँखिकें नहि ठकि सकब। जएबा काल बहिनिकें चिट्ठी लीखि देबन्हि जे अहाँकें दुःखित पड़लापर कोनो काज भेलासँ हमरा जाहिसँ कहा पठबथि।

बहिनि अपने दुःख नहि बुझतीह, अहाँ आबि कए बूझब। ई बात सुनलासँ ओ खुशी नहि होएतीह। बन्दना कहलथीन्ह—खुशी नहि होएतीह सत्य परन्तु कृतज्ञ होइतीह। हमर बहिनि भेलीह ओहि युगक मनुष्य। स्वामी हुनका ताकि क' नहि बीछ' पड़लन्हि....भगवान देने छथीन्ह आशीर्वाद रूपें अञ्जलि पूर्ण कए। तहिआसँ स्वस्थ, सवल मनुष्यकें लइए कए हुनक काज, परन्तु ओहि पुरुषकें एक दिन हठात् खसि जाए पड़तैक से ओ बूझतीह कोना क'?

विप्रदास बात नहि कहि खाली हँसलाह।

वन्दना पुछलथीन्ह—अहाँ हँसलहुँ जे?

विप्रदास कहलथीन्ह—हँसी अपने अबैए वन्दना। एक दिन स्वामी ताकि कए बीछि लेबाक अभियानमे आइ तक जकरा सभकें अहाँ देखलहुँहें—तकरा बाहरो जे केओ अछि से अहाँ सभ सोचिए ने सकै छी। संसारक खाली साधारण नियमकें मानै छी, स्वीकार नहि कर' चाहै छी ओकर व्यतिक्रमकें। अथच एही व्यतिक्रमक जोरसँ धर्म्म अछि, पुण्य टिकल अछि, अछि काव्य-साहित्य; अछि अविचल श्रद्धा, विश्वास। ई नहि रहलासँ पृथिवी जे एके बेर मरुभूमि भए जाइत। एहि सत्यकें अहाँ सभ एखनो नहि जनै छी।

वन्दना विद्रूपक स्वरें कहलथीन्ह—ई व्यतिक्रम बुझी, अहाँ अपने थिकहुँ ओझाजी ? परन्तु ओहि दिन जे कहलहुँ हमरो अहाँ प्रेम करै छी।

से आइओ कहैछी। परन्तु प्रेम करवाक एके मात्र पथ अहाँ सभक दृष्टिमे अबैछ आओर सभ बन्द रहैछ—तें ओहि दिन हमर बात अहाँ नीक जेकाँ नहि बुझने छलहुँ। एक बेर देखि आउ ग द्विजू आओर हुनक भौजीकें। दृष्टि अन्ध नहि रहलासँ देखि सकब कोना क' श्रद्धा प्रेममे जा क' मीलि गेलैक अछि। रहस्य-कौतुकमे, आदर-आह्लादमे, निविड़ घनिष्ठतासँ ओ हुनक खाली भौजिए नहि, ओ हुनक बन्धु, ओ हुनक माए ! सएह सम्बन्ध त अहूँकें हमरा सङ्गे। ठीक तहिना क' हमरो किए ने अहाँ बूझि सकलहुँ, वन्दना ?

हुनक कण्ठस्वरमे गम्भीर स्नेहक सङ्गे मिलल छलन्हि तिरस्कारक सूर, वन्दनाकें से अत्यन्त कठिन आघात कएलकन्हि। कने काल चुप्पे अधोमुख भेलि बैसि ओ सहसा आँखि ऊपर उठा' बजलीह—हम अहाँकें गलती बुझने छलहुँ ओझाजी। हमर वहिनिकें यदि अहाँ वास्तवमे प्रेम करितिअन्हि तखन हमरा दुःख नहि छल—परन्तु से अहाँ हुनका नहि मानै छिअन्हि। अहाँ पालन करै छी खाली धर्म्म, खाली मानि कए चलै छी अपन कर्त्तव्य। कठिन अहाँक प्रकृति, ककरो प्रेम कर' नहि जनैत छी। जते झाँपि कए राखू ने, एक दिन ई प्रकाश पएबे करत।

कने काल स्थिर रहि बाजि उठलीह—आइ हमरो मिथ्या धारणा खतम भेल। शून्यमे हाथ बढ़ा क' मनुष्यकें ताक' जाहिसँ फेरि नहि जाइ, आइ अहाँ हमरा सएह आशीर्वाद दिअ।

विप्रदास सहास्ये हाथ बढ़ा' कहलथीन्ह—अहाँकें देलहुँ से आशीर्वाद। आइसँ अहाँक मनुषकें ताकब कि बीछव जाहिसँ बन्द होअए, जे अहाँक सभ दिनक हेतु, हुनके जाहिसँ भगवान अहाँकें दए देथि।

ई बात अपमान-कर परिहास बूझि वन्दना खिसिआ गेलीह, कहलथीन्ह—

अहाँ गलती बुझलहुहे ओझाजी--मनुष्यकेँ तकैत फीरब हमर काज नहि; ओ सभ आन केओ अछि। परन्तु हठात् आइ किए अएलहुहे से एखनो अहाँकेँ नहि कहलहुँ। एक दिशि वास्तवमे हमर बड़का गलती दूर भेल। एहि ठाम अहाँ सभक संश्रयमे आबि क' सोचने छलहुँ ई सभ आचार विचार वास्तवमे नीक; खाएब पीबमे छूआ-छूतिक विचार क' चलब, फूल तोड़ब, चानन घसब, पूजाक इन्त-जाम--आओर कते की छोट-पैघ एहन एहन काज—मनमे होइ छल, ई सभ सत्ये मनुष्यकेँ पवित्र करैत छैक, किन्तु एहि बेर मौसीक डेरा पर जा' क' ओ मूढ़ता हमर गेल। थोड़ेक दिन हम केहन वतहपनी कएने छलहुहे ओझा जी ! जेना सत्ये एहि सभमे विश्वास करै छी—जेना हमरा सभहिक शिक्षा, संस्कारक सङ्ग सत्ये एहिमे कतहु कोनो भेद नहि ! ई कहि ओ जोरसँ हँस' लगलीह।

शोचने छलीह ई बात सभ विप्रदासकेँ बेश आघात करतन्हि—परन्तु देखलन्हि—एकदम्मे नहि। हुनक छद्म हँसीमे ई (विप्रदास) प्रसन्न हँसी योग दए कहलथीन्ह हम जनै' छलहुँ वन्दना। अहाँकेँ मन नहि अछि, हम एक दिन अहाँकेँ कहने छलहुँ—ई सभ अहाँ ले नहि अछि, ई सभ अहाँ नहि करू। ओ मूढ़ता खतम भेल ई बूझि क' हम खुशिए भेलहुँ। अहाँ मनमे सोचने छलहुँ जे सूनि क' हमरा बड़ दुःख होएत—परन्तु से नहि। जे जकर स्वाभाविक नहि, से नहि कएलासँ हमरा दुःख नहि होइछ। अहाँकेँ त मन अछि, हम ककर ध्यान करै छी से अहाँ बूझ' चाहलहुँ त हम चुप रहि गेलहुँ। कहबामे कोनो आपत्ति नहि छल—किन्तु अकारण बूझि क'। अच्छा ई सभ बात एखन रहओ। अहाँक बम्बइ जएबाक कोनो दिन स्थिर भेल ?

अभिमानसँ वन्दनाक मुह आरक्त भए गेलन्हि, विप्रदासक प्रश्नक उत्तरमे खाली कहलथीन्ह—नहि।

ओहि दिन अहाँ अपन मौसीक भातिज अशोकक विषयमे कहने छलहुँ, ओ अहाँकेँ नीके लगलाहे। एहि कए दिनमे हुनका विषयमे आओर किछु बूझि

सकलहुँ ?

नहि ।

यदि अहाँ सभक विआह भइए जाए त हम आशीर्वाद देब, परन्तु मौसीक झोँकक कारणे किछु क' नहि बैसू । हुनकर तगादा पर कने सम्हारि क' चलू ।

वन्दनाक आँखिमे नोर भरि गेलन्हि परन्तु मुह नीचा कए सम्हारि क' बजलीह—अच्छा ।

विप्रदास कहलथीन्ह—हम परसू गाम जाएब । दू तीनि दिनसँ वेशी नहि रहि सकब । फीरि क' अएलाक बादो यदि अहाँ कलकत्तामे रही त एक बेर कने आएब ।

वन्दना मुह नीचे कएने छलीह—की एक टा उत्तर देलथीन्ह तकर स्पष्ट अर्थ नहि बुझएलैक ।

विप्रदास कहलथीन्ह—सुनलहुँ त हमर छुट्टी मञ्जूर भेल, एखनसँ सभ द्विजूक । संसारक घानीमे बाबू हमरा नेनहिसँ जोति देलन्हि—कखनो अवकाश नहि पओलहुँ कतहु जएबाक । आइ बूझि पड़ैए जेना निश्वास फेँकि क' बाँचब ।

एहि बेर वन्दना मुह उठा क' पुछलथीन्ह—सत्ये कि निश्वास फेकबाक एते आवश्यकता भ' गेलए ओझाजी, सत्ये कि अहाँ आइ एते श्रान्त छी ?

विप्रदास एहि प्रश्नक उत्तरकेँ टालि गेलाह, कहलथीन्ह एक टा बढ़िआ बात वन्दना, हमरा रहबाक काल अहाँ जे सेवा कएलहुँ तकरा विषयमे उल्लेख कए कहने छलिअन्हि जे अहाँक आगू हुनका सभकेँ कृतज्ञ होएब उचित । एकर आधा केओ नहि क' सकैत । द्विजू कृतज्ञता स्वीकार कइओ क' अहाँकेँ कह' कहलन्हिहेँ जे यदि ओ समय कहिओ आबए त भाइक सेबा करबामे हुनका आगाँ दशोटा वन्दनाक साध्य नहि होएतन्हि ।

वन्दना कहलथीन्ह—हुनको कहबन्हि जे हम ई शर्त्त स्वीकार क' लेलि-अन्हि—परन्तु भगवान करथि परीक्षाक दिन यदि आबए त हुनकासँ भेँट होअए ।

सूनि क' विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह—भेँट होएत वन्दना, ओ पछुआए बाला लोक नहि । हुनका अहाँ नहि चीन्हैत छिअन्हि ।

जनै छिअन्हि ओझाजी, नीक जेकाँ चिन्है छिअन्हि—अहाँक काजमे हुनक प्रतियोगिता करब वास्तवमे वन्दनाक शक्ति नहि पार पओतन्हि ।

भ्रातृ-गर्व्वसँ विप्रदासक मुह प्रदीप्त भए गेलन्हि—कहलथीन्ह जनै छी वन्दना, द्विजू हमर बड़ सद-साधु लोक छथि ।

अहूँसँ वेशी कि ?

हँ, हमरोसँ वेशी । ई बाजि, विप्रदास कने काल इतस्ततः कए कहल-थीन्ह—परन्तु ओ बजै छलाह जे अहाँ भरिसक हुनका ऊपर खिसिआएल छिअन्हि । हुनकासँ बजै छिअन्हि किए ने ?

बात करबाक काज नहि भेलए ओझाजी ।

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह—ताहीसँ त बुझै छी, जे अहाँ सत्ये खिसिआएल छिअन्हि । परन्तु एकटा बात अहाँके कहब वन्दना, द्विजूक व्यवहार रुक्ष छन्हि, बातो सभ सदरि काल मोलाएम नहि होइ छन्हि—परन्तु हुनक ई कर्कश आबरणक भीतर यदि कहिओ देखि पएबन्हि त बूझब जे एहन मधुर लोक आओर नहि। एहि बात पर विश्बास करू, एहन निर्भर कर' जोगर मनुष्य अहाँकेँ सहजहि नहि भेटत ।

वन्दना आओर एक दोसर दिशि देखैत रहलीह—उत्तर नहि देलथीन्ह, हठात् एके बेर उठि ठाढ़ि भए कहलथीन्ह—गाड़ी बड़ी कालसँ ठाढ़ छैक ओझाजी, हम जाइ छी । यदि रहि सकब, त अहाँक फीरि क' अएला पर भेँट करब । यदि नहि क' सकब, त इएह हमर शेष प्रणाम रहल । ई कहि निघुँड़ि क' पाएरक धूरा माथमे लगा' ओ जल्दीसँ विदा भेलीह । ओ विप्र-दासकेँ एकोटा बात कहबाक अवकाश नहि देलथीन्ह ।

ओसारा पार भए सिड़हीक मुह पर आबि क' सबिस्मये देखलन्हि—द्विजदास ठाढ़ भेल हाथ जोड़ने ।

वन्दना हँसि क' कहलथीन्ह—ई फेरि की ?

एकटा प्रार्थना अछि । भाइकें सङे नेने अहाँकें हमरा गाम जाए पड़त ।

हमरा सङे ल' जाए पड़त ? एकर कारण ?

द्विजदास कहलथीन्ह—कहब तें एत' ठाढ़ भेल छी । एक दिन बिना ककरो आह्वानसँ हमरा सभहिक दरबाजा पर पाएरक धूरा देने छलहुँ, आइ फेरि अहाँकें से कृपा कर' पड़त ।

वन्दना एक क्षण इतस्ततः कएलन्हि—तकरा बाद कहलथीन्ह परन्तु हमरा जएबा ले नोत के देलकए ? माए, कि भाइ, कि अहाँ अपने ?

हम अपनहि निमन्त्रण दैत छी ।

परन्तु अहाँ त ओहि आङनमे तृतीय पक्ष—कहबाक अहाँकें अधिकार की ?

द्विजदास कहलथीन्ह—आओर कोनो अधिकार नहि रहए, हमर बँचल रहबाक अधिकार त अछि । ओही अधिकारसँ ई आवेदन कएलहुँ अछि । कहू, मञ्जूर कएलहुँ ? नित्तान्त प्रयोजन नहि रहलासँ हम ककरो आगाँ कोनो प्रार्थना नहि करैत छिऐक ।

वन्दना बड़ी काल तक आन दिशि तकैत रहलीह, तकरा बाद कहलथीन्ह—अच्छा वेश, हम जाएब, परन्तु हमर मान अपमानक भार रहल अहाँक ऊपर ।

द्विजदास सकृतज्ञ कण्ठें कहलथीन्ह—हमर साध्य सामान्य अछि—तैओ लेलहुँ से भार ।

वन्दना कहलथीन्ह—कोनो विपत्तिक समय ई बात विसरब नहि ।

नहि, नहि विसरब ।

# २१

बहुत दिनक बाद विप्रदास निचला आफिसक घरमे आबि बैसलाह अछि। आगाँ टेबुल पर कागतक ढेर लागल छन्हि—कते दिनक कते काज बाँकी। शरीर क्लान्त, परन्तु द्विजुओक भरोसे छोड़ि देब नहि बनलन्हि। एकटा मोट जिल्द वान्हल बड़का बही लए पन्ना उनटबैत छलाह कि बाहरमे मोटरक हर्नक शब्द कानमे गेलन्हि आओर तखने पूब दिशुक खुजल केवाड़ बाटे वन्दना प्रवेश कएलथीन्ह। आइ एकसर नहि, सङमे एक अपरिचित युवक—पहिरने धोती आ कुर्त्ता, पाएरमे फूल बाला चट्टी, आ' कान्ह पर कने टेढ़ क' राखल मोट सादा चादरि। वयस तीसक नीचा, देहक गठन आओर कने नमौन रहलासँ अनायासे हुनका सुपुरुष—सुन्दर कहि सकैत छलिअन्हि। विप्रदास अभ्यर्थना करबाक हेतु कुर्शी छोड़ि ऊठि ठाढ़ भेलाह।

वन्दना कहलथीन्ह—ओझाजी, इएह थिकाह—मिस्टर चौधरी, वार-ऐट-लॉ। परन्तु एत' अशोक बाबू सेहो कहलासँ 'औफेँस' नहि लेताह एही शर्त पर अहाँसँ गप्प-सप करा देवा ले हम तैआर भेलिअन्हिहेँ आ सङ अनलिअन्हिहेँ। बात-चीत होएत, ताहिसँ पहिने अपन कर्त्तव्य क' लैत छी। ई कहि निघुँड़ि क' प्रणाम कए कहलथीन्ह—पाएरक धूरा हिनका सोझाँ नहि लेलहुँ, पाछाँ ई मनमे बूझथि जे हिनका लोकनिक समाजक हम एकटा कलंक थिकिअन्हि। परन्तु से कएलासँ अहूँ जाहिसँ अभिमानेँ ई नहि बूझू जे ई नव चालि हम अपन मौसीक ओहि ठाम सिखलहुँहेँ। ताहि परसँ अहाँक प्रसन्नताक मापो करब हमरे काज किने।

विप्रदास कहलथीन्ह—अपन मौसीक ओत' एही रूपेँ हमर गुण-गान करै छी कि? नवागत युवकक प्रति देखि क' कहलथीन्ह वन्दनाक मुहेँ अपनेक विषयमे एते सुनने छी जे दुःखित नहि रहलासँ हम अपनहि अपनेक ओत'

जइतहुँ गप्प-सप करै ले । देखिते बूझि पड़ैछ जे अपनेक मुह जेना कए बेर देखने होइ । नीके भेल, ओ बेशी विलम्ब नहि कए अपने सङ्‌े नेने अइलीह्‌ ।

ओ महाशय, प्रत्युत्तरमे की एकटा बात बाजए चाहलन्हि किन्तु ओहिसँ पहिनहि वन्दना शासनक भङ्गीसँ तर्ज्जनी उठा कए कहलथीन्ह—ओझाजी, अत्युक्ति, अतिशयोक्तिकेँ छोड़ि आब मिथ्याक कोटिमे पहुँच' पर अछि, आब थम्हू—नहि त हम झंझट करब ।

एकर अर्थ ?

एकर अर्थ इएह जे हमरा सभ, अति साधारणलोक जेकाँ सत्य-मिथ्या जे खुशी बना क' बाजब अहूँबुते होइए । अहूँ एकदम्मे असाधारण व्यक्ति नहि छी, ठीक हमरे सभ जेकाँ साधारण मनुष्य ।

विप्रदास कहलथीन्ह—नहि । सभकेँ पुछिऔक, अहाँक अनुमान अश्रद्धेय, अग्राह्य ।

वन्दना कहलथीन्ह—एहि बेर हुनके सभ लग अहाँकेँ ल' जाएब, आ बाहरक सिंह-चर्म्मकेँ फाड़ि क' फेकि देब । तखन असल मूर्त्तिकेँ ओ सभ देखि सकताह, हुनका सभक डर हँटतन्हि । हमरा आशीर्वाद द' क' कहताह—अहाँ राज-रानी होउ ।

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह—आशीर्वादमे आपत्ति नहि, एते तक जे हम अपनहुँ देब' ले प्रस्तुत छी, परन्तु आशीर्वाद त अहाँ सभ चाहै नहि छी, कहै छिऐ कुसंस्कार, कहै छिऐ ओ खाली बातक बात ।

वन्दना फेरि आङ्‌ुर उठा क' कहलथीन्ह—फेरि व्यंग करबाक चेष्टा ? के कहैए गुरुजनक आशीर्वाद हम सभ नहि चाहै छी—के कहैए कुसंस्कार ? एहि बेर वास्तवमे क्रोध होइए ओझाजी ।

विप्रदास गम्भीर भए कहलथीन्ह—सत्ये खिसिआइ छी कि ? तखन रहओ ई सभ अलाए बलाए बात । परन्तु हठात् सबेरे आविर्भाव किए ? कोनो काज अछि कि ?

वन्दना कहलथीन्ह—बहुत रास। पहिल—अहाँसँ कैफियत लेव; किए बिना हमरा हुकुमसँ अहाँ नीचा आबि क' काज सुरू कएलहुँ ?

कएलहुहें नहि, करबाक संकल्प कएने छलहुँ मात्र। हे इएह रहल—कहि मोटका वही विप्रदास दूर ठेलि देलन्हि।

वन्दना प्रसन्न मने कहलथीन्ह—कैफियत् 'सटिस्फैक्टरी' अवाध्यता मार्जना कएल गेल। भविष्यमे एहिना अनुगत रहलासँ हमर काज चलि जाएत। एहि बेर मन द' क' सुनू। ताबत अहाँ हिनका सङ्गे गप्प करू। मुखर्जी परिवारक ऐश्वर्य्य-विवरण, प्रजा-शासनक बहुत किछु रोमाञ्चकर गप्प, जे खुशी होअए। हम ऊपर जाइछी, अनु बहिनिकें ल' क' सभ बस्तु ओरिअबै ले। कालिह भिनसुरुका गाड़ीसँ हम सभ बलरामपुरक यात्रा करब, दिने दिन चल जाएब जाहिसँ ठंढा लगबाक डर नहि रहत। मिस्टर चौधरी मन होए-तन्हि त सङ्गे जएताह—पैघ घरक पैघ रूपें यज्ञ-याप, क्रिया-कलाप, दीयतां भुज्यताम् घटापटा कहिओ आँखिसँ देखने नहि छथि—आ' आर देखबे कत करताह ?

विप्रदास कहलथीन्ह—अहाँ अपने निश्चय बहुत देखने छी।

वन्दना कहलथीन्ह—ई प्रश्न सम्पूर्ण अवान्तर ओ भद्र-रुचि विगर्हित। ओ नहि देखलन्हिहें इएह बात होइ छल। अच्छा सूनू। हुनका अनुमति देलिअन्हि अछि, सङ्गे जएबाले, ताहिसँ एते खुशी भेलाहे जे तकरा बाद हमरा सङ्गे ल' क' बम्बइ पर्य्यन्त पहुँचा द' अएबाक बचन देलन्हिहें।

विप्रदास मुह अत्यन्त गम्भीर कए बजलाह—कहै छी की ? एतेक त्याग करब हमरा लोकनिक समाजमे नहि भेटत—खाली अहीं सभमे पाओल जाइछ। सुनि क' आश्चर्य लगैए।

वन्दना कहलथीन्ह—लगबाक त बाते छैक। जप-तप सेहो अछि आ सोलहो आना हिंसा सेहो अछि। ई कहि आँखिक दृष्टिसँ एक बेर विद्युत प्रकाश करैत बाहर होइत छलीह कि विप्रदास हुनका सोर कए कहलथीन्ह— ई जेना

खिस्सा जे छैक—कुकुरक भुस्सीक बीचमे बैसि जाएब—ओहने सन। अपनो ने खाएत आ बड़द जे आनि क' खएतैक सेहो ने खाए देतैक। मनुष बँचैए कोना क' कहू त।

वन्दना दोआरि लग ठाढ़ि भए कृत्रिम रोषसँ भ्रूकुञ्चित कए बजलीह—ठीक हमरे सभ जेकाँ साधारण, किछु भेद नहि, लोक सभ व्यर्थमे डर करैए।

एहि बेर अहाँ जा क' डर हटा द' अबिऔक।

तैँ त जाइछी। आओर भूसीक सङे एक गोटाक उपमा देबाक दुर्बुद्धिक सेहो बदला ल' आएब। ई कहि वन्दना दीप्त कटाक्षसँ फेरि विद्युत वर्षण करैत जल्दीसँ अदृश्य भए गेलीह।

विप्रदास कहलथीन्ह—मिस्टर....

अशोक सविनयेँ बाधा देलथीन्ह—नहि, नहि ई नहि चलत। ओकरा छोड़ि देलासँ कोनो आपत्ति नहि होएत, तैँ त धोती चादरि आ' चट्टी जूता पहिरि क' अएलहुँ अछि, विप्रदास बाबू। ओहो भरोस देने छलीह जे—

विप्रदास मने मन खुशी भए कहलथीन्ह—नीके भेल अशोक बाबू, सम्बोधन सहज भावेँ रहल। देहाती-गामक लोक, ई सभ हमरा मनो ने रहैए, अभ्यासो ने अछि, आब स्वच्छन्द रूपेँ गप्प जमत। सुनलहुँ, हमरा सभक देहातक घर पर जाए चाहै छी—सत्ये यदि जाइ त कृतार्थ होएब। हमरा सभक परिवारक कर्त्री छथि हमर माए, हुनका दिशिसँ हम अपनेकेँ ससम्मान आमन्त्रण करै छी।

विप्रदासक विनय-वचनसँ अशोक पुलकित चित्तेँ कहलथीन्ह—निश्चय जाएब, निश्चय जाएब। कते दरिद्र अनाथ, आतुर लोक सभआओत निमन्त्रणमे, कते अध्यापक पण्डित उपस्थित होएताह—विदाइ लेताह, अनन्दोत्सवमे कते खाएब, पीब, कते आएब जाएब, कते तरहक आयोजन—

विप्रदास हँसि कए कहलथीन्ह—ई सभ बढ़ाओल बात अशोक बाबू, वन्दना खाली रहस्य बनओलन्हिहेँ !

ई कएलासँ हुनका लाभ की होएतन्हि—विप्रदास बाबू ?

एक टा त हमरा सभकेँ अप्रतिभ करब। बलरामपुरक मुखर्जी सभ पर ओ मने मन खूब खिसिआइल छथि। दोसर लाभ अपनेकेँ कहुना घिसिआ क' बम्बइ ल' जाएब।

अशोक कहलथीन्ह—प्रयोजन भेलासँ बम्बइ तक हमरा सङे जाए पड़त एहन बात छैक, परन्तु मुखर्जी सभ पर ओ खिसिआइलि छथि, अपने सभकेँ ओ लज्जित कर' चाहैत छथि—एहन भइए ने सकैए! कालिहओ बलरामपुर जाएब स्थिर नहि छलन्हि परन्तु अपनहि सभहक विषय ल' क' हुनका मौसीक सङे झगड़ा भ' गेलन्हि। मौसी कहलथीन्ह—विप्रदासक माए सर्व्व-साधारणक हेतु यदि जलाशय खुनओलन्हिहेँ—त तकर प्रशंसा करै छिअन्हि—परन्तु एतेक घटा आडम्बर क' क' प्रतिष्ठा करबाक कोनो अर्थ नहि—ओ कुसंस्कार। कुसंस्कारमे योगदान करब हम अन्याय बुझैत छी। वन्दना कहलथीन्ह—ओ सभ पैघ लोक छथि, षैघ लोकक काज कर्तवतामे किछु घटा, आडम्बर होइतहिँ छैक मौसी, एहिमे आश्चर्य्य की छैक? हमर पीसी कहलथीन्ह—पैघ लोकक अपव्ययमे आश्चर्य्य किछु नहि छैक, परन्तु ओ त खाली अपव्ययेटा नहि, ओ कुसस्कार से हो। अहाँक जाएबेमे हमरा आपत्ति अछि। वन्दना कहलथीन्ह—परन्तु हम त एकरा कुसंस्कार नहि बुझैत छिऐक मौसी। वरू इएह मनमे होइए—जे नहि जनैछी, ने जानबाक चेष्टा करैछी तकरा विषयमे एकदम बिचार करबे एक टा कुसंस्कार थीक। ई जबाब सूनि पीसी क्रोधसँ जर' लगलीह, पुछलथीन्ह—अहाँक बाबू बिचार देलन्हिहेँ?

वन्दना कहलथीन्ह बाबू मना नहि कएलन्हिहेँ से हम जनै छी। बहिनिक स्वामी अस्वस्थ—हुनका सङे जएवाक भार पड़लए हमरा ऊपर।

ओ भार देलक के, सुनि? ओ अपने बूझि पड़ैए? प्रश्न सूनि क' वन्दना जेना अवाक् भए देख' लगलथीन्ह; हमरा बुझि पड़ल जे हुनक रक्त जोरसँ ऊपर चढ़ि रहल छन्हि, आब की हठात् किछु बाजि उठतीह—परन्तु से सभ किछु ने कएलन्हि; खाली आस्ते-आस्ते कहलथीन्ह—जकरा जे खुशी, से

पुछलासँ जे हमरा जबाव देबहि पड़त, नेना अवस्थासँ हमरा ई शिक्षा नहि देल गेलए, मौसी। परसू भिनसरू पहर ओझाजीकेँ ल' क' हम बलरामपुर जाएब—ऐहिसँ बेशी अहाँकेँ किछु नहि कहब।

मौसी खिसिआ क' ऊठि गेलीह—हम कहलिअन्हि—हमरा सङे ल' जाएब ? हमरा बड़ इच्छा होइए जे ई सभ आचार अनुष्ठान आँखिसँ देखी। वन्दना कहलन्हि—परन्तु ई सभ जे कुसंस्कार अशोक बाबू ? आँखिओसँ देखलासँ जे अहाँ सभक जाति जाएत। कहलिअन्हि—यदि अहाँ सभक जाति नहि जाएत, त हमरो नहि जाएत। आओर यदि जाए त दूनू गोटाक एके सङे जाओ—एहिमे हमरा कोनो क्षति नहि।

वन्दना कहलन्हि—अहाँ त विश्वास नहि करै छी, आँखिसँ देखि कए मने-मन हँसब जे।

पुछलिअन्हि—अहीँ कि विश्वास करै छी ?

ओ कहलन्हि—नहि, नहि करै छी, परन्तु ओझाजी करै छथि। हम खाली इच्छा करै छी जे हुनके विश्वास जाहिसँ गोटेक दिन हमरो विश्वास भ' जाए। विप्रदास बाबू, वन्दना अपनेकेँ मने-मन पूजा करै छथि, एते भक्ति ओ संसारमे ककरो ने करै छथीन्ह।

ई बात अज्ञात नहि, नवो नहि, तथापि दोसरक मुहे सूनि कए हुनक अपन मुँह एके बेर फक् भए गेलन्हि।

कनेक कालक बाद पुछलथीन्ह—अपने सभक विआह-प्रस्ताव जे छल से कि स्थिर भए गेल ? वन्दना अपन सम्मति देलन्हि ?

नहि। किन्तु असम्मतिओ नहि स्पष्ट कएलन्हिहें।

ई आशाक बात अशोक बाबू। चुप रहनाइ, अधिक क्षेत्रमे सम्मति-सूचक।

अशोक सकृतज्ञ दृष्टिएँ कने काल देखि कहलथीन्ह—नहिओ भ' सकैछ। अन्ततः हम एखन सएह बुझै छी। कने थम्हि कए कहलथीन्ह—मुश्किल त

ई अछि जे हम छी गरीब, आ वन्दना छथि धनवती। धनमे हमरा लोभ नहि अछि से नहि, परन्तु पीसी जेकाँ इएह टा हमर एक मात्र लक्ष्य नहि अछि। ई बात हुनका बुझएबन्हि कोना जे पीसीक सङे हमहू कुचक्रमे नहि छी।

एहि व्यक्तिक प्रति मने-मने विप्रदासके किछु अवहेलाक भाव छलन्हि; हुनक बाजबाक सरलतासँ ई भाव किछु कम भेलन्हि। सरल कण्ठे कहल-थीन्ह—पीसिक षड़यन्त्रमे अपने जे योग नहि देने छी, ई बात सत्य रहलासँ वन्दनाँ निश्चय एक दिन बुझबे करतीह—तखन प्रसन्नो होइत हुनका देरी नहि होएतन्हि, धनक परिमाण ल' क' सेहो तखन वाधा नहि होएत।

अशोक उत्सुक कण्ठे पुछलथीन्ह—ई कि निश्चय जनै छी विप्रदास बाबू ?

एकर उत्तर देबामे विप्रदास द्विधामे पड़लाह–कने शोचि क' कहलथीन्ह—हुनका जते किछु चिन्है छिअन्हि, ताहिसँ बूझि पड़ैए।

अशोक कहलथीन्ह—हमरा की मन होइए बुझलहु ? मन होइए हुनक अपनो प्रसन्नतासँ वेशी हमरा प्रयोजन अछि अपनेक प्रसन्नता। ओ जाहि दिन पाएब, हमरा नहि भेटबा ले किछु नहि रहत।

विप्रदास सहास्ये कहलथीन्ह—हमर प्रसन्न दृष्टिसँ ओ स्वामी निर्व्वाचन करतीह—एहन अद्भुत इङ्गित अपनेके देलक के ? बन्दना अपनहि ? यदि देलन्हिहें त निछक्क परिहास कएलन्हिहें—इएह कहब अशोक बाबू।

नहि परिहास नहि, ई सत्य।

के कहलक ?

अशोक कने काल चुप रहि कहलथीन्ह, ई सभ मुहसँ बजवाक वस्तु नहि, विप्रदास बाबू। ओहि दिन मौसी सङे झगड़ा क' क' वन्दना हमरा घरमे अइलीह—एना कहिओ ने ओ करै छलीह। एकटा कुर्शी घीचि कए बैसि गेलीह आ कहलन्हि—हमरा बम्बइ पहुँचा देब' पड़त। कहलिअन्हि—जखने हुकुम देब तखने प्रस्तुत। कहलन्हि—जाइ छी बलरामपुर, समय भेला पर कहब।

कहलिअन्हि—वेश कहब; परन्तु मौसीकें एना खिसिआ किए देलिअन्हि। हुनका सभक ई पूजा पाठ, होम जाप, ठाकुर देवता, एहि सभने सत्ये त अहाँ विश्वास नहि करैत छी, तैओ कहलन्हि जे मिथ्या नहि कहै छी अशोक बाब, हुनके सभ जेकाँ यदि सत्य विश्वास कहिओ ग्रहण क' सकब त अपनाकें धन्य बूझब। ओझाजीक सेबा करै छलहुँ—हुनकासँ विश्वासक एक दिन वर माङि लेव। तकरा बाद सुरु भेल अपनेक बात। एते श्रद्धा जे ककरो केओ करैत छैक, ककरो शुभ कामना ले' जे केओ एना भ' क' अनुक्षण मग्न रहि सकैछ एहिसँ पहिने कहिओ कल्पनोने ने कएने छलहुँ। बाते बात ओ एक दिनक एक घटना उपस्थित कएलन्हि। तखन अपने अस्वस्थ छलहुँ। ओहि दिन अबेर भए गेल छलैक, जल्दीसँ अबै काल की एकटा वस्तु हुनका पाएरमे ठेकलन्हि—जतेक अपनाकें बूझब' चाहलन्हि—जे ओ किछु नहि ओहिसँ पूजामे किछु व्याघात नहि होएतन्हि—ततबे मोन अबूझ होअ लगलन्हि—कहुना क' अपनेक काजमे जाहिसँ विघटन स्पर्श नहि करए। तें हुनका फेरिसँ स्नान कए आबि सभटा इन्तजाम कर' पड़लन्हि। अपने परन्तु ओहि दिन खूब विरक्त भ' क' कहने छलिअन्हि—वन्दना, सबेरे यदि अहाँक निन्द नहि टुटैए, त अन्नदा बहिनिकें दिऔ पूजाक वस्तु ठीक करै ले। मन पड़ैए विप्रदास बाबू ?

विप्रदास कहलथीन्ह—पड़ैए।

अशोक कहए लगलथीन्ह—एहिना कते दिनक कते छोट-पैघ बात। विषय विषय पर गप्प करैत-करैत राति बड़ भ' गेलैक, अंतमे कहलन्हि—मौसी हुनका सभक कुसंस्कारपर व्यङ्ग कएलथीन्ह अछि, हम अपनहुँ एक दिन कएने छिअन्हि अशोक बाबू, परन्तु—आइ—कोन नीक, कोन अधलाह, बुझबामे द्विधा होइछ। खएबा पीबाक विचार त कहिओ कएलहुँ अछि नहि परन्तु एखन ओहिमे बाधा बूझि पड़ैछ। बुद्धिक द्वारा लाज होइए, लोकक आगाँ नुकब' चाहै छी, परन्तु जखने मन होइए जे ई सभ वस्तु हुनका नीक नहि लगैछन्हि—तखने मन ओहि दिशिसँ जेना विमुख भ' जाए।

सुनैत-सुनैत विप्रदासक मुह पांशु भए गेलन्हि—जोरसँ हँसबाक चेष्टा कए बजलाह—वन्दना, बुझि पड़ैए—एखन खएबामे छूआछूतिक विचार आरम्भ कएलन्हिहें कि ? परन्तु ओहि दिन जे आवि क' दम्भक सूरे बाजि गेलीह—मौसीक डेरा पर जा क' ओ अपन समाज, अपन सहज-बुद्धि, फेरि पओलन्हि, मुखर्जीक घरक सहस्र प्रकारक कृत्रिमतासँ निष्कृति पाबि बाँचि गेलीह !

अशोक विस्मयसँ की एकटा बात बाज' लगलाह परन्तु विघ्न भेलन्हि। पर्दा हँटा क' वन्दना प्रवेश कए बजलीह—ओझाजी, सभटा सरिआ क' राखि देलहुहें। काल्हि भिनसुरका—साढ़े नओ बजेक गाड़ी। पूजा तूजा—फाजिल काज सभ जे अछि जे ओहिसँ पहिनहि समाप्त क' लेब। एतेक विड़म्बना सेहो भगवान अहाँक कपारमे लिखने छथि।

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह—सएह होएत बूझि पड़ैए।

बूझि पड़ैए नहि, निश्चय। शोचै छी, ई सभ, यदि केओ, अहाँक छोड़ा सकैत। हँ, त सुनू। काल्हि भिनसरू पहर जे खाएब तकर इन्तजाम क' देलहुहें—हम अपने आबि क' खोआएब—तकरा बाद कपड़ा लत्ता पहिराएब, तकरा बाद सङ क' क' गाम ल' जाएब। दुखिताह लोक छी किने, तें। चलू अशोक बाबू, आब हम सम चली। पाएरक धूरा परन्तु आब नहि लेब ओझा जी, ओ कुसंस्कार। शिष्ट समाजमे चल' बाला नहि, ई कहि ओ हँसि कए दूनू हाथ माथमे ठेका, बाहर भए गेलीह।

# २२

दोसरा दिन सवेरे सभ केओ बलरामपुरक हेतु यात्रा कएलन्हि। अपन दलानक लग अबैत देखलन्हि जे द्विजदास प्राय: राजसूय यज्ञक काण्ड ठाढ़ कए-लन्हि अछि। दलानक आगाँ परती पर कते फूस (खड़) क घर तैआरी भेल्हए—कते भ' रहलए। एही बीचमे कतेक आहूत, ओ अनाहूत व्यक्तिसँ परिपूर्ण भए गेल अछि, एखनो कतेक लोक जे अओताह तकर कोनो ठेक.न पाएब कठिन।

विप्रदासकेँ देखि माए चमकि उठलथीन्ह—ई की देह भ' गेल'है हए!—एकदम आधा भ' गेलाहे। विप्रदास पाएर छूबि प्रणाम कए कहलथीन्ह—आर डर नहि माए, आब नीक होएबामे देरी नहि लागत।

परन्तु कलकत्तो फीरि क' हम तोरा नहि जाए देबह, कतबो काज रहह ने। एखनसँ अपने आँखिक सोझाँ रखबह।

विप्रदास हँसी मुहेँ चुप रहलाह।

वन्दनाक हुनका प्रणाम कएला पर दयामयी आशीर्वाद दैत कहलथीन्ह—आउ बाउ, आउ, निके रहू।

परन्तु कण्ठस्वरमे हुनका उत्साह नहि छलन्हि—बूझल भेलैक जे ई साधारण शिष्टाचार—ओहिसँ वेशी किछु नहि। अएबाक निमन्त्रण नहि देल गेलन्हिहेँ, ओ अपने इच्छासँ अइलीह अछि—माए इएह बुझलथीन्ह। ओ मैत्रेयीक बात उठओलन्हि। कन्याक गुणक सीमा नहि—दयामयीकेँ दु:ख एतबे छन्हि जे एक मात्र मुहसँ ओकर सभ प्रकारक गुणक वर्णन करब सम्भव नहि। बजलीह—बाप ओकरा कोन विषय जे नहि सिखओने छैक—एहन कोनो काज नहि जे ओ नहि जनैए। बहुआसिनिक देह नीक नहि छन्हि—तेँ सभ टा ओ अपने ऊपर उठा लेलक्ए। भाग भेल जे ओकरा एत' बजओलिऐ विपिन, नहि त की जे होइत—हम त ताही डरे बीतल जाइ छी।

बिप्रदास विस्मय प्रकाश करैत पुछलथीन्ह—की बजै छेँ माए?

दयामयी कहलथीन्ह—राति कहै छिअह बाउ। ओकर काज कर्म्म देखि क' बूझि पड़ैए मालिक बोझ जे हमरा कपार पर पटकि क' चल गेलाह आब तकर चिन्ता नहि। बहुआसिनि ओकरा सङ्गी पाबि कए सभ भार खूब नीक जेकाँ उठा सकतीह—कोनो गड़बड़ी नहि होएतन्हि। एहि वर्ष त आर नहि भेल मुदा यदि बँचलहु त अगिला वर्ष कैलाश-दर्शन ले' जएबे टा करब।

बिप्रदास चुप रहलाह दयामयीक बात प्रायः मिथ्या नहि, मैत्रेयी प्रायः एहने प्रशंसाक योग्य, परन्तु यशोगानोक त मात्रा होइ छैक, स्थान छैक। हुनक लक्ष्य जे होइन्ह, उपलक्ष्यो झाँपल नहि रहलन्हि। एकटा अकरुण; असहिष्णु क्षुद्रता हुनक सुपरिचित्त मर्य्यादामे आघात कएलकन्हि। हठात् बेटाक मुह दिशि देखि अपन ई गलती बूझि सकलीह परन्तु तखने कोना क' जे प्रति-कार करतीह से नहि बुझबा जोगर भेलन्हि। द्विजदास काजक भीड़मे आन ठाम बाझल छलाह, खबरि पबैत देरी दौड़लाह।

विप्रदास कहलथीन्ह—की विराट काण्ड कएलहुँहें द्विजू, सम्हारब कोना?

द्विजदास कहलथीन्ह—भार अहाँ अपने त नहि लेलहुहें भाइ, देलहुहें हमरा ऊपर; अहाँके डर कथीक?

वन्दना एकर जबाव देलथीन्ह—हुनका चिन्ता होइ छन्हि खर्चाक, यदि सभटा रुपैआ प्रजासँ नहि ओसूल होएतन्हि त तहवीलमे हाथ पड़तन्हि। एहि ले डर नहि होएतन्हि द्विजू बाबू?

सभ हँस' लागल। एवं एहि हँसीमे माएक मनोभार किछु कम भेलन्हि, स्मित मुहें कृत्रिम कण्ठ-स्वरें बजलीह—ओकरा खिसिआबै ले अहूँ कि अपना बहिनिए जेकाँ छी बन्दना? ओ हमर परम धार्मिक बेटा, सभ मिलि क' ओकरा झूठे व्यंग कएलामँ हमरा नहि सहि होइए।

वन्दना कहलथीन्ह—व्यंग मिथ्या रहलासँ लोकके लगै नहि छै—ताहि लें क्रोध करबाक कोनो काज नहि।

माए कहलथीन्ह—ओ खिसिआइत त नहि अछि, खाली सूनि कए हँसँए।

वन्दना कहलथीन्ह—तकरो कारण छैक माए। ओझाजी जनैत छथि जे पेटमे खएलासँ पीठपर सह' पड़ैत छैक, खिसिआएब मूर्खता। ठीक नहि ओझाजी ?

विप्रदास हँसि क' कहलथीन्ह, ठीके त। मूर्खक बात पर क्रोध करब निषेध—शास्त्रमे ओहि हेतु अन्य व्यवस्था छैक।

वन्दना कहलथीन्ह—बहिनि हमरासँ वेशी मूर्ख। बुझि पड़ैए अहाँक शास्त्रकें एही व्यवस्थाक डरें सभ अहाँकें एते भक्ति करैए। ई कहि ओ हँसि क' मुह फिरा लेलन्हि।

द्विजदास हँसी दाबि क' आन दिशि देखैत रहलाह आओर दयामयी अपनहु हँस' लगलीह। कहलथीन्ह—वन्दना धरि बड़ विचित्र छथि, हुनका सङे ककरो बात चलव कठिन।

कने थम्हि कए गम्भीर भ' कहलथीन्ह—परन्तु देखू बाउ, मालिकक समयमे प्रजा सभक ऊपर एहि तरहक भार एकदम्मे जे नहि छलैक—से हम नहि कहब, परन्तु अहाँकें त कहने छी जे विपिन छथि हमर धार्मिक पुत्र, जे अन्याय, जे हुनकर यथार्थ प्राप्य नहि, से ओ किन्नहु ने लेताह। परन्तु डर हमरा होइए द्विजूक। ओ ई क' सकैत अछि।

विप्रदास प्रतिवाद करैत वजलाह—ई तोहर अन्याय बात होइ छौ माए। द्विजू करताह प्रजा-पीड़न। प्रजाक पक्ष ल' क' ओ हमरा सभक विरुद्ध माल-गुजारी बन्द कर' कहने छलथीन्ह से तोरा मन नहि छौ ?

माए कहलथीन्ह—मन अछि तें त कहै छिअह। जे न्याय देबामे रोकै छैक, अन्याय-पूर्वक लेब ओकरे बुते होएतैक, विपिन—अनका बुते नहि होएतैक। ओकरा दया माया छैक, एक रत्ती बेशिए मात्रामे छैक, ई मानै छी, परन्तु तैओ एक दिन देखिहह, ओकरे हाथे प्रजा सभ बेशी दुःख पाओत।

नहि माए, दुःख नहि पाओत, तों देखिहें ।

दयामयी कहलथीन्ह—भरोस अछि खाली तों छह, तकरे । नहि त एहन केओ नहि जे ओकरा ठीक रास्ता पर चलाओत । नहि त ओ अपनो एक दिन डूबत, अनको डुबाओत ।

द्विजदास एते काल चुप्प छलाह, एहि बेर बजलाह नहि । तोहर अन्तिम बात ठीक नहि भेलहु माए । अपने डूबब से प्रायः एक दिन सत्य होएत—परन्तु अनका नहि डुबएबैक, ई तों निश्चय बूझि जो ।

माए कहलथीन्ह—इहो बात सुखक नहि द्विजू, ओहो आनन्दक बात नहि । असलमे तोरा चलएबाले एकटा लोक चाही ।

द्विजदास कहलथीन्ह—सएह बात स्पष्ट क' क' बाज ने जे सभक चिन्ता खतम होउक । हमरा चलएबाले एकटा लोकक आवश्यकता । परन्तु से जोगाड़ त तों कइए एले हें माए ।

माए कहलथीन्ह—यदि सत्ये क अनने होइ त तों अपन भाग्य बुझह ।

तर्क-वितर्कक मूल तात्पर्य्य एहि बेर सभक आगाँ सु-ष्पष्ट भए गेलन्हि ।

माए कह' लगलथीन्ह—एते पैघ काण्ड जे कएल हे ककरो बात नहि सुनलह, बजलाह भाइक हुकुम । भाए कहने छलथुन्ह अश्वमेघ करै ले ? एखन सम्हारत के कहह ? भाग्यसँ मैत्रेयी आइलि छह सएह त खाली भरोस ।

द्विजदास कहलथीन्ह—काज पहिने समाप्त भ' जाउक माए, तखन जकरा खुशी तकरा सर्टिफिकेट दिहैक—हम कोनो आपत्ति नहि करबौक । एखन एतेक हड़बड़ी कथीक ?

वन्दना पुछलथीन्ह—तखन सर्टिफिकेट पर दसखत के करत द्विजू बाबू, तृतीय पक्ष तने ?

द्विजदास कहलथीन्ह—नहि तृतीय पक्षक साध्य की ? आइओ महा-पराक्रान्त प्रथम ओ द्वितीय पक्ष जे तहिना विद्यमान छथि । ई कहैत ओ दूनू गोटे हँस' लगलाह ।

विप्रदास आओर माए मुह देखा देखी कएलन्हि।

अन्नदा आबि कए कहलकन्हि—वन्दना बहिनि, बड़का भाइक औषध जे काल्हि सरिआ क' रखने छलिऐ से कागतक बक्सा त नहि देखै छिऐ, हेड़ाएल तने ?

नहि, हेड़ाएल नहि अनु बहिनि, कलकत्तेक डेरा पर रहि गेलै।

दयामयी डेरा कए कहलथीन्ह—आब कोन उपाय हेतै वन्दना, एहन गलती भए गेल ?

वन्दना कहलथीन्ह—गलती नहि भेल माए, अएबा' काल ओहि सभकें जानि बुझि क' छोड़ि देलिऐक।

जानि बूझि छोड़ि अएलहुँ एकर माने ?

शोचलहुँ—औषध बहुत खएलन्हिहें। आओर काज नहि, तखन माए लगमे नहि छलथीन्ह तें औषधक काज छलन्हि, एखन बिना औषधोंसँ निकें भ जएताह—कनेको देरी नहि होएतन्हि।

ई बात सभ दयामयीकें अत्यन्त नीक लगलन्हि, तैओ वजलीह—परन्तु ठीक नहि कएलहुँ बाउ। ई निठट्ठ देहात, डाक्टर वैद्य ओना भेटै नहि छैक, काज पड़लासँ—

अन्नदा कहलकन्हि—आर काज नहि हेतैक माए। भेलासँ ओ निश्चय अनितथीन्ह, किन्नहुँ छोड़ि नहि अबितथि। वन्दना बहिनि डाक्टरो वैद्यसँ बेशी बुझै छथीन्ह।

दयामयी प्रशंसाक दृष्टिसँ चुप्पे तकैत रहलीह।

वन्दना कहलथीन्ह—अनुबहिनिक ई बढ़ाओल बात, नहि त सत्ये हम किछु नहि जनै छी। जे किछु सिखिलहुहें से खाली ओझाजीक सेवा क' क'।

अन्नदा कहलकन्हि—से जे केहन सेवा माए, से खाली हमही टा जनै छी। हठात् एक दिन केहन विपत्तिमे पड़लहुँ। डेरापर केओ नहि। बासूक दुःखित पड़बाक तार पाबि क' द्विजू चल अएलाह एत'—दत्त बाबू गेल छलाह ढाका—भाइकें ज्वर भ' गेलन्हि।

पहिला दू दिन कहुना क' कटल परन्तु तकरा बादक दिन ज्वर बहुत बढ़ि गेलन्हि। डाक्टरकेँ कहा पठओलिऐक ओ औषध त देलकन्हि, परन्तु डर देखओलक चरि-गुणा। मूर्ख मौगी हम, की जे करब। अहूँसभके खबरि देब नहि पार लगै छल, भाइ मना कएलन्हि। आकुल भ' क' दौड़ल गेलहुँ वन्दना बहिनिक लग। हुनका मौसीक डेरा पर कानि क' कहलिअन्हि—खिसिआएल नहि रहू, चलू। अहाँक ओझाजी बड़ दुःखीत छथि। वन्दना बहिनि जहिना छलीह तहिना आबि गाड़ी पर बैसलीह, मौसीकेँ कहबोक समय नहि पओलन्हि। डेरापर आबिक' सभ भार लेलन्हि। दिन राति कए दिन एको घड़ी ओ आराम नहि क' सकलीह। खाली औषधे खोआएब त नहि, सबेरेमे पूजा पाठक इन्तजामसँ ल' क' रातिमे मसहड़ी पर्य्यन्त लगा क' सुता आएब सभ किछु। यदि एखन वन्दना बहिनि औषध नहि देब' चाहै छथिन्ह माए त आओर किछु करबाक काज नहि, भाइ ओहिना निके भए जएताह।

विप्रदास तुरन्त सह द' क' कहलथीन्ह—सत्ये हम स्वस्थ्य भ' जाएब माए तोँ सभ हुनका आओर बाधा जुनि दहुन। हुनका सुबुद्धि होउन्ह जे हमरा औषध गिड़ाएब बन्द करथि। हम काय-मनसँ आशीर्वाद देब वन्दना, अहाँ राज-रानी होउ।

दयामयी चुप्पे देखैत रहलीह। हुनक दूनू आँखि जेना स्नेह ओ मायासँ उछलि पड़लन्हि!

नोकरनी आबि कए कहलकन्हि—भौजी कहै छथीन्ह, कलकत्तासँ जे सभ वस्तु एखन अएलैए से कोन घरमे रखबै?

दयामयीक जबाब देबाक पहिनहि वन्दना बजलीह—माए, हम त अहाँक म्लेच्छ कन्या थिकहुँ—अहाँ सभक एते पैघ काजमे—म्लेच्छ बेटी कहि क' हमरा कोनो काजक भार नहि भेटत, खाली चुप भेल बैसल रहब? एहन कते रास त वस्तु होएत जे छूलो उत्तर छूइल नहि जेतैक।

दयामयी हुनकर हाथ ध' क' एके बेर छातीमे सटा लेलथीन्ह आ आँचरसँ

एकटा चाभीक गुच्छा खोलि क' हुनका हाथमे दए कहलथीन्ह—चुप क'क' अहाँके बैस' कोना देब बाउ ? इएह देलहुँ अहाँके अपन भड़ारक कुञ्जी, जे बहु आसिनिकें छोड़ि अनका ककरो ने द' सकै छिऐ। आइसँ ई भार रहल अहाँक ऊपर।

की छै माए एहि भराड़मे ?

ई चाभीक गुच्छा अत्यन्त परिचित्त। द्विजदास कटाक्षसँ दृष्टिपात् करैत कहलथीन्ह, छैक जे छूआ-छूतिक सीमासँ बाहर, सएह। छैक सोन, रूप, रुपया, पैसा रेशमीक थान सभ जे अत्यन्त पैघ धार्मिको व्यक्ति सभके माथ लगएवामे कोनो आपत्ति नहि होएतन्हि—आहाँ छू बिओ देबैक तँओ।

दयामयी कहलथीन्ह—पण्डित अध्यापक सभक विदाइ, अतिथि अभ्यागतक सम्मान-रक्षा, आत्मीय-स्वजन सभक रास्ताक खर्चा—ताहि सङ-सङ एहि छौंड़ाकें कने कड़ा शासनमे राखब। कहि ओ द्विशदासकें देखा कए कहलथीन्ह—हम हिसाब नहि बुझै छिऐ तें ओ हमरासँ ठकि क' कते रुपैया ल क' अपव्यय करैए तकर ठेकान नहि। ई आहाँकें बन्द कर' पड़त।

द्विजदास कहलथीन्ह—भाइक सामने एहन बात जुनि बाज माए। हुनका होएतन्हि सत्ये ई बात। खरचाक बहीमे एकदम ठीक सँ सभटा हिसाब लिखल जाइ छै—से देखलेसँ सभ भेटतौ।

दयामयी कहलथीन्ह—हम मिलाएब कोन वस्तु ? व्ययक हिसाब ने लिखल जाइछै से मानै छी, परन्तु अपव्ययक हिसाब के लिखैए कह' त ? हम सएह बात बन्दनाकें कहै छलिअन्हि।

वन्दना कहलथीन्ह—हम जानिए क' की करब माए, हुनकर रुपैया ओ अपव्यय करताह त हम कोना रोकबन्हि ?

दयामयी कहलथीन्ह—से हम नहि बुझब। अहाँ भार लेब' चाहलहुँ हम भार द' क' निश्चिन्त भेलहुँ। परन्तु एकटा बात कहै छी बन्दना, अहुँकें त एक

दिन संसार चलाब' पड़त, तखन अपव्यय बचएबाक भार जखन कपार पर आओत त खाली ई कहि क' नहि ने छुट्टी भेटत जे हम नहि जनै छी।

वन्दना द्विजदासक दिशि देखि कहलथीन्ह --सुनलहुँ त माएक हुकुम ?

द्विजदास कहलथीन्ह —सुनलहुँ ने त। परन्तु भाइ देने छथि हमरा ऊपर खर्च करबाक भार, माए देलन्हिहें अहाँके खर्च नहि करबाक—अतएव युद्ध होएबे करत, तखन दोष देलासँ काज नहि चलत।

बन्दना माथ हिला क' स्मित मुहेँ कहलथीन्ह— दोष देबाक काज नहि पड़त द्विजू बाबू, झगड़ा हमरा सभकेँ नहि होएत। आहाँक टाका ल' क' अहीँ सङ 'मौक फाइट' सुरू करबाक नेनमति हमरा चल गेलए। बङ्गाल देशमे आबि क' ई शिक्षा हमरा भेलटए। झगड़ा करबाक पहिने माएक देल भार माएक हाथमे सौंपि क' हम हँटि जाएब।

दयामयी ठीकसँ नहिओ बूझि कए ई धरि बूझलन्हि जे ई अभिमान स्वाभाविक। व्यथित कण्ठेँ कहलथीन्ह—भार फिरा क' नहि लेब दाइ—अहीँ केँ उठब' पड़त। परन्तु आर एत' नहि, चलू भीतर चल, अहाँक काज अहाँके हम बुझा दिअ ग—ई कहि हाथ धएने वन्दनाकेँ घीचि क' लए गेलथीन्ह।

ओहि दिन वन्दना एहि घरमे किछुए घंटा मात्र छलीह, कत' की छैक से देखबाक सुयोग नहि भेटल छलन्हि। आइ देखलन्हि महलक बाद महल—अन्त नहि। आश्रित आत्मीयक संख्या कम नहि; पुतहु, नाति-नातिन ल' क' सभक एक-एकटा संसार। ओहि दिशि छैक कचहरी घर आओर ओहिमे आनुषंगिक सभ व्यवस्था। एहि दिशि भगवती-भगवानक घर आ भनसा घर, तखन दयामयीक विराट् गोशाला और ऊँच छहरदेबालीसँ घेड़ल फूलबाड़ी ओ पोखरि। दोमहला पर पुबरिआ कोठरी सभ दयामयीक थिकन्हि, तकरे एकटाक आगाँ वन्दनाकेँ आनि ओ बजलीह –बाउ इएह घर अहाँक थीक, ई सभ भार रहल अहाँक ऊपर।

ओहि दिशुक ओसरा पर बैसलि सती ओ मैत्रेयी कते रास वस्तु सभकेँ नीक

जेकाँ देखैत छलीह—दयामयीक कण्ठ-स्वरसँ मुह ऊपर उठओलन्हि एवं वन्दनाकेँ देखैत देरी दूनू गोटे काज छोड़ि लग अएलथीन्ह। ओ जे सत्ये अओतीह ई प्रत्याशा केओ ने कएने छल। माए कहलथीन्ह—हमर म्लेच्छ बेटी सेहो कोनो काजक भार चाहै छलि बहुआसिन, चुप भ' क' बैसवासँ ओ खिसिआइति। अहाँ सभकेँ त बहुत काज देने छी, हिनका देलिअन्हि—एहि भगाड़क कुंजी।

मैत्रेयी पुछलथीन्ह—एहि भराड़मे की छैक माए ?

छैक एहन सभ वस्तु जे म्लेच्छ कन्याक छुइलो उत्तर छुइल नहि जएतैक—कहि दयामयी कौतुक पूर्ण हँसीसँ वन्दनासँ घर खोलाक सभ केओ भीतर आबि ठाढ़ि भेलीह। चौकी, टेबुलक ऊपर थाकक थाक सजा कए राखल चानीक वासन—ब्राह्मण पण्डित सभकेँ मर्य्यादा—विदाइक हेतु। कलकत्तासँ भजा क' आनल जे चौअन्नी अठन्नी रुपैया कैञ्चा सभ--से सभ सरिआ क' स्तूपाकार थाक लगाओल। बहुमूल्य वस्त्रक थान सभ वस्ताबन्दी कएल एतए पड़ल—खोलि क' देखबाक अवसर नहि भेटलन्हि अछि; एहि सभकेँ छोड़ि क' दयामयींक आलमारी, सन्दूक सेहो एही घरमे। हाथसँ देखा क' हँसि क' कहलथीन्ह—बन्दना ओहीमे हमर यथा-सर्व्वस्व अछि, आ ओहि पर द्विजूक सभसँ वेशी लोभ छैक। ओही ठाम, बाउ, अहाँकेँ समसँ वेशी पहरा देब' पड़त। हमरे जेकाँ जाहिसँ ओ अहूँकेँ ने फाँकी देअए।

वन्दनाक विपन्न मुह दिशि देखि क' सती अपन बहिनिक दिशिसँ बजलीह' एते पैघ काजक भार कि ओकरा बुते सम्हरतै माए ? कते रूपैआ सोना, रूपाक हिसाब—हुनक बात खतम होएबासँ पहिनहि दयामयी कहलथीन्ह—बहुत रूपैआ पाइक बात छैक—ई बुझिए क' त हुनका हाथमे भार देलिअन्हिहेँ नहि त ओ हमरा देवलिआ बना देत।

परन्तु ओ त अन्त'सँ आइलि अछि माए........।

सठीक ईहो बात समाप्त नहि भेलन्हि—दयामयी हँसि क' कहलथीन्ह बाहरसँ एक दिन अहूँ आइलि छलहुँ, आओर ताहूसँ बहुत पहिने अहिना बाहरे

सँ हमरो आब' पड़ल छल। ओहिमे कोनो आपत्ति नहि, बहुआसिन। मुदा आर हमरा समय नहि अछि, हम चललहुँ—बाजि ओ घरसँ बाहर आबि नीचा चल गेलीह।

वन्दना कहलथीन्ह—अहाँक ओहिठाम आबि क' हम कोन जंजालमे पड़लहुँ बहिन। हमरा त श्वासो लेबाक समय नहि भेटत।

सएह बूझि पड़ैए—कहि सती खाली कने हँसलीह।

## २३

संसारमे विपत्ति जे कत' रहैछ आओर कोन रास्तासँ कखन जे आत्म प्रकाश करैछ—ई शोचि क' विस्मित भ' जाए पड़ैत छैक। काजक बीचमे कल्याणी आबि कानि कए बाजए लगलीह—माए, ओ हमरा कहै छथि एखने हुनका सङ्ग गाम चलै ले। ट्रेनक समय नहि छैक—स्टेशन पर बैसल रहताह से बरू नीक—तैओ एहि आङनमे कनेको काल नहि।

पोखरिक प्रतिष्ठाक शास्त्रीय विधि एखने समाप्त भेलन्हि अछि, इएह दयामयी मण्डवसँ आबि अङनामे पाएर देलन्हि अछि। अत्यन्त व्यस्ततामे ओ ठमकि क' ठाढ़ि भेलीह, बेटीक बात नीक जेकाँ बुझिए ने सकलीह। हत-बुद्धि भए कहलथीन्ह—के कहलक'हे तोरा जाइले—मिशर, किए?

बड़का भाइ हुनका बड़ अपमान कएलथीन्हहें—घरसँ बाहर निकालि देलथीन्हहे, ई कहि क' कल्याणी उच्छ्वसित आवेगें कानए लगलीह।

चारू दिशि लोक सभ—कतहु भोजन करएबाक आयोजन, कतहु गानक बैसिकी, कतहु भिखारि सभक बात-वितण्डा, कतहु ब्राह्मण पण्डित सभक शास्त्र विचार—अगणित मनुष्य, अपरिमित कोलाहल—एकरे सभक बीचमे अकस्मात् ई काण्ड!

सती ओ मैत्रेयी उपस्थित भेलीह—वन्दना भंडारमे ताला लगा लग आबि ठाढ़ि भेलीह, आत्मीय कुटुम्बिनी सभहिमे कतेकोकेँ कुतूहल भेलन्हि—शशधर मिश्र आबि प्रणाम कए कहलथीन्ह—माए, हम सभ चललहुँ। अएबा ले नोत देने छलीह, आएल छलहुँ, परन्तु रहि नहि सकलहुँ।

किए मिशरजी ?

विप्रदास बाबू अपना घरसँ हमरा सभकेँ निकालि देलन्हिहेँ।

तकर कारण ?

कारण बुझि पड़ैए इएह जे ओ पैत्र लोक छथि। अहंकारेँ आँखिसँ कानसँ देखि सुनि नहि सकैत छथि। शोचलन्हिहेँ अपना दरबाजा पर बजा क' अपमान करब बड़ हल्लुक। परन्तु बेटाकेँ कने बुझा देथीन्ह जे हमरो बाप जमिन्दारी राखि गेल छथि—ओहो एक दम्म छोट नहि अछि। हमरो भीख माङि क' नहि खाए पड़ैए।

दयामयी व्याकुल भए कहलथीन्ह—विपिनकेँ हम सोर करै छिअन्हि, बाउ की भेलैए से कने पुछै छिअन्हि। हमर काज एखन सम्पन्न नहि भेल्ए—ब्राह्मण भोजन बाँकी अछि, वैष्णव भिक्षुक सभकेँ विदाइ देल नहि भेलए, ताहिसं पहिनहि ई सभ खिसिआ क' चल जएताह मिशर, त जाहि पोखरिक एखने प्रतिष्ठा कएलहुहै, ओहीमे डूबि मरब ग। कहैत-कहैत हुनकर दूनू आँखिमे नोर भरि गेलन्हि।

सासुक आँखिमे जल भरलासँ विशेष फल नहि भेलन्हि। भद्र सन्तान भइओ कए शशधरक आकृति ओ प्रकृति कोनो भद्रोचित नहि। लगमे आबि ठाढ़ भेलासँ संकोच होइत छैक। हुनक विपुल देह ओ विपुलतर मुखमंडल क्रुद्ध विलाड़ जेकाँ फूलए लगलन्हि, बजलाह—रहि सकै छी, यदि विप्रदास बाबू एत' आबि सभक सोझाँ हाथ जोड़ि क' हमरासँ क्षमा माङथि। नहि त नहि।

ई प्रस्ताव एहन असंभावित जे सभ केओ सूनि क' अवाक् भ' गेल। विप्रदास क्षमा मङथीन्ह हाथ जोड़ि क'। आ सभक समक्ष ? कने काल सभ

स्तब्ध छल—सहसा पांशु मुहें नितान्त अनुनयक कण्ठें सती बजलीह—मिशर जी, एखन ई सभ नहि करू। काज कर्म्म सम्पन्न होउक, रातिमे माए निश्चय एकर एकटा उचित व्यवस्था क' देतीह। अपनेकें कि अपमान कएल जा सकैए ? अन्याय कएलासँ ओ निश्चय क्षमा मङ्ताह।

वन्दनाक आँखिक कोन कने फड़कि उठलन्हि परन्तु शान्त कण्ठें कहलथीन्ह --ओ त कहिओ अन्याय नहि करैं छथि, बहिनि !

सती डाँटि उठलथीन्ह—तों थम्हह ने वन्दना। अन्याय सभक बुते होइ छैक।

वन्दना कहलथीन्ह—नहि ओ नहि करै छथि।

सूनि क' मैत्रेयी जेना जरि गेलीह—तीक्ष्ण स्वरें कहलथीन्ह कोना बुझ-लिऐक ? ओत' अहाँ त नहि छलहुँ, ओ कि तखन बना क' कहै छथिन्ह।

वन्दना कने काल हुनका प्रति देखि कए कहलथीन्ह—बना क' बजवाक बात हम नहि कहै छी। हम खाली कहै छी जे ओझाजी अन्याय नहि करै छथि।

मैत्रेयी प्रत्युत्तरमे तेहने वक्र विद्रूपें कहलथीन्ह—अन्याय सभ करैए। केओ भगवान नहि अछि। ओ हमर बाबुओके असम्मान करब नहि छोड़लथीन्ह।

वन्दना कहलथीन्ह—तखन मिश्र जी जेकाँ हुनको चल जाएब उचित छलन्हि। रहब उचित नहि छलन्हि।

मैत्रेयी तीक्ष्ण स्वरें जवाव देलथीन्ह—ओ कैफियत अहाँक आगाँ देबाक नहि अछि, विचार होएत द्विजू बाबूक सङ—जे नोत हँकार द' क' अनने छथीन्ह।

सती रोष-पूर्व्वक तिरस्कारसँ कहलथीन्ह—तोहर पाएर पड़ै छिअह—वन्दना, तों जाह एत'सँ—अपन काज करह ग।

शशधर दयामयीकें लक्ष्य कए क' कहलथीन्ह—हम परन्तु न्याय अन्यायक दरबार नहि कर' अएलहुहें माए, हम ई बुझ' अएलहुहें जे हिनकर बेटा

हमरास हाथ जोड़ि क' क्षमा मङताह कि नहि ? नहि त हम चललहुँ—एको मिनट नहि रहब। हिनकर बेटी हमरा सङ जा सकैत छथि—नहिओ जा सकै छथि—परन्तु तकरा बाद फेरि सासुरक नाम जाहिसँ मुह पर नहि आनथि। एतहि आइए ओ खतम भ' जाइन्हि।

ई की सर्ब्बनाशक बात ! शशधरक हेतु ई किछुओ असम्भव नहि— बेटी जमाएकेँ अङना बजा क' ई की विपत्ति उपस्थिति भेल। आगूमे ठाढ़ि भेल कल्याणी कान' लगलथीन्ह, परामर्श देबाक लोक नहि शोचबाक समय नहि। डरसँ, लज्जासँ ओ गम्भीर अपमानसँ दयामयीक कर्त्तव्य-बुद्धि आच्छन्न भए गेलन्हि, ओ की करतीह शोचि नहि सकलीह। डरसँ बजलीह—ई कने थम्हथु मिशर, हम विपिनकेँ सोर करै छिअन्हि। हम जनै छी कतहु हिनका सभमे कोनो बड़का गलती भेलन्हिहें—परन्तु अइ भरल अङना लोकक बीचमे ई कलंक प्रकाश भेलासँ हमरा आत्म-हत्या कर' पड़त।

शशधर कहलथीन्ह, वेश, हम ठाढ़ छी, हुनका बजबथुन्ह। विप्रदास बाबू आबि कए झूठे कहथु जे ई काज ओ नहि कएलन्हिहें।

झूठ बात ओ नहि बजैए मिशर—ई कहि दयामयी विप्रदासकेँ बजब' पठओलथीन्ह। करीब पाँच मिनटक बाद विप्रदास आबि क' ठाढ़ भेलाह। तेहने शान्त, गम्भीर ओ आत्म-सभाहित। खाली आँखिक दृष्टिमे एक उदास-क्लान्त छाया—ओकरा अन्तरालमे की जे प्रच्छन्न छन्हि कहब कठिन।

दयामयी उच्छ्वसित आवेगसँ बाजि उठलीह—तोहर नामे मिशर की बात कहै छथुन्ह विपिन। कहै छथि, तोँ कहाँदनि हुनका घरसँ बहार क' देलहुन्हहें। ई की सत्य भ' सकैए ?

विप्रदास कहलथीन्ह—सत्ये बात माए।

घरसँ सत्ये निकालि देल'हे हमरा जमाएकेँ ? हमर एहि काजक अङनमे ?

हँ, सत्ये बहार क' देलिअन्हिहें। आ' कहलिअन्हिहें जे ओ फेरि हमर

घरमे पाएर नहि देथि !

सूनि कए दयामयी वज्राहत जेकाँ निष्पन्द भए गेलीह। किछु काल ई अभिभूत भाव कटला पर पुछलथीन्ह—किए ?

ई तोँ नहि सुनहि सएह नीक, माए।

सती स्थिर नहि रहि सकलीह, व्याकुल भए कहलथीन्ह—हम सभ केओ सुन' नहि चाहै छी। परन्तु मिशरजी कल्याणी दाइकेँ ल' क' एखने चल जाए चाहै छथि, अइ भरल अङना लोकक बीचमे। कने शोचि क' देखू जे केहन भारी कलंक। हुनका कहिअन्हु जे अहाँ बुते हठात् अन्याय भ' गेल्ए—कहिअन्हु हुनका सभकेँ रह' ले।

विप्रदास स्त्रीक प्रति कने काल दृष्टिपात कए कहलथीन्ह—हठात् हमरा बुते अन्थाय नहि होइए।

होइछै, होइछै—अन्याय सभक बुते होइछै—। कहिअन्हु ने हुनका सभकेँ रहै ले।

विप्रदास माथ हिला क' कहलथीन्ह—नहि अन्याय हमरा बुते नहि भेलए।

स्वामी स्त्रीक कथोपकथनक बीचमे दयामयी स्तब्ध छलीह, सहसा के जेना हुनका हिला क' सचेत कएलकन्हि। तीव्र कण्ठेँ कहलथीन्ह—न्याय अन्यायक झगड़ा रहओ एखन। हमर बेटी जमाए सभ दिन ले दूर भ' जाएत ई हम नहि सहि सकब। मिशरक आगाँ तो क्षमा मङहुन।

से नहि होएत माए—से असम्भव।

सम्भव असम्भव हम नहि जनै छी, क्षमा तोरा माङ पड़तह।

विप्रदास निरुत्तर भए स्थिर रहलाह।

दयामयी मने मन बुझलन्हि—ई असम्भव आर सम्भव नहि कएल जा सकैछ। क्रोधक सीमा नहि रहलन्हि, बजलीह—घर आङन खाली तोहर एकसरे तने छिअह विपिन। ककरो बइलेबाक अधिकार मालिक तोरा

नहि द' गेलथुन्ह । ओ सभ एहि आङनमे रहताह ।

विप्रदास कहलथीन्ह --देख माए, हमरा बिना बजओनहि यदि तों ई आदेश दितहुन त हम चुप रहितहुँ परन्तु एखन आब नहि रहि सकै छी । शशधर मिश्रकें रहलासँ ई आङन छोड़ि क' हमरा जाए पड़त, आओर फिरा क' नहि आनि सकबें । दूनूमे की चाहै छं—बाज ।

जीवनमे एहन भयानक प्रश्नक उत्तर देबा ले कोनो दिन केओ हुनका आह्वान नहि कएने छलन्हि, एहन पैघ दुर्भेद्य समस्याक सम्मुखीन होएवा ले केओ ने कहने छलन्हि । एक दिशि बेटी-जमाए, आर दोसर दिशि ठाढ़ भेल हुनकर विपिन; जाहि नेनाकें छातीमे साटि क' ओ मनुष्य बनओने छथि, जे सभ आत्मीयसँ पैघ आत्मीय, दुःखक सान्त्वना, विपत्तिक आश्रय—जे बेटा हुनक प्राणाधिक प्रिय । ई अमर्य्यादा हुनका मृत्यु देतन्हि, परन्तु संकल्प-च्युत नहि करतन्हि । बुझलन्हि सर्व्वनाशक अतल-स्पर्श गह्वर हुनका पाएरक नीचामे छन्हि—एहि स्खलनक प्रति-विधान नहि, प्रत्यावर्त्तनक पथ नहि, परिणाम एकर दैव जेकाँ अमोध, स्पष्ट ओ अनन्य-गति । तथापि अपनाकें शासन नहि कए सकलीह, अदम्य क्रोध ओ अभिमानक बिहाड़ि हुनका आगाँ ठेलि देलकन्हि—ई तोहर अन्याय जिद्द, विपिन । तोरा ले बेटी जमाएकें भरि जन्मक हेतु पर क' देब से नहि होएत । तोरा जे इच्छा होअओ, करह ग । मिशर, ई सभ आबथु हमरा सङ—ओकर बात कान देबाक काज नहि । घर आङन खाली ओकर एकसरे नहि थिकैक—ई कहि ओ कल्याणी तथा शशधरमिश्रकें सङ लए चल गेलीह । हुनका सभक पाछाँ गेलथीन्ह मैत्रेयी, जेना ओ हुनके सभक एक अपन लोक ।

बुझि पड़ैत छलन्हि जे सती एहि बेर आब कान' लगतीह परन्तु हुनक दृढ़तासँ वन्दना ओ विप्रदास दूनू विस्मित भेलाह । हुनका आँखिमे नोर नहि किन्तु मुह एकदम पीअर, कहलथीन्ह—मिशर की जे कएलन्हिहें हम सभ नहि जनै छी, परन्तु बिना कारणें अहुँ जे एहन पैघ काण्ड

नहि कएलहुँहें—से निश्चय बुझै छी। अहाँ शोचू नहि, मने मन हम अहाँकें एको रत्ती दोष नहि देब।

त्रिप्रदास चुप रहलाह। सती पुछलथीन्ह—अहाँ कि आइए चल जाएब ?

नहि, काल्हि जाएब।

आओर एहि घरमे आएब नहि ?

बुझि त नहि पड़ैए।

हम, आ वासू ?

जाए पड़त अहूँ सभकें, काल्हि नहि जा सकी त कोनो आन दिन।

नहि, आन दिन नहि, हमहूँ सभ काल्हिए जाएब। ई कहि सती वन्दनाकें पुछलथीन्ह—तों की करबह वन्दना, काल्हिए जएबह ?

वन्दना कहलथीन्ह—नहि। हम त झगड़ा नहि कएलहुँहें बहिन जे दल वान्हि क' काल्हिए जाए पड़त।

सती कहलथीन्ह—झगड़ा त हमहू ने कएलहुँहें वन्दना आ' ओहो ने। परन्तु जाहि ठाम हुनकर जगह नहि छन्हि तत' हमरो सभक नहि, एको दिन ले नहि। तोहर बिआह भेल रहितह त ई बात बुझितहक।

वन्दना कहलथीन्ह—बिआह नहिओ भेलए तैओ बूझै छिऐ बहिन, स्वामीक हेतु जगह नहि रहलासँ स्त्रीओकें नहि छैक। परन्तु गलती त होइ छैक—विना बुझनहि ओकरा मानि लेब स्त्रीक कर्त्तव्य, अहाँक ई बात हम नहि मानब।

सासुक प्रति सतीक अभिमानक सीमा नहि छलन्हि, कहलथीन्ह—स्वामी रहलासँ बुझितहक। ई कहैत ओ नोरक वेग कहुना रोकि जल्दीसँ चल गेलीह।

वन्दना कहलथीन्ह—ई की कएलहुँ ओझा जी ?

नहि कएलासँ उपाय नहि छल वन्दना ?

परन्तु माएक सङ विच्छेद—ई जे शोचल नहि जा सकैत अछि।

विप्रदास कहलथीन्ह—नहि जा सकैछ ई सत्य, परन्तु नवीन प्रश्न जखन रास्ता पर आबि ठाढ़ होइ छैक तखन ओकर समाधान शोचहि पड़ैत छैक, ओकरा काटि क' जएबाक फांक नहि भेटत। अहाँक बहिनि हमरा सङहि जइतीह—बाधा देब वृथा। परन्तु अहाँ ? आओर दू चारि दिन रहबाक विचार कएलहुहें ?

वन्दना कहलथीन्ह—कते दिन रह' पड़त हम नहि जनै छी। परन्तु नवीन प्रश्न अहाँक जतेक आबओने—हम किन्तु पुरनके रास्तासँ ओकर उत्तर तकैत रहब—जे पहिल दिन हमरा आँखिमे पड़ल, जाहि दिन हठात् एहि घरमे आबि ठाढ़ि भेल छलहुँ। जकर तुलना आओर कतहु देखने नहि छी, जे हमर मनक धाराकेँ सभ दिनक हेतु बदलि देलक।

विप्रदास एकर उत्तर नहि देलथीन्ह—खाली हुनक ओष्ठाधर पर कने म्लान हँसीक आभास देखि पड़लन्हि। ओ हँसी जेहने वेदनाक तेहने निराशाक। कहलथीन्ह—हम बाहर जाइ छी वन्दना, फेरि भेँट होएत।

अश्रुकणसँ वन्दनाक आँखि भरि गेल छलन्हि, कहलथीन्ह—यदि भेँट होअए तखन खाली दूरहिसँ अहाँकेँ प्रणाम करब। कठोर अहाँक प्रकृति, कठिन मन - नहि अछि स्नेह, ने अछि क्षमा। तखन यदि कहि नहि सकी, सुयोग यदि नहि भेटए, त एखने कहि रखै छी ओझाजी, जकरा सभकेँ ल' क' हमरा सभक घर आङन, हँसब कानब, मान अभिमान चलैए, तकरे ल' क' जाहिसँ चलि सकी, तकरे सभकेँ जाहिसँ अपन कहि क' एहि जीवनमे चिन्ता करब सीखी। राकसक इजोतक पाछाँ जाहिसँ अपन रास्ता नहि छोड़ी। कने थम्हि क' कहलथीन्ह—दूरसँ जखने अहाँ मन पड़ब तखन एकान्त मने इएह मन्त्र जप करब, ओ निर्म्मल, ओ निष्पाप, ओ छथि महत्। मनक पाषाण-भित्ति पर हुनका लेश मात्र दाग नहि पड़ैत छन्हि। संसारमे ओ एकसर, ओ ककरो अपन

नहि — संसारमे केओ हुनकर अपन नहि भ' सकैत छन्हि। ई कहि दून् आँखि आँचरसँ झाँपि ओ घरसँ बाहर चल गेलीह।

ओहि दिन काज-कर्म्म बहुत रातिमे जा'क' सम्पन्न भेलैक। एहि घरक सुश्रृङ्खलित धारामे कतहु कोनो व्याघात नहि भेलैक। बाहरसँ केओ ई बुझिओ ने सकल जे एहि श्रृङ्खलाक सभसँ बड़का कड़ी सएह आइ चूर्ण भए गेलैक अछि।

भोर होएबामे वेशी देरी नहि; कर्म-क्लान्त वृहत् भवन एकान्त नीरव—जे जत' जगह पओलक ततहि निद्रा-मग्न। भराड़क गुरु दायित्व समाप्त कए वन्दना श्रान्त पदे अपन घर जाइत छलीह, आँखि गेलन्हि—ओहि दिशि द्विजदासक घरमे इजोत जरैत छैक। मनमे द्विधा होअए लगलन्हि, एहन समयमे जाएब उचित कि नहि। ककरो दृष्टि पड़लासँ सुविचार ओ नहि करत, निन्दा प्रायः शत मुहेँ विस्तारित होएत—परन्तु थम्हि नहि सकलीह। जे उद्वेग हुनका भरि दिन चंचल, अशान्त कएने छन्हि से हुनका ठेलि कए लए गेलन्हि। रुद्ध दोआरिक सोझाँ ठाढ़ि भए सोर कएलथीन्ह—द्विजू बाबू, एखनो जागल छी ?

भीतरसँ आबाज अएलन्हि—जागल छी परन्तु एहन समयमे अहाँ जे ?

आबि सकै छी ?

स्वच्छन्देँ।

वन्दना केबाड़ ठेलि कए भीतर गेलीह त देखलन्हि कागतक ढेर ल'क' द्विजदास ओछाओन पर बैसल। पुछलथीन्ह—अझुका हिसाब बुझि पड़ैए ? परन्तु हिसाव त पड़ाएत नहि कतहु द्विजू बाबू, एते राति तक जगलासँ शरीर खराब होएत।

द्विजदास कहलथीन्ह—भेलासँ बँचितहुँ, ई सभ आँखिसँ त नहि देखितहुँ। खर्च बहुत वेशी भ' गेलए वुझि पड़ैए ? भाइक आगाँ बड़का कैफियत देब' पड़त ?

द्विजदास कागत सभकें एक दिशि ठेलि सोझ भए बैसलाह, कहलथीन्ह—चक्रवत् परिवर्त्तन्से दुःखानि च सुखानि च । श्रीगुरुक कृपासँ ओ दिन आब हमर नहि वन्दना देवी जे भाइक आगाँ कैफियत देबन्हि । एखन उनटे कैफियत मङबन्हि हम । कहबन्हि—लाउ, जल्दी हिसाब दिअ—जल्दी रुपया लाउ । कत की कएने छी, कहू ?

वन्दना अवाक् भए गेलीह, कहलथीन्ह—बात की ?

द्विजदास मुट्ठी बान्हि दूनू हाथ ऊपर उठा कहलथीन्ह, बात अत्यन्त भयंकर । माए दयामयी हमरापर दया करथु—बहिनोए शशधर हमर सहायक होथु, सावधान विप्रदास ! तोरा एहि बेरि हम धनसँ, प्राणसँ बध करबह ! हमरा सभहिक हाथसँ आब तोहर निस्तार नहि ।

वन्दनाक चिन्ता उद्दाम भए उठलन्हि, तैओ ओ बिना हँसने नहि रहलीह, कहलथीन्ह—सभ बातमे हँसी तमाशा, अहाँ कनेको काल 'सिरियस' होबए नहि जनै छी, द्विजू बाबू ?

द्विजदास कहलथीन्ह—नहि जनैछी ? तखन आनू शशधरमिश्रकें, आनू—। ओ सभ रहओ त देखब—हँसी तमाशा एके पलमे पड़ाएत सहाराक मरूभूमिमे—गम्भीर मुख मण्डल भ' जाएत बनैया सुगर जेकाँ भयानक । परीक्षा क' क' देखि लिअ ।

वन्दना कुर्शी आनि क' बैसि गेलीह, पुछलथीन्ह—अहाँ तखन सभ बात सुनलिऐक अछि ?

सभ नहि, यत्किञ्चित् । सभ बात जनै छथि भाइ, परन्तु ओ गहन अरण्य; आओर जनैए शशधर, ओ बाजत—परन्तु सभटा झूठ बना क' ।

वन्दना व्याकुल कण्ठें कहलथीन्ह, जे जतबा जनैछी हमरा नहि कहि सकब, द्विजूबाबू ? हमरा सत्ये बड़ डर होइए ।

द्विजदास कहलथीन्ह—डर करब व्यर्थ । भाइक संकल्प नहि टलतन्हि—हुनका हम सभ हेड़ओलहुँ । ओ हमरा सभकें छोड़लन्हि ।

वन्दना गाढ़ स्वरे कहलथीन्ह—विच्छेद एते' सहजहिँ आओत द्विजू बाबू, सत्ये रोकल नहि जाएत ?

द्विजदास माथ हिला कहलथीन्ह—नहि, ओ वस्तु जखन अबै छै तखन एहिना अबाध, एहिना द्रुत रूपेँ अबैत छैक—कथुक रोक नहि मानैत छैक। जकरा कनबाक ओ कनैए, परन्तु शेष एही ठाम तक। कने काल मौन रहि कहलथीन्ह—अहाँ जान' चाहलहुँ एकर कारण ? विस्तृत रूपेँ नहि जनै छी परन्तु जे किछु जनै छी, से खाली अहीँकेँ कहब, आओर सहायता यदि कहिओ लेबाक होएत त जतए ने अहाँ रहू, खाली अहीँक ओत', अहीँसँ माङब।

खाली हमरेसँ किए ?

तकर कारण—हाथ पसारबेक होअए त महत् व्यक्तिक ओतए पसारी, सएह शास्त्रक विधान।

परन्तु महत् कि आओर केओ नहि।

भ' सकैए अछि, परन्तु पता नहि बूझल अछि। भाइक बात नहि बिसरब, परन्तु सभ दिन हाथ पसारबाक अभ्यास छल भौजीक आगू, किन्तु ओ दोआरि आब वन्द भेल। अहाँ हुनक बहिनि थिकिअन्हि—हमर दाबी तेँ ल' क'।

परन्तु माए ?

द्विजदास कहलथीन्ह—रथ जखन जल्दी चलैत छैक, माए तकर असाधारण सारथी, परन्तु चक्का जखन कादोमे फँसि जाइत छैक, माए तखन निरुपाय। उतरि कए ठेलब हुनका बुते पार नहि लगैत छन्हि। ओहि दुर्दिन मे हम जाएब अहाँक लग। ओहि दिन भिक्षा नहि देब ?

भिक्षाक विषय नहि बूझि कोना क' कहू द्विजू बाबू ?

ओ हम अपनो ने जनै छी वन्दना, सहजहि माङहु ने जाएब।

वन्दना बहुत काल अधोमुख रहि फेरि मुह उठा क' कहलथीन्ह—जे बुझ'

चाहै छलहुँ से नहि कहब ?

द्विजदास कहलथीन्ह—सभ नहि जनैछी, जे जनैछी सेहो प्रायः अभ्रान्त नहि। परन्तु एकटा विषयमे हमरा सन्देह नहि ओ जे भाइ आइ सर्व्वस्वान्त, सभ चल गेलन्हि।

वन्दना चमकि उठलीह—ओझाजी सर्व्वस्वान्त ? कोना क' ई भेलै द्विजू बाबू ?

द्विजदास कहलथीन्ह—खूल सहजहि ओ ई सभ शशधरक षड्यन्त्रसँ। 'साहा चौधरी कम्पनी' हठात् जाहि दिन देबलिआ भेलैक भाइओक सर्व्वस्व डुबलन्हि ओहि गह्वरमे। अथच ई खाली बाहरक घटना—जे किछु आँखिसँ देखल जा सकैछ। भीतरमे गुप्त रहलैक आन इतिहास।

वन्दना व्याकुल भए कहलथीन्ह—इतिहास रहओ द्विजू बाबू, खाली घटनाक बात कहू। कहू सर्व्वस्व जाएब सत्य कि नहि ?

हँ, से सत्ये। ओहिमे कोनो सन्देह नहि।

परन्तु बहिनि ? हुनको सभक किछु रहलन्हि कि नहि।

नहि। रहलन्हि खाली भौजीक बापक सम्पत्तिक आमदनी—सामान्य जे किछु, सएह।

परन्तु ओ त ओझाजी छुइथीन्ह नहि, द्विजू बाबू।

नहि—ताहिसँ बरू उपासेक ऊपर भाइक बेशी भरोस। जे कए दिन चलन्हि।

दूनू निर्वाक् भेल वैसल रहलाह। किछु मिनटक बाद वन्दना पुछलथिन्ह—परन्तु अहाँ ? अहाँक अपन की भेल ?

द्विजदास कहलथीन्ह—परम निर्भय ओ निरापद छी। भाइ अपने डुबलाह

परन्तु हमरा रखलन्हि ऊपर; जलक कण पर्य्यन्त नहि देहमे लाग' देलन्हि। कहब, ई असम्भव सम्भव भेल कोना क ? भेल माएक सुबुद्धिसँ, भाइक साधुतासँ आओर हमर शुभ-ग्रहक जोरसँ। गप्प कहैछी सुनू।

ई शशधर छलथीन्ह भाइक बाल्य-बन्धु, सह-पाठी; दूनूमे प्रेमक अन्त नहि। पैघ भेला पर भाइ हिनका सङ्ग कलयाणीक बिवाह करा देल-थीन्ह। ई घटकैती भाइक जीवनमे छलन्हि अक्षय-कीर्ति। सुनना गेलैक जे ई शशधरक पिताकेँ बड़का जमिन्दारी, विपुल अर्थ ओ बड़ पैघ कार-बार। एहन पैघ वित्त-शाली व्यक्ति पावना जिलामे केओ नहि। चारि वर्ष बितला पर हठात् एक दिन शशधर आबि कहलथीन्ह जे जमीन्दारी, ऐश्वर्य्य, कारबार सभ किछु अतल-पाताल जएबामे आओर बिलम्ब नहि अछि, रक्षा कर' पड़त। माए कहलथीन्ह—रक्षा करब उचित परन्तु द्विजू त हमर नाबालक अछि ओकर सम्पत्ति पर त हाथ देल नहि जा सकैए, बाउ। शशधर कहलथीन्ह—वर्ष नहि पुरतन्हि माए, सभ सधि जएतन्हि। माए कहल-थीन्ह—आशीर्वाद दै छी जे सएह जाहिसँ होअए, परन्तु नाबालकक सम्पत्ति छुइब मालिक एकदम निषेध कएने छलथीन्ह।

कल्याणी कानि क' भाइक पाएरपर आबि खसलन्हि। कहलकन्हि—भाइ, बिआह अहाँ करओने छलहुँ, आइ बेटा बेटी ल' क' हम भीख माङब ग आ' अहाँ आँखिसँ देखब ? माए देखि सकैए—परन्तु अहाँ ? जाहि ठाम हुनक धर्म्म, जाहि ठाम हुनक विवेक ओ वैराग्य, जाहि ठाम ओ हमरा सभसँ महत्—कल्याणी ओही ठाम आघात कएलकन्हि। भाइ अभय दैत कहल-थीन्ह—तोँ घर जो बहिन, जे हम क' सकब, करब। ओएह अभय मन्त्र जपैत जपैत कल्याणी अपन घर गेलि। तकरा बादक इतिहास अत्यन्त संक्षिप्त, वन्दना। परन्तु ओम्हर देखू—भोर भ' गेलैक, ई कहि ओ खुजल खिड़की दिशि हुनकर दृष्टि आकृष्ट कएलथीन्ह।

वन्दना उठि ठाढ़ि भए पुछलथीन्ह—परन्तु ई कागज सभ अहीँक थीक की ?

द्विजदास कहलथीन्ह—हमर निर्भय रहबाक दलील। अएवा काल भाइ सङे नेने आएल छलाह। परन्तु पुछै छी, अहूँ कि हमरा सभकेँ छोड़िक' आइए चल जाएब ?

ठीक नहि जनै छी, द्विजू बाबू। मुदा एखन आओर समय नहि अछि, चललहुँ। फेरि भेँट होएत। ई कहि ओ धीरे-धीरे बाहर भए गेलीह।

## २४

बहिनिकेँ जोर क' क' एकटा कुर्सी पर बैसाए वन्दना हुनका पाएरमे अलता लबैगत छलथीन्ह। ई मंगलाचार हुनका अन्नदा सिखा कए अपने कतहु नुका रहलन्हि अछि। ओकर आँखि लाल, अविरत अश्रु-वर्षणसँ आँखि फूलि गेल छैक—वन्दनाक पुछला पर ओ खाली एतबे कहने छलन्हि जे बहुआसिनिकेँ आओर मूह देखाओल नहि पार लागत।

अहाँ किए ने देखा सकबन्हि अनु बहिन, अहाँकेँ कथीक लाज ?

हमरा लाज एही वस्तुक अछि जे हम एहिसँ पहिने मरि किए ने गेलहुँ ? खाली द्विजुएकेँ त मनुष नहि बनओने छिअन्हि, वन्दना बहिनि, विपिन भाइकेँ सेहो बनओने छलिअन्हि। हुनकर माए जखन मरि गेलथीन्ह—ओ ककरा हाथमे दू मासक नेनाके देने छलथीन्ह ? हमरा हाथने। ओहि दिन दयामयी कत' छलीह ? कत' छलन्हि हुनकर वेटी जमाए ? बजैत-बजैत ओ मुहकेँ आँचरसँ दाबि जल्दीसँ अन्त चल भेलि।

एकटा पिढ़ही पर बैसि अपन जाँघ पर बहिनिक दूनू पाएर राखि—वन्दनाक आलता लगाएब जेना आइ खतम होएबे ने करतन्हि। टप् द एक ठोप नोर सतीक पाएरक ऊपर पड़लन्हि। निघुड़िओ क' ओ वन्दनाक मुह नहि देखि सकलथीन्ह, परन्तु हाथ बढ़ा क' हुनकर आँखि पोछैत कहलथीन्ह—तोँ किए कनै छह, कह' त वन्दना ?

वन्दना तेहिना नत मुहें वाष्प-रुद्ध कण्ठें कहलथीन्ह— कनैए त सभ बहिन, हमही त एकसर नहि ।

सभ कनैए तें तोहूँ कनबह —एते लीखि पढ़ि क' इएह तोहर बुद्धि भेलह ?

बहिनिक बात सूनि क' वन्दना एक पल ले मुह ऊपर उठओलन्हि, कहलथीन्ह—युक्ति देखि कए मनुष कानत, नहि त नहि कानत, अहांक विचार इएह बहिन ?

सती हाथसँ हुनक माथ हिला क' सस्नेह कहलथीन्ह—तर्क-वागीशक सङे तर्क करबाक सम्भावना नहि, से हम नहि कहै छिअह हए, से नहि कहै छिअह । ओ सभ बुझैए हमर सभ वस्तु गेल तें ओकरा सभक कानब— परन्तु सत्य त से नहि । हमरा एक दिशि छथि स्वामी, दोसर दिशि हमर बेटा; संसारमे हमर कोनो क्षति नहि भेलए, बाउ । हमरा ले तों कनेको शोक नहि करह । हमरा दुःख नहि अछि ।

वन्दना कहलथीन्ह—भगवान करथि जे अहाँकें दुःख नहि होअए । परन्तु खाली अहींक दुःख त संसारमे सभ किछु नहि । अहाँक कतेक गेल से अहाँ जानी, परन्तु कनैत कनैत जकर आँखि आन्हर भेलैक, तकरा सभक नोकसान के पुरओतैक कहू त । एक रत्ती थम्हि क' कहलथीन्ह—ओझाजी पुरुष, जे खुशी ओ बाजथु, परन्तु जएवा काल सुखाएल आँखिए अहाँ लोक सभसँ विदा नहि होएब बहिन, से ओकरा सभकें बड़ लगतैक ।

ककरा सभकें बड़ लगतैक । वन्दना ?

ककरा सभकें ? अहाँ जनै नहि छिऐ ओकरा सभकें ? अहाँ नओ वर्षक अवस्थामे एहि अङनामे आइलि छलहुँ—ओही अङनामे वर्ष क वर्ष रहि क' जे सभ अहाँकें अपन बना लेलक—आइ एक्केटा धक्कामे ओकरा सभकें विसरि गेलिऐ बहिन ? अहाँक सासु, अहाँक देओर, अहाँक परिवारक नौकर-चाकर, खबास

खवासिनी, आश्रित-परिजन, ठाकुरवाड़ी, अतिथिशाला—गुरु, पुरहित, एहि सभहिक अभाव पूर्ति होएत खाली स्वामी आ' पुत्र ल' क' ?

वन्दना कह' लगलथीन्ह—ई ककरा मुहक बात, जनै छी बहिन, जाहि समाजमे हम सभं मनुष्य बनलहुहें—तकरा सभक। अहाँ शोचैछी, स्वामी मालिक इएह शेष बात ? स्त्रीकें एहिसँ बेशी शोचवाक किछु नहि ? ई अहाँक गलती अछि बहिन। कलकता चलू हमरा मौसीक डेरापर—देखब ई बात ओत' पुरान भ गेल' छैक—एहिसँ बेशी ओ सभ शोचब्रोने करैए। करबो ने करैए आओर····बातक बीच मे ओ थम्हि गेलीह। हठात् हुनका बुझि पड़लन्हि जे पाछूमे केओ ठाढ़ भेल अछि, घूमि क' देखलन्हि द्विजदास। कखन जे ओ निश्सब्दें आबि ठाढ भेलाह दूनू गोटामे केओ नहि बुझलथीन्ह। लज्जित भए वन्दना की जे किछु बाज' लगलीह परन्तु द्विजदास रोकि क' कहलथीन्ह भय नहि, मौसिओकें नहि चिन्है त छी—हुनका दलक ककरो ने' जनै त छिअन्हि, अहाँक बात हुनका सभक लग प्रकाश नहि पाओत। परन्तु असलमे अहाँ गलती करै छी। पृथवीमे जन्तु-जानवरक दल होइ छै, तकर आचरण—'फौर्मूला'मे बान्हि सकै' छी, परन्तु मनुष्यक दल नहि। एके रूपक विचारसँ ओकरा सभहिक नियम नहि चलत। भिनसरू पहरसँ आइ सएह शोचै त छलहुँ। मौसीक दलसँ घीचि क' अनायासें अहाँकें भाइक दलमे भर्ती कएल जा सकैछ, आओर दयामयीक दलसँ बहार क' मैत्रेयीकें अहाँक मौसीक दलमे चलान देब चलि सकैछ। बाजी राखि क' कहि सकै छी, कतहु एको तिल गड़-बड़ नहि होएत। बाह रे मनुष्यक मन ! बाह् रे ओकर प्रकृति !

सती आश्चर्य्य भए पुछल थीन्ह—एकर अर्थ लाल बाबू ?

द्विजदास ओहुसँ विस्मय प्रकाश कए कहलथीन्ह अहूँक आगां माने ? द्विजूक काज, द्विजूक बातक यदि माने रहितैक भौजी, एते काल तखन दयामयी, विप्रदासक दरबार मे नहि जा कए, अहींक लग हुनकर सभ अर्जी किए अबितन्हि। माने बुझबाक अहाँकें काज नहि छल, तें ने ? आइ जाइओक दिनमे ओएह रहओ भौजी, ठीक बेठीकक केश चीर' बाला विचार करबाक

काज नहि। ई कहि सामने आबि ओ हुनक पाएरपर माथ राखि प्रणाम कएल-थीन्ह। एना ई करै नहि छथि। पाएरक काँच अलताक रंग हुनका कपारमे लागि गेलन्हि, सती व्यस्त भए आँचरसँ पोछ' लगलथीन्ह परन्तु ओ घाड़ टेढ़ क' माथ हँटा कहलथीन्ह—दाग अपने मेटा जएतै भौजी, एक टा दिन रह' दिऔ। ई बात किछु नहि, द्विजू हँसिए क' कहलथीन्ह—परन्तु सूनि क' वन्दनाक दूनू आँखिसँ नोर झरि गेलन्हि। ई नुकबैत ओ मुह उठा नहि सकलीह।

द्विजदास कहलथीन्ह—हम आएल छलहुँ तगादा करै ले। समय भ' रहल छै, भाइ व्यस्त भेल छथि। चीज वस्तु सभ पठाओल गेल, वासूकेँ कपड़ा तपड़ा पहिरा क' गाड़ी पर बैसा अएलिऐए—मांगलिक व्यवहार के क' देलकैक नहि जनैछी, परन्तु हाथमे देखलिऐक। डर होइ छल जे अनु बहिनि भरिसक डूबि क' मरि गेलि, परन्तु आब सन्देह होइए जे कतहु बँचले अछि। नहि त ई सभ के क' दितैक। परन्तु जखन ओ भेटि नहि सकैत अछि—तखन तकबाक काज नहि। ओहि दिशि दयामयीक महलक केवाड़ बन्द। संकट कालमे जे रास्ता ओ अवलम्बन कएने छथि ताहिमे करबाक किछु नहि। तखन श्रीमती मैत्रेयीकेँ कहि सकै छिअन्हि यथा-समय माएक कानमे पहुँचि जएतैक। परन्तु हम कहब ओकर काज नहि। आब अहाँ कने तत्पर भ'क' गाड़ीमे जा'क' वैसू, चलू भौजी, अहाँ सभकेँ ट्रेनमे बैसा क' हम तखन निस्तार पाएब, एक रत्ती काजमे मन लगा सकब।

सती म्लान हँसीसँ कहलथीन्ह—हमरा विदा करै ले लाल बाबूकेँ बड़ हड़बड़ी छन्हि।

हमर काज जे पड़ल अछि ?

कोन काज सुनि ?

एहिसँ पहिने त कहिओ सुन' नहि चाहलहुँ, भौजी। जखन जे चाहलहुँ विना पुछनहि बराबरि दैत अएलहुँहे। ई अहाँक सुनबा योग नहि।

सती ओ वन्दना दूनू हुनका दिशि कने काल चुपे देखैत रहलीह तकरा बाद सती कहलथीन्ह--अहाँ जाउ लाल बाबू, आओर हमरा देरी नहि होएत। वन्दनाकें कहलथीन्ह—तोहूँ एत' बेसी देरी नहि करह, जतेक जल्दी होअ' बम्बइ चल जाह। कलकत्ता जएबाक काज नहि; काका ओत' एकसरे छथि, ई मन रखिह'।

वन्दना सेहो द्विजू जेकाँ पाएरपर माथ राखि प्रणाम कएलथीन्ह, पाएरक धूरा माथमे लगओलन्हि, कहलथीन्ह—बहिन, आब मौसीक डेरा पर नहि जाएब। ओहि ठामक पाठ सामप्ते क' उठल छलहुँ, ई कखनहु बिसरब नहि। ई बाजि ओ आँचरसँ नोर पोछि, कहलथीन्ह होएत त काल्हिए बम्बइ चल जाएब। परन्तु अहूँ जएबाक पहिने ई भरोस द' जाउ बहिन, फेरि जाहिसँ अहाँ सभकें जल्दी देखि सकी।

सती मने मन की आशीर्वाद देलथीन्ह, ओएह जानथि, हाथ बढ़ा हुनक चिबुक स्पर्श कए चुम्मा लेलथीन्ह, हँसी मुहे कहलथीन्ह से त तोरा अपने हाथमे छह हए,। काकाकें कहिऔन्ह जे विआहक नोत दै ले - जत' रहब ततहिसँ पहुँचि जाएब। कने थम्हि क' प्रायः मनमे शोच' लगलीह बाजब उचित कि नहि, तकरा बाद कहलथीन्ह—बड़ सख छल जे एहि घरमे तोँ आबह। लाल बाबूक हाथमे तोरा द' क'—तोरा हाथ मे संसारक भार, बासूक भार सभ द' क' माएक सङ्ग कैलाश-दर्शन कर' जाएब। यदि फीरि नहि सकी त की? परन्तु मनुष्य शोचैए किछु, होइ छै किछु। ई कहि ओ चुप भेलीह। किछु काल स्तब्ध रहि फेर कहलथीन्ह एहि आङनमे जे हमरा भेटल छल संसारमे से ककरो ने भेटतैक। आओर सभसँ बेशी पओने छलहुँ हम अपन सासुकें। परन्तु हुनकेसँ विच्छेद भेलए सभसँ बेशी। विदा होए-बाक पहिने प्रणाम कर' गेलिअन्हि—केबाड़ बन्द छलैक। चौकठि पर माथ राखि कहलिअन्हि माए—एहि काठ पर हिनकर पाएरक कते धूरा लगलन्हि होएत, इएह हमर—बात खतम नहि कए सकलीह, कण्ठ रुद्ध भए गेलन्हि, एहि बेरि ओ कान' लगलीह; हुनकर दूनू आँखिसँ नोर झर झर बह' लगलन्हि। दू

तीन मिनट सम्हार' मे लगलन्हि। आँचरसँ आँखि पोछि बजलीह—आ' हमरा अनु बहिनि नहि भेटलीह। ओ हमरा माइओसँ बढ़ि क' छलीह, वन्दना। हुनका कहिहन्हु—जे हम हुनका पर तामस क' क' गेलिअन्हिहें—फेरि दूनू आँखि भरि गेलन्हि। फेरि ओ आँखि पोछलन्हि। ओ एकटा बिलाड़ि पोसने छलीह—ओकर नाम निमू,। काज-कर्म्मक आङनमे ओ कत' गेल तकर कोनो ठेकान नहि। भिनसरु पहरसँ कए बेर मन पड़लन्हिहें, एखनो-फेर मन पड़लन्हि। कहलथीन्ह—निमू जे कत' डूबि मरल, देखै नहि छिऐक। अनू बहिनिकेँ कहिहन्हु त वन्दना। आओर इएह थोड़बे काल पहिने जोर' द' क' बाजलि छलीह—जे हुनकर एक दिशि छथीन्ह स्वामी, एक दिशि छन्हि सन्तान—संसारमे कोनो क्षति हुनका नहि भेलन्हि। ई बात कतेक मिथ्या!

भौजी करै छी कि? बाहरसँ द्विजदासक फेरि एक बेर तगादा अएलन्हि।

अबै छी बाउ, कहि सती जल्दीसँ बाहर भए गेलीह।

× × ×

स्टेशनसँ द्विजदास जखन एकसरे फीरि क' अएलाह तखन सन्ध्या भए गेल छलैक। घर घरमे तहिना इजोत छैक, ओहिना लोक सभ अपन काजमे व्यस्त, एहि वृहत् परिवारमे कत' की विप्लव भेलैक अछि, केओ जनबो ने करैए। बाहरक उपरका महलमे विप्रदासक वैसबाक घरमे केवाड़ खिड़की वन्द—ओहि दिशि अन्धकार। ओना कतेक दिन ओहिमे इजोत नहि जरै छैक—विप्रदास रहै छथि कलकत्ता, अभावनीय किछु नहि। सिड़हीक बामा दिशुक घरमे रहै छथि अशोक, खिड़कीसँ देखि पड़लन्हि जे ओ आराम कुर्शी पर पाएर पसारने बत्तीक इजोतमे निविष्ट चित्ते एकटा किताब पढ़ैत छथि। कालेज कामहि क' क' अक्षय बाबू आइओ छथिहे, हुनक कोठरी एक कात दिशि। ओ घरमे छथि कि वायु सेवनक हेतु बाहर गेल छथि, बुझल नहि भेलन्हि। मोटरसँ उतरि अङनामे

पाएर रखैत द्विजदासक नजरि गेलन्हि तिन महला पर लाइब्रेरिक घर दिशि संध्याक बाद—ई घर अधिक काल अन्हारे रहैत छैक—आइ परन्तु खुजल खिड़की बाटे इजोत अबैत छलैक। हुनका सन्देह नहि रहलन्हि……जे एतए वन्दना छथि। पुस्तक पढ़बा ले नहि—आँखि पोछै ले। लोक संस्रवसँ आत्म रक्षाक हेतु ओ एहि निर्ज्जनमे आश्रय लेलन्हि अछि। आइ राति कहुना क' काटि ओ कालि्ह चल जइतीह—सुदूर बम्बइक अंचलमे जत' मनुष भेलीहे एते पैघ भेलीहे। जत' छथीन्ह हुनक पिता, आत्मीय स्वजन, हुनक कते बन्धु-वान्धवी। कोनो दिन, कोनो बहानासँ कहिओ जे एहि गाममे हुनक आएब फेरि जे सम्भव होएत—ई शोचलो ने जा सकैए। नहि आबथु परन्तु ई घर आङन ओ सहिजहि बिसरिओ नहि सकतीह। विचित्र ई दुनिञा—कते अद्भुत ओ अभावित व्यापार एतए निमेष मात्रमे घटैत अछि। एक एक टा क' ओहि प्रथम दिनसँ आइ पर्य्यन्न सभ बात द्विजूकें मन पड़लन्हि। ओएह हठात् आएब—आ' फेरि खिसिआ क' चल जाएब। बीचमे खाली किछु घंटाक गप्प सप। ओहि दिन वन्दना सहास्ये कहने छलथीन्ह—खाली आँखिसँ परिचय नहि छल, नहि त देअओरक गुणावगुण लिखि पठएबामे बहिनि कहिओ आलस्य नहि कएलन्हि। हम सभ बात जनै छी, अहाँक सम्बन्धमे हमरा किछुओ अनजान नहि। जते दिन, जते किछु सौंसे अड.नाक लोककें अहाँ तङ्ग कएलिऐक अछि, सभ बात हमरा बूझल अछि। द्विजदास पुछने छलथीन्ह—हम दूनू गोटे ककरो केओ चिन्हैत नहि छलिऐक, तैओ अहाँक आगू हमर ई दुर्नाम प्रचार करबाक सार्थकता की छलैक? वन्दना हँसि क' कहने छलथीन्ह—असलमे बहिनि अहाँके देखि नहि सकैत छलीह कि ने—तकरे प्रतिशोध।

तकरबाद दूनू गोटे हँसि कए एहि बातकें परिहासमे रूपान्तरित कएने छलाह—परन्तु ओहि दिन दूनूमे केओ ई नहि बुझलन्हि जे ई छलन्हि सतीक द्विजूक प्रति वन्दनाक चित्त आकर्षण करबाक कौशल—यदि कहिओ बहिनिकें आनल जा सकए, यदि कखनो ओकरा हाथमे अपन अशान्त देओरके शासनमे राखि सकथि। किन्तु से भेलन्हि नहि; हुनक गोपन वासना गुप्ते रहि गेलन्हि—

आइओ दूनू गोटा मे केओ ने ओहि चिट्ठी सभहिक अर्थं बूझि सकल।

द्विजदास सोझे ऊपर चल गेलाह। पर्दा हँटा' क' भीतर प्रवेश कए देखलन्हि वन्दनाक कोरामे पुस्तक खुजल—परन्तु ओ खिढ़कीक बाहर तकैत स्थिर भेलि बैसलि छथि। एको टा पन्ना पढ़लन्हि अछि कि नहि, सन्देह। ई बुझिओ क' खाली बात आरम्भ करै ले ओ प्रश्न कएलथीन्ह, कोन किताब पढ़ै छलहुँ ?

वन्दना पोथी बन्द कए टेबुल पर रखलन्हि, ठाढ़ि भए पुछलयीन्ह—अहाँकें फिरबामे एते देरी भेल ? कलकत्ताक गाड़ी त कखनने गेलै'।

द्विजदास कहलथीन्ह—देरी होउक—तैयो त फिरलहुँ। नहिओ फीरि सकै छलहुँ।

वन्दना कहलथीन्ह—अनायासे।

द्विजदास कने काल चुप रहि कहलथीन्ह—ठीक इएह बात हमरा मनमे पहिने आएल छल। गाड़ी विदा भेलैक—खिड़कीसँ गरदनि बाहर क' ठाढ़ भेल वासू हाथ हिलाब' लागल—क्रमशः ओकर छोट हाथ—मोड़ पर गाड़ी घुमबाक कारणे अदृश्य भए गेलैक। पहिने मनमे भेल—ओकरे सभक सङ्ग चल गेलासँ त होइत।

वन्दना कहलथीन्ह—अहाँ वासूकें बड़ मानै छिऐ, नहि ?

द्विजदास कने शोचि क' कहलथीन्ह—देखू, जवाव की देब ? एहि सभ वस्तुक हम प्रायः स्वरूपे ने बुझैत छिऐक। प्रकृति एहन रुक्ष, एहन नीरस जे दुइए दण्डक बाद सभटा विसरिकए सुखाएल बालु फेरि धूधू जर' लगैछ। प्लैट-फर्म पर ठाढ़ भेल छलहुँ, आँखिमे एक बेर नोर आएल परन्तु फेरि तखने सुखा गेल—वाष्प-चिह्नो ने रहल।

वन्दना कहलथीन्ह—ई एक प्रकारक भगवानक आशीर्वाद।

द्विजदास बाज' लगलाह—के जाने, होएबो करए। आ' एही वासूक डरें माए काल्हिसँ घरमे केबाड़ ठोकने अछि। नहि त भाइओ ले नहि,

भौजिओ ले नहि। माए शोचैए जेना वासूकें ओएह मनुष वनओने रहैक— परन्तु हिसाब कएलासँ देखब जे ओकर आधा समय कटलैए हुनकर तीर्थ वासक कालमे। तखन ओ ककरा लग रहए? हमरा लग। टाइफयाड ज्वरमे के जागल छल साठि दिन? हम। आइओ जएबाक काल के ओकरा पहिरा ओढ़ा देल- कैक? हम। ओकर अङ्गा कपड़ा रहै छैक हमर आलमारीमे, ओकर पोथी- स्लेटक जगह हमरा टेबुल पर—सुतवाक ओछाओन हमरा खाट पर। माए घींचि तीरिक' लए जाइ छलथीन्ह—परन्तु किछु राति वितला पर जखन ओकर निन्द टुटैक त ओ पड़ा क' चल अवै छल हमरा कोठरीमे।

वन्दना निर्मिमेष भए देखैत छलीह, कहलथीन्ह—तैओ त आँखिक नोर सुखएबामे कनेको काल नहि लागल।

द्विजदास कहलथीन्ह—नहि। इएह हमर स्वभाव। ओकरा ल' क' हमर चिन्ता इएह जे ओ आब पड़त बाप माएक हाथमे। अहाँ कहब संसारमे सएह त स्वाभाविक—एहिमे डर कथीक? परन्तु स्वाभाविके कहि त झंझट अछि जे एहन भारी उनटा बात मनुषकें हम बुझएबैक कोना?

वन्दना ई नहि कहलथीन्ह जे बुझएबाक प्रयोजने की? अन्य पक्षमे बाप माएक विरुद्ध एहन पैघ अभियोग सत्य बूझि विश्वासो करब कठिन—विशेषतः विप्रदासक विरुद्ध। परन्तु बिना किछु तर्क कएनहि ओ चुप रहलीह।

तुरन्ते वक्तव्यकें स्पष्ट करैत द्विजदास कहलथीन्ह, एक टा सांत्वना अछि जे भौजी रहलथीन्ह लगमे—नहि त भाइक हाथमे द' क' हमरा एको रत्ती शान्ति नहि होइत।

वन्दना कहलथीन्ह—अहाँ त निर्ब्बिकार, वासूक नीक अधलाह ल' क' अहाँक मथ-दुःखी किए? जे होएतैक होउक।

सूनि कए द्विजदासक मुह पर एक सुतीक्ष्ण वेदनाक छाया पड़लन्हि परन्तु

ओ चुप रहलाह ।

वन्दना कहलथीन्ह—भाइक प्रति गम्भीर विश्वास, ओ श्रद्धाक बात एक दिन अहाँक मुहेँ सुनने छलहुँ । सेहो कि ओही आँखिक नोर जेकाँ एके क्षणमे सुखा गेल । आ कि जे लोक अपना दोषेँ सर्व्वस्वन्त भ' जाए—तकरा विश्वास करब नहि चलत—अन्तमे अहाँ इएह कह' चाहै छी ?

द्विजदास विस्मय आ दुःखसँ अभिभूत दृष्टिएँ कने काल हुनका दिशि देखैत रहलाह—तकरा बाद दूनू हाथसँ माथ छ बि धीरे धीरे बजलाह—नहि, हम से नहि कहै छलहुँ—तृष्णाक जलक हेतु मनुष्य समुद्रक लगमे जा' क' जाहिसँ हाथ नहि पसारए । परन्तु भाइक सम्बन्धमे आलोचना रहओ—बाहरक लोक ई बात नहि बुझत ।

एहि बातगँ वन्दनाक अंतस्तल अत्यंत आहत भेलन्हि परन्तु प्रतिवाद कर-बाक किछु नहि देखि चुप्पे रहलीह ।

द्विजदास एके बेर आन बात आरम्भ कएलन्हि—पुछलथीन्ह अहाँ कि काल्हिए बम्बइ जाएब ?

वन्दना कहलथीन्ह—हँ ।

अशोक बाबू ल' जएताह ?

हँ, ओएह ।

द्विजदास कहलथीन्ह—बम्बइ मेल एहि ठामसँ वेशी रातिमे जाइत छैक, काल्हि अहाँ सभकेँ हम स्टेशन तक पहुँचा देब ग । परन्तु दिनमे नहि रहि सकब--किछु काज अछि ।

बाबूकेँ कने तार पठा देबन्हि ।

अच्छा ।

करीव दू-तीनि मिनट धरि चुप रहि इतस्ततः कए द्विजदास बजलाह—

एकटा बात अहाँकेँ पूछब से शोचै छी परन्तु कतेको कारणसँ दिन वीतल जाइए—पुछल नहि होइ'ए। कालिह चल जाएब आओर समय नहि भेटत ; यदि खिसिआइ नहि त कही।

कहू।

देरी होअ' लगलन्हि।

वन्दना कहलथीन्ह—खिसिआएब नहि, अहाँ निर्भये कहू।

द्विजदास कहलथीन्ह—कलकत्ताक डेरा पर माए एक दिन खिसिआक' भौजीकेँ नेने चल अइलीह—अहाँकेँ मन अछि ?

अछि।

कारण नहि बूझि अहाँ आश्चर्य्यित भेलि छलहुँ। मन खूब खराब छल। हमरा घरमे आबि क' अहाँ एकटा बात कहने छलहुँ जे हम अहाँकेँ नीक लगै छी,—मन अछि ?

अछि—किन्तु खूब लज्जाक सङे मन पड़ैए।

ओहि बातक कि कोनो मूल्य नहि ?

नहि।

द्विजदास किछु काल स्तब्ध रहि बजलाह—हमहूँ सएह शोचै छी जे ओकर कोनो मूल्य नहि।

कने कालक बाद कहलथीन्ह—भौजी कहै छलीह अहाँक मौसीक इच्छा छन्हि जे अशोकक सङे अहाँक विआह होअओ। से कि स्थिर भ' गेल ?

वन्दना कहलथीन्ह—ई हमरा सभक पारिबारिक वात। बाहरक लोकक सङे एहि तरहक आलोचना नहि चलैछ।

द्विजदास कहलथीन्ह—आलोचना त नहि खाली एकटा खबरि।

वन्दना तिक्त-कण्ठे कहलथीन्ह—अहाँ सङे कोनो एहन आत्मीय सम्बन्ध

नहि अछि जाहिसँ अहाँ ई प्रश्न करी। द्विजू बाबू, अहाँ शिक्षित लोक—ई कुतूहल अहाँक हेतु लज्जाकर। सूनि कए द्विजदासकेँ वास्तवमे लज्जा भेलन्हि, हुनक मुह म्लान भ' येलन्हि। कहलथीन्ह—हमरासँ गलती भेल वन्दना। स्वभावतः हम कौतूहली नहि छी, अनकर बात जानबाक लोभ हमरा बड़ थोड़ होइछ। परन्तु नहि जानि किए हमरा मनमे होअए जे जे बात हम ककरोसँ नहि पुछि सकै छिऐ से अहाँसँ पूछि सकै छी। जाहि विपत्तिमे ककरो सोर नहि कएल जाएत, ताहिमे अहाँकेँ आह्वान कए सकै छी। जहाँ—

हुनक बातक बीचेमे वन्दना हँसि क' कहलथीन्ह—परन्तु एखने जे कहलहुँ भाइक आलोचना बाहरक लोकक सङ कर' अहाँ नहि चाहै छी। हम त आन— एकदम बाहरक लोक।

द्विजदास कहलथीन्ह—सएह यदि होअए, त अहीँ किए हुनका सम्बन्धमे अश्रद्धा करबाक व्यङ्ग कएलहुँ? अहाँ जनै नहि छी हमरा की भ' रहल्ए? दीपालोकमे स्पष्ट देखक गेल जे हुनक दूनू आँखिक कोन अश्रु वाष्पसँ छल-छल करैत छन्हि।

मैत्रेयी घरमे ढुकलीह। कहलथीन्ह—द्विजू बाबू, अहाँ कखन अङना अएलहुँ, हम सभ केओ बुझबो ने कएलहुँ।

द्विजदास घूमि क' ठाढ़ भेलाह—कहलथीन्ह बुझबाक बड़ आवश्यकता छल कि?

मैत्रेयी कहलथीन्ह—वेश कहै छी। अहाँ कालिह नहि खएलहुँ, आइओ नहि खएलहुँहें—ई आन केओ नहि बूझओ, हम त जनैत छी। चलू माएक घर।

परन्तु माएक केबाड़ त बन्द छैक।

मैत्रेयी कहलथीन्ह—वन्दे छलन्हि परन्तु हम नहि छोड़लिअन्हि। माथ पटकि तटकि क' कहुना केवाड़ खोलओलिअन्हिहें, हुनका स्नान करओलि-

अन्हिहें। कहै छलीह—द्विजूक नहि खएने खइतीह नहि। कहलिअन्हि—से नहि होएत माए, अहाँक ई बात हम नहि मानव। परन्तु तखनसँ हम सभ केओ अहींक रास्ता देखै छी। चलू, अहाँक खेनाइ राखि अएलहुहें माएक घरमे।

द्विजदास अवाक् भए गेलाह। हिनक एते रास बात ई एहिसँ पहिने कहिओने सुनने छलाह। कहलथीन्ह—चलू।

मैत्रेयी वन्दनाकें उद्देश कए कहलथीन्ह—अहूँ चलू। माए अहाँकें सोर करै छथि। ई कहि द्विजदासकें एक तरहे गिरफ्तार कए क' ल' गेलथीन्ह। सभक पाछाँ गेलीह वन्दना।

अपना घरमे दयामयी छलीह ओछाओन पर पड़लि। अनुज्ज्वल दीपालोकमे हुनक शोकाच्छन्न मुह दिशि देखलासँ क्लेश होइक परिस्फीत दूनू आँखि आरक्त। सद्य:स्नात आर्द्र केश छिड़िआएल, विपर्य्यस्त। माथ लग वैसल कल्याणी हाथ फेरैत छलथीन्ह, दोसर दिशि एकटा कुर्शी पर बैसल अक्षय बाबू। द्विजदासक घरमे अबैत देरी दयामयी मुह फेरि क' सुतलीह आओर दोसरे क्षण एकटा अस्फुट क्रन्दनक अवरुद्ध आवेगसँ हुनक सर्व्वाङ्ग काँपि उठलन्हि।

वन्दना स्थिरसँ जा'क'हुनका पाएरक लगमे बैसिलीह-एहेन भयङ्कर व्यथाक दृश्य ओ प्राय: कहिओ कल्पनो ने कए सकैत छलीह। वहुत काल तक सभ केओ निर्व्वाक्—एहि स्तब्धताकें भङ्ग कए पहिल बात बजलाह शशधर। कहलथीन्ह—सुनै छी, अहाँ विनु खएनहि छी, जे होउक दूटा किछु मुहमे दिअ।

द्विजदास कहलथीन्ह, हँ।

ठाँओ क' क' मैत्रेयी यत्न पूर्व्वक खएबाक वस्तु सरिआक' रखैत छलीह—ओहि दिशि देखैत शशधर फेरि कहलथीन्ह—अहाँकें फिरबामे एते देरी भेल? ओ सभ गेलाह त अढ़ाए बजेक गाड़ीसं?

हँ।

शशधर कने हँसबाक चेष्टा करैत बजलाह—आ कलकत्ताक घर त सुन-

लहुहें जे अहींक ने थीक ?

द्विजदास कहलथीन्ह—हमरा घरमे भाइक प्रवेश निषेध छन्हि कि ?

शशधर कहलथीन्ह--से नहि कहै छी। वरं ओएह ई भाव देखा गेल छथि। ई हो घर छोड़ि क त हुनका जएबाक काज नहि छलन्हि—कने मिट-मिटाओ कइए लेलासँ भ' जइतन्हि।

द्विजदास कहलथीन्ह—मिट-मिटाओक रास्ता यदि खूजल छल—त अहीं कि एने क' लेलहुँ ?

हम क' लेब ?—शशधर अत्यन्त विस्मय प्रकाश करैत बजलाह—ई कोन बात ? हमरा अपमान कएलन्हि ओ आ' भिटभिटाओ करितहुँ हम ? बेजाए युक्ति नहि ? ई कहि ओ रहि रहि क' हँस' लगलाह। हँसी थम्हलापर द्विजू कहलथीन्ह—युक्ति बेजाए नहि देलहुँ शशधर मिश्रजी। स्त्रीगण सभ बात कहैत छैक पर्व्वतक अढ़मे रहब। भाइ छलाह सएह पर्व्वत—अहाँ छलहुँ हुनका अढ़मे। एखन सोझा सोझी ठाढ़ भेलहु हें हम आओर अहाँ। मान अपमानक वात समाप्त त नहि भेलए—एखन सुरुह मात्र भेलए।

एकर अर्थ ?

अर्थ इएह जे हम अहाँक बाल्यबन्धु बिप्रदास नहि—हम द्विजदास।

शशधरक मुहक हँसी क्रमहि लुप्त भए गेलन्हि—भयानक गम्भीर कण्ठें प्रश्न कएलथीन्ह—अहाँक कहबाक अर्थ की खोलि क' कहू।

द्विजदास कहलथीन्ह—अहाँक ई बात हम मानै छी जे एकर अर्थ स्पष्टे भ' जाएब नीक थीक। हमर भाइ ओहि कोटिक लोक छथि जिनकर सत्य-रक्षार्थ, सर्व्वस्वान्त होइ छन्हि जे आश्रितक हेतु अपन देहक मांस काटि क' दैत छथि, हुनका सभक आदर्श कहि क' की एक अद्भुत वस्तु छन्हि जकरा हेतु एहन कोनो वस्तु नहि छैक जे ओ सभ नहि कए सकैत छथि। ओ सभ एक तरहक बताह लोक—तें ई दुर्दशा। परन्तु हम नितान्त साधारण मनुष्य छी, अहाँक सङ्ग विशेष प्रभेद नहि अछि। ठीक अहींसभ जेकाँ हमरो हिंसा अछि, घृणा अछि,

प्रतिशोध लेबाक शयतानी बुद्धि अछि—तें भाइके' जे ठकालअन्हिहें—त अहूँके हम ठकब, हुनक नाम जाल कएला पर स्वच्छन्दे अहाँके अहल पठाएब, अन्तत: चेष्टामे त्रुटि नहि रहत—जते काल दूनू दिशक लोक पथक भिखारी नहि भ' जाइ। विज्ञ लोकनिक मुहसँ सुनलउहें जे—एहिना एकरा सभहिक परिणाम होइ छैक, से होअओ।

शशधर उच्चस्वसँ बाजि उठलाह, माए—सुनै छथि अपन द्विजूक बात ? हुनका जे मुहमे अबै छन्हि से बजने जाइ चथि—एहिसँ हुनका रोकथुन्ह ७

द्विजदास कहलथीन्ह—माएक आगू नालिश कएलासँ काज नहि चलत, शशधर मिश्र। ओ जनै छथि हम त्रिपिन नहि छी, मातृ वाक्य द्विजूक हेतु बेद वाक्य नहि। द्विजू ताल ठोकि क स्पर्धाक अभिनय नहि करै छथि ई, बात माए जनै छथि।

ककरो मुहमे बात नहि। दूनू गोटाक एहि रूपक वाद प्रतिबाद जेना सम्पूर्ण असंभावित। बिस्मय ओ भयसँ सभ केओ स्तब्ध भए गेल। शशधर बुझलन्हि जे ई परिहास नहि, कठोर संकल्प। उत्तर देबाक लेल हुनका कण्ठस्वरमे पहिने जेकाँ प्रवलता नहि छलन्हि तथापि जोर द' क' बाजि उठलाह—इएह शेष तखन। एत' हम आब जलो ग्रहण नहि करब।

द्विजदास कहलथीन्ह—कोना क' जे एते काल कएने छलहुँ सएह आश्चर्य, शषधर मिश्रजी।

कल्याणी कानि क' कहलथीन्ह—भाइ, अन्तमे अहीं कि हमरा सभके मार' चाहै छी ? माएक पेटक भाइ अहाँ छी, अहीं हमरा सभक सर्व्वनाश करब ?

द्विजदास कहलथीन्ह—तों शोचैछें जे आँखिक नोर बहा क' सर्व्वनाशके हटा देबें ? कतहु विचार नहि होएत ?—तोरे सभहिक जिद्द बेर बेर रहतौक। भाइ नहि छथि ई ठीक, तैओ जखन खाए ले नहि भेटौ, तखन हमरा लग अबिहें, तखन तोहूर कानब सुनबौ, एखन नहि।

दयामयी चुप्पे चाप बहुत किछु सहि चुकल छलीह—आओर नहि सहि सकलीह, चीत्कार क' उठलीह—द्विजू-तों जाह एतसँ। एहिना क' गारि गरौज करैले कि विपिन तोरा सिखा गेल' हे ?

के सिखा गेलए कहै छें ? विपिन ?

हँ—ओएह, निश्चय ओएह।

द्विजदासक ओष्ठाधर एक क्षणक हेतु कुञ्चित भए गेलन्हि। कहलथीन्ह—हम जाइ छी। परन्तु माए—अपनाकें बहुत छोट क' चुकलें, आओर छोट जुनि कर। ई कहि ओ बाहर भए गेलाह।

अपना धरमे आबि द्विजदास चुप चाप बैसल छलाह—करीब दू घंटाक बाद मैत्रेयी आबि प्रवेश कएलथीन्ह, हुनका हाथ मे खएबाक थारी, कहलथीन्ह खएवाक वस्तु फेरि क' रान्हि क' लेलहुँ हें—खाए ले बैसू। एही घरमे ठाँओ क' दै' छी।

ई अहाँकें के कहलक ?

केओ ने। काल्हिसँ अहाँ नहि खएलहुँ हें से कि हम नहि जनै छी ?

एते लोकक बीचमे अहाँकें जानबाक काज ?

मैत्रेयी माथ नीचा क' चुप चाप ठाढ़ि रहलीह। जबाब नहि पाबि द्विजदास कहलथीन्ह—एहीठाम राखि दिऔ। एखन भूख नहि अछि, यदि भूख लागत त खा' लेब।

मैत्रेयी घरक एक कातमे आसन बैसाए खएबाक बस्तुकें सरिआ क' राखि नीक जेकाँ झाँपि, चल गेलीह। आओर किछु नहि कहलथीन्ह—ईहो ने कहलथीन्ह जे ठंढा भ' गेला पर खएबामे नहि नीक लागत।

राति तखन करीब बारह बजैत छल होएतैक। द्विजदास कुर्शी छोड़ि उठलाह। किछु मात्र खा कए सूति रहताह इएह शोचि कए हाथ मुह धोइ ले बाहर आबि देखलन्हि के एक गोटे दोआरि लग बैसल अछि। ओसाराक

स्वल्प आलोकमे चीन्हि नहि सकलथीन्ह, तें पुछलथीन्ह—के ?

हम मैत्रेयी ।

द्विजदासक विस्मयक सीमा नहि, कहलथीन्ह एते रातिमे एत' किए छी ?

खाए ले बैसब तखन यदि कोनो काज होअए—तें बैसलि छी ।

ई अहाँक भारी अन्याय । एक त हमरा काजे नहि होएत, आओर यदि होअए त घरमे आन कि केओ नहि छैक ?

मैत्रेयी मृदु कण्ठे कहलथीन्ह—कए दिनसँ बराबरि परिश्रम कएलासँ सभ केओ एकदम थाकल अछि। केओ जागल नहि छैक—सभ सूतल ।

द्विजदास कहलथीन्ह—अहाँ अपनहुँ त कम नहि खटलहुहें तखन सुतलहुँ किए ने ?

मैत्रेयी उत्तर नहि देलथीन्ह, चुप्पे रहलीह ।

द्विजदासक रुक्ष स्वर अपेक्षा कृत किछु नरम भए गेलन्हि, कहलथीन्ह—एना भ' क' बैसल बड़ अधलाह लगैए । अहाँ भीतर आबि क' बैसू, जते काल खाइ छी, तते काल देखू । ई कहि ओ हाथ मुह धोइले, जल जाहि घरमे छलैक—तत' चल गेलाह ।

एहिसँ पहिने मैत्रेयीक सङ्‌ द्विजदासकेँ कम्मे गप्प भेजन्हि अछि । प्रयोजनो ने छलन्हि, इच्छोने भेलन्हि । एखन गप्प कोन रूपेँ करताह ई शोचैत फीरि क' अएलाह त देखलन्हि ने छन्हि खएबाक थारी ने छथि मैत्रेयी अपने । एही बीचमे बात की भेलैक—ई अनुमान करबासँ पहिनहि ओ आबि ठाढ़ि भेलथीन्ह । कहलथीन्ह—झपना उघाड़ि क' देखलिऐक त सभटा सुखा क काठ भ' गेल छल—तें फेरि गेल छलहुँ लबै ले, बैसू ।

द्विजदास कहलथीन्ह—भाफ उठैए देखै छी । एते रातिमे ई सभ कत' भेटल ?

मैत्रेयी कहलथीन्ह—नीक जेकाँ राखि आइलि छलहुँ । जखने कहलहुँ जे

खएबामे देरी होएत—तखने बुझलहुँ, ई सभ नहि रखलासँ—भोजने ने होएत। द्विजदास भोजन पर बैसि पहिने रन्धन-नैपुण्यक प्रशंसा कए बुझलन्हि—एहिमे कोन मैत्रेयीक अपन हाथक बनाओल। ओ सभ वारंवार अनुरोध कए, द्विजदासकें बेशी क' खोअओलथीन्ह। एहि विद्यामे ओ व्युत्पन्न; जनै छथि कोना क' खोआओल जाइत छैक।

द्विजदास हँसि क' कहलथीन्ह—वेशी खएलासँ दुःखित होएत।

नहि से नहि होएत। काल्हिसँ उपास कएने छी, एकरा बेशी खाएब कहै छै?

परन्तु हमहीं टा त खाली भूखल नहि छी—एहि अङ्गनामे बुझि पड़ैए बहुत लोक एना अछि।

मैत्रेयी कहलथीन्ह—आन बहुत लोकक बात त नहि जनै छी, परन्तु माएकें जे कोना क' खोआ सकलहुँ से खाली हमही जनै छी। हम नहि रहितहुँ त ओ कते दिन जे दोआरि बन्न कएने अनाहारे रहितथि—हमरा शोचिओ क' डर होइए।

द्विजदास कहलथीन्ह—अहाँ अन्नदा बहिनिक खबरि लेलिअन्हिहें।

मैत्रेयी कहलथीन्ह—आब ओकरा की भेलै? ओहो नहि खएलकए कि?

एते काल मैत्रेयीक बात सभ हुनका वेश लगै छलन्हि—एकरत्ती प्रसन्नताक वसात एहि दुःखोक बीचमे जेना हुनका मनकें बीच बीचमे स्पर्श करैत छलन्हि, परन्तु एही अन्तिम बातसँ हुनक चित बिद्रूप भए गेलन्हि, कहलथीन्ह—अनु बहिनिक विषयमे एहि तरहें नहि बाजक चाही। प्रायः सुनलहुँहें जेओ हमरा सभक नौकरनी, परन्तु एहि अङ्गनामे ओकरासँ बढ़ि क' हमर केओ नहि। हमरा मनुष बनओने अछि।

मैत्रेयी कहलथीन्ह—से सुनलहुहें। परन्तु कते अङ्गनामे त पुरान खवास-खवासिनी सभ नेना सभकें पोसैत छैक। एहिमे नव बात की छैक? अच्छा अहाँक खएला पर ओकरो खबरि लेबैक।

द्विजदास निरुत्तरे क्षण भरि हुनक मुह दिशि देखैत रहलाह। हठात् मनमे भेलन्हि—सत्ये त, एहन कतेक परिवारमे होइत छैक; जे भीनरक बात नहि जनैत अछि ओकरा लेखे बाहरक घटना एकान्त विस्मय कारक—एहिमे छैक कि? कठोर विचार हल्लुक भ' गेलन्हि, कहलथीन्ह—अनु बहिनि यदि नहि खएने होएत त एते रातिमे आओर नहि खाएत। ओकरा लें आइ रातिमे आब व्यस्त होएबाक काज नहि।

फेरि किछु मिनट निश्शब्द रहला पर द्विजदास पुछलथीन्ह—मैत्रेयी, अनका एना सेवा करब अहाँ सिखलहुँ ककरासँ? अहाँ अपना माएसँ?

मैत्रेयी कहलथीन्ह—नहि, अपन बहिनि लग। ओकरा जेकाँ स्वामीक यत्न करब ककरो ने देखलिऐकए।

द्विजदास हँसि कए कहलथीन्ह—स्वामी कि आन? हम आनक यत्न करबाक विषयमे पुछलहुँ?

ओह—आन?—बाजिते मैत्रेयी हँसि कए सलज्जे मुह नीचा कएलन्हि।

द्विजदास कहलथीन्ह—अच्छा कहू अपन बहिनिक गप्प।

मैत्रेयी कहलथीन्ह—बहिनि परन्तु जीबैत नहि छथि। तीनि वर्ष भेलैक, एकटा बेटा आ दूटा बेटी छोड़ि क' मरि गेलीह। चौधुरी जी परन्तु एको वर्ष अपेक्षा नहि कएलन्हि, फेरि विआह क' लेलन्हि। केहन अन्याय कहू त?

द्विजदास कहलथीन्ह—पुरुष सभ सएह करैए। ओ सभ अन्याय नहि बुझैत अछि।

अहूँ सएह करब कि?

पहिने एकटा त करी, तखन ने दोसरक विषयमे शोचब!

मैत्रेयी कहलथीन्ह—एना क' कहलासँ त नहि ने चलत। तखन अहाँक भौजी छलीह—परन्तु आब त ओ नहि छथि। माएकेँ देखतन्हि के?

द्विजदास कहलथीन्ह—के देखतैक से नहि जनैत छी मैत्रेयी, भ' सकैए जे बेटी-जमाए देखथीन्ह—भ' सकैए अओर केओ आबि भार लेथीन्ह। ससारमे कतेक असम्भव बात जे सम्भव होइत छैक तकर केओ पार नहि पाबि सकैछ। हमरा सभक बात रह' दिअ, अहाँ अपन बात कहू।

परन्तु हमर अपन बात त किछु नहि अछि।

किछु नहि? एक दम्मे किछु नहि?

मैत्रेयी पहिने एक रत्ती संकुचित भेलीह तकरा बाद कने हँसि कए कहलथीन्ह—ओ, हम बुझलहुँ। अहाँ चौधुरीजीक गप्प ककरोसँ सुनलहुहेँ? छिः छिः निलंज्ज लोक, बहिनिक मरैत देरी प्रस्ताव पठओलन्हि—हमरासँ विवाह करवा ले।

तकरा बाद?

चौधुरीजीकेँ रुपैया पैसा बहुत छन्हि—बाबू आ माए दूनू गोटे राजी भ' गेलथीन्ह, कहलथीन्ह—आओर किछु नहि होउक लीलाक बेटा-बेटी त पोसल जाएत। जेना संसारमे हमरा कोनो काजे ने अछि बहिनिक धीआ पुताकेँ पोसब छोड़ि क'। हम कहलिऐक जे ओ बात तोँ सभ बजबेँ त हम गाराँमे फँसरी लगा लेब।

किए, एहिमे अहाँकेँ आपत्ति कथीक छल?

आपत्ति नहि होएत? संसारमे एहिसँ बढ़ि क' अशान्ति आओर किछु छैक कि?

द्विजदास कहलथीन्ह—ई बात अहाँक सत्य नहि। संसारमे सभ ठाम अशान्ति नहि अबैत छैक, मैत्रेयी। हमर माए भाइकेँ पोसने छन्हि।

मैत्रेयी कहलथीन्ह—परन्तु अन्तमे ओकर फल की भेलैक? आइ सन दुःखक घटना एहि अङनामे कहिओ भेल छलैक?

द्विजदास स्तब्ध भए गेलाह। हिनकर बात मिथ्या नहि, परन्तु सत्यो कोनो

रूपें नहि। दू तीनि मिनट धरि अभिभूत जेकाँ बैसि अकस्मात् जेना हुनका ध्यान टुटलान्हि, पुछलथीन्ह मैत्रयी, प्रतिवाद हम नहि करब। एहि परिवारमे महान् दुःख आएल ई बात सत्य, तैओ जनै छी, अहाँक ई बात, साधारण स्त्रीगण सभहिक तुच्छ, अति तुच्छ सांसारिक हिसाबसँ पैघ नहि। ई कहि ओ ऊठि ठाढ़ भेलाह—हुनक खाएब समाप्त भए गेल छलन्हि।

दोसर दिन समस्त दुपहरिआ ओ घरपर नहि छलाह—कोन काजे, कतए गेल छलाह ओएह जानथि। सन्ध्याक अन्धकारमे निश्शब्दें घर पर आबि सोझे जा कए ठाढ़ भेलाह वन्दनाक घरक सोझाँ। सोर कएलथीन्ह—आबि सकै छी ?

के, द्विजू बाबू ? आउ।

द्विजदास भीतर जा क' देखलन्हि—वन्दनाक बाकस ताकस सहिआरब, वस्तु सभ ठीक ठाक करब, यात्राक सभ आयोजन समाप्त भेल छन्हि, कहलथीन्ह—सत्ये चललहुँ तखन, एको टा दिन बेशी अहाँ नहि रहलहुँ ?

हुनक मुह दिशि देखबाक वन्दनाक इच्छा नहि छलन्हि तैयो खाली बजलीह—जाइए जखन पड़त, तखन एक टा दिन वेशी हमरा राखि क' कोन लाभ, कहू ?

द्विजदास कहलथीन्ह लाभक बात नहि शोचने छलहुँ—खाली शोचै छी, सभ गेल—एते पैघ आङनमे केओ मित्र नहि रहल।

वन्दना कहलथीन्ह—पुरान मित्र जाइ छैक, नव मित्र अबैत छैक, एहने ई ससार द्विजू बाबू। एहि आशयसँ धैर्य्य ध' क' रह' पड़ैत छैक। चंचल भेलासँ काज नहि चलत।

द्विजदास उत्तर नहि देलथीन्ह—चुप रहलाह।

वन्दना कहलथीन्ह—समय वेशी नहि अछि, काजक बात दूटा कहि दैत छी। सुनलहुँहें जे मिशर जी कल्याणीकें ल' क' चल गेलाह।

नहि, सुनने नहि छलहुं। परन्तु अनुमान कएने छलहुं।

जएबाक पहिने एक बुन्द जल पर्य्यन्त हुनका सभकें नहि खोआएल भ' सकलैक। दूनू गोटे आबि माएकें प्रणाम कए कहलथीन्ह—हम सभ चललहुँ। माए कहलथीन्ह—जाउ। तकरा बाद आन दिशि मुह फिरा लेलथीन्ह। ई कहि वन्दना चुप भ' गेलीह। जाहि कारणे हुनका सभहिक जाएब भेलन्हि—जे सभ बात द्विजू रातिमे माए लग कहने छलथीन्ह—तकर उल्लेख मात्र नहि कएलथीन्ह।

कतेक काल चुप रहलाक बाद फेरि कहलथीन्ह—माए एकदम दुःखित भ' गेलीहे—देखलासँ माया होइए। लाजसँ ककरो आगाँ ओ जेना मुह नहि देखा सकै छथि। मैत्रेयी जे हुनकर सेवा करै छथीन्ह—बुझि पड़ैए अपनो बेटी ककरोने करतैक। माए यदि निके भ' जाथि त हुनके सेवाक कारणे। ओ बड़ नीक छथि, किछु दिन हुनका एत' रखबाक चेष्टा करब।

सएह होएत।

द्विजू वाबू, जएबाक पहिने आओर एकटा अनुरोध अहाँसँ करब।

करू।

अहाँके विआह कर' पड़त।

किए ?

वन्दना कहलथीन्ह—नहि त ई वृहत् परिवार छिन्न भिन्न भ' जाएत। अहाँ सभहक बहुत क्षति भेलए से जनै छी परन्तु तैओ जे रहल—सेहो बहुत अछि। अहाँ सभक कते दान, कते सत-काज—कते आश्रित परिजन—कते दीन-दरिद्रक अबलम्ब अहाँ सभ—आ से कि खाली एखने ? कते दीर्घकालसँ ई धारा चलि रहल अछि अहाँ सभक परिवारमे—कोनो दिन बाधा नहि पओलक अछि—से एखन बन्द होएत ?

भाइक गलतीसँ जे गेल से छल वाहुल्य—ओ छल प्रयोजनक अतिरिक्त, जाओ से। जे राखि गेलाह, शान्त मनसँ ओकरे यथेष्ट बुझू। ओएह अव-

शिष्ट अहाँक लेल अक्षय अजस्र होअओ, प्रतिदिनक प्रयोजनमे भगवान अभाव नहि राखथु, आइ विदाइ लेबासँ पूर्ब्ब भगवानक आगाँ हम इएह प्रार्थना करैत छिअन्हि ।

द्विजदासक आखिमे नोर भरि गेलन्हि ।

वन्दना कहलथीन्ह—अहाँक बाबू अखंड भरोससँ भाइक उपर सर्व्वस्व राखि गेल छलाह, परन्तु से रहलन्हि नहि । पिताक आगाँ ओ अपराधी भ' क' रहलाह । परन्तु ओएह त्रुटि यदि दैन्य आनि हुनक पुण्य-कर्म्मकें वाधा ग्रस्त करन्हि—कोनो दिन ओझाजी अपनाकें सान्त्वना नहि द' सकताह । एहि अशान्तिसँ हुनका अहाँकें बचव' पड़त ।

द्विजदास अश्रु सम्बरण कए कहलथीन्ह—भाइक बात एना भ' क' केओने शोचने छल वन्दना, हमहूँ ने । ई की आश्चर्य्य ! भाग्य नीक, जे दीप दानक छायाक अढ़मे ओ वन्दनाक मुहकें नहि देखि सकलाह । कहलथीन्ह—भाइक हेतु त दुःख क' सकै छी—परन्तु हुनका काजक बोझ ऊघब कोना ? साहस नहि होइए जे । ओएह सभ देख' आइ गेल छलहुँ । हुनक स्कूल, पाठशाला, टोल, मुसलमानक नेना सभले मकतब—आ से कि एक दूटा ? कते रास । प्रजा सभहिक हेतु जल निकासक एकटा नाला कटाओल जाइ छैक, बहुत दिन तक ओहि ले रुपैआ जोगब' पड़त । कागज पत्रक सङ्ग एकटा तीर्थ तालिका भेंटलए—खाली दानक अङ्क । ओ सभ माङ' आओत त हम की जे कहबै, नहि जनै छी ।

वन्दना कहलथीन्ह—कहबैक जे ओकरा सभकें भेटतैक । ओकरा सभकें देबहि पड़त । परन्तु पुछै छी, एते दिन तक ओ ककरो ई सभ किछु कहने नहि छलथीन्ह ।

नहि ।

एकर कारण ?

द्विजदास कहलथीन्ह—सुकृत गोपन करवाक उद्देश्य नहि। परन्तु ओ कहथीन्ह ककरा? संसारमे हुलका मित्र त केओ छलन्हि नहि। दुःख जखन अएलन्हि—त एकसरे उठओलन्हि—अन्नदा जखन अएलन्हि तकरो उपभोग कएलन्हि एकसरे। आ कि कहने छलथीन्ह—प्रायः एक मात्र मित्रके ! कहि ओ ऊपर दिशि हाथ उठा क' कहलथीन्ह परन्तु ई बात आत्मीय स्वजन बुझलन्हि कोना? जनै छलाह खाली ओ अपने, आ हुनकर अन्तर्य्यामी।

वन्दना कौतूहल-वश प्रश्न कएलथीन्ह—अच्छा द्विजू बाबू, अहाँकेँ कि मन होइए जे ओझा जी कजरो कोनो दिन प्रेम नहि कएलथीन्ह? कोनो मनुषके नहि?

द्विजदास कहलथीन्ह—नहि, ई हुनकर प्रकृतिक विरुद्ध। मनुष्यक संसारमे एहन निस्संग एकाकी मनुष्य आओर नहि। तकरा बाद बहुत काल दूनू गोटे नीरव रहलाह।

वन्दना जोर क' क' एकटा भार जेना फेंकि कए कहलथीन्ह—अच्छा, से होउक, द्विजू बाबू। हुनकर सभ भार अहाँके उठब' पड़त। एको टा नहि छोड़' पड़त।

परन्तु हम भाइ नहि छी, एकसर हम सकब कोना वन्दना?

एकसर त नहि, दू गोटे लेब। तेँ त कहै छी अहाँकेँ विआह करै ले।

परन्तु प्रेम नहि कएलासँ हम विवाह करब कोना?

बन्दना आश्चर्य्य भए हुनका मुहक दिशि देखि कहलथीन्ह—ई की कहै छी, द्विजू वाबू? ई बात त हमरा सभक समाजमे खाली हमही सभ बजै छी। परन्तु अहाँ सभक परिवारमे के ककरा प्रेम क' क' विआह कएलकए जे अहाँके नहि भेलासँ नहि बनत। ई छलना छोड़ि दिअ।

द्विजदास कहलथीन्ह—ई विधि हमरा लोकनिक घरमे नहि, से ठीक, परन्तु सएह कि सम दिन मानि क' चल' पड़त? ओहीसँ सुखी होएब, ई विश्वास आओर हमरा नहि अछि।

वन्दना कहलथीन्ह—विश्वासक विरुद्ध तर्क त नहि चलै छैक, सुखक जमानति सेहो नहि द' सकै छी, कारण ई धन जिनका हाथमे—हुनकर पता नहि बूझल अछि। अद्भुत हुनक विचार पद्धति; तत्त्व अन्वेषण वृथा। परन्तु विवाहक पहिने नयन-मन-रंजन पूर्व्व-रागक खेल बहुत देखलहुँ, फेरि एक दिन ओ अनुराग दौड़ि क' जे कोन गहनमे प्रवेश कएलक, से प्रहसनो बहुत देखलहुँ। हम कहै छी, ओहि फन्नामे पाएर देबाक काज नहि, द्विजू बाबू, सोनाक माया-मृग जाहि बनमे चरैत फिरैत छैक, ओ रहओ, एहि अङ्गनमे ओकरा सभादरे आह्वान करबाक काज नहि।

द्विजदास मृदु हँसि कए कहलथीन्ह—एकर अर्थ जे सुधीर बाबू अहाँक मनकेँ बड़ विगाड़ि देलन्हिहेँ।

वन्दना हँसि क' कहलथीन्ह—हँ। परन्तु मनमे तखनो जे किछु बाँकी छल से विगाड़ि देलहुँ अहाँ आ तकरा बाद एक गोटे आओर अशोक! एखन एहि जरल कपारमे ओहो रहथि त बाँची।

ओ के? अशोक? हुनकर डर अहाँकेँ किए?

डर इएह जे ओहो हठात् प्रेम करब सुरू क' देलन्हिहेँ।

केओ प्रेमक ऋण अहाँकेँ नहि दए जाए—इएह अहाँक संकल्प?

हँ, इएह हमर प्रतिज्ञा। विआह यदि कखनो करी, बहुत सुखक आशासँ बड़का बिड़म्बनामे जाहिसँ पाएर नहि दी। तेँ अशोक बाबूकेँ काल्हि सतर्क क' देलिअन्हिहेँ जे जएह हमरा प्रेम कर' लागब कि हम छूटि पड़ाएब।

सूनि क' ओ की कहलन्हि?

कहिलन्हि नहि किछु—खाली दूनू आँखि फाड़ि क' देखैत रहलाह। देखि क' बड़ दुःख भेल, द्विजू बाबू।

दुःख यदि सत्ये भेल होअए त आइओ आशा अछि। परन्तु ई बूझि लेब जे ई सभ खाली मौसीक डेराक घोरतर प्रतिक्रिया खाली सामयिक।

वन्दना कहलथीन्ह—असम्भव नहि, भइओ सकैछ। परन्तु ओतए सिखलहुँ बहुत रास। शोचै छी, भाग्यसँ आएल छलहुँ कलकत्ता नहि त कतेक बात बिनु बुझनहि रहि जाइत।

द्विजदास कने काल चुप रहि कहलथीन्ह—बेशी समय आओर नहि अछि, एहि बेर अन्तिम उपदेश हमरा द' जाउ जे हमरा की कर' पड़त।

वन्दना परिहासक भङ्गीसँ माथ कए बेर हिला कए कहलथीन्ह, उपदेश चाही? सत्ये चाही कि ?

द्विजदास कहलथीन्ह—हँ सत्ये चाही। हम त भाइ नहि छी। हमरा मित्रक आवश्यकता, उपदेशक आवश्यकता। विवाह हमरा कर' ले कहलहुहें—हम से करब। परन्तु प्रेम यदि नहि होअए, बन्धुत्व नहि भेलासँ जते भार द' गेलहुँ तते भार हम बहब कोना ?

द्विजूक मुहमे परिहासक आभास मात्र नहि, ई कण्ठ-स्वर वन्दनाकेँ विचलित कएलकन्हि। कहलथीन्ह भय नहि द्विजू बाबू। मित्र आबि जाएत—जखन सत्येमे अहाँकेँ हुनक प्रयोजन होएत, भगवान अपनेसँ हुनका अहाँकेँ दरबाजा पर पहुँचा देताह—ई विश्वास राखब।

प्रत्युत्तरमे द्विजू की एकटा बात बाज' जाइत छलाह परन्तु बाधा भेलन्हि, बाहरसँ मैत्रेयीक शब्द सूनि पड़लन्हि। द्विजू बाबू छथि एहि घरमे? माए अहाँकेँ एक बेर मोर कएलन्हिहें।

द्विजू उठि ठाढ़ भेलाह, कहलथीन्ह—बारह बजे गाड़ी, साढ़े एगारह बजे बिदा होब' पड़त। ठीक समय पर आबि क' हम सोर करब से मन राखब। ई कहि ओ व्यस्त भए बाहर चल गेलाह।

# २५

वन्दनाक निर्व्विघ्ने बम्बइ पहुँचलाक सम्वादक उत्तरमे कए दिन बाद द्विजदासक ओतएसँ पत्र आएल छलन्हि जे ओ काजमे व्यस्त रहबाक कारणे समय पर चिट्ठी नहि लीख सकलथीन्ह। वन्दना अपना आँखिए जे देखि गेलि छथि—सभटा तहिना चलैत छैक, बिशेष किछु लिखबाक नहि। मैत्रेयीक पिता कलकता फिरि गेलथीन्ह अछि परन्तु ओ अपने एखन तक छथिहे। माएक सेवा, यत्नमे त्रुटि कतहुने। पारिवारिक संसारक भार सेहो हुनके ऊपर पड़ल छन्हि; नीके जकाँ चलबैत छथि। घरक सभ लोक हुनकासँ खुसी छन्हि। द्विजदासकेँ अपना दिशिसँ आइ तक कोनो अभियोग लगएबाक कारण नहि भेलन्हि अछि। अन्तमे वन्दना ओ हुनक पिताक शुभ कामना करैत ओ यथा-विधि नमस्कार ज्ञापन कए पत्र समाप्त कएलन्हि।

एकरा बाद तीनि माससँ बेशीक समय बीति गेल परन्तु कोनो दिशिसँ कोनो पत्रादिक आदान प्रदान नहि भेलहि। विप्रदासक, बहिनिक आ' वासूक सम्वाद पएबाले बीच-बीचमे वन्दनाक मन उत्तेजित होइत छन्हि—परन्तु जनबाक उपाय नहि देखैत छथि। अपनेसँ ओ सभ आइओ तक कोनो खबरि नहि देलथीन्ह अछि। कत' छथि, कोना छथि, सभ अपरिज्ञात। एही हेतु सिफारिश करैत द्विजदासकेँ अनुरोध-पूर्व्वक चिट्ठी लिखबाक लज्जा एहन बेशी जे शत इच्छा रहितो ई काज हुनका लेखेँ असाध्य भए गेलन्हि अछि। एखन बलराम-पुरक स्मृतिक तीक्ष्णता ओ वेदनाक तीव्रता दूनू बहुत किछु कम भए गेलन्हि अछि किन्तु ओत' सँ चल अएबाक बाद ओ अस्वस्थ सन होअ' लागल छलीह। परन्तु दिनक बाद दिन पार कए व्यथित, बिक्षुब्ध चित्त धीरे-धीरे जतेक शान्त भेल जाइत छन्हि, ततबे उपलब्धि कएलन्हि अछि जे हुनका सभक सङ्ग वास्तवमे कोनो सम्बन्ध नहि। एकत्र बासकक ओ दुःख सुख भरल अनर्वचनीय

दिन सभ विचित्र घनिष्ठतासँ मनमे जतेक ने निविड़ताक मोह संचार कएने रहओ, आयु ओकर क्षण-स्थायी ! ई बात हुनका बुझब आब बाँकी नहि छन्हि जे ई आचार-निष्ठ प्राचीन-पंथी मुखर्जी परिवारक ओ आवश्यको नहि, अपनो नहि छथि । दूनू पक्षक शिक्षा, संस्कार ओ सामाजिक परिवेष्टनक जे व्यवधान सृष्टि भेल छन्हि—से सभ जेहने सत्य तेहने कठिन ।

एही बीचमे स्वामीक कर्म-स्थल पञ्जाबसँ मौसी आबि उपस्थित भेलथीन्ह अछि शरीर ठीक नहि छन्हि । पञ्जाबसँ बम्बइक जलवायु बढ़िञा, ई बुद्धि कोन डाक्टर जे हुनका देलथीन्ह—ओएह जानथि । परन्तु आइलि छथि स्वास्थ सुधारक कारणे । बम्बइ अएबासँ पहिने वन्दना हुनकासँ भेँट नहि कएलथीन्ह ई अभियोग हुनका मनमे छलन्हि परन्तु बहिन्धीक मिजाजक जे किछु परिचय पओने छथि ताहिसँ बहिनोए—राय साहेबक दरबारमे प्रकाश्य नालिश करबाक साहस नहि भेलन्हि—तैंओ खएबाक टेबुल पर बैसलि बात इङ्गितसँ बढ़ओलन्हि । कहलथीन्ह—मिस्टर रे, अहाँ ई लक्ष्य कएलहुहें कि नहि, नहि जनै छी—परन्तु हम जनै छी, बहुत देखलहुहें जे बाप-माएक एकटा बेटा कि बेटी एहन विचित्र—एक झोँकाह, जिद्दी भए जाइछ जे ओकरा सङ पार पाएब कठिन ।

साहेब तत्क्षणात् स्वीकार कएलथीन्ह—आओर देखलन्हि दृष्टान्त हुनका सभक लगेमे वर्त्तमान । सानन्दे हुनक उल्लेख करैत बजलाह—इएह जेना हमर बूढ़ी । एक बेर नहि कहलासँ फेरि हँ कहाएब ककर साध्य ? एकरा नेने अवस्थासँ हम देखैत आएल छी—

वन्दना कहलथीन्ह—तेँ बुझि पड़ैए अहाँ अपन अबाध्य बेटीकेँ नहि मानैत छी बाबू ?

साहेब जोरसँ प्रतिवाद कएलथीन्ह—तोँ हमर अबाध्य बेटी ! कहिओ ने । केओ ने कहि सकैए ।

वन्दना हँस' लगलीह—एखने जे अहाँ बजलहुहें ।

हम ? कखनो ने ।

सूनि क' मौसी पर्य्यन्त बिना हँसने नहि रहलीह ।

वन्दना पुछलथीन्ह—अच्छा बाबू, अहीँ जेकाँ कि हमर माए सेहो हमरा देखि नहि सकै छलि ?

साहेब बजलाह—तोहर माए ? एही ल' क' हुनका सङे हमरा कए दिन झगड़ा होअए । नेनामे तोँ एक बेर हमर घड़ी तोड़ि देने छलीह—तोहर माए खिसिआ क' कान मलि देलथुन्ह—तोँ कनैत कनैत हमरा लग पड़ा अइलीह । हम अपना छातीसँ लगा लेलिअह । ओहि दिन तोहर माए सङे हम भरि दिन बात नहि बजलिअन्हि । बजैत बजैत ओ पूर्व्व-स्मृतिक आवेगसँ भरि कए अपन कन्याकेँ छातीमे लगा क' धीरे धीरे पीठ पर हाथ बुलब' लगलाह ।

वन्दना कहलथीन्ह—नेना जेकाँ एखन किए ने मानै छी ?

साहेब मौसीक ओत' आवेदन कएलन्हि—सुनै छी मिसेस धोषाल, बूढ़ीक बात ?

वन्दना कहलथीन्ह—किए तखन जखन तखन बजैत रहै छी जे हमर विआह करा क' झंझट हटव' चाहै छी ? बुझि पड़ैछ, हम अहाँक आँखिमे बालु जेकाँ छी !

सुनै छी मिसेस घोषाल—बेटीक बात ?

मौसी बजलीह—सत्ये वन्दना । बेटी पैघ भेलासँ बाप माएकेँ केहन जे विषम दुश्चिन्ता होइ छैक, अपना बेटी भेलासँ बुझबहक ।

हम नहि बुझ' चाहै छी, मौसी ।

परन्तु पिताक कर्त्तव्य त छैक हए ? बाप माए त चिरजीबी नहि । सन्तानक भविष्य नहि शोचब हुनका सभक अपराध थिकन्हि । किए जे तोहर बाप मनमे शान्ति नहि पबै छथुन्ह—से जे अपने माए बाप अछि ओएह जनैए । तोहर बहिनि प्रकृतिक जते दिन विआह नहि भेल छलैक तते दिन हम खा'

पीबि नहि सकै छलहुँ—से तोँ नहि बुझबह, तोहर बाप बुझथुन्ह । तोहर माए जँ जिबैत रहितथुन्ह त हुनको हमरे जेकाँ हालत होइतन्हि ।

राय साहेब माथ हिला कए आस्ते आस्ते कहलथीन्ह—खब सत्य मिसेस घोषाल ।

मौसी हुनके उद्देश कए कह' लगलथीन्ह—आइ ओकर माए जीवैत रहितथिन्ह त बन्दनाक हेतु अहाँकेँ ओ अस्थिर कएने रहितथि । हम अपनहि कि हुनका कम कएने छलिअन्हि, एखन मन पड़लासँ लाज होइए ।

साहेब सह द' क' कहलथीन्ह—दोष अहाँक नहि—ठीक एहिना होइ छैक ।

मौसी कह' लगलथीन्ह—सएह त जनै छी । खाली चिन्ता होइए—मनुषक जीवनक त स्थिरता नहि । अपना अछैत यदि बेटीक विआहक कोनो उपाय नहि क' जाइ, हठात् किछु भ' गेलासँ की होएत ? डरसँ जेना ओ सुखा गेलीह ।

वन्दना आओर नहि सहि सकलीह, देखलन्हि--हुनक पिताक मुह सेहो सुखा गेलन्हिहेँ, खाएब वन्द भए गेलन्हि, कहलथीन्ह–अहाँ त मौसी, अनेरे डर देखबै छिअन्हि । की एखन भेलैए कहू त ? बाबू एखन कते दिन जीताह । हुनका बेटीक हेतु जे नीक—ई करबाक बहुत समय भेटतन्हि । अहाँ झूठे चिन्ता नहि बढ़ा दिऔन्ह ।

मौसी दब' बाली लोक नहि । विशेषतः राय साहेब हुनके समर्थन करैत कहलथीन्ह—तोहर मौसी ठीके बात कहै छथुन्ह । सत्ये त हमर शरीर नीक नहि रहैछ—सत्ये त एहि देहक वेशी विश्वास नहि कएल जा सकैत अछि। ओ अपन लोक छथि, समय अछैत ओ यदि सतर्क नहि करथि त के करत कह' त ? कहि ओ दूनू गोटा दिशि देखलन्हि । मौसी कटाक्षसँ देखलन्हि—वन्दनाक मुह छाया-छन्न भए गेल छन्हि—अप्रतिभ कण्ठेँ व्यस्त भावेँ बाजि उठलीह—ई बाजब अत्यन्त असंगत मिस्टर रे । अहाँक एक सए वर्षक पर-

मायु होअओ ई हम सभ सभ दिन प्रार्थना करै छी, हम खाली कहै छलहुँ—

राय साहेब बाधा देलथीन्ह—नहि अहाँ ठीके बात कहै छलहुं। सत्ये स्वास्थ्य हमर नीक नहि। समय पर सावधान नहि होएव, कर्त्तव्यक अवहेला करब सत्ये हमरा लेखे अन्याय थीक।

वन्दना गूढ़ क्रोध दमन कए बजलीह—आइ बाबूकें आओर खाएल नहि होएतन्हि, मौसी।

मौसी कहलथीन्ह—ई सभ बात एखन रहओ मिस्टर रे। अहाँ नहि खाएब त हमरा बड़ दुःख होएत।

राय साहेबक आहारसँ रुचि चल गेल छलन्हि, तथापि कहुना कए ओ एक टुकड़ी माँसकें काटि मुहमे रखलन्हि, एकरा बाद खएबाक काज किछु काल नीरव रूपें चलल।

साहेब प्रश्न कएलथीन्ह—जमाएक प्रैक्टिस केहन चलै छन्हि, मिसेस घोषाल ?

मौसी जबाव देलथीन्ह—इएह त आरम्भ कएलन्हिहें। सुनलहुँहें बेजाए नहि।

आओर किछु काल निश्शब्दे बितला पर ओ मुहक ग्रास गीड़ि कए बजलीह—प्रैक्टिस जे होउक मिस्टर रे, हम इएह टा खाली नहि बुझै छी। हम कहै छिऐ जे ओहूसँ बढ़ि क' छैक मनुष्यक चरित्र। से निर्म्मल नहि रहलासँ कोनो कन्या कोनो दिन बास्तवमे सुखी नहि भए सकैछ।

ताहिमे सन्देह की ?

मौसी बाजए लगलीह--हकरा मुश्किल अछि जे हमरा पिताक ओहि ठामक शिक्षा, संस्कार, हुनका लोकनिक उदाहरण हमर बुद्धिमे खचित अछि, ओहिसँ एको तिल कतहु कम देखलासँ हमरा सहि नहि होइए। हमरा अशोककें देखलासँ ओएह नैतिक वातावरण मन पड़ैए नेनामे जत' हम मनुष भेलि छलहुँ। हमर बाबू, हमर भाइ—ई अशोको भेल अछि ठीक हुनके सभ जेकाँ—

तेहने सरल, तेहने उदार, तेहने चरित्रवान ।

राय साहेब सम्पूर्ण बात मानि लेलथीन्ह, कहलथीन्ह—हमरो ठीक सएह मन होइए मिसेस घोषाल । ओ अत्यन्त सज्जन छथि । छः-सात दिन एत' छलाह, हुनक व्यवहारसँ मुग्ध भ' गेलहुँ । ई कहि कन्याकेँ गवाही मानै ले पुछलथीन—की बूढ़ी, अशोक हमरा सभके नीके लागल छलाह । जाहि दिन चल गेलाह हमरा भरि दिन मन कोनादनि लागए ।

वन्दना स्वीकार कए कहलथीन्ह—हँ बाबू—चमत्कार लोक । जेहने विनयी, तेहने भद्र । हमर त कोनो अनुरोध पर ओ कहिओ नहिं नहि कहलन्हि । हमरा जँ ओ बम्बइ नहि पहुँचा दितथि त बड़ मुश्किल होइत ।

मौसी कहलथीन्ह—आओर एकटा बात प्रायः लक्ष्य कएने छहक वन्दना—ओकरा 'स्नोवरी' नहि छैक । आइ कालिहक समयमे—दुःखेक सङ कह' पड़ैछ—जे हमरा सभमे अधिक गोटामे ई देख' मे अबैछ ।

वन्दना सहास्ये कहलथीन्ह—अहाँक डेरा पर त कहिओ कोनो 'स्नौब'केँ नहि देखलहुँ मौसी ।

मौसी हँसि क' कहलथीन्ह—देखने ने छह त कि । तोँ बड़ बुधिआरि छह, तोरा ठकतह कोना क' ?

सूनि क' साहेब हँसलाह—ई बात हुनका बड़ बढ़िञा लगलन्हि । कहलथीन्ह एते बुद्धि सर्व्व-साधारणमे नहि पाएब मिसेस घोषाल । बापक मुहेँ ई बात गर्व्व जेकाँ सुनबामे बुझि पड़त—परन्तु नहि बजलासँ नहि बनैए ।

वन्दना कहलथीन्ह—ई प्रसङ्ग अहाँ वन्द करू मौसी नहि त बाबूके सम्हारब कठिन होएत । अहाँ एक बेटी बालाक दोषेटा देखने छी, परन्तु ई त नहि देखने छी जे एक बेटी वाला बाप सन दम्भी लोक संसारमे केओ नहि ।

मौसी कहलथीन्ह—ओहि धारणाक हमहूँ वड़का भागीदार छी, वन्दना ।

शान्ति पओलासँ हमरो भेटब उचित ।

पिताक मुह पर अनिर्वचनीय परितृप्तिक मृदु हँसी, कहलथीन्ह हम दाम्भी कि नहि, से नहि जनै छी, परन्तु जनै छी, कन्या-रत्नक हिसावे हम सत्ये सौभाग्यवान । एहन कन्या कम्मे बापकेँ भेटैत छन्हि ।

वन्दना कहलथीन्ह—कहाँ, आइ त अहाँ एकोटा सन्देश नहि खएलहुँ बाबू ।

साहेब प्लेटसँ आधा सन्देश तोड़ि मुहमे देलन्हि, कहलथीन्ह—सभ टा दुढ़ीक अपने हाथक त बनाओल ! एहि बेर कलकत्तासँ फिरला पर ओ सभटा खाएब पीब वदलि देलकए—डालना, माछक झोर, दही, सन्देश आओर कते की । ककरासँ सूनि आएले नहि जनै छी, परन्तु डेरामे मांस आब प्रायः नहि आन' दैए । कहै छैक—बाबूकेँ ओ दुःख देतन्हि । देखू मिसेस घोषाल, ई सभ बंगालीक खेनाइ खा क' बुझि पड़ैए जे बुढ़ारीमे नीके छी । वेश भूख लगैए ।

वन्दना बजलीह—मौसीकेँ एकर अभ्यास नहि छन्हि—प्राएः कष्ट होइत होइन्हि ।

मौसी एहि गूढ़ विद्रूपकेँ लक्ष्य नहि कएलथीन्ह, कहलथीन्ह—नहि, नहि, कष्ट किए होएत, ई हमरा नीके लगैए । खाली आवेहवाक चेञ्ज नहि चाही, खेनाइओक चेञ्जक काज । तेँ बुझि पड़ैए शरीर एतेक जल्दी निके भ' गेल ।

नीक भेलए मौसी ?

निश्चय भेलए, कोनो सन्देह नहि ।

तखन आओर किछु दिन रहू, आओर नीक भ' जाओ ।

परन्तु वेशी दिन त नहि रहि सकै छी वन्दना । अशोक लिखलकए जे एहि मासक अन्त तक ओ पंजाब आओत, चेञ्जक हेतु । ओहिसँ पहिनहि त

हमरा फीरि क' जएबाक चाही ।

भोजन-पर्व्व समाप्त भए गेल छलन्हि—साहेब उठ' उठ' करैत छलाह । मौसी मने मन चञ्चल भए गेलीह । प्रस्ताव उत्थापनक हेतु जे अपना दिशिसँ अनुकूल वातावरण सृष्टि कएने छथि—तकरा चक्षु-लज्जासँ भ्रष्ट होब' देलासँ फेरि फिरा क' आनब कठिन ने भए जाइन्हि । संकोच अतिक्रम कए बजलीह—मिस्टर रे, एकटा बात छल, यदि समय नहि होअए त—

साहेब तत्क्षण बैसि गेलाह, कहलथीन्ह—नहि नहि, समय अछि ने त, कहू की बात ।

मौसी बजलीह—हम सुनै छी वन्दनाकेँ आपत्ति नहि । अशोक धनवान नहि ई सत्य, परन्तु सुशिक्षा ओ चरित्र बलसँ 'स्ट्रग्ल' कए क' ओ एक दिन उन्नति करबे करत, ई हमर दृढ़ विश्वास । अहाँ यदि ओकरा अपन कन्याक अयोग्य नहि बुझिऐक—

साहेब आश्चर्य्य भए बजलाह—परन्तु से 'कोना भ' सकैए—मिसेस घोषाल ? अशोक अहाँक भातिज, सम्बन्धमे त ओहो वन्दनाक ममिऔत भाए ।

मौसी कहलथीन्ह—खाली मान'ले—नहि त सम्बन्ध बहुत दूरक । हमर नानी आ वन्दनाक माएक नानी दूनू गोटे सहोदर बहिनि छलीह—ओही सम्बंधसँ हम वन्दनाक मौसी । ई विआह निषिद्ध नहि होएतैक मिस्टर राय ।

साहेब किछु काल चुप रहि प्रायः मने मन किछु एक टा हिसाब कएलन्हि, तकरा बाद कहलथीन्ह—अशोककेँ जते हम अपने देखने छिअन्हि आओर जतेक वन्दनाक मुहे सुनने छी, ताहिसँ अयोग्य नहि बूझि पड़ैत छथि । बेटीक विआह एक दिन हमरा करहि पड़त, परन्तु ओकर अपन अभि-मत त बुझबाक आवश्यकता ।

मौसी स्नेहक कण्ठेँ उत्साह दए कहलथीन्ह—लज्जा नहि करह बाउ, अपना

बाबूकें कहुन तोहर की इच्छा छइ।

वन्दनाक मुह एक क्षण ले लाल भ' गेलन्हि—परन्तु दोसरे क्षणमे सुस्पष्ट स्वरें बजलीह—अपना इच्छाकें हम विसर्ज्जन द' देलहुँहें मौसी, ओ पुछ-बाक काज नहि।

साहेब सभयें कहलथीन्ह—एकर माने ?

वन्दना कहलथीन्ह—माने ठीक अहाँ सभकें बुझा क' नहि कहि सकव बाबू। परन्तु ताहिसँ ई जुनि बूझी जे हम बाधा दै छी। कने थम्हिक कहलथीन्ह, हमर सती बहिनिक विआह भेल छलन्हि नओ वर्षक अबस्थामे। माए बाप जकरा हाथेमे हुनका सौंपि देलथीन्ह—बहिनि हुनके ग्राह्य कएलन्हि, अपना बुद्धिसँ नहि बिछलन्हि। तैंओ भाग्यसँ जे स्वामी भेटलथीन्ह ओ संसारमे दुर्लभ। हम भाग्यकें विश्वास करब बाबू। विप्रदास बाबू साधु पुरुष, अएबाक पहिने हमरा आशीर्वाद द' क' कहने छलाह—जाहि ठाम हमर कल्याण, भगवान ओही ठाम हमरा पहुँचा देताह। हुनक ओ बात कहिओ मिथ्या नहि होएतन्हि। अहाँ हमरा जएह कहब हम सएह करब। मनमे कोनो संशय, कोनो भय नहि राखब।

साहेब विश्मयमँ स्थिर भए हुनका प्रति देखैत रहलाह—मुहसँ एकोटा बात नहि बहार भेलन्हि।

मौसी कहलथीन्ह, विआहक समय तोहर बहिनि छलथुन्ह नओ वर्षक वालिका, तें हुनकर मतामतक प्रश्ने ने उठैक। परन्तु तों त से नहि छह, पैघ भेल'हे, अपन नीक अधलाह, दायित्व तोहर अपन, एना आँखि मूनि क' भाग्यक खेल तोरा नहि ने छजतह, वन्दना।

छजत कि नहि, नहि जनै छी मौसी, परन्तु हुनके जेकाँ भाग्यकें हम प्रसन्न भावें मानि लेब।

परन्तु एना उदासीन जेकाँ बात कहलासँ तोहर बाबू मन स्थिर कोना

करथुन्ह ?

जेना भ' क' हुनक भाइ कएने छलथीन्ह सती बहिनिक सम्बन्धमे, जेना क' ओहूसँ पहिने सभ पूर्व्व पुरुष लोकनि अपन बेटा बेटीक विआह करओने छलाह, हमरो सम्बन्धमे बाबू तहिना मन स्थिर करथु।

तों अपने किछु नहि देखबह, ने शोचबह ?

शोचब विचारब, देखब सुनब बहुत भेल मौसी, आओर नहि। एखन निर्भर होएब बाबूक आशीर्वाद पर आओर ओही भाग्यक ऊपर जकर अन्त आइ तक केओ नहि पओलक अछि।

मौसी हताश भए एक रत्ती तिक्त कण्ठे कहलथीन्ह—भाग्यकें हमहूं सभ मानै छी, परन्तु अपन समाज, शिक्षा, संस्कार सभकें डुबा कए, मुखर्जी सभक इएह कए दिनक संस्रब जे तोरा एतेक आच्छन्न करतह, से नहि शोचने छलहुँ। तोहर बात सूनि क' त बुझिए ने पड़ैए जे तो हमरा सभक ओएह बन्दना थिकीह। जेना हमरा सभसँ एकदम भिन्न भ' गेलीह।

वन्दना कहलथीन्ह—नहि मौसी, हम आन नहि भेलहुँहें। हुनका सभकें अपनएबामे—हमरा ककरो पर नहि कर' पड़त, ई बात निश्चय बूझि अएलहुँहें। हमरा ल' क' अहाँ सभ कोनो शंका नहि करू।

मौसी पुछवथीन्ह—तखन, अशोकके अएबा ले एकटा तार पठा दिऔन्ह ?

पठा दिऔन्ह, हमरा कोनो आपत्ति नहि। ई कहि वन्दना घरसँ बाहर चल गेलीह।

मिस्टर रे, अहीं नामे तखन टेलिग्राम पठा दै छिऐ, ई कहि मौसी मुह उठा सविस्मये देखलन्हि जे साहेबक दूनू आँखि वाष्पाकुल भए गेलन्हि अछि। एकर कारण नहि बूझि सकलीह—आओर साहेब जखन धीरे-धीरे बजलाह—टेलिग्राम आइ रह' दिअ मिसेस घोषाल, तखनो ओकर हेतु नहि बूझि बजलीह, रह' किए देब मिस्टर रे, बन्दना अपन सम्मति दैए गेलए।

नहि नहि,आइ रहओ, ई कहि ओ चुप भए गेलाह। ई नीरवता एवं अश्रु-जल भीतरे भीतर मौसीकें अत्यन्त क्रुद्ध कए देलकन्हि। एक प्रवीण, पदस्थ व्यक्तिक एहि रूपक 'सेण्टिमेण्टालिटी' हुनका लेखें असह्य। परन्तु किछु करबोक साहस नहि भेलन्हि। करीब दू मिनट चुप रहि, साहेब बजलाह—ओकर बापक चिन्ता हम कएलहुहें, परन्तु ओकर माए नहि जीबैत छैक—ओहू दृष्टिसँ हमरे शोच' पड़त, मिसेस घोसाल। किछु समय चाही।

मौसी मने मन कहलन्हि—ई आर एकटा 'स्टूपिड सेण्टिमेन्टालिटी' कहत। साहेब अनुमान कएलन्हि कि नहि, परन्तु एहि बेर जोरसँ कने म्लान हँसी हँसि कए कहलथीन्ह—मुश्किल त ई अछि जे ओकर बात हम सभ केओ नीक जेकाँ बुझैत नहि छिऐक। खाली आइ नहि, बङ्गालसँ अएलाक बादेसँ बुझि पड़ैए जे ओकरा नीक जेकाँ बुझि नहि रहल छिऐक। ओ सम्मति देलकए परन्तु से ओ आ कि ओकर नवीन 'रिलीजन' से वुझिएने सकलहुँ।

नवीन रिलीजन! माने?

माने हम तँ नहि जनै छी। परन्तु नीक जकाँ देखै छी, बङ्गालसँ ओ जेना कि एकटा सङ्गे नेने आएलए, जे राति दिन ओकरा घेड़ने रहैत छैक। ओकर खाएब बदलि गेलैए, बात बदलि गेलैए, ओकर चलब-फिरब पर्य्यन्त बुझि पड़ैए जेना पहिने जेकाँ नहि। प्रातः काल स्नान कए क' हमरा घरमे जा क' हमर पाएर छूबि क' प्रणाम करैए। कहै छिऐ, बूढ़ी पहिने त नहि करै छलीह! तखन नहि जनै छलहुँ बाबू। आब अहाँक पाएरक धूरा माथमे लगा क' दिनक काज आरम्भ करब। बजैत-बजैत हुनक आँखि पहिने जेकाँ सजल भए गेलन्हि।

मौसी मने मन अत्यन्त विरक्त भए कहलथीन्ह—ई सभ नव चालि सीखि आएलए मुखर्जीक ओहिठामसँ। जनैत छी ओ सभ केहन कट्टर, परन्तु एकरा रिलीजन नहि कहै छैक, कहै छैक कुसंस्कार। ओ पूजो तूजो करैए कि?

साहेब कहलथीन्ह—जनै नहि छी, करैए कि नहि। प्रायः नहि करैए।

कुसंस्कार कहि क' हमरो मनमे होइए, निषेधो कएलिऐक अछि। परन्तु बूढ़ो पहिने जेकाँ आब तर्क नहि करैए, खाली चुप रहैए। हमरो मुह बन्द भ' जाइए, किछुओ नहि कहि सकैत छिऐक।

मौसी कहलथीन्ह––ई अहाँक दुर्व्वलता थीक। परन्तु निश्चय बुझि लिअ' जे एकरा 'रिलीजन' नहि कहै छैक––कहै छैक खाली 'सुपरिस्टीशन'। एकरा प्रश्रय देव अन्याय, अपराध !

साहेब द्विधासँ भरल आस्ते-आस्ते बजलाह––सएह होएतैक प्राय:। 'रिलीजन' कहि क' त खाली मुहेसँ बजै' छी, कहिओ अपनहुँ चर्चा नहि कहलहुँ, 'नेचर' कि किछु––सेहो नहि जनै छी। खाली बीच-बीचमे अवाक् भए शोचै छी नेना के एकदम एना भ' क' बदलि के देलक ? ओ हँसी नहि, आनन्दक चञ्चलता नहि, वर्षाकालक प्रस्फुटित फूल जेकाँ ओकर दल सभ जेनाकि जलमे भीजि रहल छैक। कखनो सोर क' कहै छिऐक, हमरासँ नहि नुकाबह, बाउ, तोरा भीतरमे किछु होइ त ने छह।

ओहिना माथ हिला क' कहैए नहि बाबू, हम नीके छी, हमरा किछु नहि होइए। हँसी मुहे घरक काज कर' चल जाइए, हमर छाती, पाँजरक हड्डी पर्य्यन्त बुझि पड़ैए चूर-चूर भ' जाएत––मिसेस घोषाल। इएह एकटा कन्या अछि; माए नहि, अपने हाथे एकरा पोसि क' एते टा कएलहुहें, सर्व्वस्व दैओ क' यदि हम अपन सएह––पहिलुक वन्दनाकें पाबि सकी·······

मौसी जोर द' क' कहलथीन्ह––पाएब। हम बचन दै छी, पाएब। ई खाली एक टा सामयिक अवसाद, धर्म्मक झोंक भइओ सकैत छैक, परन्तु अत्यन्त असार। खाली ओकरा सभक संसर्गमे अएबाक क्षणिक विकार। विषादक दिन सभ हँटि जएतैक, चिर दिनक जे शिक्षा सएह लोककें रहै छैक। मिस्टर रे, दू दिनक बात दूइए दिनमे खतम भ' जाइत छैक !

साहेब आश्वस्त भेलाह, तथापि सन्देह नहि गेलन्हि। कहलथीन्ह ओ कत' ककरासँ कोन प्रेरणा पओलकए नहि जनै छी। परन्तु सुनै छी जे ओ यदि मनुष्यमे वास्तबमे अबैत छैक तँ फेरि जाइत नहि छैक। मनुष्यक चिर दिनक

अभ्यासकेँ एक मुहूर्त्तमे बदलि दैत छैक। निशा मिल जाइ छैक रक्तक धारामे, समस्त जीवन भरि ओकरा नहि हँटा सकैत छैक। ओकरे हमरा डर होइए मिसेस घोषाल। प्रत्युत्तरमे मौसी एक रत्ती अवज्ञाक हँसी हँसलीह, कहलथीन्ह—ई सभ फाजिल बात। हम बहुत देखने छी—दू दिनक बाद आओर किछु नहि रहैत छैक। फेरि जाकए सएह रहैए। परन्तु, बढ़' देलासँ नहि चलत—आइए अशोककेँ एकटा तार पठा दैत छिऐक—ओ आबि जाओ।

आइए देबन्हि ?

हँ आइए—आ अहींक नामेँ।

साहेब मृदु कण्ठेँ सम्मति देलथीन्ह—जे नीक होइक, सएह करू। हम जनै छी, अशोक नीक लोक छथि। चरित्रवान, सज्जन, से नहि रहितथि त हुनका सङे वन्दना किन्नहु ने आव' ले' राजी होइत।

मौसी एहि बातकेँ एक वेर आओर बढ़ा क' फुला क' बाज' लगलीह—मुदा बाधा पड़लन्हि। वन्दना घरमे ढुकलथीन्ह, कहलथीन्ह—बाबू, आइ हाजी साहेबक कन्या सभ हमरा चाहक नोत देलकए। दुपहरिआमे जाएब, साँझू पहर आफिससँ फिरैत काल गाड़ी नेने आएब।

मौसी प्रश्न कएलथीन्ह—ओकरा सभहक घरमे तोँ त किछु खएबह नहि वन्दना ?

नहि मौसी।

किए ?

हमर मन नहि मानैए। बाबू, अहाँ बिसरब तने ?

नहि हए, तोरा आनब हम विसरि जाएब—एहनो होइ छै। ई कहि साहेव कने हँसलाह। कहलथीन्ह—अशोक अबै छथि, हुनका आइ एक टा तार पठा दैत छिअन्हि।

वेश त बाबू।

मौसी कहलथीन्ह—हमही जोर द' क' ओकरा अनबै छिऐक। अएला पर देखिह' जाहिसँ असम्मान नहि होइक।

अहाँकेँ डर नहि होअओ मौसी, हम सभ ककरो असम्मान नहि करै छिऐक। अशोक बाबू अपने जनैत छथि।

कन्याक बात सूनि साहेब प्रसन्न मुहेँ बजलाह—आफिसक रास्तेमे हुनका एक टा तार पठा देबन्हि हए, आइ शुक्र, सोम दिन तक ओ पहुँचि जएताह, यदि कोनो व्याधात नहि होइन्हि।

दरवान डाक ल' क' हाजिर भेलन्हि। असंख्य संबाद पत्र नाना स्थानक। चिठिओ पत्र कम नहि! किछु दिनसँ डाकक प्रति वन्दनाक औत्सुक्य नहि छलन्हि। ओ जनै छलीह प्रति दिन अपेक्षा कए आशा करब वृथा। हुनका चिट्ठी लिख' बाला केओ नहि। चल जाइत छलीह, साहेब सोर कए कहलथीन्ह इएह—तोरा नामे दू टा, अहूँक एक टा अछि मिसेस घोषाल—

अपनोसँ वेशी अनकर चिट्ठीमे मौसीक कुतूहल वेशी, मुह बढ़ा क' देखि क' बजलीह, एकटा त अशोकक हाथक लिखल, ओ ककर थिकह?

एहि अकारण प्रश्नक उत्तर वन्दना नहि देलथीन्ह। दूनू चिट्ठी हाथमे ल' क' अपना घरमे चल गेलीह।

साहेब मुह विजुका क' हँसि कए बजलाह—अशोकक सङ्ग देखै छी चिट्ठी ओ पत्री चलै छैक? तार पठा दैत छिअन्हि—ओ आबथु। हुनका विश्वास नहि करितन्हि त वन्दना किन्नहु चिट्ठी नहि लिखितन्हि।

प्रत्युत्तरमे मौसिओ सगर्व्वें एक रत्ती हँसलीह—अर्थात् जनैछी बहुत किछु।

× × × ×

सन्ध्याकाल आफिसक रास्तामे हाजि साहेबक डेरासँ घूरि क' साहेब एकसरे फीरि अएलाह। वन्दना ओत' नहि गेलि छलीह। मौसी आगुअहिंमे छलथीन्ह, मुह भारी कए कहलथीन्ह—वन्दना चिट्ठी ल' क' जे ओहि घरमे गेलि से बाहर नहि भेलए।

साहेब उद्विग्न मुहे कहलथीन्ह — खएलकए नहि ?

नहि। भिनसरू पहर जे एक रत्ती फल खएने छलि सएह, आओर किछु ने। साहेब जल्दीसँ कन्याक घरमे केबाड़ पर हाथ दए सोर कएलथीन्ह—बूढ़ी ?

वन्दना केवाड़ खोलि देलथीन्ह। हुनक मुह दिशि देखि पिता स्तब्ध भए पुछलथीन्ह—की भेलह हए ?

वन्दना कहलथीन्ह—बाबू आइ रातुक गाड़ीसँ हम वलरामपुर जाएब।

वलरामपुर, किए ?

द्विजू बाबू एक टा चिट्ठी लिखलन्हिहेँ, पढ़ब बाबू ?

तोहीँ पढ़ह हम सुनैछी, कहि साहेब एकटा कुर्शी घीचि कए वैसलाह। वन्दना हुनकासँ सटि कए जे चिट्ठी पढ़ि कए सुनओलथीन्ह—से इएह।

सुचारितासु,

अहांक जएबाक दिन मन पड़ैछ। आगाँ गाड़ी ठाढ़ छल, अहाँ कहलहुँ—बीच बीचमे खबरि दैत रहब। हम कहलहुँ—विचित्र मनुष्य छी हम, चिट्ठी पत्री लिखवाक सहजहि काजोने होइछ—नीक लिखहु ने जनैत छी। ई भार बरू ककरो अनका द' जइऔक।

सूनि क' अवाक् भए देखैत रहलहुँ, तकरा बाद गाड़ीमे जा क' वैसलहुँ, दोसर वेर अनुरोधो नहि कएलहुँ। प्रायः शोचलहुँ, असौजन्य जकरा एहनो समयमे एकटा नीक बात मुहमे नहि आन' दैत छैक—तकरा कहबाक की ?

हम एहने छी। तैओ आशा छल, लिखवेक यदि होएत, त एहन किछु लिखवन्हि जे साधारण खवरिसँ विशेष रहत। ओ लिखव जाहिसँ अनायासे हमर सभ अपराधक मार्ज्जना माङि लेत।

मनमे शोचै' छलहुँ मनुष्यक हेतु कि खाली संभावित दुःखे टा छैक, अभावित सुख कि संसारमे नहि ?

भाइक इष्ट देवता खाली आँखि मुननहि रहथीन्ह, कहिओ देखथीन्ह नहि। अघटन जे घटल सएह होएत चिर-स्थायी, ओकरा कि हँटएबाक शक्ति कतहु नहि ?

देखलहुँ नहि। ओ शक्ति कतहु नहि। ने हँटलाह भगवान, न टललाह हुनकर भक्त। निर्वात निष्कम्प दीप-शिखा आइओ ओहिना ऊर्द्ध मुहेँ जरि रहल अछि, ज्योतिक कणा मात्रो अपचय नहि भेल अछि।

ई प्रसंग किए—सएह कहै छी। तीनि दिन भेल अछि, भाइ गाम फीरि अएलाह—भिनसरू पहर जखन गाड़ीसँ उतरलाह हुनका पाछाँ उतरल बासू, खाली पाएर, गाराँमे उतरी। गाड़ी फीरि क' चल गेल, आओर केओ नहि उतरल। भिनसरू पहर छतपर रौदमे ठाढ़ भेल छलहुँ—आँखिक सोझाँ पृथवी भ' गेल अन्हार, ठीक अमावाश्याक राति जेकाँ। बुझि पड़ैए दू मिनटक करीव—तकरा बाद फेरि सभ किछु देखि सकलहुँ—फेरि सभ स्पष्ट भ' गेल। एना जे होइत छैक से एहिसँ पहिने हम नहि जनैत छलहुँ। नीचा उतरि अएलहुँ भाइ कहलन्हि—अहाँक भौजी काल्हि प्रातःकाल स्वर्गीय भ' गेलीह, द्विजू। हाथमे रुपैआ पैसा नहि अछि, सामान्य रूपेँ हुनक श्राद्धक आयोजन क' दिऔन्ह। माए कत' अछि ?

ठाका, अपन बेटीक घरमे।

ठाका ? कने चुप रहि क' कहलन्हि—की जानी, आबि त प्रायः नहि सकतीह—परन्तु मातृ दायक हिसाबे बासू जाहिसँ हुनका चिट्ठी लीखि दैन्हि।

कहलिअन्हि—देतन्हि।

बासू दौड़ि क' आबि हमर गरदनि पकड़ि क' छातीमे मुह नुका लेलक, तकरा बाद कान' लागल। ओहि कानबोक जहिना भाषा नहि, चिट्ठीमे प्रकाश करबाक तेहिना भाषा नहि। शिकारक जन्तु मरबाक आगाँ अपन अन्तिम नालिश जाहि भाषमे राखि जाइए—बहुत किछु तेहने। ओ ओहिना क' कान लागल—छातीमे मुह नुकाक'। मने मन कहलिऐक—अरे बासू, नोकसानक

हिसाबें तोरा जे वेशी हेड़एलौक—से नहि, आओर एक व्यक्तिक क्षति तोरोसँ बहुत वेशी। तैओ तोरा बुझएबा'ले लोक भेटतौक, परन्तु ओकरा नहि भेटतैक।

एहिना कते काल बीतल। अन्तमे आँखि पोछि देलिऐक, कहलिऐक—डर नहि, माए नहि रहौ, बाप नहि रहौ, हम त छिऔक ने। ऋण हुनका सभक नहि सधा सकैत छिअन्हि, परन्तु अस्वीकार कखनो नहि करबन्हि। आइ सभसँ दुःख, सभसँ क्षतिक दिनमे इएह रहलौक तोहर काकाक शपथ।

किन्तु ई लए क' वात नहि बढ़ाएब—बात अछिए की? नेना मे बाबू कहथि गोआर, माए कहए चोर, कते बेर खिसिअएलाह भाइ—अनादरसँ, अवहेलासँ, कते दिन ई घर भए जाए विष, तखन भौजी अबितथि लगमे, कहितथि—लाल बाबू, की चाही, वाजू त बाउ? खिसिआ क' कहतिअन्हि किछु नहि चाही भौजी, हम चल जाएब एतसँ।

कहिआ अओ?

आइए।

सुनि क' हँसि क' कहितथि—हुकुम नहि जएबाक। जाउ त हमर अवाध्य भ' क', देखै छी।

आओर गेल नहि होइत। परन्तु ओ जएबाक दिन जखन सत्ये आएल तखन ओ अपनहि चल गेलीह। शोचै छी, खाली हमरहि ले हुकुम, ? हुनका हुकुम देबा ले कि संसारमे केओ नहि छल?

भाइकें पुछलिअन्हि—की भेलन्हि? कहलन्हि—कलकत्तहिमे शरीर दुखिताह भ' गेलन्हि—बुझि पड़ैए मने मन बड़' शोचथि; ल' गेलिअन्हि पश्चिम। परन्तु कतहु ठीक नहि भेलन्हि। अन्तमे हरिद्वारमे ज्वर भेलन्हि—ल' अनलिअन्हि काशी—ओही ठाम समाप्त भ' गेलीह।

वस्!

पुछलिअन्हि—औषध भेल छलन्हि भाइ?

कहलन्हि—यथा-सम्भव भेल छलन्हि।

किन्तु ई यथा-सम्भव जे कतेक — से भाइकेँ छोड़ि आओर केओ नहि जनैत अछि ।

इच्छा भेल कहिअन्हि —हमरा एते पैध शास्ति किए देलहुँ । की कएने छलहुँ हम ? परन्तु हुनका मुह दिशि देखि कए ई प्रश्न आओर मुहमे नहि आएल ।

पुछलिअन्हि—ओ ककरो किछु कहि नहि गेलथीन्ह भाइ ! कहलन्हि हँ । मृत्युक करीब दश घंटा पहिने तक चेतना छलन्हि; पुछलिअन्हि सती, माएकेँ किछु कहबैक ?

कहलन्हि—नहि ।

हमरा—?

नहि ।

द्विजूकेँ ?

हँ, हुनका हमर आशीर्वाद कहबन्हि । कहबन्हि सभ किछु रहलन्हि ।

पड़ा क' हम चल अएलहुँ भौजीक शून्य घरमे । फोटो घिचएबामे हुनका बड़ लाज होइन्हि । खाली एकटा छलन्हि, हुनक आलमारीक पाछामे, हमरे घीचल फोटो ! सोझांमे ठाढ़ भ' क' कहलिअन्हि—धन्य भ' गेलहुँ भौजी, बुझलहुँ अहाँक हुकुम । एते जल्दी अहाँ चल जाएब ई नहि शोचने छलहुँ— परन्तु कतहु यदि होइ त देखब अहाँक आदेशक अवहेला नहि कएलहुँहेँ । खाली इएह शक्ति देब, अहाँक शोकमे ककरो लग हमरा आँखिसँ नोर नहि खसए । ''''परन्तु आइ एही ठाम तक रहओ हुनकर बात ।

एखन आब हम । जएबाक काल अनुरोध कएने छलहुँ विबाह करै ले । कारण एते भार एकसर हम ऊघि नहि सकब, सङ्गीक काज । ओ सङ्गी होएतीह मैत्रेयी, ई छल अहाँक मन । आपत्ति नहि कएलहुँ, शोचलहुँ, संसारमे पन्द्रह आना आनन्द यदि गेबे कएल त एक आना ले आओर

खींचा तीनी नहि करब। परंतु आब सेहो नहि होब'वाला—भौजीक मृत्यु आनि देलक अलंघ्य बाधा। बाधा कथीक ? मैत्रेयी भार उठा सकैत छथि परंतु ओ ऊघि नहि सकैत छथि। ई बात बुझल भ' गेल अछि। परन्तु हमरा आब इएह बोझ भेल अछि भारी। तैंओ कहब, विपत्तिक दिनमे ओ हमरा सभक बहुत कएलन्हिहें", हुनका आगाँ हम कृतज्ञ। समय यदि आबए त हुनक ऋण कहिओने विसरबन्हि।

कालिह बहुत राति वितना निन्द टुटलासँ वासू कानि उठल। ओकरा सुता क' गेलहुँ भाइक घरमे। देखै छी तखनो जागल, पुस्तक पढ़ि रहल छथि। कोन पोथी पढ़ै छी भाइ ? भाइ पोथी वन्द क' हँसि क' कहलन्हि—की कर' आएल छलहुँ, कहू।

हुनका दिशि देखि क' जे कह' गेल छलिअन्हि—से नहि कहल भेल। शोचलहु निद्रामे जोरसँ वासू काननलए—ताहिसँ विप्रदासके की ? आन बात मनमे आएल, पुछलिअन्हि—श्राद्धक बाद अहाँ कत' रहब भाइ ? कलकत्तामे ? कहलन्हि—नहि अओ, तीर्थयात्रामे जाएब।

फीरब कहिआ ?

भाइ फेरि हँसि क' कहलन्हि—फीरब नहि।

स्तब्ध भए हुनका मुह दिशि देखैत ठाढ़ रहलहुँ। सन्देह नहि रहल जे ई संकल्प टलतन्हि नहि। भाइ संसार त्याग कएलन्हि। परन्तु अनुनय बिनय, कानब खीजब, ककरा आगाँ—एहि निष्ठुर संन्यासीक आगाँ ? एहिसँ बढ़ि कए अपमानक बात अछि ?

किन्तु वासू ?

भाइ कहलन्हि—हिमालयक लग एकटा आश्रमक पता लागलए—ओ सभ छोट छोट नेना सभहिक भार लैत छैक, शिक्षो ओएह सभ दैत छैक।

ओकरा सभक हाथमे ओकरा द' देबैक ? आ एकरा पोसि क' मनुष्य वनओलहुँ हम ?

तकराबाद दूनू हाथे कान दाबि क' पड़एलहु घरसँ। ओ की जबाब देलन्हि, सुनलहु नहि।

वासूक लगेमे भरि राति शोचलहुँहें। कतए जे एकर कूल-कछेर किछु थाह नहि लगैत अछि। मन पड़लहु अहाँ। कहने छलहुँ बन्धुक जखन सत्येमे प्रयोजन होएत, तखन भगवान अपनहि दोआरि पर पहुँचा देताह। कहने छलहुँ एहि बातमे विश्वास करै ले। के हमर बन्धु, कहिआ ओ आओत, नहि जनै छी, तैओ विश्वास कएने छी, जे हमर एहि एकान्त प्रयोजनमे ओ एक दिन अवश्ये आओत—

द्विजदास—

पढ़ब खतम भेला पर देखल गेल जे साहेबक आँखिसँ नोर खसि रहल छन्हि। रुमाल बाहर कए पोछि कहलथीन्ह जाउ बाउ, आइए जाउ, हम बाधा नहि देब। दरवान ओ तोहर बूढ़ा हिभू सेहो सङ जएतह।

वन्दना निघुड़ि कए पिताकें प्रणाम कएलन्हि, कहलथीन्ह—जएबाक इन्तजाम करी ग बाबू—हम जाइ छी।

## २६

मनेजर विराज दत्त मोटर ल' क' स्टेशन पर उपस्थित छलथीन्ह। वन्दनाकें स-सम्माने ट्रेनसँ उतारि गाड़ीमे बैसओलथीन्ह।

वन्दना पुछलथीन्ह—माए आइओ तक अइलीहे कि नहि, दत्त बाबू?

नहि, बहिन।

मैत्रेयी?

नहि, हुनका केओ बजब' नहि गेलन्हि।

बासू निके अछि?

हूँ, अछि।

ओझाजी ? आ द्विजु बाबू ?

बड़का बाबू त निके छथि परन्तु छोटका बाबूकेँ देखलासँ तेहन निके नहि बूझि पड़ैत छथि ।

वन्दना पुछलथीन्ह—ज्वर त्वर तने भेलन्हिहें ?

दत्त बाबू कहलथीन्ह—ठीक नहि बुझै छिअन्हि, परन्तु सभटा काज कम्म त करैत देखैत छिअन्हि ।

वन्दना किछु काल मौन रहि कहलथीन्ह—दत्त बाबू, हमरा त बुझि पड़ैए, माए—एहि दुःखमे आर नहिए अओतीह । परन्तु कतबो दुःख होअओ श्राद्धक इन्तजाम त करहि पड़त । किछु होइ छैक कि ?

होइ छै, बहिन । बूढ़ा मालिकक श्राद्ध जेहन भेल छलन्हि—करीब करीब तेहने व्यवस्था भ' रहल छैक ।

बात नीक जेकाँ नहि बूझि वन्दना विस्मयसँ पुछलथीन्ह—ककरा जेकाँ कहै छी ? ओझाजीक पिताक जे श्राद्ध भेल छलन्हि तेहने ? ओहने पैघ आयोजन ?

दत्त बजलाह—हँ, करीब तेहने । गेला पर देखब । बड़का बाबू बजा क' कहलथीन्ह—द्विजू, बतहपनी नहि करू, सभ वस्तुक एकटा मात्रा छैक । छोटका बाबू कहलथीन्ह—मात्रा छैक जनै छी, परन्तु मात्राक बोध सभक लेखें एके त नहि, भाइ । बड़का बाबू हँसि क' कहलथीन्ह—परन्तु अहाँ जे सभक सभ मात्राकेँ अतिक्रमण कएने जाइ छी । छोट बाबू कहलथीन्ह—तखन, अहाँ लोकनिक आगाँ हमर प्रार्थना जे एहि बेर धरि हमरा क्षमा करू । हम मात्रालङ्घन कए सकब, परन्तु भौजीक मर्य्यादा लङ्घन नहि कए सकब ।

एकरा बाद केओ कोनो बात नहि कहलकन्हि, एखन अहाँ यदि किछु कए सकी । खर्च बीस पचीस हजारसँ कम नहि होएतन्हि ।

खर्च कि सभ छोटे बाबूक ?

हँ, सएह त।

बन्दना पुछलथीन्ह—ई कि हुनका लेखें बहुत वेशी बूझि पड़ैए, दत्त बाबू ?

विराज दत्त बजलाह—खूब वेशी नहि भेलासँ सम्प्रति गेबो जे कएलन्हि बहुत रास, बहिन। एखन सम्हारि क' चलबाक काज। एहि पर नवीन विपत्ति अबैत कतेक देरी !

आओर नवीन बिपत्ति कोन ?

दत्त कने काल मौन रहि बजलाह—अहाँ कि नहि सुनलहुहें, मिशरजी सङ मामिला सुरू भेलन्हिहें ? एहि सभ वस्तुक परिणाम की, से'त अहाँ जनै छी, केओ फलाफल नहि कहि सकैछ।

तखन रोकलिअन्हि किए ने ?

रोकब ? ई त बड़का बाबू नहि बहिन, जे निषेध मानताह। हिनका निषेध कर' ले खाली एके गोटे छलथीन्ह, से एखन स्वर्गमे। कहि, विराजदत्त निश्वास छोड़लन्हि।

बन्दना फेरि कोनो प्रश्न नहि कएलथीन्ह। घरक लग आबि देखलन्हि सामनेक परती पर एक दिशि काठ काटल जारनिक बड़का बड़का ढेरी लगाओल। जे सभ टाट खढ़क धर दयामयीक व्रतोपलक्षमे बनल छलैक से सभ मरम्मति भए रहल छैक। बाहरी अङनइमे बड़का मण्डप बनि रहल छैक, आओर ओहिमे बहुत गोटे काजमे लागल अछि। विराज दत्त अत्युक्ति नहि कएने छलथीन्ह—से बन्दना बुझलन्हि। गाड़ीसँ उतरि ओ सोझे ऊपर चल गेलीह। पहिने गेलीह द्विजदासक घरमे। एकटा मोट गेड़ुआ पर ओङठल ओ ओछाओन पर पड़ल छलाह, पर्दा हँटएबाक शब्दसँ आँखि खोलि ऊठि बैसलाह, बजलाह—बन्धु अपनहि आएल हमरा दोआरिपर !

वन्दना कहलथीन्ह—हँ आएल त। परन्तु एहि समयमे सुतल किए छी ?

द्विजदास कहलथीन्ह – आँखि मूनि क' अहाँक ध्यान करैत छलहुँ; आर मने मन कहैत छलहुँ—वन्दना, हमर दुःखक सीमा नहि। देहमे बल नहि, मनमे भरोस नहि, बुझि पड़ैए आओर ठेलल पार नहि लागत, नाओ बीचेमे डूबि जाएत। ओहि पार पहुँचल नहि होएत।

वन्दना कहलथीन्ह—पहुँच' पड़बे करत। अहाँके छुट्टी द' क' एहि बेर हम नाओके खेबबाक भार लेब।

सएह लिअ। खिसिआ क' आर चल नहि जाउ।

वन्दना लग आबि निघुड़ि क' प्रणाम कएलथीन्ह—हुनक पाएरक धूरा माथमे लगा, ऊठि ठाढ़ि भेलीह कि दूनू गोटाक आँखिसँ झर झर क' नोर बहए लगलन्हि। एना भ' क' प्रणाम करब हुनक ई प्रथम। कहल-थीन्ह—अहूँक आँखिमे नोर अबैए से हम नहि जनै छलहुँ।

द्विजदास कहलथीन्ह—हमहूँ ने। बुझि पड़ैए, ओकर अएबाक रास्ता एते काल बन्द छलैक। पहिले पहिल खूजल जाहि दिन मैत्रेयीके बजा क' संसारक भार दै ले कहि, अहाँ चल गेलहुँ। अढ़मे आँखि पोछि क' मने मन कहलहुँ, एहन पैघ आघात जे स्वच्छन्दे कए सकैत अछि, तकरा आगाँ कखनो भिक्षा नहि माङब। परन्तु से प्रण हमर नहि रहल। भौजी गेलीह स्वर्ग, शशधरक सङ मामिला करैत देरी माए चल गेलीह बेटीक ओहि ठाम, भाइ सूचित कएलन्हि–ससार त्यागक संकल्प, एक मिनटक भूमि-कम्पमे जेना समस्त धूलिसात् भए गेल। ई हो सहल भेल छल—परन्तु जखन सुनलहुँ जे घर छोड़ि कए बासू जाएत कोन एकटा अनचिन्हार आश्रममे, से सहल हमरा नहि भेल। एक बेर शोचलहुँ, जे किछु अछि, कल्याणीक धिआ पूताके द' क' हमहूँ कतहु आन दिशि चल जाएब, तखन हठात् मन पड़ल अहाँक जएबासँ पहिने अन्तिम बात। कहने छलहुँ विश्वास करै ले, कहने छलहुँ एकान्त प्रयोजनक समय बन्धु अपनहि अहाँक दोआरि पर चल आओत। शोचलहुँ, इएह त हमर शेष प्रयोजन आर

प्रयोजने कहिआ होएत ? तेँ अहाँकेँ चिट्ठी लिखलहुँ । सन्देह मनमे होअए लागए, जोरसँ ओकरा सभके हँटाबी—कही हमर मित्र अएबे करत। नहि त ओकर बात मिथ्या होएतैक, मिथ्या भ' जएतन्हि भौजीक अन्तिम आशीर्वाद । जे बोझ ओ राखि क' चल गेलीह—तकरा हम कोन जोरे ऊघब । कहैत कहैत दू ठोप नोर फेरि टघरि गेलन्हि ।

वन्दना कहलथीन्ह—सभ कहैए जे अहाँ बड़ अवाध्य छी । खाली भौजीकेँ छोड़ि आन ककरो बात कहिओ ने सुनलिऐक ।

द्विजदास कहलथीन्ह—इएह अहाँकेँ डर अछि ? परन्तु किए जे नहि सुनिऐक, से भौजी बाँचल रहितथि त जबाब दितथि । ई कहि ओ अपन आँखि पोछलन्हि ।

वन्दना चुप भए किछु काल हुनका दिशि देखि कहलथीन्ह—जबाव हमरा भेटि गेल, आओर कोनो शंका नहि अछि । ई कहि, ओ द्विजदासक हाथ अपना हाथमे ल' क' फेरि किछु काल स्थिर रहलीह—तखन वजलीह खाली अहीँक चारू भाग जे भूमि-कम्प भेलए से नहि । हमरो मनमे एहने प्रबल भूमि-कम्प भए गेलए । जे भूमिसात् होएबाक से धूरामे लोटा गेल; जे टुटबाक नहि, जे हटबाक नहि, सएह अटल क' आइ हम पओलहुँ । आब जाइ छी भाइक लग । जएबाक दिन ओ हमरा आशीर्वाद द' क' कहने छलाह, वन्दना—जे अहाँक अपन, हमर आशीर्वाद जाहिसँ हुनके अहाँक हाथमे आनि क' देअए। साधु पुरुषक वाक्य, हम अविश्वास नहि कएलहुँ; निश्चय बुझैत छलहुँ, ई बात हुनकर सत्य होएबे करतन्हि । खाली ई नहि शोचने छलहुँ जे ई आशीर्वाद एहन दुःखक भीतर द' क' अपन लोककेँ आनि देत । जाइ हुनका प्रणाम करिअन्हि ग ।

द्विजू बाउ—वन्दना अइलीहे कि ने ? कहि, आबाज द' अन्नदा आबि प्रवेश कएलक ।

अएलहुँ अनु बहिनि, कहि वन्दना घूमि क' देखलथीन्ह । अन्नदाक गम्भीर

शोकाच्छन्न मुहक प्रति देखि क' वन्दना चमकि उठलीह, लग जा क' ओकर छातीपर अपन माथ राखि अस्फुट स्वरमे कहलथीन्ह—आहाँक ई हाल त हम शोचिओ नहि सकैत छलहुँ, अनु बहिन, आ' तकरा बादे खूब जोर सँ कान' लगलीह। अन्नदोक आँखिसँ नोर खसै छलन्हि। आस्ते-आस्ते बहुत काल तक हुनका पीठ पर हाथ बुलबैत मृदु स्वरेँ कह' लगलन्हि—हठात् फेरि चलि नहि जाएब बहिन, थोड़े दिन रहब। आर हम अहाँकेँ की कहब!

वन्दना किछु नहि कहलथीन्ह—खाली ओहिना छाती पर मुड़ी रखने इशारा देलथीन्ह। एहिना बहुत काल बीति गेल। तकरा बाद मुह उठा क' आँचरसँ आँखि पोछि पुछलथीन्ह—वासू कत' अछि अनु बहिन ?

लोक सभ ओकरा पोखरिमे नहब' आ घाटपर ल गेलैए।

ओकरा रान्हि के दैत छैक ?

अन्नदा कहलकन्हि—द्विजू। ओ दूनू गोटे एके सङे खाइ छथि, एक सङे सुतैत छथि। कहैत-कहैत ओकरा आँखिसँ फेरि नोर बह' लगलैक। पोछि क' कहलकन्हि—माए खाली वासुएक त ने मुइलथीन्हहेँ, हुनको मुइलथीन्हहेँ। फेरि आँखि पोछि बाजलि—सभ कहै छन्हि अकाल असमयमे घरक पुतोहु मुइलथीन्हहेँ; नव-नवातुरक श्राद्ध—एहिमे एतेक पैघ किछु करवाक कोन काज ? हुनका सभ मना करै छन्हि—एते खर्च देखि कए सभक देहमे आगि लगै छैक, शोचैए, ई बड़ बढ़ाओल चढ़ाओल। ई नहि ने लोक जनैए जे ओ छलथीन्ह हिनकर कोनो जन्मक माए। कोनो कारणे हुनकर मर्य्यादामे कोनो त्रुटि ओ सहताह कोना क' ?

द्विजदास वन्दनाकेँ इशारासँ देखा' क' कहलथीन्ह—आओर डर नहि अनु वहिन, वन्दना अइलीह, एहि बेर समस्त भार हुनका ऊपर राखि क' हम अढ़मे चल जाएब।

अन्नदा कहलथीन्ह—अनकर बेटी, एतेक भार उठओतीह कोना ?

अनके बेटी त भार उघै छ अनु बहिन। हुनका बजा क' कहलिअन्हिहें जे एतेक दुःखक भार हमरा बूते बहल नहि पार लागत। आ तइपर वासू जँ चल जाएत त रहलौ तोरा सभक बलरामपुरक मुखर्जी सभक घर आङन, रहलन्हि हुनकर सात पुरुषक अभिमान प्रतिष्ठा; शशधरक बेटाकें बजा एहि संसारसँ हमहूँ इस्तिफा देब। खाली भाइए कए सकै छथि, आ द्विजू बुते नहि होए-तैन्ह ? सन्यास लेल नहि पार लागत, ओ हम नहि बुझै छी, परन्तु रुपैया पैसाकु बोझ अनायासे फेंकि सकैत छी।

अन्नदा वन्दनाक दूनू हाथ ध' क' कहलथीन्ह—विपिन भाइकें नहि बुझा सकबन्हि बहिन ? बासूकें एहि घरमे नहि राखि सकब ?

क' सकब, अनु बहिन !

आ ई जे सर्व्वनाशक मामिला मिशरजीक सङे बझलैए तकरा कि नहि रोकि सकब ?

हँ इहो रोकि सकब, अनू बहिनि। कने काल स्तब्ध रहि बजलीह—ओ कोनो दिन हमर अवाध्य नहि होएताह, एही शर्त्त पर हम एहि घरक छोटि पुतहु होएबा ले राजी भेलहुँहें, अनु बहिनि।

अन्नदा ई बात नीक जेकाँ नहि बुझलकैक—चुप-चाप देखैत रहलि।

वन्दना कहलथीन्ह—जे गेल से त गेबे कएल। एकरा वास्ते माइओकें छोड़' पड़त ? मोकदमा नहि बन्द भेलासँ हुनका फिरा क' अनबन्हि कोना ?

द्विजदास गेड़ुआक तरसँ चाभीक गुच्छा बाहर कए वन्दनाक पाएर लग फेंकि कए कहलथीन्ह—हे, इहो लिअ। अवाध्य नहि होएब, ई शर्त्त अहाँक आगू हम कएलहुँ।

वन्दना कुञ्जीक गुच्छा लए अपना आँचरमे बन्हलन्हि।

एहि बेर अन्नदा एकर तात्पर्य बुझलक। वन्दनाकें अपना छातीमे सटा ओ स्थिर भए गेलि। ओकर दूनू आँखिसँ खाली बड़का-बड़का नोरक ठोप

खसए लगलैक।

वन्दना विप्रदासक घरमे आबि हुनका प्रणाम कएलथीन्ह। कहलथीन्ह—अएलहुँ, भाइ।

ई नव सम्बोधन विप्रदासक कानमे गेलन्हि। किन्तु ई ल'क' ओ किछु नहि कहि, पुछलथीन्ह—सुनने छलहुँ जे अहाँ अबैछी, अहाँक बाबूक तार भेटल छलैक। रास्तामे कष्ट तने भेल?

नहि।

सङे के आएल?

सङे आएलए दरवान आ बूढ़वा नौकर हिमू।

बाबू निके छथि?

हँ।

विप्रदास कने चुप रहि बजलाह—द्विजू केहन बतहपनी कएलन्हिहें देखलहुँ?

वन्दना कहलथीन्ह—अहाँ श्राद्धक बात कहै छी किने? परन्तु वतहपनी कहाँ होइ छैक? आयोजन एहने पैघ त चाही। नहि भेलासँ हुनक मर्य्यादा क्षुण्ण होइतन्हि।

परन्तु सम्हारि कोना सकताह?

हुनका बुते नहिओ सम्हरतन्हि—त हमरा बुते सम्हरत, भाइ।

विप्रदास हँसि कए कहलथीन्ह—ई शक्ति अहाँमे अछि से मानै छी, परन्तु मिजाज विगड़लासँ मुश्किल। हठात् खिसिआ क' नहि चल गेलासँक हुना बाँचब।

वन्दना कहलथीन्ह—ओहि दिन आइलि छलहुँ आन जेकाँ। माथपर कोनो भार नहि छल। आइ अएलहुहें एहि आङनक छोट पुतोहु भ' क'। खिसिआ देलासँ खिसिआ सकै छी, परन्तु आब चल जाएब कोना क'? ओ रास्ता

आब बन्द जे भ' गेल ! ई कहि ओ कुञ्जीक झाबा देखा क' कहलथीन्ह—इएह देखू, एहि आङनक सभ आलमारी आ संदूकक कुञ्जी ।

आनन्द ओ विस्मयसँ विप्रदास चुप्पे देखैत रहलाह। वन्दना कहए लगलथीन्ह—अहाँसँ लाज करबाक, नुका क' कहबाक हमरा किछु नहि अछि। भगवानक आगू मनुष्यकेँ किछु नहि नुकएबाक—ठीक तहिना। मन अछि, अहाँक कि आशीर्वाद छल ? जएबा दिन हमरा अहाँ कहने छलहुँ—जे अहाँक यथार्थ अपन, तकरे अहाँ एक दिन पाएब—ओहि दिनसँ हमर चञ्चलता चल गेल, शान्त मनसँ खाली इएह शोचैत छलहुँ जे जितेन्द्रिय, जे आजन्म शुद्ध, सत्यवादी साधु, हुनकर आशीर्वादसँ आओर हमरा कोनो डर नहि । जे हमर स्वामी, ओ हमरा भेटबे करताह। दूनू आँखि हुनकर अश्रु-पूर्ण भए गेलन्हि ।

विप्रदास लग आबि हुनका माथ पर हाथ राखि चुप्पे चाप आशीर्वाद देलथीन्ह, आओर आइ पहिल दिन वन्दना हुनका पएर पर बहुत काल धरि माथ राखि प्रणाम कएलथीन्ह। उठि कए ठाढ़ भेलापर विप्रदास कहलथीन्ह—आइ जे अहाँकेँ भेटल ताहिसँ दुर्लभ धन और किछु नहि। ई बात हमर सभ दिन मन राखब।

वन्दना कहलथीन्ह—राखब भाइ, एको दिन नहि बिसरब। कने थम्हि क' कहलथीन्ह—एक बेर दुःखितमे अहाँक सेवा कएने छलहुँ, अहाँ पुरस्कार देबा ले कहने छलहुँ—परन्तु ओहि दिन नहि लेलहुँ, मन अछि ओ बात ?

अछि।

आइ सएह पुरस्कार चाही। बासूकेँ हम लेलहुँ ।

विप्रदास हँसी मुहेँ कहलथीन्ह—लिअ।

ओकरा सिखएबैक हमरा माए कहत ।

सएह करू। ओकर माए आ बाप दूनू गोटाकेँ अहीँक हाथमे राखि गेलहुँ। आओर राखि देलहुँ मुखर्जी घरक ई वृहत्त मर्य्यादा अहाँक हाथमे।

वन्दना मूड़ी कने निघुड़ओने छलीह, जेना ई भार चुप चाप ग्रहण कए-

लन्हि। तकरा बाद कहलथीन्ह—आओर एकटा प्रार्थना अछि। अपनाकेँ बिना चिह्ननहि एक दिन अहाँक आगाँ अपराध कएने छलहुँ, आइ अपन गलती बुझलहुँ—गलती चलो गेल, आइ ओकर मार्जना चाही।

मार्ज्जना हम बहुत दिन पहिनहि क' चुकल छी। हम जनै छलहुँ अहाँक अन्तरात्मा जकरा एकान्त मनसँ चाहैत अछि, अहाँकेँ एक दिन ओ भेटबे करत। तेँ हमरा लग अहाँकेँ कोनो लाज नहि।

वन्दनाक आँखिमे फेरि नोर भरि गेलन्हि—कहुना क' रोकि कए बजलीह—आओर एकटा भीख। हमरा सभक संसारमे कि एको दिन आओर नहि रहब। अभिमानसँ, संकोचसँ, कोनो दिन मन भरि क' अहाँक सेवा नहि क' सकलहुँ, परन्तु ओ बाधा आब हँटल, आब त हमरा लज्जा नहि, किछु दिन हमरा लग रहू ने—दू दिन पूजा करी। ई कहि सजल दृष्टिसँ देखैत रहलीह। हुनक आकुल कण्ठ-स्वर जेना अन्तस्तलकेँ भेदि क' बाहर भए गेल होइन्हि।

विप्रदास हँसी मुहे चूप रहलाह।

वन्दना कहलथीन्ह—अहाँक ओहि हँसी-मुहक मौनताकेँ हम सभसँ वेशी भय करैत छी, भाइ। केहन कठोर अहाँक मन, एकरा ने केओ गला सकैए—ने केओ हिला सकैए। एकर उत्तर नहि देब ?

विप्रदास एहि बेरि हँसलाह। ओहने स्निग्ध, जेहने सुन्दर, तेहने निर्म्मल। हुनका एना भ' क' हँसैत वन्दना जेना इएह पहिले पहिल देखलथीन्ह। कहलथीन्ह—उत्तर हमरा भेटि गेल, आओर अहाँकेँ हम कष्ट नहि देब। परन्तु मनकेँ शान्त कोना करू से कहि दिअ। ई जे खाली कान' चाहैए।

विप्रदास कहलथीन्ह—मन अपनहि शान्त भ' जाएत वन्दना, जाहि दिनसँ अहाँ निस्संशये बूझब जे भाइ दुःखक बीचमे कुदि कष्टक हेतु गृह-त्याग नहि कएलन्हि। ओहिसँ पहिने नहि।

परन्तु हम बुझब कोना क' ?

खाली हमरा पर विश्वास क' क'। जनैत छी अहाँ जे हम मिथ्या नहि बजै छी।

वन्दना चुप्प भेलि रहलीह। करीब दू मिनटक बाद गम्भीर निश्वास त्यागि कहलथीन्ह—सएह होएत। आइसँ अपनाकेँ प्राणपणसँ बुझाएब—भाइ सत्ये बात कहि गेल छथि। ओ सत्यवादी, अपने बात बना क' नहि चल गेलाह अछि। जतए छैक मनुष्यक परम श्रेय—ओही तीर्थक हेतु ओ यात्रा कएलन्हि अछि।

विप्रदास कहलथीन्ह—हँ। अहाँ अपना मनकेँ बुझा क' कहिऔक—जे सभसँ सुन्दर, सभसँ सत्य, सभसँ मधुर—भाइ, ओही पथक सन्धानमे बाहर भेलाह अछि। हुनका बाधा नहि देवाक चाही, हुनका भ्रान्त करक नहि, हुनका हेतु शोक करब अपराध।

वन्दनाक आँखिमे फेरि नोर आबि गेलन्हि, जल्दीसँ पोछि क' कहलथी सएह होएत, सएह होएत। एहि जीवनमे यदि आओर कहिओ भेँट नहि होअए तैओ कहब, ओ भ्रान्त नहि, हुनका हेतु शोक करब अपराध।

पर्दाक फाँकसँ मुह बढ़ा क' विराजदत कहललीन्ह बहिन, एकटा जरूरी बात अछि कने आब' पड़त।

अबैत छी बिराज बाबू। भाइ, एखन जाइ छी, ई कहि वन्दना घरसँ बाहर भए गेलीह।

\+ \+ \+

सत्तीक श्राद्धक काज खूब समारोह पूर्वक सम्पन्न भेलन्हि। भिक्षुक कङ्गाल सभ सती साध्वीक जय-जयकार कए घर जाइत गेल; सभ बाजल मुखर्जी सभहिक घरक काज एहिना होइ छन्हि—एहिमे छोट पैघ नहि।

प्रातः काल स्नान कए वन्दना प्रणाम करै ले विप्रदासक घरमे प्रवेश करैत

बिस्मयसँ ठमकि कए ठाढ़ि भेलीह। हुनका लग दयामयी बैसलि। भोरुका ट्रेनसँ घर अइलीह अछि—एखनो केओ नहि बुझलकन्हि अछि। माएक मूर्त्ति देखि कए वन्दनाक हृदयमे आघात लगलन्हि। हुनक सोन सन वर्ण कारी भए गेलन्हि अछि, माथक छोट-छोट केश रुक्ष, जेना धूरासँ भरल, आँखि धसि गेलन्हि अछि, कपार पर रेखा सभ भए गेलन्हि अछि—दुःख शोकक एहन व्यथाक चित्र बन्दना कहिओ ने देखने छलीह। हुनका मन पड़लन्हि, ओहि दिनक ओ ऐश्वर्य्यवती सर्व्वमयी कर्त्री बिप्रदासक माए। कते दिन ओकरा भेंत्रे कएलैक? आइ हुनकर समस्त महिमा जेना पथक धूरामे लोटाइ छन्हि।

लग जाकए प्रणाम कए कहलथीन्ह—कखन अएलहुँ माए, हम बुझबो ने कएलहुँ।

दयामयी हुनक चिबुक स्पर्श कए चुम्बन कएलथीन्ह, कहलथीन्ह—हमरा अएबाक खबरिक काज कोन वन्दना? तखन आबथि विप्रदासक माए, तेँ देशक नेना, बूढ़ सभ बूझि जाइत—। विपिन, काज त खतम भ' गेलैक, चलह ने माइए पूते आइए बिदा भ' जाइ।

सूनि विप्रदास हसि कए कहलथीन्ह—तोरा डर नहि माए, माए-पुते जएबामे विघ्न नहि होएतौक—परन्तु आइ नहि होएत। वन्दनाक पिता अबै छथीन्ह काल्हि। तोँ अपन छोट पुतोहुक हाथमे संसारक भार द' क' बिना बुझओनहि जएबेँ कोना क'?

दयामयी बड़ी काल चुप रहि बजलीह—अच्छा सएह होअओ, विपिन। एतेक विलम्ब हमरा सह्य नहि होएत—एहन झूठ बात आओर मुहमे नहि आनब। परन्तु कए दिन आओर बाँकी छैक?

खाली सात टा दिन माए, आ फेरि अझुके दिन हम सभ यात्रा आरम्भ करब।

वन्दना कहलथीन्ह—माए अहाँ आङनमे अपन घरमे चलू।

दयामयी माथ हिला अस्वीकार कएलथीन्ह—अहाँक ई बात नहि राखि

सकब बाउ। जे कए दिन रहब, एही ठाम रहब, आ जएबाक दिनमे सेहो एही बाहरक घरसँ दूनू गोटे बाहर भ' जाएब। भीतरमे जे रहल से सभ अहाँक रहल बाउ।

वन्दना तर्क नहि कएलथीन्ह—खाली फेरि हुनकर पद-धूलि एक बेरि लए बाहर भए गेलीह।

द्विजदासक पत्र पाबि राय साहब एक सप्ताहक छुट्टी लए बलरामपुर आबि उपस्थित भेलाह एवं कन्याकेँ द्विजदासक हाथमे समर्प्पण कए, फेरि कर्म्मस्थल पर चल गेलाह।

एहि विवाहमे रसनचौकी कि ढोल ढाक नहि बाजल, बरियाती ओ सरियातीमे व्रिबाद नहि भेल, स्त्रीगण सभ उलू-(हर्ष) ध्वनि जे कएलन्हि से अस्फुट रूपेँ, शख बाजल दबल सूरमे आ' कोबराक घर रहल स्तब्ध मौन।

ओहि कोवरमे द्विजदासक विषण्ण मुह दिशि देखि वन्दना पुछलथीन्ह—की शोचैत छी, कहू त ?

द्विजदास कहलथीन्ह—शोचै छी अहाँक बात। शोचै छी, हमरासँ अहाँ बहुत पैघ छी।

किए !

नहि त नहि सकितहुँ। सर्व्वनाश बचबै ले केहन दुःखक पथ अतिक्रमण कए अहाँ हमरा लग अएलहुँ।

वन्दना पुछलथीन्ह—अहाँ नहि अबितहुँ ?

नहि।

वन्दना कहलथीन्ह—झूठ बात। परन्तु हम की शोचै छलहुँ, बुझलहुँ ? अहाँक गरदनिमे माला पहिरबैत—शोचै छलहुँ—हम एहन कोन पुण्य कएने छलहुँ जाहिसँ अहाँ सन स्वामी पओलहुँ। पओलहुँ बासूकेँ, माएकेँ आ भाइकेँ; आओर पओलहुँ एहि बृहत् परिवारक विपुल भार। परन्तु जाहि समाजक हम कन्या छी, हमर प्राप्य कतेक से जनै छी ?

द्विजदास कहलथीन्ह—नहि ।

वन्दना कहए लगैत —हठात् थम्हि गेलीह । कहलथीन्ह मुदा आइ नहि । अपन परम सौभाग्यक दिनमे आनक दैन्यपर कटाक्ष नहि करबैक । दोष होएत ।

नहि होएत—कहू ।

वन्दना माथ हिला अस्वीकार कएलथीन्ह—अहूँ आइ क्लान्त छी । कने अहाँ सुतू, हम अहांक माथमे हाथ बुला दै छी ।

करीब दू मिनटक बाद बजलीह —हमरा बहिनिक बात मन पड़ैए । ओहि दिन भाइक सङ्ग तखने चल जाए चाहलन्हि—ई देखि कए हम कहलिअन्हि—अहाँ त झगड़ा नहि कएलहुँहे बहिन, अहाँ किए जाएब ? बहिन कहलन्हि जाहि ठाम स्वामीक स्थान नहि छैक—ओत' स्त्रीओक नहि । एको दिन ले नहि । तोहर स्वामी रहितथुन्ह त बुझितहक । ओहि दिन प्राय: ई बात नीक जेकाँ नहि बुझलिऐक । परन्तु आइ बुझै छी जे अहाँक नहि रहलासँ हम एको दिन ओत' नहि रहि सकै छी ।

कने थम्हि क' बजलीह—इएह त किछु घंटा पहिने पुरहितक सङ्ग कए गोट शब्द उच्चारण कएलहुँ, परन्तु मनमे होइए जेना हमर देहक प्रत्येक रक्त-कण पर्य्यन्त बदलि गेलए ।

द्विजदास आँखि खोलि हुनका दिशि देखलथीन्ह । हुनक हाथ अपना छाती पर घीचि क' राखि फेरि आँखि मूनि लेलन्हि । कोनो बात नहि कहलथीन्ह

\+ \+ \+

रवि दिन घुरि आएल । विप्रदास ओ दयामयीक जएबाक दिन आइ । तीर्थ भ्रमण दयामयीक एक दिन समाप्त होएतन्हि, ओहि दिन संसारक आकर्षण प्राय: हुनका एही घरमे घीचि कए लए अनतन्हि परन्तु यात्रा नहि शेष होएत्तन्हि विप्रदासक, आओर हुनका फिरा क' एहि घरमे नहि आनि सकतन्हि । ई बात

सुनलव अछि बहुतो लोक। केओ विश्वास कएलक, केओ नहि कएलक।

अङ्गनइमे मोटर ठाढ़ अछि। लगमे, दूरमे समस्त घरक, टोलक लोक ठाढ़। स्त्रीगण सभ दोमहलाक ओसारा पर ठाढ़ि भेल आँखिसँ नोर पोछैत छथि। विप्रदास गाड़ी पर चढ़बा लेल जाइत काल पुछलथीन्ह—द्विजूकेँ नहि देखैत छिअन्हि।

कओक गोटे बजलाह—ओ घर पर नहि छथि। के जानए कोन एकटा काजसँ बाहर गेलाहे। सुनि विप्रदास हँसि कए कहलथीन्ह—पड़एलाहे ओ; खाली मुहेसँ गोआर, नहि त डरपोकमे सभसँ आगू।

वन्दनाक हाथ धएने ठाढ़ भेल छल वासू। कहकलन्हि फेरि अहाँ कहिआ आएब बाबू? कने जल्दी आएब। विप्रदास हँसि क' ओकर माथपर हाथ बुला देलथीन्ह।

वन्दना सासुकेँ पाएर छूबि प्रणाम कएलन्हि। ओ कहलथीन्ह—वासू रहल बहुआसिनि, आओर रहलाह मन्दिरमे अहाँक ससुर कुलक राधागोविन्दजी। फीरि कए कहिओ आएब त अहाँसँ हिनकासभकेँ लेब। ई कहि ओ आँचरसँ नोर पोछलन्हि।

वन्दना दूरसँ विप्रदासकेँ प्रणाम कएलथीन्ह। तकरा बाद लग आबि सजल दृष्टिएँ वाष्प-रुद्ध स्वरसँ कहलथीन्ह—कलकत्ताक पूजाक घरमे अहाँक जे मूर्ति एक दिन नुका क' देखने छलहुँ, आइ हमरा सएह मूर्ति फेरि आँखिमे आएल अछि, भाइ। आब हमरा शोक नहि। अहाँक पता नहि ने हमरा रहुओ, हम जनै छी, मनसँ जाहि दिन अहाँकेँ सोर करब अहाँकेँ आबहि पड़त। जते ने अहाँ नहि नहि करू, ई बात किन्नहुँ मिथ्या नहि होएत।

विप्रदास कने हँसलाह। जेहिना बालकक उत्तर टालि गेल छलाह तहिना वन्दनोक उत्तर टालि गेलाह।

गाड़ी विदा भेल।

**समाप्त**

## श्री 'व्यास' जीक अन्यकृति :—

| | | |
|---|---|---|
| (१) | कुमार | उपन्यास |
| (२) | संन्यासी | काव्य |
| (३) | विड़म्बना | गल्प-संग्रह |
| (४) | श्रीमद्भगवद्गीता | मैथिली-पद्यानुवाद |
| (५) | रुबाइयात ए ओभर खैयाम | मैथिली-पद्यानुवाद |
| (६) | वाभनक बेटी (बङ्लाक अनुवाद) | उपन्यास |
| (७) | दू पत्र(साहित्य अकादमी-पुरस्कृत) | उपन्यास |
| (८) | पतन | काव्य |
| (९) | प्रतीक | कविता संग्रह |
| (१०) | विदेश भ्रमण | प्रेसमे |




# मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

**देसिल बयना सब जन मिट्ठा**
**ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा**

**(Mahakavi Vidyapati)**

**Mithila Research Society** has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

**Mithila Research Society** is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥

 ॥ बिज्ञापन ॥ 

# मिथिलारिसर्चसोसाइटी

## सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः
## स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय, एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो, तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो । (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय । एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपे उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि ।

३ रिसर्च सोसाईटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि । ओ दरभङ्गाक कलेक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि । बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासदगणमें सँ छथि ।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एकरुपैया नियत कयलगेल अछि ।

५ उक्त विषय सम्बन्धमें जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि ।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा ।